संकेत

बंगाल के समर्थ साहित्यकारों में श्री ताराशंकर बन्ध्योपाध्याय का श्रेष्ठ स्थान है। बंगभारती को अब तक आपसे २४ उपन्यास, नाटक और कहानी संग्रह मिले हैं और पाठकों ने इन सबका समुचित सम्मान किया है। आलोचकों का कथन है कि समाज का जैसा सर्वांगीण और यथार्थ चित्रण तारा बाबू की रचनाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र प्राप्त नहीं होता।

'मन्वन्तर' तारा बाबू का आधुनिक यथार्थवादी उपन्यास है। इसमें बंगाल के नागरिक समाज के उस भयंकर परिवर्तन का बल पूर्ण चित्रण किया गया है जो वर्तमान विश्वयुद्ध की छाया में हुआ है। और यह सम्पूर्ण भारतीय समाज की स्थिति का सूचक हो गया है। लेखक ने बताया है कि जो समाज एक दिन पारस्परिक सहयोग की नींव पर स्थिर था वह आज अर्थ की—पैसे की बुनियाद पर आ गया है। जिनके पास पैसा है, वे शेष समाज का सहयोग और आनुगत्य लेकर ही संतुष्ट नहीं होते, अपनी लालसा की वेदी पर दूसरों का बलिदान करके ही शांत नहीं होते, वे और भी आगे बढ़ते हैं और ऐसी भयंकर व्याधियां भी मोल लेते हैं जो उनकी कई पीढ़ियों को खून के आंसू रुलाती हैं। दूसरी ओर जिन के पास पैसा नहीं है, उन्हें युग की इस सबसे बड़ी 'निधि' को प्राप्त करने के लिए अपनी कन्याओं का सतीत्व तक बेंचना पड़ता है, अन्यथा तड़प-तड़प कर मरना तो उनके भाग्य में लिखा ही है। लेखक ने इस उपन्यास में पूंजीवादी समाज के रूप का जो

रोमांचकर चित्र खींचा है वह पाठक के हृदय में पूंजी से घृणा उत्पन्न कर सकता है परन्तु लेखक की लेखनी ने कहीं घृणा प्रकट नहीं की। अपने सब पात्रों के साथ वह सहानुभूति सम्पन्न रहा है और उन की स्थिति के कारणों की शृङ्खला पर मार्मिक विचार करता हुआ चला है। बुराई का चित्रण करते समय उसकी लेखनी कांपने लगी है और दूसरे के आंसू पोंछने के लिए बढ़ा हुआ हाथ देखकर पुलकित हुई है। पात्रों का विकास सर्वथा स्वाभाविक एवं मनो-वैज्ञानिक है और कहानी की रोचकता में कहीं गांठ नहीं पड़ी। लेखक ने पट भूमि रंगने में कल्पना नहीं शुद्ध यथार्थ से काम लिया है और अपने गहरे अध्ययन से कल्पना को भी कुंठित कर दिया है। इस दृष्टि से 'मन्वन्तर' उपन्यास नहीं ऐसे विभीषिका-पूर्ण काल का मार्मिक इतिहास है जिसका ज्ञान भावी सन्तति को होना ही चाहिए। इसीलिए मैंने इस उपन्यास का अनुवाद किया है और आज यह हिन्दी पाठकों की सेवा में उपस्थित हो रहा है।

अनुवाद में मैंने लेखक की शैली को भी सुरक्षित रखने की चेष्टा की है और भाषा भी प्रायः वैसी ही रखी है जैसी 'मन्वन्तर' का चित्रण करने के लिए लेखक ने उचित समझी है। फिर भी इसमें कुछ त्रुटियां रह गई होंगी। पाठकों को इसमें जो अच्छा लगे वह लेखक का कृतित्व समझें, जो पसन्द न आये उसे अनु-वादक की असमर्थता मानें।

—अनुवादक

—एक—

बीसवीं सदी का बयालिसवां वर्ष समाप्त होने वाला है। संसार में ही नहीं इस बंगाल में भी असंख्य परिवर्तन हो गये हैं परन्तु चक्रवर्ती अंश अब तक मध्य युग की वायु में सांसें ले रहा है। सौ वर्ष पहले उस ने अखाड़े से लौटे हुए विजयी पहलवान की भांति बदन की मिट्टी पोंछ कर, कान में इत्र का फाहा खोंस कर, तकिए पर लेट कर जीवन द्वन्द समाप्त करने की सूचना देते हुए जो दरवाजे बन्द किये थे, वे अब तक नहीं खोले। बाहर की वायु कमरे में घुसी नहीं और उन्होंने बाहर निकल कर हवा को अपना बदन छूने नहीं दिया। पहलवानी के द्वन्द का परित्याग कर देने और केवल बादाम का शरबत पीने से अजीर्ण हो जाता है या तोंद बढ़ जाता है। शक्ति की साधना करने वाले के लिये ये दोनों ही रोग घातक होते हैं। धनी के लिये धनोपार्जन के समस्त कर्म त्याग कर सम्पद्-संभोग को ही धर्म बना लेना भी ऐसा ही संघातक हो जाता है। हौज का जल देने वाला नल बन्द कर देने और बाहर निकालने वाला नल खोल देने के दुखद परिणाम में जल ही समाप्त नहीं हो जाता, हौज में दरार पड़ जाती हैं, विषैले कीड़े उन्हें अपना अड्डा बनाते हैं और दीवारों पर जमने वाली धूलि कितने ही कीटाणुओं को आश्रय देती है।

चक्रवर्ती वंश के प्रथम पुरुष सुखमय चक्रवर्ती कर्मशक्ति में पहलवान थे। कलकत्ते जैसे नगर में ५० बीघे भूमि पर बस्ती

बना कर उन्होंने किरायेदार प्रजा पर राजत्व स्थापित किया था। रामबागान और सोनागाछी में लगभग १५ मकान बनवा डाले थे। अपने रहने के लिए भी जब वे विशाल भवन बनवा चुके और बैंक में लाखों रुपये भी जमा हो गये तब एक दिन बैठके में तकिए के सहारे लेट कर, रईसी ठाठ से हुक्का पीते हुए उन्होंने कहा था—अब बस करो।

बस करने के बाद भी वे दो-चार दंड-बैठक कर लेते थे अर्थात् कभी गाड़ी पर बैठ कर मीटिंगों और मजलिसों में हो आते थे, कभी देश हित के कामों में चन्दा दे डालते थे और कभी नाव पर चढ़ कर गंगा की हवा खा आते थे। दूसरी पीढ़ी ने इनका भी बहिष्कार कर दिया—वह प्राय: सर्व द्वन्द्व तिरोहितावस्था में पहुंच गई परन्तु बादाम का शरबत पीती रही। द्वन्द्व इतना ही रह गया था कि तीनों भाई स्त्रियों को प्रहार पर्यन्त शासन करते थे, तास खेलते थे, घुड़ दौड़ देखते थे, मद्यपान करते थे, बाई जी को बैठके में बुलाते थे और आज घोड़ा खरीद कर कल बेचते थे एवं परसों फिर खरीदते थे। अन्त:पुर की अवस्था भी ऐसी ही थी। स्त्रियां गहने तुड़वा कर फिर बनवाती थीं. आज की खरीदी साड़ी रद्दी करती थीं, नई खरीदती थीं और आत्मीयों एवं कुटुम्बियों के घर जाकर दिखा आती थीं। शनिवार और रविवार को नाटक देखती थीं और शेष रातें स्वामी की प्रत्याशा में जागती रहती थीं। सन्तान शोक जैसी घटनाएं ही उनकी इस जीवनसरिता में कुछ लहरें उत्पन्न करती थीं। वंश की अधिकांश

सन्तानें सूतिकागार में ही मर जाती थीं—अब भी मर जाती हैं। वे उनके लिए दो-चार दिन रोती थीं, परन्तु इस दुःख में भी वे एक गोपनीय आराम अनुभव करती थीं। जो बच्चे बच जाते थे उनकी परिचर्या से जीवन का दुख बोझल हो जाता था। कंकालसार और कुंचित लोलचर्म वाले बच्चे दमे के रोगी की तरह सांस लेते थे। रोग के प्रथम लक्षण ने इसी रूप में दर्शन दिए थे।

आज इस वंश के प्रत्येक शरीर में रोग की छाप स्पष्ट हो गई है। अब बादाम का शरबत हजम करने की शक्ति भी चक्रवर्तियों में नहीं है और बादाम भी समाप्त हो गये हैं। लाखों रुपयों का भण्डार शून्य हो चुका है, ५० बीघे की बस्ती वाली भूमि पर दूसरों ने पक्के भवन बना लिए हैं, रामबागान और सोनागाछी के मकानों का स्वामित्व भी चला गया है और विशाल दो मंजिले भवन में बरगद के कम से कम २५ पेड़ उग आये हैं, प्रतिवर्ष वे काटे जाते हैं परन्तु फिर पनप आते हैं। काया में वृहत् न होते हुए भी उनका मूल-जाल भवन के पिंजर में फैल गया है; सन्नाटे से भरी रात में जब आंधी चलती है तब ऐसा जान पड़ता है कि कोई मुंह से सीटी बजा रहा है।

दूसरी पीढ़ी के चक्रवर्तियों में—सुखमय चक्रवर्ती के तीन लड़कों में—केवल मंझले भाई जीवित हैं। मंझले बाबू की आयु पैंसठ के पास है। कभी वे रूपवान पुरुष थे—अब उनके मुख के एक ओर लकवा मार गया है—दांत पहले ही गिर चुके हैं, शरीर

बैठ जाने वाले घर की तरह किसी रोग से विकृत हो गया है फिर भी वे जीवित हैं। अपनी जवानी में वे नाटक के भक्त थे—वक्तृता की तरह बातें करते हैं, हाथ तावीज़ों के समूह और नीलम-पन्ना-गोमेध एवं लोहे तांबे से भरा है। सदा देवता को पुकारते हैं—कौनसा अपराध किया है देवादिदेव, आशुतोष? विश्व ब्रह्माण्ड की भर्त्सना करते हैं—सर्वत्र अधर्म और पाप छाया है। स्वयं ही अपने आप को सांत्वना देते हैं—आते हैं, सब कुछ ध्वंस करने के लिये वे आते हैं। भगवान् ने स्वयं कहा है, 'सम्भवामि युगे युगे'। अब वे रेशम की एक पुरानी रामनामी ओढ़ कर नित्य नियमित संध्या-पूजा करते हैं, गीता और चण्डी पढ़ते हैं तथा सप्ताह में एक दिन पुरोहित के मुख से आपदुग्धा का मन्त्र सुनते हैं। गहरी रात में खटमलों से परेशान या दुरन्त ग्रीष्म में वायु के अभाव से बेचैन हो कर साठ वर्ष की बूढ़ी पत्नी को कभी पंखे की डण्डी से पीटते हैं और कभी कमरे का दरवाजा खोल कर उसे बाहर निकाल देते हैं। बेचारी मंझली मालकिन इसे न अन्याय समझती हैं, न अपमान, अचंचल मानसिकता के साथ वातरोगाक्रांत पैर से लंगड़ाते-लंगड़ाते वे विस्तीर्ण भवन का कोई कोना ढूंढ लेती हैं और सो जाती हैं। सबेरे उठ कर विकृत उच्चारण से देवता की वह स्तुति करती हैं जिसका अर्थ स्वयं उनके लिए भी दुर्बोध होता है परन्तु उसमें होती है एक आकुल विनय जिसका अभिप्राय होता है—भगवान् मंगल करो, अभाव मिटा दो! फिर स्वामी की सेवा आरम्भ

करती हैं। गरम पानी, मंजन, दातन, दवा की शीशी और अफीम की डिबिया ढूंढती है, चाय बनाती हैं, स्नान के समय उलंग-प्राय स्वामी के शरीर में तेल मलती हैं; मंझले बाबू जब खा-पी कर बाहर चले जाते हैं तब वे निश्चिन्त होती हैं। मंझले बाबू पहले स्वयं गाड़ियां खरीदते थे, अब यह ढूंढते फिरते हैं कि कौन गाड़ी खरीदेगा। अर्थात् गाड़ियों की दलाली करते हैं। उन दिनों की विधवा छोटी मालकिन भी जीवित हैं। मेदबहुल शरीर, बधिर और छूआ-छूत से ग्रस्त! उनके जीवन का घेरा अपने आस-पास तक ही सीमित रहता है।

दूसरी पीढ़ी के तीन भाइयों की सन्तानों में सात लड़के और तीन लड़कियां हैं। इस समय तीसरी पीढ़ी का काल ही चल रहा है। लड़कियां ससुराल चली गई हैं। लड़कों की बहुओं और उनकी सन्तानों से ही वर्तमान गृहस्थी है परन्तु इसका रूप पहले से भी अधिक गतिहीन—द्वन्दहीन है। वंश का प्रौढ़त्व तीसरी पीढ़ी में सम्पूर्ण हो चुका है, चौथी पीढ़ी में वार्धक्य की जीर्णता क्रमशः प्रकट हो रही है। तीसरी पीढ़ी के सात भाइयों और चार बहनों में से पांच पागल हैं, शेष कुछ के जीवन की गति लेनदारों के भय से खिड़की के मार्ग से टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में रेंगने वाले जीवों जैसी हो गई है, दिन में उनका कण्ठस्वर नहीं सुन पड़ता, बदले में संध्या के बाद पारस्परिक कलह प्रचण्ड हो जाती है। अपनी सन्तानों को वे अपूर्व शक्ति एवं गुण से सम्पन्न व्यक्ति बनाना चाहते हैं—अतएव संसार के सब संसर्गों से बचाने के लिए

निष्करुण शासन में कोई शिथिलता नहीं रहने देते, आदर की भी कोई सीमा नहीं है। फलतः एक अठारह वर्ष का युवा अब तक शिशु ही बना है और एक ग्यारह वर्ष की लड़की मौका मिलते ही सड़क पर पहुंच जाती है और भीख मांगती है—मुझे एक पैसा दो ! मेरे बाप बहुत बीमार हैं ! रात भीगने के बाद वह लौटती है; उसके उच्च कंठ का संगीत सुनकर सारा मुहल्ला समझता है—दस बज गये !

बड़े लड़के का बड़ा पुत्र इस वातावरण में भी कैसे सबल और स्वाभाविक मनुष्य बन गया है, यह एक रहस्य है। वह एम० एस-सी० में पढ़ता है। नियमित रूपसे कालेज जाता है, एक प्राइवेट ट्यूशन करता है—पृथ्वी के वक्ष पर उसकी गति असंकुचित होती है परन्तु घर में आते ही वह विभ्रांत और विकल हो जाता है। ऐसा जान पड़ता है कि घर की संक्रामकता उस पर आक्रमण करने वाली है। इसीलिए वह अधिक समय बाहर बिताता है। रात में मंझले बाबू का चीत्कार और निद्रा रहित पागलों की अश्रांत पदध्वनि सुनकर वह बिस्तरे पर रोता है और सोचता है, मेरा परित्राण भी न होगा; मेरे रक्त में भी यह विष है। यह उन्माद रोग और वधिरता व्याधि, इस वंश के शिशुओं की मृत्यु और भाग्य क्रम से जीवित रहने वालों के चर्म की कुंचित शिथिलता, यह निश्वास की अस्वाभाविक गति—इन सब में जिस रोग के विष की अभिव्यक्ति है—वह विष मेरे रक्त में भी है। पितृबन्धु डाक्टर का कथन वह भूल नहीं पाता। कभी-

कभी वह सोचता है, मैं इस वंश में व्यतिक्रम के रूप में क्यों आया ? ऐसा न होता तो मैं भी इन स्थूलबुद्धि, विषाक्रान्त और विकृत चेतन व्यक्तियों में एकाकार हो जाता, फिर भय और अनुशोचना इस प्रकार पीड़ित न कर पाती ! दूसरे क्षण में ही वह सोचता है, मनुष्य में बुरे की अपेक्षा भला अधिक है—इसीलिए मैं इस वंश द्वारा अर्जित सम्पूर्ण बुराई और समस्त विष को पार करके ऐसा हुआ हूं। फिर उसके मन में सारे परिवार के लिए ममता हो आती है। भाइयों और बहनों को वह प्रेम की प्रसन्न दृष्टि से देखता है, सोचता है, यह तो रूप का उद्यान है, अब इन सब का भार मेरे ऊपर है। अपनी मां के पास एकांत में बैठकर जब वह वार्तालाप है करता तब ऐसे विचार अधिक उठते हैं। वह देखता है, सोने की प्रतिमा जैसा रूप है मेरी मां का ! उनके हाथों में शंख की दो चूड़ियों के सिवा और कोई आभरण भी नहीं है। शरीर पर पुरानी मूल्यवान् साड़ी है, जो जीर्ण हो गई है परन्तु वे ऐसे निपुण कौशल के साथ व्यवहार करती हैं कि देखने वाले आश्चर्य करते हैं। कनाई को अवश्य आश्चर्य नहीं होता, मां के शैशव और बाल्यकाल की शिक्षा उसके निकट सबसे बड़ी वस्तु है; उसके जीवन के सब परिचयों में यही एकमात्र गौरव का विषय है। उनकी मां गरीब घर की लड़की हैं, उनकी कोई भी पीढ़ी धनी नहीं रही। इस घर में दादियों और चाचियों का सम्प्रदाय जब कनाई की मां की मितव्ययिता पर निष्ठा और उसकी बढ़ी हुई मात्रा देखकर एकान्त में और प्रकट रूप में भी निर्धनवंश की

संकुचितता और लुब्धचित्तता की वैज्ञानिक व्याख्या करता है तब कनाई के ओठों पर व्यङ्ग खेल जाता है। वह सोचता है, संसार में जिन्हें भोजन नहीं मिलता उनकी खाने की आकांक्षा, यहां तक कि लोभ भी, अपराध नहीं है। वह आकांक्षा तो उनकी क्षुधा की मांग है! अब तक यह मांग अत्यधिक व्यग्र एवं भीरु रही है। यह सह्य हो सकता है कि मनुष्य असमर्थ मांग की उपेक्षा कर दे परन्तु वह उसे घृणा के साथ क्यों देखे—व्यङ्ग क्यों करे? फिर वह पूंछना चाहता है, अपनी दादियों और चाचियों से, तुम इसलिये व्यङ्ग करती हो कि तुम्हें खाने की आकांक्षा नहीं है! वे तुम जिनका आहार आयोजन के प्राचुर्य से भरकर पुष्टि के प्रयोजन को तुच्छ कर चुका है, उसे कोरे आस्वाद की विलास वस्तु बना चुका है! वह कहना चाहता है, तुम जो बड़े एवं प्रचुर आयोजन में से एक एक को चख कर और शेष को फेंक कर अपचय के दंभ को अनासक्ति प्रकट करती हो—यह तो अक्षम्य है। अक्षम्य ही नहीं, भोजन-विलास के फल से शरीर की पेशियों ने मेद में परिणत होकर तुम्हारा जो हास्यकर रूप बनाया है—वह कितना कुत्सित है, कितना घृणार्ह है, यह क्या दर्पण देख कर भी तुम्हारी समझ में नहीं आता? अपनी मां की मांग की भीरुता से कनाई लज्जित भी होता है परन्तु उसे प्रसन्नता है कि मां ने अपनी वंशधारा से कोई विष लेकर उसके रक्त में संचारित नहीं किया और यह उसके लिए मां की सबसे बड़ी देन है। घृणा करता है वह मातामही को जिन्होंने समुद्र को रत्न गर्भ समझ कर सोने की इस प्रतिमा को लवणाक्त जल में विसर्जित कर दिया है।

कनाई एक और व्यक्ति को भी भक्ति करता है, उसके लिए आंखों में जल भी आ जाता है। वे उसकी प्रीप्रितामही, मंझले बाबू की मां और इस वंश के पहले धनी पुरुष स्वनामधन्य सुखमय चक्रवर्ती की स्त्री हैं। नव्वे वर्ष की अन्धी वधिर बूढ़ी जीर्ण मांस पिण्ड की तरह आज भी पड़ी हैं। मंझले बाबू ने उनका नाम 'निकषा' रखा है—रावण की मां निकषा। सबेरे उठकर और माता को जीवित देखकर मंझले बाबू अपने आस-पास मौत की छाया देखने लगते हैं। उनकी यह धारणा दृढ़ से दृढ़तर हो गई है कि कम से कम एक सन्तान शोक की प्रतीक्षा में ही निकषा की मृत्यु नहीं होती। वृद्धा के नाम पर सुखमय चक्रवर्ती कुछ सम्पत्ति रख गये हैं, मंझले बाबू के सामने ही वृद्धा आंखें मूंद ले तो वह सम्पत्ति एकमात्र जीवित पुत्र के रूप में उन्हें ही प्राप्त होगी। इसीलिये मंझले बाबू की अधीरता सीमा से पार हो रही है।

परिवार के दूसरे प्राणी मंझले बाबू की मृत्यु कामना करते हैं; मंझले बाबू के एकमात्र पुत्र मणिलाल—कनाई के मणि काका भी इनमें से एक हैं। मंझले बाबू की मृत्यु हो जायगी तो जो कुछ सम्पत्ति बच रही है कम से कम यही उनके पल्ले पड़ जायगी। यदि मंझले बाबू भी माता जैसी परमायु पावें तब ...तब की स्थिति का ध्यान आते ही मणिलाल इतने खिन्न हो जाते हैं कि उनके बच्चों की दुर्दशा का अन्त नहीं रहता। मणि बाबू के मन में इच्छा तो यह उठती है कि पत्थर पर अपना सिर दे मारें

परन्तु फल में मिलने वाली पीड़ा की सचेनता से वे अपना सिर नहीं पटक पाते, बच्चों के चीत्कार से क्रुद्ध होकर उन्हींके सिर दीवाल से टकरा देते हैं।

मंझले बाबू इस शासन से प्रसन्न होकर कमरे के भीतर से ही प्रोत्साहिन देते हैं, ठीक है, ठीक है! छत्तिस कोटि यदुवंश, शैतानों का दल इसी तरह ठीक होगा।

कनाई सबेरे उठा है और घर के बाहरी भाग की खुली छत पर खड़ा है। कभी यह छत घर की बिलास बैठक का स्थान थी। पारिवारिक उत्सवों में इस पर मेहराबें बंधती थीं, खाना-पीना होता था और आमोद प्रमोद के अनुष्ठान किए जाते थे। अब छत में दरारें पड़ गई हैं, कहीं कहीं गड्ढे भी दीख पड़ते हैं, बगल की दीवाल का पलस्तर गिर गया है। छत के दक्षिण में तिमंजिला अन्तःपुर है, जिसके बरामदे की झिलमिलियां टूट गई हैं, कुछ दरवाजों तथा खिड़कियों के कब्जे खिसक गये हैं। इधर पश्चिम में तीन तल्लों के तीन बाथरूम हैं जिनकी छत पर कच्चे पानी की प्रकाण्ड टंकी जीर्ण होगई है, पाइपों में मोर्चा लग गया है, कहीं-कहीं छोटे छोटे छेद भी हो गये हैं। टंकी के पास बरगद का एक सतेज और लगभग तीन फुट लंबा पेड़ खड़ा है। उसकी मोटी जड़ एक दरार में घुसी है और दस बारह लम्बी डोरें भूमि की ओर बढ़ रही हैं; सबेरे की वायु में वे नागपाश के समूह की भांति लहराती हैं। बाहर की बैठक का एक खण्ड किराये पर उठाया गया है, उसमें दो ट्राम कण्डाक्टर और समाचार

पत्रों के कुछ हाकर रहते हैं—वे सब अपने अपने काम पर चले गये हैं। घर में कनाई और उसकी मां के सिवा और कोई नहीं उठा। मां भीतर अपने हिस्से की सफाई कर रही है। अन्य हिस्सेदारों के लिए दासी रखना अब तक आवश्यक है। उनके यहां नित्य नई दासी दीख पड़ती है। आज आई, कल उसने तनख्वाह मांगी और किसी न किसी बहाने से धक्के मार कर बाहर निकाली गई; दूसरे दिन फिर नई आगई। दासियां भी उठ चुकी हैं, पानी वाले नल पर उनकी बमचख होने लगी है। नल के नीचे बालटियां और कलसे रख कर वे लम्बे चौड़े दिन का पूरा उपभोग करने के लिए कलह की भूमिका बना रही हैं। ऊपर दुतल्ले और तितल्ले की छतों की कार्निशों पर कबूतरों का एक दल घूमता-फिरता और उड़ता-बैठता है। पिछले दिनों में उनके पूर्वज सौख की सामग्री थे—अनेक अभिजात सम्प्रदायों की शुद्ध आकृति एवं शुद्ध रक्त लेकर वे गृहस्वामी के कितने ही रुपयों के बदले में आये थे। आज वे जंगली बन गये हैं और अबाध संमिश्रण के परिणामस्वरूप एक नई विचित्र गोष्ठी या सम्प्रदाय में बदल गये हैं। मालिकों के साथ उनका सम्बन्ध नहीं के बराबर रह गया है; अपना आहार वे स्वयं संग्रह करते हैं, हां, छोटे बच्चों के हाथ में खाने से भरी कटोरी देखते हैं तो उनमें से जो पुराने और विषम साहसी हैं वे झपट कर कंधे पर बैठते हैं और कुछ न कुछ छीन कर खा लेते हैं। छत पर कोई अनाज सूखने के लिए डाला जाता है तो वे उस पर भी धावा करते हैं। चक्रवर्ती वंश की मांस लोलुप सन्तानें भी रात में

कुर्सी पर स्टूल रख कर और उस पर स्वयं चढ़कर दो एक कबूतर पकड़ लेती हैं और शोरबा बना डालती हैं। मंझले बाबू अब तक उनके लिए दो मुट्ठी दाने छत पर डालते हैं। कबूतर झगड़ते हैं तो वे तिरस्कार करते हैं—कठोर तिरस्कार। किसी ने दूसरे का दाना छीना तो वे बोले—यू शूअर का बाच्चा! मारे हुए कबूतर के पंख देख कर वे पूंछते हैं तो अपराध बिल्ली के मत्थे मढ़ दिया जाता है। वे बिल्ली को गालियां देते देते कान खुजाने योग्य अच्छा पंख ढूंढ कर, उसे यत्न के साथ टूटे दराज में रख देते हैं।

मकान के पश्चिम में एक बस्ती है। निम्न मध्यवित्त वर्ग के जो लोग वित्त हीन होकर वास्तव में दरिद्र सम्प्रदाय में आगये हैं परन्तु उनके जीवन की रीति-नीति ग्रहण करने में लज्जित एवं पीड़ित होते हैं—वे इस बस्ती में रहते हैं। खपरैल और टीन के घरों की बस्ती में प्रत्येक प्रकार की वंचना और असुविधा पूरी मात्रा में उपस्थित है। फिर भी वे किसी तरह भद्रता की रक्षा करते हुए जीवन बिता रहे हैं। झगड़े-झंझट में वे विरक्त होते हैं, उनके घरों की खिड़कियां और दरवाजे प्रायः पुराने परदों से ढके हैं; दुतल्ले के छोटे छोटे बरामदे भी टाट के टुकड़ों या पुरानी चिकों से घेरे गये हैं। कहीं-कहीं ऐसे घर भी हैं जिनके परदों का नया और चटकदार रंग कहता है ये पुराने नहीं हैं, इन घरों में स्वच्छलता के अन्य प्रमाण भी मिलते हैं, इनमें रस्सी की लम्बी अलगनियों पर हल्की रुचि की रंगबिरंगी साड़ियां, सेमीजें, साये, ब्लाउज, कमीजें और फ्राकें सूखने के लिये डाली जाती हैं। इस बस्ती में

जितना गुल गपाड़ा होता है वह सब। इन्हीं घरों से उठता है। इन घरों में रहने वाले पहले दरिद्र थे, और अब तक श्रमिक श्रेणी के अन्तर्गत हैं परन्तु वे निम्न मध्यवित्त श्रेणी से ऊपर उठ रहे हैं। इन्हीं घरों से सिगरेट, रेहू मछली और मांस की गंध निकलती है और बस्ती भर में फैल जाती है; इन्हीं घरों में रात के दस-ग्यारह बजे पुरुषों के मत्त कण्ठ का आस्फालन सुन पड़ता है। सबेरा होते ही इन घरों के रहने वाले हाफ पैण्ट, खाकी कमीज और नये फैशन के मोजे पहन कर तथा खाने का डिब्बा हाथ में लेकर कारखानों की ओर लपकते हैं। कोई साइकिल पर जाता है, कोई पैदल। इन घरों की जीवन यात्रा आरम्भ हो चुकी है और आरम्भ हुई है हल्की रुचि के नृत्य गीत मुखर चित्रपटों के स्वर और ताल पर। कुछ लड़के और लड़कियां गा रही हैं, 'प्रेम का आंगन प्रेम की छत हो!'—"मैं प्रेम पंथ का राही!" सम्मिलित स्वर में कोरस भी बढ़ा है। कोरस ही नहीं, ध्वनि और प्रतिध्वनि की भांति उस घर से कोई बोला—'प्रेम का आंगन प्रेम की छत'.....।" एक घर में पुराना ग्रामोफोन बजने लगा है। ऐसा जान पड़ता है कि विकृत साउण्ड बाक्स के भीतर से वह गायक गा रहा है जिसका गला बैठ गया है। ग्रामोफोन लगभग दिन भर बजेगा—कम से कम उस तरफ वाले नये मकान से जब तक रेडियो सुन पड़ेगा तब तक तो बोलेगा ही। सम्पद् की प्रतियोगिता का यह एक नया विकास है।

बस्ती के दूसरे घरों पर वित्त हीनता के दैन्य की निष्ठुर छाप

लगी है। उनमें रहने वाले मनुष्य मन की उदासी और शरीर की अवसन्नता को संभ्रमपूर्ण गांभीर्य के छद्मवेशी आवरण से ढक कर निस्तब्ध प्राय हो रहे हैं। बिस्तर से वे पहलेही उठ बैठे हैं, अब चिक या परदे की आड़ में क्लान्त दुर्बल पदक्षेप से टहल रहे हैं। एक घर का एक शीर्ण शिशु अशान्त स्वर के प्राणबेधी चीत्कार से रोता ही जा रहा है। घरों से बरतन रगड़ने का शब्द सुन पड़ता है परन्तु वह भी धीमा है। एक दु-तल्ले के बरामदे में एक पुरुष केवल लुंगी पहने बीड़ी पी रहा है। खुले आंगनों में जो स्त्रियां काम-काज कर रही हैं उन में से अधिकांश शीर्ण हैं—कभी उनके शरीर में भी रूप और शोभा थी परन्तु अब विशीर्ण पाण्डुरता ने उसे मलिन और निस्तेज कर दिया है। ऐसे ही एक घर से एक चौदह-पन्द्रह वर्ष की लड़की अत्यन्त शांत पद विक्षेप के साथ भूमि पर आंखें लगाये हुए निकली है; उसके हाथमें एक छोटी-सी डलिया है, वह पास के बगीचे वाले घर से फूल लेने जा रही है। लड़की देखने में सांवली है, मत्था छोटा है, मैला ब्लाउज और मैली धोती पहने है। सांवली होते हुए भी उसके मुख पर शोभा है, उसके घने, लम्बे और काले बाल और भी मनोरम जान पड़ते हैं। कनाई लड़की को अच्छी तरह पहचानता है; वे बहुत दिन से यहीं रहते हैं। वह कनाई की बहन उषा की संगिनी और अब सखी है, प्राय: उसके घर आती है; बहुत अच्छी लड़की है, नाम है गीता। कनाई ने स्नेह के साथ पुकारा—फूल लेने जाती हो ?

गीता का सलज्ज मुख ऊपर उठा, ओठों पर क्षीण मुस्कान दीख पड़ी।

आकाश के किसी कोने से हवाई जहाज का शब्द आया। बीसवीं सदी का दूसरा महायुद्ध हो रहा है। हवाई जहाज का शब्द सुनकर उसकी दिशा निश्चित कर लेना सरल नहीं होता। कई बार जिस दिशा से शब्द आता है, विमान उसकी ठीक विपरीत दिशा में होता है। कनाई ने आकाश की ओर देखा; चारों ओर ढूंढने पर भी आकाशचारी न दीख पड़ा। दृष्टि फिराते ही कनाई ने देखा, गीता अब तक उसकी ओर देख रही है। आंखें मिलते ही वह लज्जित होकर बोली—हवाई जहाज नहीं दीख पड़ा? और फिर सिर नीचा करके चलने लगी।

मां अन्तःपुर के द्वार पर आकर खड़ी हुईं—कानू चाय बन गई है।

कनाई ने मां की ओर देख कर कहा—चलता हूं।

चाय पीकर वह ट्यूशन पर जायगा।

मां गईं नहीं—कनाई के और भी निकट आकर मृदु स्वर से बोलीं—महीने के रुपये वे अभी न दे देंगे?

कनाई ने मां की ओर देखा—मां ने भूमि की ओर देखते हुए कहा—भण्डार तो खाली हो गया है बेटा!

—दो—

रास्ते में चीनी और मिट्टी के तेल की कण्ट्रोल वाली दुकानों पर लोग अभी से पांत बांध कर खड़े हो गये हैं। बाजार में चीनी और मिट्टी का तेल दुष्प्राप्य हो रहा है। जावा आदि द्वीपों से चीनी का आयात बन्द हो गया है और ब्रह्म देश जापानियों के हाथ में है, वहां के तेल की खानों का मुंह इस देश की ओर नहीं रहा। मैदा भी दुर्लभ होती जा रही है। प्रति दिन दाम बढ़ते हैं, दो आने से तीन आने, तीन से चार—पांच—छ—। कपड़े का बाजार भी आग जैसा उतप्त है। पूजा से पहले धोती ६ रुपये और साढ़ी ७ रुपये पर पहुंची थी, नवम्बर और दिसम्बर का बाजार भाव कनाई नहीं जानता फिर भी ८ या ६ से कम न होगा। पूजा के अवसर पर भी उसने अपने लिये कपड़े नहीं लिये। मां के लिये और उनका मुंह देख कर व्याधि ग्रस्त भाइयों-बहनों के लिए कपड़े खरीदने में ही ट्यूशन के दो महीने का वेतन साफ हो गया। पिता ने दो बनियायनों की इच्छा की थी, कहा था, लाना तो बढ़िया। हल्की चीज न उठा लेना। साधारण चीजें उन्हें आज भी पसन्द नहीं आतीं। पहले के अपचय से जो उपेक्षित संचय हो गया है, आज कल वे उसी से अपना काम चलाते हैं। कनाई को इस खर्च के लिये खेद हुआ है, क्षोभ हुआ है परन्तु रंगीन कपड़ों से सज्जित भाई-बहन जब सुन्दर चित्र की भांति सामने आये हैं, तब उसे सान्त्वना भी मिली है। सुन्दर भाई-बहन

और भी सुन्दर हो गये थे। चक्रवर्ती वंश की सम्पत्ति का भण्डार अब दिवालिया हो गया है परन्तु रूप का भण्डार भरा है। अर्थ और कुलीनता के सम्मान पूर्ण अधिकार के सहारे से उन्होंने स्वजातीया कुमारी कुल के सर्वोत्तम पद्म चुन कर घर में श्रेष्ठतम रूप को ही स्थान दिया है। विज्ञान सम्मत जीव विद्या के वंशगत विधान-विज्ञान की उन्हें स्पष्ट धारणा न थी परन्तु विज्ञान की क्रिया में व्यतिक्रम नहीं हुआ, फलतः इस वंश की सन्तानें शाप भ्रष्ट देव शिशु जैसे सौन्दर्य के साथ जन्म लेती हैं। इस सौंदर्य को, विशेष कर अपूर्व रूपवती बहनों को देख कर कनाई की आंखें भीग जाती हैं। वह सोचता है, इस रूप-लावण्य के अन्तराल में बहने वाली रक्तधारा में वंशगत विष पुराने घर में सांप की भांति आसन जमाये है। उसकी विषैली सांसें एक दिन शोणित कणों की समस्त स्वस्थ एवं पवित्र शक्ति को जर्जर कर देंगी। इस अपूर्व रूप-लावण्य और स्वस्थ पवित्र शोणित के समन्वय से मर्त्य में स्वर्ग की रचना हो सकती थी परन्तु अब पृथ्वी की मानव गोष्ठी विषाक्त होगी।

बगल में प्रकाण्ड कम्पाउण्ड से घिरा एक प्रासाद तुल्य परन्तु पुराना और जीर्ण भवन है। कुछ पीढ़ियों में ही भवन कई भागों में बंट गया है, कुछ भागों में मारवाड़ी आ गये हैं। पुराने वंश में से जो हैं उनकी दशा भी चक्रवर्तियों जैसी है। उनकी रक्तधारा में भी विष होगा। संसार के सब प्रकाण्ड भवनों में इसी नाटक का अभिनय हो रहा है।

कम्पाउण्ड के सामने रास्ते से सटा हुआ ए. एफ. एस. का एक अड्डा है। वे लोग नीले रंग की वरदी पहने और आग बुझाने वाले लम्बे नलों का भार उठाये परीक्षण कर रहे हैं। यह रास्ता कलकत्ते की एक प्रधान सड़क से जुड़ा है। सड़क पर मिलिटरी की लारियां कतार बांधे जा रही हैं, खाकी वरदी और लाल टोपी पहने, हाथ में काले कपड़े पर लाल अक्षरों से लिखा एम. पी. का बिल्ला लगाये मिलिटरी पुलिस ट्रेफिक रोके खड़ी है। हरे और पीले रंग से रंगी हुई अनेक आकार की लारियों में जलाने की लकड़ी से लगा कर मशीनगन, हल्के आकार के दो-चार टैंक तक—कितनी ही वस्तुएं भरी हैं। लारियों के बीच से ही आर. ए. एफ की एक बड़ी और सुदृश्य बस निकल गई। बगल में दुरन्त गति वाली एक मोटर साइकिल सन्देश लिये चल रही है, सवार के सिर पर लोहे के तसले जैसी हेलमेट और आंखों पर 'गाग्ल्स' का स्थान लेने वाली गटा पार्चा की चक्षु-आवरणी है। ऊपर आकाश में चार वायुयान एक साथ उड़ कर दूर चले गये। सैनिक लारियों के बीच में ही किसी तरह मार्ग निकाल कर सवारों से ठसाठस भरी शहर जाने वाली दो बसें आ गईं—बसों के पिछले फुट पर कुछ योरोपियन सैनिक खड़े हैं। बस रुकते ही वे कूद कर उतर पड़े। कुछ यात्री भी उतरे, कुछ भारतीय सैनिक भी हैं।

अकस्मात् गुरुगंभीर कण्ठ की प्रचण्ड शक्ति से आदेश देने की भांति किसी ने चीत्कार किया—ऐ—ऐ—रोको!

साथ ही साथ जनता से रव उठा 'गया' 'गया !'

कनाई की चकित दृष्टि ने देखा—सैनिक लारियों की गति स्तब्ध हो रही है, उस ओर चौराहे के कोने में एक लंगोटी धारी अपने सबल एवं वीभत्समूर्ति शरीर को ताने और कुछ पीछे की ओर झुकाये खड़ा है। उसके मुख पर जो अभिव्यक्ति है उससे जान पड़ता है कि उसने इन विराट और पंक्तिबद्ध यंत्रयानों की गति रोकने वाले ब्रेक को कसने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी है। वह इस मुहल्ले का जग्गू पगला है, गलियों में घूमना और कूड़े के ढेर से खाद्य संग्रह करना उसका काम है। कनाई ने सोचा अकस्मात् उसमें यह वीरत्व क्यों आ गया? क्षणभर बाद जग्गू स्तब्ध लारियों की पंक्ति के सामने की ओर दौड़ा और एक लड़के की रक्ताक्त देह भूमि से उठा कर अपने कंधे पर रख ली। लड़का लारी के नीचे दब गया है। जग्गू फुटपाथ पर आया, उसके आस-पास भीड़ लग गई। एस. पी. की सीटी बजी, हाथ से आगे बढ़ने का इशारा हुआ और यांत्रिक वाहिनी फिर अग्रसर होने लगी। लारियों की पंक्ति भेद कर दूसरी ओर पहुंचना कनाई को असंभव जान पड़ा। इसी समय पीछे वाली दुकान में लगी घड़ी में एक घंटा बजा। कनाई ने मुंह घुमा कर देखा, साढ़े सात बजे हैं। जाड़े के दिन—दिसम्बर का महीना—फिर नया समय, इण्डियन स्टैण्डर्ड टाइम। कनाई के टयूशन का समय ८ से ६ तक है और अभी तो बाजार तक जाना है। वह द्रुत गति से ट्राम डिपो की ओर बढ़ा। बगल से दो साधारण लारियां निकल गई—दोनों पर शाक-भाजी

लदी थी। लारियां साधारण थीं परन्तु चलाने वाले के बदन पर खाकी वरदी और सिर पर लोहे का हैलमेट था।

कनाई के कान में जग्गू पगले के प्रचण्ड आदेश की प्रतिध्वनि अब तक गूंज रही है। कान तक धनुष खींचने वाले योद्धा जैसी उसकी पेशी प्रकटित देह आंखों के सामने घूमती है। ट्राम पर बैठ कर भी कनाई इसी घटना पर सोचता रहा। ट्राम डिपो में बन्दूक-धारी संतरी पहरा दे रहा था।

सड़क के दोनों ओर की दीवारों पर रंग-बिरंगे विज्ञापन लगे हैं।······ थियेटर में नृत्य गीत ··· सिनेमा में 'प्रेम का पुष्प' ··· थियेटर में 'गुमनाम चिट्ठी'··· सिनेमा में 'हाथ का कंगन' 'वर्तमान युग में भी हिन्दू सती की अपूर्व महिमा'। चार सिनेमा गृहों के सामने अभी से बोर्ड लटक गये हैं—फोर्थ क्लास फुल, थर्ड क्लास फुल, एक बोर्ड पर लिखा है हाउस फुल। आज शनिवार है। दो बजे के बाद फुटपाथों पर जो दृश्य उपस्थित होगा, ट्रामों, बसों और साड़ियों के वर्ण-वैचित्र्य से समुज्वल स्त्रियों की जो भीड़ लगेगी, वह स्मरण हो आई। अद्भुत! कनाई को जान पड़ा कि मेरे घर के सामने वाली बस्ती ही सम्पूर्ण कलकत्ते में फैल गई है। वह कुछ मुस्कराया। उसके ठीक पीछे बैठे दो प्रौढ़ जन्मांतरवाद और कर्मफल की आलोचना कर रहे हैं—यह सब हमारे जन्म जन्मान्तर के पापों का परिणाम है। कलियुग में धर्म का एक ही चरण है और वह भी समाप्त होने वाला है।

दूसरे बोले—चेतावनी पढ़ी है ? इसी श्रावण में शायद—

पहले ने बीच में ही बात काट दी—शायद ! इसमें सन्देह को तो स्थान ही नहीं। इस तूफान में भूमिका भी बंध गई है। तुम देखना, मेदिनीपुर में जो कुछ हुआ है—वही होगा—वही नहीं साथ में भूकम्प भी आयेगा—प्रलय हो जायगी।

सामने वाली बेंच पर दो अधेड़ राजनीति की चर्चा कर रहे हैं। 'डियर सर जान्' वाली जो चिट्ठी श्यामाप्रसाद ने गवर्नर को ठोंकी है उस पर इक साहब ने श्यामा बाबू को शेर का बच्चा शेर बताया है।

मेदिनीपुर ! विद्रोह के उन्माद से उन्मत्त मेदिनीपुर जब प्रचंड राज-रोष में पिस रहा था तब आंधी और जलोच्छ्वास ने भी उस पर आक्रमण कर दिया। समुद्र की बाढ़ में लाखों मनुष्य और पशु बह गये—लाखों शवों ने उसे श्मशान बना दिया। सड़क पर दृष्टि जाते ही कनाई ने देखा कि मेदिनीपुर की सहायता में होने वाले नृत्य गीतों और मेयर आदि के सहायक कोषों के विज्ञापन अब तक विवर्ण नहीं हुए। कल ही समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि मार्शल चांग काई शेक ने सहायता के लिए ५० हजार रुपये भेजे हैं। कनाई ने सोचा आज वेतन मिल गया तो कम से कम पांच रुपये मैं भी दे दूंगा।

गाड़ी एक झटके के साथ खड़ी हो गई, सामने से एक रिक्शा वाला हवा के झोंके की तरह निकल गया। स्थान-काल के सामान्य व्यवधान से ही वह बच गया। ड्राइवर ने उसे गाली दी, वह मुंह

चिढ़ा कर हंसता-हंसता चला गया। सड़क के एक ओर दृष्टि पड़ते ही कनाई कांप उठा। इधर शिवनरायणदास गली, उधर शिमला स्ट्रीट और सामने आर्य समाज भवन है। गत अगस्त के महीने में वहीं; आंखों के सामने रक्तात्क स्थान का चित्र आ गया। कनाई ने घटना स्वयं देखी थी। एक लम्बी सांस लेकर उसने अपने आप कहा--ओह ! कैसा समय था वह। न जाने क्यों उसे मिल्टन का यह कथन स्मरण हो आया--

'Give me the liberty to know, to utter and to argue freely acording to my conscience.

दूर--हरीसन रोड के मोड़ पर पुलिस की लारी खड़ी है। एक मोटर साइकिल और उसकी साइडकार पर बैठे दो सार्जेण्ट बगल से निकल कर उत्तर की ओर चले गये।

—उठिए ! लेडीज़ सीट। लेडी। सुनते हैं !

कनाई ने चौंक कर अपनी सीट के पीछे हाथ फेरा, लेडीज़ सीट की प्लेट लगी है, अन्यमनस्कता में वह लेडीज़ सीट पर बैठ गया है।

रास्ते की ओर देखा, केशवसेन स्ट्रीट की मोड़ है। किन्तु कहां, वह महिला कहां है ?

—उठिए भी !

कनाई उठ कर खड़ा हो गया।

—आप ! महिला कण्ठ की ध्वनि से चकित होकर उसने पीछे की ओर देखा—नीला सेन खड़ी है। नीला पिछले वर्ष तक

कनाई के साथ कालेज में पढ़ती रही है; विद्यार्थी संघ के उत्साही सदस्यों में उसका प्रमुख स्थान रहा है और आज कल के सर्वाधिक उत्साही सदस्य नेपी की वह बड़ी बहन है।

श्यामवर्णा दीर्घाङ्गी नीला रूपवती नहीं कही जा सकती, परन्तु उसके मुख पर एक चमत्कार पूर्ण शोभा है। कनाई के साथ उसका वार्तालाप घनिष्ट नहीं है, दो-तीन बार समिति के अधिवेशन में ही भेंट हुई है। एक बार केवल दो बातें हुई थीं—कनाई ने उसके मुख पर वार्तालाप की अभिलाषा के स्मितहास का आभास देख कर पूछा था—अच्छी हो? नीला ने उत्तर दिया था—हां! जो हास आभास में आबद्ध था वह रात के अन्तिम पहर के शिवली की भांति प्रस्फुटित होगया था।

—उठे क्यों? बैठे रहिए।

—धन्यवाद! मैं इधर बैठता हूँ। आप आराम के साथ बैठिए।

कनाई बगल की सीट पर बैठ गया। दोनों के बीच में रास्ते का ही व्यवधान रहा। मिल की धुली हुई साड़ी पर चाकलेट रंग का कोट पहने नीला सुन्दर जंच रही है। सिर के बाल जाल में बंधे और कंधों पर पड़े हैं। पाउडर की हल्की आभा ने मुख के श्यामवर्ण को शोभा और चमत्कारपूर्ण उज्वलता दे दी है।

कनाई ने पूछा—इधर कई दिन से आप समिति के आफिस में नहीं दीख पड़ीं। मैंने समझा था, आप कांफ्रेंस में इलाहाबाद गई हैं।

—ना, मैं नहीं गई। नीला के मुख पर पीड़ा की छाया दीख पड़ी। वह इलाहाबाद के विद्यार्थी सम्मेलन में जाने वाली थी। सम्भवतः अर्थाभाव के कारण नहीं जा सकी अथवा संघ ने उसे अपना प्रतिनिधि नहीं चुना।

कनाई ने प्रसंग टालने के लिये नीला के भाई नेपी की चर्चा उठाई—और श्रीमान नेपी के क्या हाल हैं ?

नीला मुस्कराई—उसके जीवन की 'स्पीड' बढ़ती ही जा रही है। किसी दिन घर लौटता है, किसी दिन नहीं। परन्तु आप इलाहाबाद क्यों नहीं गये ? आपको तो जाना चाहिए था।

कनाई भी मुस्कराया—जानती तो हैं, 'उत्थाय हृदि लीयन्ते— शेष वाक्य उसने पूरा नहीं किया।

—यह तो आपने न कहा था। नीला विस्मय के साथ बोली— आप कहते थे कोई बीमार है।

—वह भी मिथ्या न था। मेरे घर में कम से कम तीस आदमी हैं। जुकाम हो या निमोनिया, प्रति दिन कोई न कोई अवश्य अस्वस्थ होगा परन्तु इससे यात्रा में बाधा नहीं पड़ती। बाधा का वास्तविक कारण वर्तमान समाज में प्रकट करना भी उचित नहीं।

नीला चुप हो गई परन्तु बात उसने भी ठीक कही थी। विद्यार्थी मंडल में कनाई अच्छे वक्ता के रूप में विख्यात है, उसकी वाक्यधारा स्वयं उत्सारित जान पड़ती है और आवेग के स्थान पर युक्तियों के प्राधान्य से पूर्ण वक्तव्य अकाट्य एवं तीक्ष्ण होता है। यदि किसी तरह से उसे आघात पहुंचा दिया जाय तो रंग ही बदल

जाता है फिर उसका भाषण ऐसा तेज और आघातधर्मी हो जाता है कि विरोधी के पैर भी नहीं टिकते।

—किन्तु आप इतने सवेरे—प्रश्न के बीच में ही कनाई को चेतना आ गई और वह रुक गया नीला के साथ उसका जितना परिचय है उसकी पूंजी पर ऐसा प्रश्न करना उचित नहीं हो सकता परन्तु प्रश्न स्पष्ट हो चुका था। नीला ने हल्की हंसी के साथ उत्तर दिया—आप शायद नहीं जानते मैंने 'सप्लाई डिपार्टमेंट' में नौकरी कर ली है।

—नौकरी कर ली है? और आगे पढ़ने का विचार?

—छोड़ दिया। पढ़ कर क्या होगा? क्या करूंगी?

कनाई कोई उत्तर न दे सका। सचमुच पढ़कर क्या होगा? नीला जैसी ममाध्यमवर्ग की तरुणी किसी तरह एम. ए. सेकेण्ड तक पहुंच सकती है परन्तु उसका परिणाम क्या होगा? बहुत हुआ तो किसी हाई स्कूल में प्रधान अध्यापिका हो जायगी। चालीस या पचास वेतन मिलेगा और रजिस्टर में पिचत्तर या सौ लिखना पड़ेगा। उसकी कोमल श्यामश्री में माधुर्य है परन्तु कोई आई. सी. एस. या बी. सी. एस. बंगाली तरुण आकर्षित न होगा। फिर यह निराशापूर्ण विद्यार्थी जीवन लम्बा क्यों किया जाय?

—आफिस में फाइलों का इतना ढेर लग गया है कि किसी 'सब्जेक्ट' के 'हेड एक्जामिनर' का कमरा जान पड़ता है इसीलिए 'ओवर टाइम' करने जा रही हूँ। 'मोस्ट ओबिडियण्ट एण्ड फेथफुल सरवेंट' हूँ—समझे आप! नीला हंसी, कनाई भी मुस्कराया।

नीला ही फिर बोली—आप कहां जा रहे हैं ?

—टयूशन पर—एक प्राइवेट टयूशन है, बौ बाजार में।

—बौ बाजार में ! विस्मित नीला ने एक बार कनाई की ओर और दूसरी बार बाहर की ओर देखा।

—हां, इस मोड़ से कुछ आगे सेण्ट्रल एविन्यू के जंकशन पर—ऐं—यह वेलिंगटन स्कायर है ? यह क्या डलहौजी की ट्राम नहीं है ?

पीछे बैठे हुए किसी सहयात्री ने एक आदिरसाश्रित टिप्पणी की। कनाई ने मुंह घुमा कर देखा परन्तु बोलने वाले का पता न चला, सब के मुंह रस भरी मुस्कान से अवश्य खिल रहे थे। नीला की ओर दृष्टि गई तो देखा कि उसका श्यामवर्ण मुख तांबे के नित्य मंजने वाले पंचपात्र की भांति उज्वल हो गया है। गाड़ी धीमी गति से मोड़ घूम रही थी। कनाई खड़ा हो गया। ओह बहुत देर होगई; ऐसा जान पड़ा कि यह वाक्य उसके बिना जाने ही बाहर आ गया है।

—देर जब हो ही गई तो कुछ और सही। मुझे पहुंचा कर चले जाइयेगा।

नीला का यह अनुरोध कनाई को अच्छा लगा। मन भी कुछ रंगीन हो गया। एक संगिनी के लिए यदि वह एक सबेरा भी नष्ट नहीं कर सकता तो अपने लिए और क्या कर सकेगा ? वह बैठ गया, इस बार वह नीला की सीट के खाली स्थान में ही बैठा।

ऐसा जान पड़ा कि पीछे की ओर—नाली की मक्खियों के

अड्डे के पास— पेड़ से कोई सुपक्व फल गिर पड़ा है और भिन-भिनाती हुई मक्खियां उसकी ओर उड़ रही हैं।

एसप्लेनेड में उतर कर नीला ने कहा—काफी पी कर आप उधर जांय और मैं आफिस।

—काफी ? कनाई का रंग फीका हो गया—अपनी जेब याद आ गई।

नीला हंसी, बोली—नई नौकरी मिली है। इष्ट मित्रों को खिला-पिला तो नहीं सकती—अधिक से अधिक काफी—सैंडविच और बस।

कनाई आज के पहले कभी काफीखाने के भीतर नहीं गया। ऐसा जान पड़ा कि बीसवीं शताब्दी ने अन्तर्राष्ट्रीयता का जो स्वप्न देखा है वह साबुन के रंगीन फेने के एक बुलबुले की भांति यहां तैर रहा है।

—तीन—

ट्यूशन से लौट कर कनाई घर आता है और फिर कालेज जाता है। कालेज से कभी घर आ जाता है और कभी समिति के दफ्तर चला जाता है। यही उसका कार्यक्रम है। घर के बंद वातावरण में जब उसका दम घुटने लगता है तब वह अपने वंश को शाप देता है। घर से निकल कर जब बाहर आता है—राजपथ के दोनों किनारों पर विशाल भवन और फुटपाथों पर भूखे मनुष्यों

की भीड़ देखता है तब उसका मन अपने वंश को शाप देने के लिए अपने आपको अपराधी समझने लगता है। वह सोचता है, मनुष्य असहाय है, मेरे पूर्वजों का कोई अपराध नहीं। इस तरह उसका मन सदा सर्वदा एक अस्थिर जर्जरता से आछन्न रहता है। वह जानता है, इसका कारण मेरी रक्तधारा में निहित है।

आज कनाई का सारा दिन बड़ी शांति के साथ बीता है। ट्यूशन के वेतन से घर के लिए सामान खरीदने के बाद चार रुपये उसने अपने लिए बचा लिए हैं। उसकी मां ने यह बात पसन्द नहीं की। उनकी शिक्षा और संस्कृति ने उन्हें आत्मनिर्यातन का एक प्रचण्ड आवेग दिया है। पारिवारिक सुख के लिए अपना सब कुछ विसर्जन करने और स्वयं कष्ट भोगने में ही उन्हें आनन्द मिलता है। यही उनका आदर्श है। कनाई को भी वे इसी आदर्श में दीक्षित देखना चाहती हैं। कनाई उन्हें दुखी नहीं करना चाहता। उनका आदर्श ग्रहण न करने पर भी वह मां का आदेश कभी अमान्य नहीं करता। मां ने कहा था, तू चार रुपये लेकर क्या करेगा? नहीं जानता कि हमारे परिवार में चार रुपयों का कितना मूल्य है?

कोई और दिन होता तो कनाई रुपये न लेता परन्तु आज एक अर्धसत्य का सहारा लेकर रख लिए। बोला—कालेज में देने हैं।

कालेज में दो रुपये देने हैं, शेष दो रुपये उसने नीला के आतिथ्य का प्रतिदान करने के लिए रख लिए हैं। वह भी एक

दिन गीला को काफी पिलायेगा। संध्या के समय कमरे में बैठा वह यही सब कुछ सोच रहा है। अकस्मात् बाहर शोर गुल सुन कर वह चौंक पड़ा। अपने कमरे से बाहर निकला तब पता चला कि गोलमाल घर में नहीं बस्ती के सामने वाली सड़क पर हो रहा है। परदेशी उच्चारण वाली हिन्दी में कोई चिल्ला रहा है—बंगला का भी एक आध टूटा-फूटा शब्द उसके मुंह से निकल पड़ता है। बस्ती के किसी निवासी के साथ किसी विदेशी का झगड़ा हो गया है। विदेशी की बातचीत से दम्भ फूटा पड़ता है। वह रुपये मांग रहा है। फेंको! हमारा रुपया फेंको!

धीमे स्वर में कोई प्रतिवाद कर रहा है, कण्ठस्वर से कनाई ने पहचाना कि वह गीता के पिता का स्वर है। गीता के पिता से उसका विशेष परिचय नहीं है परन्तु गीता उसकी बहन उमा की सहेली है। कभी वह उमा के साथ खेलने के लिए नियमित रूप से इस घर में आती थी। और कुछ दिन स्कूल में भी उसके साथ पढ़ती रही है। उन दिनों वह कनाई से भी थोड़ा बहुत पढ़ लेती थी। लड़की अत्यन्त बुद्धिमती परन्तु अत्यन्त निरीह है। अपने परिवार की क्रमिक दरिद्रता के साथ वह भी संकुचित और शांत होती जा रही है। स्कूल छोड़ना पड़ा है। कनाई के घर भी वह अधिक नहीं आती। जब आती है तब कनाई को मालूम हो जाता है कि वह क्या लेने आई थी। जब वह रास्ते में चलती है तब चाल देख कर ऐसा जान पड़ता है कि उसके सिर पर कोई भारी बोझ रखा है। कनाई निर्धनता के भार का गुरुत्व समझता

है। दरिद्रता की चक्की में गीता की प्राण शक्ति पिसी जा रही है—भोजन न मिलने का उस पर इतना प्रभाव नहीं पड़ता। दारिद्रय के अस्पृश्यता जनित जीवन के संकोच से ही वह निस्तेज हुई जा रही है। उसी गीता के पिता से झगड़ा हो रहा है। कनाई से रहा न गया, वह भी बाहर निकला।

बाहर एक काबुलीवाला गीता के पिता का हाथ पकड़े खड़ा है; उसकी अवस्था अधिक नहीं है। कनाई उसे दिन में प्राय: दो बार देखता है। वह सबेरे आता है और बस्ती के किसी घर का दरवाजा रोक कर बैठ जाता है। वह सुदूर अफगानिस्तान या पेशावर से आया है और यहां मोटे ब्याज पर कर्ज देने का व्यवसाय करता है। धनियों के वे उच्छृंखल लड़के जो बाप के मरने की उत्सुक प्रतीक्षा कर रहे हैं, इससे रुपये लेते हैं या मध्यवित्त वर्ग के वे लोग इसे महाजन बनाते हैं जो निर्धनता के गर्त में बराबर उतरते जा रहे हैं। गीता के पिता ऊंचे स्वर से बोल रहे हैं—रुपया क्या हमको मारने से मिलेगा? नहीं है तो कहां से देगा?

—सूद निकालो—सूद। दो महीना एक ठो अधेला नहीं दिया तुम।

कनाई ने आगे बढ़ कर कहा—ए, साहब, छोड़ दीजिए! ये क्या बात, कोई जुलमबाजी का मुलुक नहीं है!

काबुलीवाला हँसकर बोला—बाबू जी हमारा सरीर में जब तक ताकत है तब तक हमारा जुलुमबाजी का एख्तियार है।

कनाई के शरीर में बिजली की लहर सी दौड़ गई फिर भी

उसने अपने आप को संभाला, कुछ आगे बढ़ा और हंस कर काबुलीवाले का हाथ पकड़ कर बोला—ठीक कहते हो, ताकत ही दुनिया में असली अख्तियार है लेकिन ताकत तुम्हारी ही बपौती नहीं है। भले आदमी का हाथ छोड़ दो!

काबुलीवाले ने आश्चर्य के साथ कनाई की ओर देखा—वह कनाई से कम से कम एक फुट अधिक लम्बा है—उसके शरीर की परिधि भी दुगुनी है—फिर भी वह सुन रहा है कि ताकत उसकी बपौती नहीं है।

उधर गीता के पिता सहानुभूति पाकर हाय हाय करने लगे।—देखिए, देखिए, अत्याचार तो देखिऐ। लड़ाई के बाजार में दो महीने से बेकार बैठा हूँ—पेट भरने का डौल नहीं लगता, उस पर यह जुल्म।

कनाई ने काबुली वाले से कहा, छोड़ दो!

कनाई की निर्भीकता देखकर और स्थान को अपने लिए परदेश और कनाई के लिए स्वदेश समझ कर ताकत रखते हुए भी काबुलीवाले ने अपने असामी का हाथ छोड़ दिया और बोला—अच्छी बात, आप बी तो भला आदमी है। हमारा रुपया आप ही दे दे। हम आपको सालिस मानता है। आसल न दे तो दो महीना का सूद छौ रुपया चार आना दे। पचास रुपया पर दो महीना का सूद।

पचास रुपये पर दो महीने में सवा छे रुपये सूद! महीने में एक रुपये पर एक आना ब्याज। कनाई के आश्चर्य की सीमा न

रही। प्रतिवाद करने या आश्चर्य प्रकट करने का उपाय उसकी समझ में न आया, कोई उत्तर भी न सूझा परन्तु उसे अधिक सोचना न पड़ा। बस्ती की विपरीत दिशा से एक प्रौढ़ा आई और आते ही बोली—कहां, काबुलीवाला कहां ? यह ले बेटा दो महीने का ब्याज—यह—ले छ रुपये चार आने उसने काबुलीवाले के हाथ में पटक दिए।

कनाई फिर विस्मित हुआ। प्रौढ़ा को वह जानता है। वह इसी मुहल्ले में रहती है और बामुन दीदी के नाम से परिचित है। आंखों की ओट में कुछ लोग उसे ब्राह्मण दादा भी कहते हैं। प्रौढ़ा की चाल ढाल भी पुरुषों जैसी है। वह पैरों में चट्टी पहन कर और मर्दाना छाता लगा कर घूमती है, कनाई ने उसे ट्राम और बस पर भी आते जाते देखा है। वह ब्याह शादी कराने का काम करती है और चीजें रख कर दस-पांच रुपये का लेन-देन भी कर लती है। लोग उसके सम्बन्ध में जो चर्चा करते हैं उससे कनाई की धारणा हो गई थी कि दया धर्म नाम की कोई वस्तु इसके पास भी नहीं फटकी परन्तु आज उसने सवा छ रुपये बिना मांगे ही दे डाले। गीता के पिता या मां ने मांगे होते तो रुपये उनके हाथ से ही आते!

प्रौढ़ा अपने आप ही बोली—पड़ोसी—दुखी—भले आदमी के लड़के—इनका अपमान क्या आंखों से देखा जा सकता है! मेरे रुपये भले ही न मिलें!—कहती-कहती वह गीता के घर की ओर चली गई।

घर में गीता के पिता आर्तनाद के स्वर में काल को कोस रहे थे और भगवान से विचार करने का अनुरोध कर रहे थे।

कनाई के अन्तर में प्रौढ़ा का व्यवहार ही घूम रहा है। इस व्यवहार से उसे कुछ सांत्वना भी मिली है। घर लौट कर भी वह यही सोचता रहा, साथ ही साथ यह विचार भी कई बार उठा कि रुपये उसे स्वयं देने चाहिए। कनाई ने निश्चय किया कि कल सबेरे गीता को बुला कर चार रुपये भेज दूंगा। फिर सोचा गीता के हाथ भेजना ठीक न होगा—उसके भाई हीरेन को बुलाऊंगा। वह अपने घर की छत पर चला गया। वहां से गीता का घर साफ दीख पड़ता है, उसने देखा कि गीता के पिता बिछौने पर पड़े खांस रहे हैं। कनाई के मन में व्यथा हुई, बिचारे दमे के रोगी। ऐसी कठोर व्याधि और यह शीतकाल; इसमें तो खांसी का प्रकोप और भी बढ़ जाता है।

गीता के पिता प्रद्योत भट्टाचार्य का दमा सर्दी का परिणाम नहीं है। रोग जब पहली बार दीख पड़ा था तब प्रद्योत की अवस्था अच्छी थी और वह शाल से लगा कर चेस्टर तक व्यवहार करता था। अब वे मूल्यवान् वस्तुएं नहीं है, चेस्टर गिरवीं हो गये हैं, शाल बिक गये हैं और जो हल्के तथा सस्ते थे वे पुराने होकर फट गये हैं, उनके दो एक टुकड़े अवश्य हैं जिन्हें प्रद्योत रात को सिर पर लपेटता है।

प्रद्योत के दमा और खांसी अजीर्ण रोग के फल हैं। अच्छा पहनने से भी अधिक उसे अच्छा खाने की धुन रही है। अजीर्ण

अर्थात् रोग का कारण अब गौण होगया है, उसके स्थान पर मुख्य हेतु अजीर्ण करने वाली वस्तुओं का अभाव बन गया है। अभाव के कारण उसका शरीर सूख गया है, पेट पीठ से मिल गया है; भूखा प्रद्योत जब बीड़ी पीता है तब खांसी आती है और दमा जाग्रत होता है। खांसते-खांसते उसकी आंखें बाहर निकल आने के लिए तत्पर जान पड़ने लगती हैं, जाड़े में भी सारे शरीर में पसीना आ जाता है, मालूम होता है कि दो चार हिचकियां आईं और सब समाप्त हुआ! कभी कभी अधिक उत्तेजना भी रोग को जगा देती है और प्रद्योत की शामत आ जाती है।

प्रद्योत के पूर्वज कलकत्ते के एक उपनगर—ब्राह्मणधर्म के लिए विख्यात एक गांव में रहते थे। उनके पास अच्छी जजमानी, पक्का भवन और पर्याप्त यश था। प्रद्योत के प्रपितामह निष्ठा-वान् और ख्याति प्राप्त पण्डित थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पहले चरण में उन्हें फोर्टविलियम कालेज में अध्यापन के लिए निमन्त्रित किया गया था परन्तु उन्होंने म्लेच्छ की नौकरी करना स्वीकार नहीं किया। वे शूद्र से दान भी न लेते थे। उनकी इस मनोवृत्ति का ही प्रभाव है कि प्याज को इस घर में अब तक 'रामफल' कहा जाता है। प्याज का यह नामकरण भी उनके समय में नहीं अपितु उनकी मृत्यु के बाद, उनके पौत्र अर्थात् प्रद्योत के पिता द्वारा हुआ है।

प्रद्योत के बाबा पुरोहित थे। उन दिनों कम्पनी के साथ व्यापार करने वाले कलकत्ते के कायस्थ और वैश्य वैभव सपन्न

और प्रभावशाली हो गये थे। साहबी खाना हजम करने के लिए आध्यात्मिक गोली का आदर वे वैभव और प्रभाव से कम न करते थे। प्रद्योत के बाबा ने उनमें से अनेक को अपना शिष्य बना लिया था और इससे उन्हें इतना लाभ हुआ कि इकमंजिला मकान दुमंजिला हो गया फिर भी उनके अन्तर में क्षोभ था। वे देखते थे कि समाज में उनके शिष्यों की प्रतिष्ठा ही अधिक है। अपने पुत्र को उन्होंने शिष्यों की गरीयसी विद्या पढ़ाने का निश्चय कर लिया। गुरु की गद्दी पर बैठ कर असंख्य प्रणाम और प्रणामी प्राप्त करने पर भी उन्होंने अपने लड़के को अंग्रेजी की शिक्षा दिलाई। ब्राह्मणत्व के संयम और बाधा-बंधन से मुक्त होकर लड़के ने खूब तेल फूंका परन्तु प्रकाश के समारोह में वह जितना मस्त हुआ उतना नाचना न सीख पाया। 'रामफल' के नाम से रसोई में प्याज पकाने के लिए स्वतन्त्र बरतन की सृष्टि तो हो गई परन्तु मेट्रिक परीक्षा का घेरा पार करने में वह असमर्थ हुआ। पिता के प्रतिष्ठा सम्पन्न शिष्यों की सहायता से उसे एक व्यापारी आफिस में नौकरी तो मिल गई परन्तु वेतन बहुत कम मिला। पिता की मृत्यु के बाद उसने अंग्रेजी बालों के साथ-साथ शिखा भी रखी और कुल देवता शालिग्राम की शिला लेकर ऊपरी व्यवसाय के रूप में पुरोहिती भी कर ली। प्रद्योत उन्हींका पुत्र है।

पिता प्रद्योत को स्वाधीन व्यवसायी या दलाल बनाना चाहते थे। इच्छा स्वाधीन व्यवसाय की ही प्रबल थी। कुछ बंगाली धनियों ने कुर्सी-टेबल लेकर आफिस लगाने आरम्भ भी कर दिये थे परन्तु

मूलधन के अभाव में प्रद्योत के पिता ने दलाली को ही पसन्द कर लिया। अपने अनुभव से उन्होंने समझ लिया था कि देने और लेने वाले के बीच में अपना हाथ रखने से दोनों पक्षों से ही उसमें कुछ अवश्य आ जायगा। दलाली का प्रधान मूलधन मुख होता है अर्थात् मनुष्य को बातों से मुग्ध कर लेना ही पर्याप्त हो जाता है, प्रद्योत के पास यह पूंजी थी। उसने 'रामफल' का अगला चरण 'रामपक्षी' भी ढूंढ लिया था और शिखा जड़ से ही साफ करवा दी थी।

प्रपितामह का नाम था हरिदास, पितामह नवीन नाम से विख्यात हुए, उनके पुत्र का नाम हुआ चारुचंन्द्र, चारुचन्द्र के पुत्र प्रद्योत—प्रद्योत ने दलाली आरम्भ की और सफलता मिली, प्रतिदिन कुछ न कुछ अर्थ लेकर घर लौटते। अति भोजन का आरम्भ भी यहीं से हुआ—रोग का बीज यहीं पड़ा। होटलों में पार्टियों को खिलाते समय दो-चार चाप और कटलेट स्वयं भी खा लेते थे।

दलाली के बाद प्रद्योत ने 'सेल-परचेज बिजनेस' में हाथ लगाया, तब चाप और कटलेट का भोजन अभ्यास बन गया। व्यवसाय बुद्धि में परिपक्वता प्राप्त करने के बाद बाजार का देना न देने और लेना हजम कर जाने के लिए एक दिन दीवाले की दरख्वास्त दे दी। पूर्वजों का घर बेंच कर कलकत्ते में स्त्री के नाम से एक नया मकान ले लिया और उसमें बैठ कर मछली की फाई, मटन-मांस का कोरमा और 'रामपक्षी' का कटलेट उड़ाने में ही

कर्म हीन दिन बीतने लगे। अब रोग का बीज अंकुरित हुआ, पेट में वायु बढ़ने लगी, प्रद्योत बैठे-बैठे डकारें लेने लगे।

उधर मुकदमा चला। कच्चे हाथ की करामातें खुल गईं। ब्याज समेत बाजार का देना चुकाने में बैंक का खाता ही खाली नहीं हुआ स्त्री के नाम का मकान भी बिक गया। प्रद्योत बाजार में तेल के पकौड़े खाकर चाप और कटलेट का अभ्यास पूरा करने लगे। अंकुर पल्लवित हो गया। वायु ऊपर चढ़ने लगी और खाँसी के साथ दमा दीख पड़ने लगा।

प्रयत्न करने से प्रद्योत को एक नौकरी मिल गई। अपना घर छोड़ कर उसने अच्छे मुहल्ले में एक किराये का घर लिया और खांसते-खांसते दफ्तर जाने लगा। तेल के पकौड़े फिर भी चलते रहे। कभी-कभी सस्ती मछली भी मिल जाती थी। संभव है उसका जीवन इसी तरह कट जाता परन्तु एक दिन योरोप में पोलैंड के एक टुकड़े पर युद्ध आरम्भ हो गया। धीरे-धीरे बारूद के भण्डार की तरह सम्पूर्ण योरोप जलने लगा। उस आग की आंच भारत भी पहुंची। बीच में सहस्रों मील का अन्तर और सात समुद्र हैं फिर भी वहां की आग से यहां का सोना-चांदी गलने लगा। व्यवसाय के बाजार में उलट-पुलट दीख पड़ी। 'रिटेंचमेंट' होने लगी और पहले धक्के में ही प्रद्योत की नौकरी उड़ गई। बेकार होकर वह इस बस्ती में रहने लगा। अब पैसों के अभाव में तेल के पकौड़े नहीं मिलते, दोनों समय पेट भरना भी कठिन है परन्तु दमा महीरुहमें परिणत हो गया है, अति आहार से जिसकी उत्पत्ति हुई है

उसकी वृद्धि अनाहार में भी हो रही है। उसकी जड़ जीर्ण शरीर के प्रत्येक कोष में जम गई है—वहीं से उसे रस मिलता है—अब पाकस्थली के अजीर्ण रस की आवश्यकता उसे नहीं रही।

गीता की मां सरोजिनी प्रद्योत की छाती में गरम तेल रगड़ रही हैं। बारह-तेरह वर्ष का लड़का हीरने पंखा झल रहा है। गीता पानी गरम करने में व्यस्त है। गरम पानी में सोडा-बाईकार्ब मिला कर पोने से दमे के रोगी को लाभ होता है। आज सोडा नहीं है, शायद गरम पानी से भी उपकार हो जाय इसी आशा से गीता परिश्रम कर रही है।

प्रौढ़ा ब्राह्मणी बैठी है, सहानुभूति से भरी बातें कर रही है—आश्वासन दे रही है। प्रद्योत के साथ उसका परिचय है। खांसते-खाँसते प्रद्योत ने कहा बामुन दीदी, अब तुम जाओ!

प्रौढ़ा बोली—अच्छा फिर आऊँगी। हीरेन मेरे साथ आ। मुट्ठी भर चावल पड़े हैं, लेता आ!

प्रद्योत ने शायद खांसी से बेचैन हो कर ही करवट बदल ली।

—चार—

दूसरे दिन सबेरे अपनी जेब में हाथ डालते ही कनाई चौंक पड़ा। कल जो चार रुपये रखे थे, वे न मिले। कहां गये? किस ने लिए? उसके ओठों पर व्यङ्ग पूर्ण निष्ठुर मुस्कान दीख पड़ी। लेने वालों का अभाव नहीं है परन्तु सार्लेक होम्स जैसा जासूस भी यह पता नहीं लगा सकता कि लिये किसने हैं। फिर भी निश्चित

है। कि किसी दासी ने हाथ नहीं मारा। इच्छा ने कहा, आज से यह घर छोड़ ही दिया जाय।

—कानू!

कनाई ने देखा, मां आ रही हैं। वह रुक गया।

—कल रात में चार रुपये मैं ले गई हूं।

कनाई बोला नहीं, उनके मुंह की ओर देखता रहा परन्तु उसकी दृष्टि कठोर हो गई।

मां ने कहा, कालेज के रुपये अगले महीने दे देना। तू इस तरह क्यों देख रहा है? गृहस्थी का हाल नहीं देखता!

कनाई मुस्कराया।—और मेरा हाल कौन देखेगा?

—संसार में स्वार्थत्याग ही सब से बड़ा धर्म है बेटा! तू पहले तो ऐसा न था, अब कैसे हो गया?

कनाई चुपचाप बाहर चला गया।

आज रविवार है। ट्यूशन की भी छुट्टी रहती है परन्तु छात्र की परीक्षा निकट है, इसी लिए वह आज भी जा रहा है।—आज रविवार है, कनाई को कुछ भरोसा हुआ। नीला से भेंट भी न होगी।

कनाई का दुर्भाग्य। नीला आज भी केशवसेन स्ट्रीट के मोड़ पर खड़ी है। नेपी भी उसके साथ है। नेपी ने उंगली से इशारा किया। कनाई ने समझ लिया कि इशारे का निशाना वही है। दोनों ट्राम पर चढ़े—नीला ने पूछा—आप—

कनाई ने सूखे गले से कहा, हां किन्तु आप कहां? आज तो रविवार है।

—यह क्या? क्या आप न जांयगे? नीला के स्वर में विस्मय झलका।

कनाई को याद आया। उनकी समिति के उद्योग से मेदिनीपुर के पीड़ितों की अवस्था का प्रतिवाद करने के लिए एक सभा हो रही है। फीकी मुस्कान के साथ कनाई ने कहा, ओह, आप आज की मीटिंग के सम्बन्ध में कह रही हैं?

—अवश्य बोलने वालों में आपका नाम है।

—किन्तु—

—किन्तु क्या? क्या सचमुच न जांयगे? विजय दा' भी यहां नहीं है—कलकत्ते से बाहर गये हैं। आप जायेंगे नहीं—परन्तु क्यों? नीला कुछ उत्तेजित हो गई—ट्राम के अन्य यात्रियों की उपस्थिति भी शायद भूल गई।

नेपी ने व्यग्र होकर कनाई का हाथ पकड़ लिया। नहीं, नहीं, कनाई दा' आप अवश्य चलें।

—जाकर क्या करूंगा? गरमागरम भाषण दे देने से ही क्या उनका दुख दूर हो जायगा? या सरकार भयभीत होकर सहायता की ठीक व्यवस्था करने के लिए चिन्तित हो जायगी? मुझे तो यह सब नाटक के भीम का अभिनय जैसा जान पड़ता है।

नीला बोली—परन्तु प्रतिवाद और प्रतिकार का जितना

अधिकार हमें मिला है वह भी ग्रहण न करना कायरता है—घोर कायरता! वह मुंह फिरा कर बैठ गई।

कनाई स्तब्ध बैठा रहा। नेपी भी बोलने का कोई सुयोग न ढूंढ़ सका। ट्राम के यात्रियों ने घटना को आधार बना कर रसीली आलोचनाएं करना पहले से ही प्रारम्भ कर रखा था। समाज और धर्म ने संयम और शीलता के नाम पर सैकड़ों अनुशासनों की रचना की है। इन अनुशासनों के द्वारा रोकी गई मानव-मन की कामना समालोचना के रूप में प्रकट होती है। चारो ओर से जकड़ा हुआ मनुष्य बंधनों का अभ्यस्त हो जाने पर भी दांत से उसे कुतरता रहता है।

कनाई ने सुना, कोई कह रहा है—पालिटेक्स आज कल खूब जम रहा है—खूब रसीला हो रहा है।

दूसरे ने कहा, विशेषतः इनकी पार्टी में। कहते हैं, इनकी पार्टी में लड़कों से लड़कियों की संख्या अधिक है।

गाड़ी गोलदीघी के पास पहुंच कर खड़ी हुई। सामने कालूटोला स्ट्रीट है। नीला और नेपी उतर गए। यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट में सभा है।

एक भद्रजन बोले—बाप रे! पदक्षेप से गाड़ी तक हिला गई।

कनाई शून्य दृष्टि से देखता रहा।

मेडिकल कालेज का मोड़ पार करते ही गाड़ी फिर खड़ी हो गई। बांई ओर शिवमन्दिर है, इधर कालेज की दीवाल के पास फुटपाथ पर दीहातियों का एक दल बैठा है। एक स्त्री अविराम

रो रही है। कनाई को दृश्य बहुत करुण जान पड़ा। वह ट्राम से उतर पड़ा।

स्त्री छाती फाड़ कर रो रही थी—अरे मेरे लाल—ओ मेरे हीरे! तुझे आंधी-पानी में पाला था, मेरे बेटा!

दौड़ाती मेदिनीपुर के रहने वाले हैं। तूफान ने उनके घर मिट्टी के ढेर बना दिए हैं। पशु बह गये हैं, बाढ़ खेती की भूमि को बालू से पाट गई है। अन्न नहीं—प्यास बुझाने के लिए पानी का भी ठिकाना नहीं रहा—जलाशयों का जल भी नमकीन हो गया है। ये सब इतनी दूर चल कर यहां अन्न ढूंढ़ने आये हैं। पेट की आग से बेचैन होकर स्त्री किसी घर से जूठन मांगने जा रही थी, दुर्बल बच्चा मां के पीछे था—सड़क पार करते समय लारी के नीचे आ गया।

एक दूकानदार ने बताया, दुर्घटना मेरे सामने हुई है। हां हां करते-करते बिचारा लारी के नीचे दब गया।

एक दर्शक ने पूछा—लारी का नम्बर लिया है?

—लिया क्यों नहीं। आटा मिल की लारी थी—मैदे की बोरियां लदी थीं। नम्बर—

कनाई लौटा। ट्राम की प्रतीक्षा करना भी कठिन हो गया। पैदल यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट पहुंचा। सभा आरम्भ हो गई थी। नेपी स्वयं सेवक के स्थान पर खड़ा भीड़ नियन्त्रित कर रहा था। कनाई को देख कर वह खिल गया। कनाई एक किनारे बैठ गया। विख्यात किसान नेता नूरुलहक बोल रहे हैं—हम भी मनुष्य हैं—

मनुष्यों की भांति हम भी जीवित रहने का अधिकार रखते हैं और जीवित रहना चाहते हैं। हम क्यों मरें—क्यों कष्ट सहें? यह अन्याय है— घोर अन्याय है। हम इसका विरोध करते हैं।

मंच के नीचे एक मेज के आस-पास पुलिस के कर्मचारी बैठे हैं, वे शार्टहैण्ड में भाषण नोट कर रहे हैं। इन सांकेतिक अक्षरों को प्रचलित लिपि में परिवर्तित करने के बाद परीक्षा की जायगी कि बोलने वाले ने कहीं अपने अधिकार की सीमा तो पार नहीं की। दूसरी ओर समाचारपत्रों के सम्वाददाता हैं।

भाषण समाप्त होते ही नीला 'माइक' के सामने आई। वह 'एनाउंसर' की ड्यूटी पर है। उसने घोषणा की, इसके बाद हमारे साथी कनाई चक्रवर्ती बोलने वाले थे परन्तु वे अनुपस्थित हैं। उनके स्थान पर हमारे साथी अब्दुल रहमान बोलेंगे। हम जानते हैं कि इस सभा का और इन भाषणों का कोई परिणाम न होगा। परन्तु प्रतिवाद करने का अधिकार हम क्यों छोड़ दें? प्रतिवाद के परिणाम की निराशा से निष्क्रिय होकर घर में बैठ रहना पंगुता जैसी मारात्मक व्याधि है। कापुरुष भी एक दिन साहस समेट कर वीर की भांति दर्प के साथ खड़ा हो सकता है परन्तु इस व्याधि ने जिस पर आक्रमण किया है, उसका निस्तार नहीं हो सकता। जीवित होते हुए भी वह मृत है।

हाल के बीच वाले मार्ग से कनाई मंच के सामने पहुंचा। नीला के मुख का रंग न जाने कैसा हो गया। सभापति ने धीमे स्वर में कहा, कनाई बाबू! उंगली से दिखा भी दिया परन्तु नीला

न बोली। सभापति ने स्वयं उठ कर घोषणा की—कनाई बाबू आ गये हैं। कार्यक्रम के अनुसार पहले वही बोलेंगे। मिस्टर रहमान उनके बाद भाषण करेंगे।

कनाई 'माइक' के सामने खड़ा हुआ। उसने कुछ अधिक नहीं कहा। सड़क पर देखी घटना सुनाई और बोला, मेदनीपुर से भोजन की खोज में कलकत्ते आने वाला बच्चा आटे से भरी लारी के नीचे कुचल गया है। घटना को देख कर मुझे रवीन्द्रनाथ के वे शब्द याद आ गये हैं जो उन्होंने मिस राथबोन को लिखे थे—"सम्पूर्ण ब्रिटिश नौ सेना अविश्रांत परिश्रम के साथ खाद्य वस्तुओं के भण्डार इंग्लैंड के बन्दरों पर पहुंचा रही है। और दुर्भिक्ष पीड़ित हमारे देश में खाद्य की एक गाड़ी भी इस जिले से उस जिले में पहुंचाने की व्यवस्था नहीं होती।"

भाषण समाप्त करके वह बाहर चला गया।

प्रवेश द्वार पर पुलकित नेपी ने कनाई के हाथ पकड़ लिए और आवेग के साथ कहा, सुन्दर, चमत्कार, कनाई दा! इससे अधिक नेपी और कुछ कह भी नहीं सकता। उसके अन्तर में आवेग है—उच्छ्वास है परन्तु वह आँखों की दृष्टि और मुख के रक्तोच्छ्वास में दीख पड़ता है—बिचारा उसे भाषा में व्यक्त नहीं कर पाता। नम्रता, विनय और मधुर स्वभाव के आदर्श ने शैशव से ही उसे इतना प्रभावित किया है कि उसकी प्रचुर प्राणशक्ति भी कलरव के साथ प्रकट नहीं होती। उसकी कर्मशक्ति अदम्य एवं अक्लांत है, उसकी गति बाधाहीन भी कही जा सकती है परन्तु,

उसके कार्य में आडम्बर का समारोह नहीं होता।

कनाई ने स्नेह के साथ कहा, तुझे पसन्द आया, मुझे और क्या चाहिए।

नेपी अप्रतिभ की भांति हंसा। यही उसका स्वभाव है।

—अच्छा, मैं चला।

—एक बात थी कनाई दा'—

कनाई ने हंसकर कहा, बोल।

नेपी बोला, पार्टी से वर्करों का एक दल रिलीफ के लिए मेदनीपुर जाने वाला है। आप उसके नेता बन कर चलें और—जूते की नोक से वह भूमि पर तकीरें खींचने लगा। कनाई ने समझ लिया नेपी लज्जित हो गया है और जब लज्जित हुआ है तब आगे की बात अवश्य उसीसे सम्बन्ध रखती है। वह मुस्करा कर बोला, और तुम्हें उस दल में ले लेने के लिए कह दूं। क्यों?

—हां

एक लम्बी सांस लेकर कनाई बोला, तेरे लिए कह दूंगा परन्तु मैं नहीं जा सकता। मेरे विद्यार्थी की परीक्षा निकट है।

कनाई को स्मरण हो आया कि मुझे टयूशन पर जाना है और देर हो गई है। अच्छा—कह कर वह चल पड़ा।

नेपी चुपचाप खड़ा रहा। लाउड स्पीकर पर कामरेड रहमात का भाषण गूंज रहा है परन्तु कनाई के अन्तिम शब्दों के स्वर में करुणा जैसी कोई ऐसी वस्तु थी जिसके स्पर्श से वह अन्यमनस्क हो गया। नीला की आवाज ने उसे चैतन्य किया।

—नेपी !

—दीदी

—कनाई बाबू चले गये ?

—हां

नीला कुछ देर चुपचाप खड़ी रही फिर जैसे झटका मार कर अपने आपको सचल किया और मंच की ओर चली गई।

नेपी की बात से कनाई का मन चंचल हो गया है। वह सोच रहा है, मेरा जीवन वियोगान्त परिणति की ओर बढ़ रहा है। एक ओर बाहर की पुकार बुला रही है, दूसरी ओर घर के सहस्र बंधनों ने कस रखा है। मां अपने आदर्श में बांध कर मुझे अपने ही पथ पर खींच रही हैं। यह नौकरी मैं घर के लिए ही तो कर रहा हूँ। कालेज स्ट्रीट पार कर सेण्ट्रल एविन्यू के फुटपाथ पर पैर रखते ही वह चौंका। साइरन बज रहा है?—साइरन? अमेरिकन सैनिक लारियों पर दृष्टि पड़ते ही भूल का पता चला। साइरन नहीं यह उनके हार्न की आवाज है, उनका हार्न भी ऐसा ही है। प्रकाण्ड लारियों की लम्बी पंक्ति चली जा रही है।

सामने कण्ट्रोल की एक दुकान पर लम्बा 'क्यू' खड़ा हो गया है। स्त्रियों का 'क्यू' है। हिन्दू, मुसलमान, पश्चिमी, बंगाली, छूत-अछूत, दासियां और गृहस्थ घरों की विधवा-सधवा-कुमारियां सब पांत बांधे खड़ी हैं। बुरका नहीं, घूंघट नहीं, सिरके बाल धक्कम-धक्के में बिखर गये हैं और शीत की वायु में उड़ रहे हैं। मुख पर अपरिसीम उद्वेग है—कब उस दुकान के सामने पहुंचूंगी! आंखें

दुकान पर ही लगी हैं। इनके बुरके और घूंघट शायद सदा के लिए खिसक गये हैं। इस चरम दुर्गति में पहुंच कर इन्हें आवरण से मुक्ति मिली है। कनाई कुछ मुस्कराया। उधर फुटपाथ पर भूखे गृहहीनों का समूह बैठा है। भीख मांगना इनका पेशा नहीं है—परन्तु आज ये भिखारी हो गये हैं।

अद्भुत अवस्था है। संसार में कहीं भी यह स्थिति आज भी नहीं आई परन्तु इसके पंजे से बचने का उपाय भी नहीं है। हिंसा क्रोध और अपने आपको बचा लेने की व्याकुलता से भरे युद्ध रत राष्ट्र, राष्ट्र के इशारे पर नहीं, राष्ट्र नायकों के इंगित पर साँस खींच कर दौड़ रहे हैं और अपने साथ समस्त संसार की जीवन शक्ति दौड़ा रहे हैं। एक वर्ष में बीस-तीस वर्ष पार होते जान पड़ते हैं। एक वर्ष में बीस और तीस वर्ष का लोहा, तांबा, चांदी, सोना आदि सम्पत्ति एवं शक्ति खर्च हो रही है। बीस वर्ष के परिश्रम में मनुष्य की जितनी शक्ति लगती, वह एक वर्ष में ही समाप्त हो रही है। धनी जितना धन बीस वर्ष में संचित करता, उतना उसने एक वर्ष में ही समेट लिया है। दूसरी ओर दरिद्रों के दल को एक वर्ष में ही बीस वर्ष की वंचना भोगनी पड़ रही है। अन्न वस्त्र के दारुण अभाव के साथ संसार के मानव पर विशेषतः इस अभागे देश के मन्दभाग्य निवासियों पर परमाणु ने भी निष्ठुर एवं हिंसक रूप में आक्रमण किया है।

—पांच—

चक्रवर्ती परिवार भी इसी संसार में रहता है, उस पर भी बीस वर्षीय पतन का प्रभाव पड़ा है और भूमि के जो दो एक टुकड़े इधर-उधर पड़े रह गये हैं उनको भी बेंच डालने की कल्पना-जल्पना हो रही है। परन्तु गीता के घर की अवस्था दो-एक सप्ताह से विपरीत दिशा की ओर बढ़ती दीख पड़ती है। प्रौढ़ा ब्राह्मणी का आवागमन बराबर बढ़ रहा है और प्रद्योत का तीक्ष्ण स्वर भी नहीं सुन पड़ता। कनाई के हृदय में प्रौढ़ा के लिए आदर उत्पन्न हो गया है।

कनाई की बहन उमा ने एक दिन कहा, गीता का शायद ब्याह होगा।

—ब्याह होगा ? कनाई को कुछ आश्चर्य हुआ।

—हां, वह बूढ़ी रोज आती है न !

कनाई जानता है कि प्रौढ़ा ब्याह कराने का व्यवसाय भी करती है परन्तु केवल मध्यस्था ही तो विवाह नहीं करवा सकती—रुपया भी चाहिए। फिर भी उमा की बात ने उसके मन में आशा जगा दी, दहेज लिए बिना ही ब्याह करने वाले व्यक्ति भी तो संसार में हैं। कनाई ने कामना की कि ऐसा ही हो। कोई दया के नाम पर भी गीता को ग्रहण कर लेगा तो उसे हानि न होगी। बिचारी गीता भी दया के अतिरिक्त और कोई वस्तु ग्रहण करने की शक्ति नहीं रखती।

मां आईं। वही उदास और सकरुण मुख एवं आत्मत्याग की प्रेरणा से भरी दृष्टि !—कानू !

कनाई ने मुस्करा कर उनकी ओर देखा।

—वेतन का समय अभी नहीं हुआ ?

—नहीं, अभी तो पन्द्रह तारीख भी नहीं आई।

—परन्तु रुपये तो चाहिये।

—मांगने से शायद मिल जांय किन्तु—

—किन्तु क्या ?

—कालेज की फीस पिछले महीने में नहीं गई।

—तूने तो कहा था—तीन-चार महीने बाद भी दी जा सकती है।

—दी जा सकती है परन्तु तीन-चार महीने की इकट्ठी दी कैसे जायगी ?

मां ने एक लम्बी सांस ली—तुझे ही कोई उपाय करना पड़ेगा बेटा ! न हो तो, एक ट्यूशन और देख ले।

कनाई मुस्कराया, यदि वह कहे कि मैं कब पढ़ूंगा तो मां अपने आदर्श की चर्चा छेड़ देंगी। वह बोला, अच्छा, चेष्टा करूंगा।

मां के मुंह पर हंसी दीख पड़ी। बोलीं—आ, चाय पी ले। रुपये आज लेते आना। कनाई ने उनका अनुसरण किया।

आकाश के एक कोने से उठा हुआ एक प्रचण्ड शब्द क्रमशः सिर के ऊपर आने लगा। घर के बच्चे चिल्लाए—हवाई जहाज ! हवाई जहाज !

उमा उत्साह के साथ ऊंचे स्वर में गिनने लगी—एक, दो, तीन, चार—

कनाई ने देखा, कम से कम पचास वायुयान होंगे। चाय पी कर वह बाहर निकला और बड़ी सड़क पर ट्राम के रास्ते के साथ साथ चलने लगा। फुटपाथ के जिन टुकड़ों के ऊपर बरामदे बने हैं उनमें निराश्रित मनुष्य लेटे हैं—इनकी संख्या बराबर बढ़ रही है। कलकत्ते की जनसंख्या में भी वृद्धि हो रही है।

अकस्मात् एक गली के भीतर से किसी ने पुकारा, कनाई बाबू!

स्वर ने बताया, मैं नारी कण्ठ से आया हूं। कनाई ने देखा—नीला है। कनाई को देख कर वह बगल की गली से निकल रही है। यूनिवर्सिटी इंस्टीटयूट की मीटिंग के बाद नीला से भेंट नहीं हुई किन्तु वह यहां और इतने सबेरे? विस्मय के साथ उसने पूछा आप? यहां?

नीला ने हंसकर उत्तर दिया—क्या पूंछते हैं! श्रीमान् नेपी को ढूंढ़ने आई थी।

—नेपी को ढूंढ़ने? कहां है वह? मेदिनीपुर से लौट आया?

—एक सप्ताह बाद ही लौट आया था। इधर चार-पांच दिन से फिर छू हो गया है। पिता जी अग्नि शर्मा हो रहे हैं। मां चिन्तित हैं। पार्टी के आफिस से पता चला कि रमेन कल लौटा है, उसके पास आई थी।

रमेन नेपी का समवयसी और पार्टी का उत्साही सदस्य है। नेपी के साथ उसकी मित्रता भी गहरी है।

कनाई ने पूछा—कुछ पता चला ?

—हां, रमेन ने बताया है कि वह आज सबेरे की गाड़ी से आवेगा। फिर हंस कर बोली, मुसीबत मेरी है। मां मुझे ही कोसेंगी। पिता जी अवश्य हमारे काम में 'इण्टरफियर' नहीं करते परन्तु नेपी दीवाना हो रहा है। पिता जी जब उसके सम्बन्ध में मुझसे पूछते हैं तब मैं अपने आपको अपराधी समझे बिना नहीं रहती। मैंने ही उसे पार्टी में पहुंचाया है।

कनाई बोला—परन्तु नेपी तो कभी कोई अन्याय नहीं कर सकता मिस सेन! आप अपने आपको व्यर्थ में ही अपराधी क्यों समझती हैं ?

नीला कुछ न बोली, शायद बोल न सकी। आत्म-अपराध बोध की ग्लानि में जो अशांति है उसे कनाई की बात से सांत्वना की शांति मिली। यह कृतज्ञ दृष्टि से कनाई की ओर देखती ही रही।

कनाई बोला, चलिए—आप घर जा रही हैं न ?

आराम की एक सांस लेकर नीला बोली—चलिए।

चलते चलते कनाई ने कहा, आप जानती हैं, जीवन की सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' क्या है ?—कम से कम मुझे जो सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' जान पड़ती है ?

सुनने की प्रतीक्षा में नीला चुप रही।

कनाई बोला—हम जिस मार्ग पर चलना चाहते हैं, जिस आदर्श को अपनाना चाहते हैं; संसार के वातावरण की बाधाएं

पार कर उसकी ओर बढ़ न पाना ही सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' है। वातावरण अवश्य बाधा नहीं डालता—बाधा डालता है अपना हृदयावेग—अपने हृदय की माया-ममता-स्नेह-प्रेम। नेपी अद्भुत है। मेरे लिए तो यही आश्चर्य है मिस सेन कि वह इतनी छोटी आयु में ही इन सब बाधाओं को कैसे पार कर गया है।

नीला मुस्कराई।—नेपी में कोई दोष तो आप देखते ही नहीं।

कनाई भी मुस्कराया।—नहीं देखता, दीख ही नहीं पड़ता।

नीला बोली—परन्तु मेरे सामने तो पिता और मां का भी दृष्टिकोण है? मेरे पिता को आप नहीं जानते। वे अत्यन्त उदार हैं! कभी—

ट्राम आगई और दोनों उस पर चढ़ गये। नीला को लेडीज सीट पर एक प्रौढ़ा के पास स्थान मिल गया। कनाई को खड़ा रहना पड़ा। नीला की बात अधूरी ही रह गई। वह अपने पिता का दृष्टिकोण सोचती हुई शून्य दृष्टि से बाहर की ओर देखती रही।

केशव सेन स्ट्रीट में नीला का घर है। कालेज स्ट्रीट की मार्कीट के सामने गाड़ी खड़ी हुई परन्तु नीला न उतरी। कालेज स्क्वायर के सामने पहुंचते ही वह उठी और कनाई से बोली—आइये!

कनाई ने सोचा, साधारण 'हां' या 'ना' से भी गाड़ी के यात्रियों में मक्खियों जैसी भनभन होने लगेगी। वह चुपचाप उतर पड़ा। उसने समझा, बिचारी के मन से नेपी की चिन्ता अभी दूर नहीं हुई।

गोलदीघी के पार्क में पहुंच कर कनाई ने पूछा—कहीं बैठेंगी?

नीला ने कनाई की ओर परिपूर्ण दृष्टि से देख कर कहा, आप से मुझे क्षमा मांगनी चाहिए थी परन्तु अभी मांग नहीं पाई।

—कैसी क्षमा?

—उस दिन यूनिवर्सिटी इंस्टीटयूट में मैंने आपको—

कनाई हंसा और बीच में ही बोल पड़ा—नहीं, नहीं, आपने कोई अनुचित बात तो न कही थी और फिर उसका लक्ष्य भी मैं न था। आपने तो साधारण भाव से ही—

नीला ने भी बाधा डाली—नहीं, नहीं मैंने आपको लक्ष्य करके ही कहा था।

कनाई स्तब्ध हो गया, दोनों मंथर गति से चल रहे थे। नीला मृदु स्वर में बोली—कनाई बाबू!

कनाई बोला—आपने यदि मुझे लक्ष्य करके ही कहा था तो भी कोई दोष नहीं किया। वास्तव में मैं अपना काम नहीं कर पाता। अपने अन्तर के प्रश्न का मैं स्वयं ही उत्तर नहीं दे पाता।

कनाई की बात से नीला के मन में सहानुभूति जागी, कनाई के दुख का आभास भी उसे मिला। वह बोली—"बात क्या है कनाई बाबू?"

कनाई चुपचाप चलता रहा।

नीला ने फिर पूछा—बताने में कोई आपत्ति है ?

—आपत्ति ? —एक लम्बी सांस लेकर कनाई ने कहा, वह मेरे परिवार की कहानी है—लम्बा इतिहास है।—दो क्षण मौन रहकर वह फिर बोला—पार्टी का काम मुझसे नहीं हो सकता मिस सेन।

—क्यों ?

—कहा तो वह लम्बा इतिहास है। इसके अतिरिक्त—

कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद नीला ने फिर उकसाया—कामरेड।

—आज रहने दो, फिर किसी दिन बताऊंगा।

नीला चुप हो गई।

कनाई फिर बोला—मैं शायद किसी दिन—वह कहने जा रहा था—मैं शायद किसी दिन पागल हो जाऊंगा परन्तु रुक गया। सामने लगी घड़ी पर निगाह पड़ते ही वह व्यस्त होकर बोला—आठ बज गये—बहुत देर हो गई—मैं जा रहा हूं, नमस्कार !

लम्बे-लम्बे पग रखता हुआ कनाई कालेज स्ट्रीट की ओर बढ़ गया। नीला तालाब के किनारे की रेलिंग पकड़े खड़ी रही। कुछ देर बाद उसे भी ख्याल आया—आफिस जाने का समय आ रहा है।

अपने घर के पास पहुंच कर नीला ने देखा, दरवाजे पर अच्छी खासी भीड़ जमा है। भीड़ के बीच में कोई गा रहा है। नीला समझ गई कि पिता किसी भिखारी को पकड़ लाए हैं—यह

भी उनकी एक मौज है। भिखारी में कोई गुण हो तो वे उसे खिलाए-पिलाए बिना नहीं जाने देते। महंगी के कारण उन्होंने अपनी इस तरंग को संभालने की चेष्टा की है। मुंह से वे कुछ नहीं कहते फिर भी नीला जानती है कि अपने स्वभाव को बदलने की चेष्टा में उन्हें बहुत कष्ट होता है। मन की तरंग से विवश होकर किसी दिन किसी को बुला लाते हैं तो घर भर के सामने सफाई देते फिरते हैं—आज कल नीला को ऐसी सफाई विशेष रूप से सुनाते हैं। नीला समझती है कि आज कल परिवार के खर्च का कुछ भार वह भी उठाती है इसीलिए पिता उसके सामने सफाई देते हैं परन्तु उसे इस बात से दुःख होता है। फिर भी दोनों अपने-अपने दुःख को न समझने का बहाना सा करते रहते हैं।

नीला को देखते ही देवप्रसाद बोले—सुन, सुन, नीला, लड़के का गीत तो सुन। गीत इसने खुद बांधा है। देहाती भिखारी का लड़का है बिचारा !

देवप्रसाद का ऊंचा स्वर सुन कर लड़के ने गीत रोक दिया, वह बोला—नहीं बाबू, हम भिखारी नहीं हैं। मेरा घर तो वर्दवान जिले में है। वहां हमारा घर-दुआर है—बाप किसानी करते थे। लड़ाई ने सर्वनाश किया है। अठन्नी सेर चावल बिक रहा है। बाप मेहनत-मजूरी करते हैं—खुराक कम है—उनका गुजारा हो जाता है, मेरा पेट नहीं भरता। मेरा एक हाथ भी तो नहीं है—कपड़े के भीतर से उसने सूखी डाल जैसा आधा हाथ बाहर निकाला और हंस कर बोला—मैं गा-बजा कर पेट भरता हूं। लड़ाई-वड़ाई बन्द

होगी तब घर लौटूंगा नहीं तो किसी दिन रास्ते में ही राम नाम सत्य हो जायगा।—वह भूमि पर लेट गया और आंखें उलट कर तथा जीभ बाहर निकाल कर मरने का अभिनय करने लगा। बिचित्र लड़का है—पथ में मृत्यु की कल्पना करता है और हंसता है—हास्य भी अकृत्रिम और स्वच्छन्द है।

लड़के की कहानी सुनकर सब चुप हो गये।

वह फिर बोला—सुनिए, गीत सुनिए। हवाई जहाज का गीत है। देखा है, आपने हवाई जहाज ? देखा क्यों न होगा ! आप तो साहब-मेम जैसे लोग हैं और कलकत्ते में तो रोज जहाज उड़ते हैं।

बाएं हाथ के अभाव में उसने घुटनों में खंजड़ी दबाई और दाहिने हाथ से उसे बजाने लगा।

लम्बी चौड़ी गाड़ी आई,
आसमान में देखो छाई !
सर्वनाश करने वाला बम
इसके पेट धरा है भाई !

बीस हाथ के पंख उड़ाती,
ड्राइवर बैठे तीन संघाती !
कल-कब्जे इतने हैं दादा,
गिनते-गिनते मति अकुलाती।

इंजिन चला दिया बाबू ने,
दूरबीन पर आंख लगाई !

कलकत्ते के रहने वाले,
कंपते-कंपते पैर संभाले ।
बम के डर से भाग चले हैं,
'हाय विधाता हमें बचाले !'

अन्न वस्त्र घर छूट गया है,
मरण भाग्य लिप लेकर आई
ऊपर से जापानी कहते,
हम तो भून खांयगे भाई !

नीला बोली—गीत मैं नोट करूंगी ।

देवप्रसाद की आंखें आंसुओं से भर आई थीं ।

घर के भीतर से मां ने आवाज दी—नीला ! नौ बज रहे हैं। देवप्रसाद बोले—तू जा, गीत मैं लिख लूंगा ।

नीला के पिता देवप्रसाद वकील होते हुए भी आदर्शनिष्ठ व्यक्ति हैं । दर्शन शास्त्र में एम. ए. करने के बाद उन्होंने कानून पढ़ा और वकील बने, यहीं वे अपने जीवन में सबसे बड़ी भूल कर बैठे । उनकी कानूनी बुद्धि और आदर्शवाद के बीच में दर्शन शास्त्र ऐसा अड़ता है कि दोनों में द्वन्द हो जाता है और वह द्वन्द समाप्त भी नहीं होता—दो परिवारों के 'पार्टीशन-सूट' की तरह चलता ही रहता है—न आपस में समझौता होता है न किसी पक्ष को विजय मिलती है । नल-दमयन्ती की भांति एक ही वस्त्र पहनने

वाली व्यवसाय बुद्धि और आदर्शनिष्ठा के बीच में दर्शनशास्त्र कलियुग की कैंची बनता और कपड़े के दो टुकड़े कर देता तो भी देवप्रसाद का भला हो जाता परन्तु वह कलह शिरोमणि भगवद्-भक्त नारद का पार्ट करता रहा फलतः शक्ति होते हुए भी देवप्रसाद की वकालत कुण्ठित रह गई और आदर्श की निष्ठा ही प्रमाण बन गई। फिर भी अब तक जो आय हो जाती थी उसीसे उनका काम चल जाता था। लड़के और लड़की को उन्होंने शिक्षा का समान सुयोग दिया था। लड़का अमर एम. ए. पास करने और सिविल सर्विस से लगा कर छोटी मोटी नौकरियों तक के लिए चेष्टा करने के बाद अन्त में पचास रुपये महीने पर एक स्कूल में मास्टर हो गया। युद्ध के प्रारम्भ में स्कूलों की जो दुर्दशा हुई उसमें उसका वेतन घट कर पैंतीस ही रह गया।

आज कल देवप्रसाद की अपनी आमदनी का भी यही हाल है। इधर कुछ महीनों से साधारण श्रेणी के गृहस्थों की आर्थिक दशा इतनी शोचनीय हो गई है कि अदालत के द्वारा अपना न्यायसंगत अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रारंभ में जो खर्च करना पड़ता है उसका जुगाड़ करना भी संभव नहीं रहा। मकानों के कुछ मालिक भी देवप्रसाद के मुवक्किल हैं; वे किराया वसूल करने या घर खाली कराने के मुकदमे प्रायः करते रहते थे परन्तु अब 'इवेक्युएशन' के हल्ले में किराये के लिए दावा करना दूर रहा वे किरायेदार से कड़ा तगादा भी नहीं करते। देवप्रसाद ने कभी झूठे मुकदमे नहीं लड़े, मुकदमे के बीच में भी जब उन्हें अपने मुवक्किल का कपट मालुम

हुआ है तब उन्होंने वकालतनामा रद कर दिया है, इसलिए वे मुकदमों की कमी से दुखी नहीं हैं। अपनी छोटी आय पर भी वे कभी असन्तुष्ट नहीं हुए परन्तु आजकल परिवार के लिए अत्यावश्यक वस्तुएँ एकत्रित करने में भी अपने को असमर्थ देख कर वे विचलित हो जाते हैं।

देवप्रसाद के परिवार का रहन-सहन साधारण है, सन्तानों की शिक्षा के क्षेत्र में वे अवश्य अकृपण हैं। बड़ा लड़का एम. ए. पास कर चुका है, नीला की पढ़ाई भी अप्रतिहत रही है। किसी पदस्थ युवक को दामाद के रूप में प्राप्त करने की इच्छा से देवप्रसाद ने नीला को कालेज तक नहीं पहुंचाया परन्तु यह तो उन्होंने सोचा ही था कि मध्यमवर्ग के परिवार में नीला भी अपनी गृहस्थी का खर्च चलाने के लिए कुछ उपार्जन कर लेगी तो अच्छा होगा। स्त्री शिक्षा के प्रसार को देख कर वे सन्तोष के साथ कल्पना करते थे कि स्वामी को खिला पिला कर आफिस भेजने के बाद नीला भी अध्यापिका का काम करने के लिए किसी शिक्षा संस्था में जायगी। उनकी कल्पना में स्त्री के लिए अध्यापिका के सिवा और कोई नौकरी न थी। युद्ध की उलट-पुलट में परिवार का दुख देख कर नीला ने जब चुपचाप नौकरी करने के बाद उनसे कहा, बाबू जी, मैं ने नौकरी कर ली है तब देवप्रसाद के मन पर गहरी चोट लगी। फिर भी वे चुप रहे। उन्होंने सोचा था कि विश्वविद्यालय की शिक्षा के साथ-साथ नीला ने अच्छे कपड़े पहनने और अच्छे ढंग से रहने की रुचि भी प्राप्त की है। इस रुचि की रक्षा करने के लिए

ही उसने यह मार्ग ग्रहण किया है। देवप्रसाद का यह अनुमान भ्रम निकला। पहले महीने के अन्त में नीला ने ट्राम और जलपान के लिए केवल १५) अपने पास रखे और शेष वेतन उनके चरणों के पास रख कर प्रणाम किया। देवप्रसाद की जो आंखें अपनी दो सन्तानों की मृत्यु पर भी सूखी ही रही थीं वे नीला के वेतन के रुपये हाथ में लेते समय भीग गईं!

देवप्रसाद की अशान्ति और दुःख का कारण उनका सब से छोटा लड़का नेपी है। नाम के लिए वह बी. एस-सी. में पढ़ता है परन्तु रात दिन राजनीति में व्यस्त रहता है। कुछ दिन से वह घर भी कम आता है, देवप्रसाद ने तो एक महीने से उसे देखा भी नहीं। वह गहरी रात में घर आता है और धीमी आवाज से नीला को पुकारता है। अन्तिम दिन देवप्रसाद ने जब उसे देखा था तब नेपी की आवाज से ही उनकी नींद टूट गई थी। क्रुद्ध होकर उन्होंने कहा था, जा, चला जा! मैं मना करता हूं—कोई भी दरवाजा न खोले!

नीला दरवाजा खोलने गई थी लेकिन स्तब्ध हो गई। मां नीचे उतरी थीं परन्तु वे भी किवाड़ों को हाथ लगाने का साहस न कर सकीं। पीछे-पीछे देवप्रसाद भी उतर रहे थे। नेपी इतने पर भी विचलित नहीं हुआ। उसी मीठे स्वर में उसने नीला को पुकारा और बोला, दरवाजा न खोलो, खिड़की से कुछ खाने के लिए दे दो यहीं बरामदे में खा लूंगा। बड़ी भूख लगी है।

देवप्रसाद ने स्वयं दरवाजा खोला था और संक्षेप में कहा

था, आज तुम्हें क्षमा किया परन्तु ऐसे ही घूमना हो तो यहां न आना! आज दो सप्ताह से नेपी फिर गुम है। बीच में एक दिन आया था परन्तु देवप्रसाद ने उसे नहीं देखा। उन्होंने सुना है कि नीला ने भी कम्यूनिष्ट पार्टी में नाम लिखाया है—समझ में नहीं आता कि वे क्या करें। शिक्षा से राजनैतिक चेतना का घनिष्ठ सम्पर्क है। नीला में वह चेतना जाग्रत हुई है तो उसे कैसे दबाएं? दबाने का एक उपाय था। नीला के लिए एक शांति पूर्ण नीड़ ढूंढ़ देते तो नीड़ के प्रति नारी का जो चिरन्तन मोह और आनन्द है उसमें लिप्त होकर नीला भी शायद राष्ट्र और संसार की चिन्ता भूल जाती। परन्तु नीड़ ढूंढ़ना भी तो उनके वश में नहीं है! देवप्रसाद ने एक लम्बी सांस ली। इसी समय नीला आफिस जाने के लिए बाहर निकली। कुछ रुक कर अत्यन्त मीठे स्वर में उसने कहा नेपी आज आवेगा बाबू जी!

—छै—

कनाई की दादी अमावस्या या पूर्णिमा के आगमन को निकट देखकर अपने शरीर में वात वृद्धि की आशंका से अधीर होने लगती हैं। कनाई उनसे कहता है, आकाश की अमावस्या से तुम्हारे पैर का क्या सम्बन्ध है—पैर तो पृथ्वी पर रखा रहता है। अर्थात् वह विज्ञान का विद्यार्थी है, गृह का प्रभाव या भाग्य नहीं मानता। परन्तु आज नीला की भेंट को वह दुर्भाग्य मान रहा है और समझ

रहा है कि इसका कुछ न कुछ फल भी अवश्य मिलेगा। फल का सामना करने के लिए प्रस्तुत होकर वह अपने छात्र के घर पहुंचा। निश्चित समय बीते एक घण्टा हो गया था। पहले उसने सोचा था कि आज नागा करदे परन्तु मां का तगादा याद आगया और किसी कोने से यह इच्छा भी झांकी कि कल-परसों नीला को काफी पिला दी जाय।

छात्र के पिता नये अमीर हैं, नये फैशन का विशाल भवन, संगमरमर के फर्श, अमेरिकन स्टेयर केस, अनेक प्रकार का बहु-मूल्य सामान, मोटरें, कुत्ते और भवन के सामने का शानदार लान—चारों ओर बड़प्पन झलकता है। यह सब कुछ घर के स्वामी के ही पौरुष का परिणाम है—काठ-कोयले के व्यापार से लगाकर रुई, अभ्रक और लोहा आदि अनेक वस्तुओं के क्रय-विक्रय से रस लेकर उन्होंने ईंट, काठ, लोहे और चांदी की यह तिलोत्तमा बनाई है। फाटक पर एक ओर संगमरमर के पट पर काले अक्षरों में और दूसरी ओर कांच के पट पर सुनहरे अक्षरों में तिलोत्तमा लिखा है। कांच के नीचे बिजली के बल्ब लगे हैं। रात में बल्बों की प्रकाश छटा से सुनहरी लिपि अग्नि के अक्षरों जैसी दमकने लगती है।

बरामदे के बीच वाले मार्ग से होता हुआ कनाई पढ़ने-लिखने वाले कमरे में पहुंचा; कमरे में लगी बत्तियां आलोक नियंत्रण के सुन्दर ढक्कनों से मुंदी हैं, दीवाल के साथ लगी अलमारियों में पुस्तकें सजी हैं। अलमारियों के शीशों पर 'शो-केसों' की

तरह कपड़े के बिचित्र परदे पड़े हैं। पुस्तकें अधिकांश अंग्रेजी में और विदेशी कम्पनियों द्वारा प्रकाशित हैं—उनमें 'इनसाइक्लोपीडिया' और 'बुक आफ नालेज' से लगा कर आधुनिक काव्य संग्रह तक सभी विषयों का समावेश है। पहले दिन कनाई इनको देख कर आवाक् हो गया था और सोचने लगा था कि ऐसे शिक्षित एवं संस्कृत वातावरण में रहने वाले व्यक्ति के लड़के को वह कैसे पढ़ायेगा। शंकित होकर वह एक अलमारी के सामने खड़ा होगया था, इसकी उंगली ताले में चाभी लगाने वाले छेद पर पड़े ढक्कन को यों ही हटाने लगी थी परन्तु वह बाल बराबर भी न हिली थी। विस्मित होकर उसने ताले की ओर देखा था और तब निश्चिन्त हुआ था; उसके होठों पर मुस्कान आई थी। ताले में मोरचे की पर्त जमी थी और एक नहीं सब तालों की यही अवस्था थी।

छात्र कमरे में न था। उसकी परीक्षा हो गई है, लिखने पढ़ने की उतनी चिंता नहीं है परन्तु घर के स्वामी ढील देना पसन्द नहीं करते। वे इस लड़के को व्यवसायी नहीं मनीषी बनाना चाहते हैं। चाहते हैं यह प्रचण्ड एवं प्रकाण्ड पण्डित हो—देश भर में इसकी ख्याति फैले—लोग कहें रत्न है। उनके दोनों बड़े लड़के मूर्ख नहीं हैं, अंग्रेजी लिख बोल लेते हैं—कृतित्व की कसौटी पर वे बहुत खरे नहीं हैं परन्तु बाजार में उन्हें शुद्ध स्वर्ण का सम्मान ही मिला है। मालिक इस लड़के को कांट-छांट और घिस-मांज कर हीरा बनाना और उस सोने के ऊपर जड़ देना चाहते हैं। इसीलिए

घिसने और मांजने की इस क्रिया में विराम पसन्द नहीं करते। चार अध्यापक उसे चार घण्टों में गणित, अंग्रेजी, संस्कृत और इतिहास पढ़ाते हैं। कनाई को लड़का बुरा नहीं लगता। वह स्वच्छ-लता में पला है फिर भी उसके शरीर में मेद बहुल लालित्य के स्थान पर सबल पेशियों वाले दृढ़ स्वास्थ्य का पौरुषमय रूप क्रमशः विकसित हो रहा है। अधीर होते हुए भी वह भद्र है, मेधा साधारण है फिर भी उसमें ज्ञान प्राप्त करने का आग्रह प्रबल है। संसार को व्यङ्गपूर्ण और वक्रदृष्टि से देखना कनाई का स्वभाव बन गया है परन्तु जिनको देख कर उसकी वक्र तीक्ष्ण दृष्टि स्वाभा-विक, सरल और कोमल हो जाती है उनमें यह लड़का भी एक है। लड़का कई बार कनाई के घर भी गया है और सुखमय चक्रवर्ती के ऐश्वर्य-देवता का भग्न मन्दिर देखकर विस्मित हुआ है। परि-णाम स्वरूप महीने के रुपये वह कनाई के हाथ में देने का साहस नहीं कर पाता। मास के अन्त में पिता के मोनोग्राम वाला एक बंद लिफाफा देता है और कहता है, सर, यह चिट्ठी! लिफाफा देख कर कनाई अब कोई प्रश्न करता, उसे संभाल कर जेब में रख देता है परन्तु पहले पहल वह पूंछ बैठा था—चिट्ठी?

अशोक ने सिर झुका कर उत्तर दिया था—बाबू जी ने दी है। और फिर वह घर के भीतर चला गया था। कनाई लिफाफा खोला था तो उस-दस रुपये के तीन नये नोट निकले थे।

एक दिन मालिक स्वयं मिले और कहने लगे, मास्टर जी, यह तो आपका बहुत बड़ा अन्याय है। आपको बताना चाहिए था कि आप सुखमय चक्रवर्ती के वंशज हैं।

कनाई की जिह्वा पर एक कठोर उत्तर आगया था परन्तु अपने आपको संभाल कर उसने नम्र होकर कहा था, परिचय देने का कोई अवसर तो आया नहीं।

मालिक ने मोहग्रस्त जैसी शून्य दृष्टि से सामने की ओर देख कर और अतीत का स्मरण कर कहा था, मास्टर जी, जब आपका जन्म भी न हुआ था, मैं भी बच्चा था, तब सुखमय चक्रवर्ती के लड़कों की गाड़ी सड़क पर निकलती थी और लोग हैरानी के साथ देखते ही रह जाते थे।—फिर एक लम्बी सांस लेकर वे बोले थे—रघुपति की अयोध्या और यदुपति की मथुरा ही संसार से लुप्त हो गईं—हम तो साधारण मनुष्य हैं।

कनाई ने कोई उत्तर नहीं दिया, उसकी समझ में नहीं आया कि इस आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के अन्तराल में अतीत के प्रति ममता है या भविष्य में वर्तमान के बिलुप्त हो जाने की अवश्यम्भावी वियोगान्त परिणति का विचार है! कुछ क्षणों में ही मालिक के मुख की पेशियां दृढ़ होगईं थीं और दीप्त दृष्टि से कनाई की ओर देखते हुए उन्होंने कहा था, मैंने अपनी सम्पत्ति का ट्रस्ट बना दिया है, उसका बटवारा न होगा, किसी को बेचने का अधिकार भी न रहेगा। जो ट्रस्ट के लिए काम करेंगे उन्हें एलाउंस मिलेगा।

काल की ध्वंस शक्ति को विषय बुद्धि के जाल में बांध कर पंगु बनाने की यह योजना सुन कर कनाई मुस्कराया था।

कमरे में कनाई अकेला बैठा है, ये सब बातें उसके मानस-पट

पर आ रही हैं। मालिक ने तब युद्ध की चिन्ता भी न की थी। की भी तो पिछले महायुद्ध की। उनकी आंखों के सामने लाभ ही लाभ आया था—ब्लैक आउट, साइरन, शत्रु के बम वर्षक विमान, रिट्रीट और इवेकुयेशन आदि का ख्याल भी न हुआ था। पता नहीं अब भी हुआ है या नहीं, संभवतः नहीं हुआ, वे तो युद्ध के बाजार में भी नये-नये व्यवसाय फैलाते जा रहे हैं—हाल ही में धान और चावल का व्यापार आरंभ किया है और चावलों से कई गुदामें भर ली हैं। केवल चावल ही नहीं—आटे और चीनी का भी उनके पास भारी स्टाक है। कनाई से उनके लड़के ने बताया है।

एक नौकर ने कनाई की विचार धारा तोड़ी। वह आया और बोला मालिक आपको बुलाते हैं।

—मुझे?

—हां।

कनाई ने समझा विलम्ब की कैफियत देनी पड़ेगी। उसका संपूर्ण अंतर आग की लपटों के स्पर्श से शाणित अस्त्र की हिंसकता से चमक उठा। एक गहरी सांस लेकर वह खड़ा हुआ और बोला—चलो।

मालिक का कमरा दो तरीकों से सजा है। एक ओर सोफ़ा, कोच, टेबल, पेगू टेबल आदि विलायती ढंग की, विदेशी कार-खानों की बनी बढ़िया वस्तुएं हैं, दूसरी ओर फर्श बिछा है। फर्श भी पुराने ढंग का नहीं है। 'डायस' जैसे समान लम्बे-चौड़े और

दो तीन आदमियों के बैठने योग्य छोटे तखत सोफों की तरह सजाये गये हैं। तखतों पर गद्दे और गद्दों पर गहरे और चमकीले पीले रंग की चादरें बिछी हैं और उन पर तकिए रखे हैं। तकियों के गिलाफों का रंग भी पीला है। प्रत्येक तखत के पास जलपान के टेबलों जैसी सुन्दर चौकियां हैं, चौकियों पर पत्थर के प्याले और सफेद पत्थर के गिलास रखे हैं। प्याले 'ऐस ट्रे' और गिलास फूलदानी का काम देते हैं। इधर की दीवाल पर बंगाल के विख्यात चित्रकारों के चित्र लगे हैं। दूसरी ओर की दीवाल विदेशी चित्रकारों के चित्रों से सजी है।

एक तखत पर मालिक कान में रेडियो का 'हेडफोन' लगाये बैठे हैं। हुक्के की लम्बी नली का सिरा उनके मुंह में लगा है। सम्भवतः कोई विदेशी वार्ता सुन रहे हैं—बर्लिन, रोम, विशी, टोकियो और सेगां के रेडियो सुनने का समय यह नहीं है—शायद फिलडेफिया या केलीफार्निया आ रहा है या फिर किसी अज्ञात देश का सम्बाद होगा। वार्ता की ध्वनि बाहर न जाय इसीलिए 'हेडफोन' की व्यवस्था की गई है। रेडियो यंत्र भी एक नहीं दो हैं—एक से भारतीय और दूसरे से विदेशी वार्ताएं सुनी जाती हैं। स्मितहास्य के साथ कनाई का स्वागत करते हुए वे बोले 'कांग्रेचुलेशनस' मास्टर जी! आइये—बैठिए!

कनाई का छात्र अशोक इस बार परीक्षा में थर्ड रहा है परन्तु गणित में फर्स्ट आया है—सौ में नब्बे नम्बर मिले हैं।

कनाई प्रसन्न हुआ। हंसकर बोला—अशोक कहां है ?

—आपके घर नहीं गया ?

—मेरे घर !

—हां, यहां से तो सवेरे ही चला गया था।

—मैं तो सवेरे ही घर से चला आया था। रास्ते में एक जगह रुक गया, देर हो गई।

—तो वह अभी लौटता होगा। बैठिये, तब तक कुछ······

मालिक ने घण्टी बजाई, बेयरा हाजिर हुआ। वे बोले, दो प्याले चाय और मास्टर जी के लिए कुछ खाने का सामान ले आ।

—नहीं, नहीं, खाने का सामान क्या होगा, केवल चाय पर्याप्त होगी।

मालिक ने आपत्ति की—यह नहीं हो सकता। आज तो आप को मुंह मीठा करना ही होगा और यह भी बताना पड़ेगा कि चीज कैसी बनी है।

चीज अच्छी थी। कनाई ने प्रशंसा की। बोला, लेकिन ऊपर चीनी का परत कुछ कड़ा हो गया है !

—यही तो इसकी खूबी है—फिर कुछ धीमे स्वर में बोले—चीनी कुछ खरीद लीजिए।

कनाई ने उनकी ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा।

—कुछ दिन बाद बाजार में चीनी न मिलेगी।—हुक्के के दो चार कश खींच कर फिर बोले,—आटे और चावल का भाव भी बहुत चढ़ जायगा। उनके मुंह पर कौतुक पूर्ण मुस्कान दीख पड़ी।

कनाई अपनी सामर्थ्य को स्मरण कर मुस्कराया।

मालिक बोले, व्यवसाय करेंगे मास्टर जी ?

कनाई की मुस्कान विलीन हो गई। चकित और गंभीर दृष्टि से उसने मालिक की ओर देखा।

मालिक ने हुक्का पीते-पीते कहा, आप सुखमय चक्रवर्ती के वंशज हैं और तीस रुपये महीने का ट्यूशन करते हैं। मुझे यह देख कर दुख होता है। वंकिम बाबू लिख गये हैं कि 'बंगाली ही बंगाली की रक्षा कर सकता है।' मुझे आपकी सहायता करनी चाहिए। फिर अशोक आपका आदर भी बहुत करता है।

कनाई के अन्तर में मां का मुख, अस्वस्थ भाइयों और बहनों की छवि और सुखमय चक्रवर्ती का टूटा भवन उदय हुआ।

मालिक कहते रहे—आप व्यापार करें, मैं सहायता करूंगा। आटा, चावल, चीनी आदि उधार दूंगा। आज चावल का भाव क्या है, जानते हैं ? चौदह रुपये। कल शायद सोलह हो जायगा। आज खरीद कर कल बेंचे तो भी मन पीछे दो रुपये आपके होंगे। रोज पचास मन चावल बेच लें तो दिन में सौ, महीने में तीन हजार और साल में छत्तिस हजार रुपये का लाभ होगा।

कनाई की रक्तधारा चंचल हुई, कान गरम हो आये, हथेलियां पसीज गईं, दृष्टि स्थिर और उज्वल हो गई। कल्पना ने चित्र बनाया—मां का सर्वाङ्ग अलंकारों से सजा है, कमर में पटवास शोभित हो रहा है, शरीर में लावण्य भर गया है और मुख पर प्रफुल्ल हास्य खेल रहा है। भाइयों और बहनों के बदन पर नये वस्त्र

हैं, चिकित्सक की सूची से निकले हुए विषामृत ने उनके शरीर में प्रविष्ट होकर वंशगत विष को नष्ट कर दिया है—धमनियों में पवित्र स्वस्थ रक्त बह रहा है, देह कोष रोग मुक्त हो गया है; सुख-मय चक्रवर्ती का भग्न मंदिर सुसंस्कृत हो गया है और वर्णवैचित्र्य से झिलमिला रहा है। कलकत्ते के राजपथ पर उसका रथ—बहु-मूल्य मोटर दौड़ रही है।

मालिक कहते जा रहे हैं;—उत्तेजना के कारण वे भी उठकर बैठ गये हैं—आज हम स्वाधीन होते तो युद्ध के बाजार से जितना लाभ उठाते—आप उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। अब विदेशी कम्पनियां लाभ उठा रही हैं; चाभी उनके हाथ में है और योग्यता में हम उनसे कम नहीं हैं।

फिर बोले—करें आप व्यापार करें। मैं आपकी सहायता करूंगा।

—कल बताऊंगा। कनाई इतनी देर बाद बोल सका। और आवेश के साथ उठ कर खड़ा हो गया। महीने के रुपये मांगना भी भूल गया।

—ठहरिए! मालिक ने तकिए के नीचे से एक लिफाफा निकाल कर दिया और बोले—अशोक ने आपको प्रणामी दी है। फिर कुछ मुस्कराये—उसके नाम से लड़ाई का एक कण्ट्राक्ट लिया था—सन के जालों का ठेका था। अच्छे पैसे मिल गये हैं। चलिए बाहर राज-मिस्त्री काम कर रहे हैं, जरा देख लें।

मालिक भी उठे और दोनों साथ-साथ बाहर निकले। बाहर निकल कर भी वही बोले—आज वे अत्यधिक मुखर हो गये हैं—आपने असंभव को संभव कर दिया है, मास्टर जी!

कनाई ने उनकी ओर देखा।

विलक्षण बोद्धा की भांति वे बोले—रुपये आने पाई का हिसाब अर्थात् अर्थमेटिक मेरे वंश की विद्या है—हम सब समझ लेते हैं परन्तु जामेट्री और एलजेबरा तो हाई अर्थमेटिक है और अशोक को इन दोनों में पूरे नम्बर मिले हैं, अर्थमेटिक में दस नम्बर कट गये हैं।

और कोई दिन होता तो कनाई हंसे बिना न रहता। आज मोहग्रस्त की भांति चुपचाप चलता रहा।

कम्पाउण्ड के किनारे रास्ते पर कोठरियों की एक पंक्ति है। जब कोठी बन रही थी तब वे सामान रखने के लिये बनी थीं, अब खाली पड़ी हैं। कोठरियों के सामने 'बाफल वाल' बन रही

मालिक बोले—'पब्लिक एयर रेड सेल्टर' बनवा रहा हूं।

एक मिस्त्री ने सलाम किया और एक कागज दिखाया, कहा, बड़े बाबू ने दीवाल पर लिखने के लिये दिया है। चूना पोत कर ऊपर स्याही से लिख दूंगा।

कागज पर रोमन अक्षरों में लिखा था—

PABLIC AIR RAID SHELTER—PROVIDED BY RAI B. MUKHERJEE BAHADUR.

बाहर निकल कर कनाई ने लिफाफा खोला—उसमें सौ रुपये का एक नोट मिला।

—सात—

नोट कनाई ने रास्ते में ही तुड़वा लिया है।

साढ़े आठ रुपये में एक जोड़ी काबुली चप्पल ली है। धोती और कुरता लेने की भी इच्छा की थी, आवश्यकता भी है परन्तु यह निश्चय न कर पाया कि कैसा और कितने मूल्य का लिया जाय। मिल और करघे की धोती के दामों का अन्तर आज कल कम हो गया है। करघे के कपड़ों का मूल्य मिल के कपड़ों जितना नहीं बढ़ा, इसीलिए मध्यम वर्ग के लोगों ने आज कल करघे के कपड़े पहिनना शुरू किया है। दस की जगह बारह रुपये देकर अपनी लज्जा भी निवारण कर लेते हैं और कुलीनता की सुरुचि का परिचय भी दे देते हैं। दो रुपये का हिसाब वे नहीं लगाते। वैसे कनाई भी कभी हिसाब न लगाता परन्तु मालिक के उन ३६ हजार रुपये का हिसाब और प्रतिदिन १००) की प्राप्ति ने उसके अन्तर में अपना रंग भर दिया है। एक बार उसने यह भी सोचा कि धोती और कुरते के स्थान पर साधारण मूल्य का एक सूट खरीद लेना उचित है। व्यवसाय के क्षेत्र में जब उतरना ही है तब सूट की आवश्यकता भी पड़ेगी। फिर उसके सामने चावल का व्यापार करने वाले उन मारवाड़ियों और बंगालियों के चित्र आये जिन की धोती घुटनों के ऊपर चढ़ी रहती है, बदन पर बनियायन और चद्दर पड़ी रहती है तथा मत्थे पर पगड़ी रखी रहती है। दुविधा में वह अपने लिए धोती कुरता

नहीं ले सका, मां के लिए एक लाल किनारे की एक साड़ी और दो सेमीजें लेकर दुकान के बाहर निकल आया।

मां जैसे उसकी प्रतीक्षा ही कर रहीं थीं। कनाई ने साड़ी सेमीज और ५०) रु० उन के हाथ पर रख दिए। कपड़े रख कर वे कनाई के मुंह की ओर देखने लगीं। कनाई ने पूछा—बाजार क्या अभी जाना पड़ेगा ?

मां ने धीमे स्वर में कहा, नहीं शाम को चले जाना।——

—अच्छी बात है।

फिर भी वह खड़ी रहीं। कनाई ने पूछा, फिर कोई और बात है ? मां ने उसकी ओर देखते हुए कहा—और रुपये—कनाई की विस्मित दृष्टि उनकी ओर उठी।

—अशोक आया था, वह कह गया है कि तुझे पुरस्कार में सौ रुपये मिले हैं।

कनाई मां की ओर देखता ही रह गया। उन्होंने सिर झुका लिया परन्तु हाथ फैला ही रहा। कनाई ने शेष नोट और पैसे निकालकर उनके हाथ पर रख दिए। मां ने गिने नहीं—लेकर चली गईं। कनाई स्तब्ध होकर बैठ गया।

दरवाजे पर एक सुन्दर मुख झांकता हुआ दीख पड़ा। उमा है—कनाई की पन्द्रह वर्षीया बहन उमा ! कुलीनों की लीला भूमि इस महानगरी में भी कनाई ने उमा जैसी सुन्दरी लड़की नहीं देखी। कविताओं में लिखा है, सौंदर्य के प्रकाश से कमरा जगमगाने लगा। इस वाक्य से अत्युक्ति निकाल दी जाय तो

उमा के सौंदर्य में यही गुण है। कमरा आलोकित नहीं होता परन्तु उसमें एक अपूर्व सुषमा भर जाती है; जैसे चित्र की अपरूप शोभा और सौन्दर्य से कमरे की दीवाल मंडित हो जाती है। उसकी उज्वल शुभ्र और बड़ी आंखों में गहरे काले रंग की पुतलियां हैं और उनमें सुधा-समुद्र की मादकता है। कनाई जब अनमना होता है तब उमा को बुलाता है और बातें करता है। उमा को देख कर वह प्रसन्न हुआ, बुलाया, उमा !

धोती के आंचल को बिना किसी कारण के ही बदन में लपेटी हुई उमा सलज्ज हास्य के साथ आई। कनाई को जान पड़ा कि वह कुण्ठित हो रही है। उसने पूछा—क्या बात है ?

—तुम्हारा शिष्य आया था।

—अशोक ?

—हां,वह गणित में फस्ट आया है।—फिर कुछ दुलार भरे स्वर में बोली—मुझे लेकिन कांच के कंकण देने पड़ेंगे !

कनाई मुस्कराया। उमा बोली, तुम्हें आज सौ रुपये मिले हैं। कनाई उत्तर देने ही वाला था परन्तु दरवाजे पर चट्टियों की ध्वनि सुन पड़ी और वह रुक गया। पिता जी आये और भूमिका बांधे बिना ही कहने लगे, तुझे सौ रुपये मिले हैं—दस मुझे दे।

कनाई की भौंहें तन गईं। वह जानता है कि पिता जी रुपये क्या करेंगे, किसी तरह आत्म संवरण करके उसने कहा, रुपये तो सब मां को दे दिए ! उत्तेजना में उसने दोनों जेबें बाहर खींच कर दिखा दीं।

पिता जी चले गये।

कनाई को मालुम भी नहीं हुआ कि उमा कब बाहर चली गई। उसने सोचा उमा की प्रार्थना तो पूरी करनी पड़ेगी। वह उमा को ढूंढने निकला। बरामदे में छोटी चाची अर्थात् सुखमय चक्रवर्ती के कनिष्ट पुत्र की पुत्रवधू खड़ी थीं। वे भी ध्वन्सोन्मुख सम्पत्ति-शाली परिवार की लड़की और आयु में कनाई की समवयसी हैं। छोटी मालकिन की बातें बधिक के बाण जैसी धार वाली होती हैं। तिर्यक दृष्टि और तिरछे ओठों से सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड के प्रति वे उपेक्षा प्रकट करती हैं। उनके भारी-भरकम पदविक्षेप और सर्वाङ्ग की दोलायमान गति में सबको तुच्छ समझने का यह भाव छलकता रहता है। संसार को तुच्छ समझने योग्य रूप उनके पास है, इसी रूप से उन्होंने अपने दुर्दान्त मद्यप स्वामी को जीता है, मद पीने की लत छुड़ाई है और उन्हें अपने वश में कर लिया है। इसीलिए विजयनी की भांति चलने-फिरने और उठने बैठने का अधिकार भी उन्हें मिल गया है। आज मन्द मुस्कान के साथ वे बोलीं—एक दिन सिनेमा दिखा कानू!

—अच्छा

—अच्छा नहीं, बता कब दिखायेगा?

—अगले सप्ताह

चाची ने अभ्यास के अनुसार ओंठ तिरछे किए, कुछ मुस्कराईं, बोलीं, शायद सौ रुपये के ब्याज से दिखायेगा? और फिर रेलिंग पर झुक कर यों ही थूक दिया।

कनाई का मुंह लाल हो गया। कुलीनता का क्रूर आघात विषैले तीर की भांति चुभ गया। चाची हंसते-हंसते अपने कमरे की ओर चली गई, जाते जाते गंभीर स्नेह दिखाती हुई कह गईं—नहीं, नहीं, मैं हंसती थी बेटा। एक सप्ताह का ब्याज दूसरे सप्ताह में तुम्हारा मूलधन बन जायगा फिर वह भी ब्याज देगा।

कनाई ने उन्हें रोका—ठहरो चाची, तुम्हें प्रणाम कर लूं!

चाची ने कमरे में पहुंच कर कहा, रहने दो, यों ही आशीर्वाद देती हूं, तुम लखपती बनो!

कनाई का सारा शरीर जलने लगा। मनका क्षोभ मिटाने योग्य करारा उत्तर भी उसे नहीं मिला। अकस्मात् पीछे की ओर से दबी हुई हंसी का धीमा स्वर सुनकर उसने मुंह घुमा कर देखा और स्तम्भित होगया। मंझले बाबू का नाती—अठारह वर्ष का शिशु-मानव शीशे के सामने नंगा खड़ा है और अपने नग्न प्रति-विम्ब को देख कर हंस रहा है। कनाई के मस्तिष्क में आग-सी लग गई परन्तु उसे आत्म संवरण करना पड़ा। मंझले बाबू के लाड़ प्यार में पले इस अठारह वर्षीय शिशु-मानव को कोई कुछ भी नहीं कह सकता। त्रिकालज्ञ ज्योतिषी ने इसकी जन्म कुण्डली देखकर बताया है कि यह शापभ्रष्ट महापुरुष है और भविष्य में विश्व विख्यात व्यक्ति होगा। मंझली मालकिन देवता की भांति इसकी सेवा करती हैं। मंझले बाबू नित्यनियमित औषधि खिला कर इसके शरीर की रक्षा करते हैं। इसकी उलंग अश्लीलता को वृद्ध और वृद्धा देवत्व के स्फुरण की भूमिका मानते हैं।—घृणा और

क्रोध से कनाई का अन्तर अधीर हो गया। अन्तर की ज्वाला कहीं बाहर न आ जाय—इस भय से वह कमरे की ओर लपका।

सीढ़ी के ऊपर से मंझली मालकिन ने पुकारा—कानू !

कनाई खड़ा होगया। मंझली मालकिन की कमर वात-व्याधि से झुक गई है, वे रेलिंग का सहारा लिए खड़ी हैं; उनका चेहरा भाव के स्पर्श से शून्य है। अकुण्ठित स्वर में वे बोलीं—दस रुपये उधार देगा ? सुना है आज तुझे सौ रुपये मिले हैं।

रूखे स्वर में कनाई ने कहा—"नहीं" और जल्दी जल्दी सीढ़ियां उतर कर अपने कमरे के दरवाजे पर पहुंचा। कमरे से जूथी बाहर निकली। वह मंझले बाबू की नातिन है और अवसर मिलते ही सड़क पर भीख मांगने के लिए निकल जाती है। कमरे में कनाई का कुरता भूमि पर पड़ा है। कुरते की जेब का सामान—ट्राम का मंथली टिकट और कागज-पत्तर भी भूमि पर बिखरे हैं। कनाई के ओठों पर कड़वी हंसी दीख पड़ी—जूथी उसकी जेब में सौ रुपये ढूंढ़ने आई थी। उसने एक लम्बी सांस ली। सुखमय चक्रवर्ती ने क्या समस्त संसार के मनुष्यों को वंचित किया था और उनके मर्मान्तक अभिशाप बटोर लिये थे।

तिमंजले से मंझले बाबू का उच्च गंभीर कंठ स्वर आया।—कालीघाट की बस्ती बेंच कर रजिस्ट्री आफिस से निकला। चेक और नगद मिला कर जेब में डेढ़ लाख रुपये थे। रतनबाई के मकान पर शाम से लगाकर रात के बारह बजे तक डेढ़ हजार रुपये कबूतर के पंखों की तरह उड़ गये। बारह के बाद हमारी

गाड़ी चीतपुर रोड से निकली । जाड़े की रात थी । शाल और ओवरकोट में भी सरदी लगती थी । देखा रोशनी के खम्भे के पास एक मामूली वेश्या खड़ी है और सरदी से कांप रही है। फिर देखा तो एक नहीं अनेक थीं, रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन रात को बारह बजे फिर गाड़ी लेकर निकला—साथ में एक सौ अलवायन ले गया। उन दिनों एक अलवान के दाम आठ रुपये थे। दूसरे दिन सारे कलकत्ते में हवा बंध गई—दिल्ली के बादशाह का कोई वंशधर वेश बदलकर कलकत्ता घूमने आया है।""""सौ रुपये ! राम कहो ! परमहंस कह गये हैं—माटी सोना—सोना-माटी ! नारायण ! नारायण ! सौ रुपये, छिः ! छिः ! छिः !

कनाई खिड़की के सीखचों पर हाथ रखे खड़ा है । शून्य दृष्टि से वह सड़क के उस पार की बस्ती देखता रहा। बारह बज गये हैं, बस्ती स्तब्ध है। पुरुष खा पी कर नौ बजे ही अपने अपने काम पर चले गये हैं, स्त्रियां विश्राम कर रही हैं । जिन घरों में अब तक काम की चाल-पहल है उन के पुरुष बेकार हैं, घर में एक ही बार भोजन बनता है— दोपहर के भोजन का समय बढ़ा कर रात के अन्नाभाव का काल संक्षिप्त किया गया है।

गीता के घर वाले आज भोजनादि से अभी निवृत्त हो गये जान पड़ते हैं। गीता के पिता बरामदे में धूप की गरमी में दिवा-निद्रा ले रहे हैं, वैसे वे इस समय लुंगी पहने बीड़ी पीते थे और खांसते थे। गीता की मां बैठी पान चबा रही हैं और उसी

मोटी ब्राह्मणी से बातें कर रही हैं। छत की रेलिंग पर झुकी गीता चुपचाप खड़ी है। आज उसने नई और रंगीन धोती पहनी है और देखने में भली लगती है। उनके बाल खुले हैं और सिर नीचे की ओर झुका है। ब्राह्मणी ने शायद विवाह सम्बन्ध का कोई सूत्र जोड़ा है और वहीं से कुछ कपड़े लाई है। गीता की मां ने कुछ कपड़े रख लिए और शेष ब्राह्मणी को लौटा दिए। पात्र कोई सम्पत्तिशाली और हृदयवान् तरुण होगा! दूसरे क्षण में ही कनाई इस विचार से बेचैन हुआ कि शायद कोई धनी वृद्ध है—गीता के साथ दूसरा या तीसरा विवाह कर रहा है और उनके अभाव ग्रस्त मां बाप को वार्धक्य की अतृप्त लालसा व्याधि परितृप्त करने के लिए रिश्वत दे रहा है।

कनाई ने सोचा बूढ़ा ही सही गीता को खाने पहनने का सुख तो मिलेगा। उसके मां-बाप का दुख तो कम होगा। स्वच्छलता के प्रसाद से गीता की देह पुष्ट होगी और वह पुष्टि उसे मन के असन्तोष को सहन करने की—वहन करने की शक्ति देगी। फिर उसकी गोद में सन्तान आयेगी और असन्तोष मिट जायेगा। और वह सन्तान भी मेरे वंश जैसे किसी व्याधिग्रस्त का रक्त वहन करे और अकाल मृत्यु का ग्रास बने—तब? लेकिन नहीं, गीता इसमें भी अपने लिए एक सांत्वना ढूंढ़ लेगी। परन्तु कनाई के मन ने इस कल्पना को स्वीकार न किया। वह कामना करने लगा—आशीर्वाद देने लगा—गीता की पवित्र सतेज रक्त धारा और देह कोष के प्रसाद से उसकी सन्तान सब व्याधियों के विष की

पराजित कर दे ! फिर विज्ञान व्यतिक्रम भी तो मानता है, यह भी तो कहता है कि व्याधिग्रस्त के वंश में भी स्वस्थ सन्तान हो सकती है। कनाई के रोम रोम ने पुकारा—यही हो ! यही हो !

—आठ—

शुक्ल पक्ष के पहले चरण की रात है, चन्द्रमा अस्त हो गया है; उस पर नगर में 'ब्लैक आउट' है। कभी धारित्री के वक्ष की इस महानगरी के आलोक समारोह से छिटकी हुई छटा आकाश मण्डल पर चढ़ाई करती थी। अब शत्रु पक्ष के वायुयानों की गृद्ध दृष्टि से इसे छिपाने के लिए समस्त प्रकाश आवरणों से ऐसे ढक दिए गये हैं कि मकानों के मस्तकों और सड़कों की छातियों पर पुंजी भूत अन्धकार उतर आया है। ट्रामें बसें और मोटरें दीप्तिहीन प्रेत चक्षुओं जैसी बत्तियां लगाये अंधेरी सड़कों पर चल रही हैं। बसों और ट्रामों के भीतर धुंधला प्रकाश है, जिसकी अस्पष्टता में यात्री देखा जा सकता है परन्तु पहचाना नहीं जा सकता; ऐसा ज्ञान पड़ता है रूपहीन अवयवों का समूह चल रहा है। रिक्साओं के यात्री दीख भी नहीं पड़ते—कागज से ढका हुआ स्तिमित प्रकाश दो बिन्दुओं की भांति दौड़ता है। अत्यन्त निकट आने पर मनुष्य के उठते पड़ते और दौड़ते हुए दो पैर दीख पड़ते हैं। फुटपाथ के यात्री सन्तर्पित गति से चल रहे हैं।

सड़क के किनारे की दूकानों के भीतर प्रकाश है परन्तु उसकी रश्मिधारा आवरणों से नियंत्रित है और बाहर नहीं निकल पाती। कहीं कहीं ऊंची शक्ति के बल्वों के प्रकाश की छटा आवरण को भेद कर जलते हुए अङ्गारे की तरह सड़क पर पड़ रही है। अन्धकार में चलने वाला अदृश्य प्राय मानव समुदाय जब उस स्थान पर आता है तब काली मूर्ति की भांति क्षणभर के लिए झलक कर फिर अन्धेरे में डूब जाता है। कभी कभी ट्राम के तार के साथ दौड़ती हुई गाड़ी की ट्राली रगड़ती है और उससे झलक जाने वाली नीलाभ ज्योति अन्धकार को गाढ़तर कर देती है। आकाश से हवाई जहाज की ध्वनि आ रही है। लाल और नीले रंग के दो आलोकबिन्दु उलका बिन्दुओं की भांति आकाश के एक छोर से दूसरे छोर की ओर उड़े जा रहे हैं।

कनाई ट्राम से उतरा। सम्पूर्ण सायंकाल उसने कर्जनपार्क में बिताया है और मुखर्जी बाबू की बातों पर विचार किया है। सोचा है, महीने में तीस हजार भी पैदा हो सकते हैं। युद्ध यदि होता रहे; होता क्यों न रहेगा! पृथ्वी के एक किनारे से लगा कर दूसरे तक, अटलाण्टिक से लगाकर पैसेफिक तक; जल, थल और अन्तरित्त में जिस युद्ध की व्याप्ति है वह क्या अकस्मात् रुक जायगा? यह भूकम्प, तूफान या बाढ़ नहीं है जो प्राकृतिक विषमता का अप्रतिहत उच्छ्वास समाप्त होते ही रुक जायगा। युद्ध तो मनुष्य के हाथ में है, जिस अभिप्राय की सिद्धि के लिए उसने इसकी सृष्टि की है जब तक वह सिद्ध न होगा या मनुष्य ही सम्पूर्णतया ध्वंस

न हो जायगा तब तक यह भी समाप्त न होगा। जिस कृत्रिम वैषम्य के फल से मनुष्य इस संघर्ष की सृष्टि कर पाया है, युद्ध के अपचय में वह वैषम्य घट रहा है परन्तु मनुष्य प्राणपण वेग से उसे फिर परिपूर्ण करता जा रहा है। और युद्ध यदि रुक ही जाय तो भविष्य के नये युद्ध की भूमिका बना कर रुकेगा। फिर तीन या तीस हजार के सम्बन्ध में भी कोई सन्देह नहीं है। परन्तु विचारणीय प्रश्न मेरा अपना एकमात्र स्वप्न, मेरे विद्यार्थी जीवन की कल्पना और आकांक्षा है। एम. एस-सी. पास करने के बाद मैं विज्ञान की गवेषणा और कोई आविष्कार करना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त सम्पत्ति संचय की शोकपूर्ण परिणति में मेरा जन्म हुआ है और संपत्ति के संचय को मैं घृणा करता हूँ, उससे डरता हूँ। सम्पत्ति संचित होने के बाद स्वभाव धर्म के अनुसार पचन शील मिष्टरस की भांति वह फेनिल मादक रस में परिणत ही होगी। चक्रवर्ती वंश के पोपले मुंह का जो कदर्य लोलुप ग्रास विस्तार मैंने देखा है उसने सम्पत्ति के लिए वितृष्णा उत्पन्न की है इसके अतिरिक्त मेरे अपने जीवन का आदर्श है, जिस आदर्श की मैंने दीक्षा ली है उसकी दृष्टि से तो यह मार्ग सर्वथा त्याज्य है।" 'कनाई दिन भर घर में भी यही सब कुछ सोचता रहा परन्तु कोई निर्णय न कर पाया। शाम को वह आशुतोष की मूर्ति के पास जाकर खड़ा हुआ। सोचा था कि नीला आफिस से निकलेगी तो उससे परामर्श करूंगा। परन्तु नीला संगियों और सहेलियों के साथ बाहर निकली। कनाई

के मन पर न जाने कैसा भाव छा गया कि नीला को अलग बुलाने की इच्छा भी जाती रही। उसने सोचा, संगियों और सहेलियों के संग सुख से तृप्त, हास-परिहास मुखरा नीला के पास मेरी बात सुनने और उसे समझने योग्य मन कहां है? मेरे प्रश्न का उत्तर वह कैसे देगी? नीला की दृष्टि से ओझल होने के लिए वह जनस्रोत में मिल गया और कर्जन पार्क में बैठा चिन्ता का जाल बुनता रहा। वहां से अब लौटा है।

ट्राम से उतर कर कनाई अपनी गली में पहुंचा। गली में गहरा अंधेरा है। बिजली के तीन खंभे हैं और उनमें बत्ती भी जल रही है परन्तु बत्तियों पर नियंत्रण के ढक्कन चढ़े हैं, फलतः उनका प्रकाश शून्यलोक में ही रह गया है। जाड़े की रात है, इसलिये दोनों ओर के घरों की खिड़कियां और दरवाजे बन्द हैं, गली में सन्नाटा है। बड़ी सड़क का मोड़ घूमते ही कनाई के सामने एक मोटर गर्जने लगी। ब्लैक-आऊट के ढकनों से मुंदी उसकी दोनों हेड लाइटें जल उठीं। गाड़ी यहीं खड़ी थी—अब स्टार्ट हुई है। कनाई पहले चौंका फिर विस्मित हुआ। गाड़ी निकल गई तो पीछे उसका नम्बर दिखाई पड़ा और वह अत्यन्त परिचित है। कनाई ने सोचा, यह तो अशोक के घर की गाड़ी का नम्बर है। गाड़ी भी वैसी ही है— उनकी छोटी गाड़ी से अविकल मिलती हुई। वह मकान के गाड़ीवाले बड़े बरामदे में पहुंचा और खड़ा हो गया।

—कौन? छाया की तरह कोई खड़ा दीख पड़ा।

—मैं नेपी। सत्तरह-अठारह वर्ष का तरुण आगे बढ़ा।

—नेपी, इस समय ?

—कल जनसेवा कमेटी की मीटिंग है। आप को चलना होगा, यही कहने आया हूं। हम लोगों की कुछ शिकायतें हैं, वे आपको वहां रखनी होंगी।

कनाई के मुंह पर मुस्कान आई। व्यङ्ग नहीं स्नेह की मुस्कान, नीला के पागल भाई नेपी को वह प्यार करता है। नेपी संसार के मानवों की मुक्ति का स्वप्न देखने में ही मस्त रहता है। दिन-रात और आहार निद्रा भूल कर वह बगल में परचे दबाये घूमता रहता है, उन्हें बांटता है, दीवारों पर चिपकाता है, भूखों की भीड़ का जुलूस निकालता है—अन्तर का सम्पूर्ण बल लगा कर चिल्लाता है—मनुष्य के लिये रोटी चाहिये, भात चाहिये। उनके लिए अपनी साधना के दीर्घ जीवन की कामना करता है—इनकलाब जिन्दाबाद !

नेपी ने अनुनय के साथ कहा, आप को चलना ही पड़ेगा।

—चलूंगा। परन्तु तूने कुछ खाया है ? कनाई को नीला से सुना हुआ नेपी का दैनिक जीवन याद आ गया।

—नहीं, बस घर जा रहा हूं। अंधकार में दीख तो नहीं पड़ा परन्तु नेपी के गदगद् कण्ठस्वर से कनाई ने अनुमान लगा लिया कि उसके मुंह पर मुस्कान की रेखाएं आ गई हैं। वह बोला, अच्छा ठहरो—और फिर अपने घर के भीतर चला गया।

सुखमय चक्रवर्ती की पुरी में अंधेरा है। कमरों में लालटेनें जल रही हैं परन्तु सीढ़ियों और बरामदों पर अंधकार का राज्य है। अभ्यास

के कारण कनाई अंधेरे में भी तेज़ी के साथ मां के कमरे की ओर बढ़ा। उसने सोचा, मैं आज ही रुपये लाया हूँ, घर में खाने की कुछ न कुछ सामग्री अवश्य होगी, और नहीं तो मेरा भोजन तो रखा ही होगा, नेपी को वह भी दिया जा सकता है। बंद दरवाजा धक्का मारते ही खुल गया और कनाई वहीं स्तम्भित हो कर खड़ा हो गया।

कमरे में पिता बैठे शराब पी रहे हैं और मां थाली में भोजन परोस रही हैं। गंध बताती है, खाद्य वस्तुएं मांस से बनी हैं। मां कनाई को देख कर लज्जित हुईं और थोड़ा सा घूंघट सरका लिया। पिता ने आरक्त आंखें उसकी ओर उठाईं और बोले—दस रुपये तेरी मां ने दिए हैं, दस रुपये! फिर बोतल उठा कर कहा—'एट ट्वेल्व'—वह भी 'कण्ट्री मेड ह्विस्की' कैसा युद्ध है! और दो रुपये चार आने देकर लाया हूं 'फस्ट क्लास मटन'! पत्नी की ओर देख कर बोले, दो न, ज़रा कानू भी मांस का स्वाद ले!

कनाई के होठों पर तिक्त मुस्कान आई, दरवाजा भिड़ा कर वह बाहर निकल आया। आश्चर्य! मां अन्नपूर्णा की भांति बैठी स्वामी को खिला रही हैं! इस समय प्रचण्ड भूकम्प से सुखमय चक्रवर्ती का भवन उनके सब बंशधरों को लेकर धरित्री के गर्भ में समा जाय तो मैं भी जयध्वनि के साथ भगवान का अस्तित्व स्वीकार करते-करते मर जाऊं!—किन्तु नेपी कहां है?

—नेपी!

नेपी चला गया है! अच्छा लड़का है, शायद कोई काम याद

आ गया है। नहीं तो कभी न जाता। नहीं, वह आरहा है। अन्धेरे में सफेद कपड़ा देखकर कनाई आगे बढ़ा।—नेपी !

—नहीं बेटा हम हैं। प्रौढ़ा स्त्री का कण्ठस्वर सुन पड़ा। परन्तु यह सिसक कर रोया कौन ?

कनाई ने विस्मय के साथ पूछा, वह इस मुहल्ले के प्रत्येक व्यक्ति को पहचानता है। रोने वाली के रुदन की मात्रा बढ़ गई। प्रौढ़ा ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, चल घर चल ! अन्धेरे में इसे ठोकर लग गई है।

क्रन्दनपरायणा ने उच्छ्वसित रुदन में ही कहा—नहीं।

कनाई ने पहचान लिया। वर्धित विस्मय के साथ पुकारा—गीता !

प्रौढ़ा जिधर से आई थी उसी ओर घूम कर बोली, फिर तू घर जा, मैं चली। और यथासाध्य द्रुतगति से चली गई। गीता रोते-रोते सड़क पर ही गिर सी पड़ी।

—क्या हुआ गीता ? हुआ क्या ? उठ तो !

गीता रोती ही रही।

—हुआ क्या है ?

बड़े कष्ट के साथ वह बोली—मुझे विष ला दो कानू दा !

कनाई सिहरा, शायद वृद्ध ने भी इसे पसन्द नहीं किया। वह सिर नीचा किए खड़ा रहा।

गीता फिर बोली—यह मुंह मैं कैसे दिखाऊंगी ?

कनाई ने स्नेह के साथ उसका हाथ पकड़ कर उठाया—आखिर हुआ क्या है ?

—उस बूढ़ी ने मेरा'''''और वह फिर फफक कर रोने लगी।

गीता ने बड़ी कठिनाई के साथ जो कुछ कहा उसे सुनकर कनाई पत्थर हो गया। प्रौढ़ा किसी धनी पात्र को दिखाने के लिए गीता को अपने घर ले गई थी। गीता की फोटो देखकर पात्र महोदय ने उसके माता पिता के लिए कपड़े भेजे थे और अनुरोध किया था कि लड़की को प्रौढ़ा के साथ भेज दें—मैं एक बार स्वयं देखूंगा। बस्ती में आकर मैं लड़की नहीं देख सकता। प्रौढ़ा गीता को अपने घर ले गई, वहां गुप्त रूप से शरीर का व्यवसाय होता है। प्रौढ़ा ने गीता को उसी व्यवसाय का पण्य बनाकर बेंचा है !

गीता ही फिर बोली—मैं मरूंगी कानू दा ?

कनाई बोला—छि-छि-छि-तुम्हारी मां—

गीता ने बीच में ही बात काटी—मां जानती हैं, कानूदा, मां जानती हैं !

—जानती हैं ?

—अवश्य जानती हैं, चलते समय उन्होंने कहा था, ब्राह्मण दीदी जो कहें वही करना बेटी। तेरी दौलत से ही दो टुकड़े मिल जायं, नहीं तो भूख से सूख कर मरना पड़ेगा।

गहरे अन्धेरे में भी पृथ्वी की एक अद्‌भुत मूर्ति कनाई की आंखों के सामने आई—जिसका सम्पूर्ण शरीर दुष्ट क्षत से भरा है। उसने सोचा, सुखमय चक्रवर्ती का रक्त क्या विश्व ब्रह्माण्ड में फैल गया है ?

गीता बोली, नहीं तो मां ने कपड़े क्यों लिए ? मां ही नहीं कानूदा; पिता भी जानते हैं। वह फिर फफक कर रोने लगी।

कनाई चुप रहा।

—मैं क्या करूं कानू दा ?

कनाई ने अपनी दृढ़ मुट्ठी में उसका हाथ पकड़कर कहा, मेरे साथ चल सकती है ?

गीता ने अवाक् होकर उसकी ओर देखा।

कनाई ने अंधेरे रास्ते की ओर हाथ फैला कर कहा, यदि बिश्वास हो तो मेरे साथ आ !

—तुम्हारे घर ?

—नहीं, इस घर के साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

—नौ—

बंगाली पर भीरुता का लांछन नितान्त मिथ्या नहीं है। उसके पास कल्पना है परन्तु उस कल्पना को कार्य में परिण॰ करने वाला वास्तविक ज्ञान नहीं है; और यह भी सत्य है

वह कर्म मार्ग की अनिश्चितता पर तैरने से डरता है। पश्चिमी बंग के बंगालियों पर ये बातें विशेष रूप से लागू होती हैं। वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में कितनी ही व्याख्याएं उपस्थित करते हैं, विज्ञान का छात्र कनाई भी उनका अनुमोदन करता है। उनमें से एक व्याख्या यह है कि बंगाल की सुख-स्वाच्छन्द्य पूर्ण, जीवन निर्वाह के लिए उपयोगी शस्यसम्पद् और स्वयं सम्पूर्ण ग्रामों की समाज व्यवस्था ने उनकी कर्म शक्ति को आलस्य से भर दिया है और उन्हें सुषुप्ति में पहुंचा दिया है। परस्व का ग्रास करने की इच्छा के लिए अभियान की दुःसाहसिकता का जो आवेग चाहिए वह उनके देह-कोष और बीज-कोष में सो गया है।

कनाई ने अपने जीवन में कर्मशक्ति की इस दुःसाहसिकता को जगाने का प्रयास कई बार किया है किन्तु सुखमय चक्रवर्ती से लगाकर उसके पिता तक की तीन पीढ़ियां जिस शक्ति को निद्रा में रखती आई हैं, उसे जगाना संभव नहीं हो सका। वह निद्रा भी विश्राम और आराम की सीमा पार कर अब व्याधि में परिणत हो गई है। कितनी ही बार उसने संकल्प किया है कि सुखमय चक्रवर्ती की राक्षसी माया वाली नींद से भरी इस पुरी को छोड़ कर वह नवयुग की अभिनव मानव गोष्ठी के एक वंश के प्रथम पुरुष के रूप में जीवन आरंभ करेगा, अपनी रक्त धारा के विष को नष्ट कर उसे स्वस्थ और पवित्र बनायेगा, फिर उपयुक्त उत्साह और प्राणपण शक्ति से कार्य प्रारंभ करेगा परन्तु निश्चय कार्य में परिणत नहीं हो सका। प्रत्येक बार मां का स्नेह पहली बाधा के

रूप में सामने आया है। जिस वंश में जन्म लेने को वह अभिशाप समझता है, उसी वंश के प्रति ममता ने भी पैर रोके हैं। वह समझ ही नहीं पाया कि मेरे हृदय में दो परस्पर विरोधी वृत्तियां—घृणा और ममता—साथ साथ कैसे निवास करती हैं। इन दोनों विपरीत हृदय-वृत्तियों ने ही कभी इधर और कभी उधर खींच कर उसे गतिहीन बना दिया है। कल्पनाएं उसने बहुत कीं परन्तु सफल एक भी न हो सकीं। आज सौ रुपयों पर सम्पूर्ण परिवार की लार टपकती देख कर उसकी घृणा उग्र हुई है—मांस के उपकरणों से मद्य की नैवेद्य सजाने वाली मां की विकृत स्वामि-सेवा-निष्ठा ने आग में घी डाला है। मां को यह सहन नहीं हुआ कि कनाई अपने लिए कुछ रुपये रख ले परन्तु स्वामी देवता को मद्य की नाली में बहाने के लिए दस रुपये देने में उन्हें अणु-मात्र भी दुविधा नहीं हुई। इसके बाद गीता की शोचनीय परिणति देख कर यह सम्पूर्ण वर्तमान पर निष्ठुर रूप से ममताहीन हो गया। उच्छ्वसित हृदयावेग की शक्ति से निष्क्रिय और अस्पष्ट कनाई सक्रिय और अपने निकट भी स्पष्ट हो गया। जैसे आकस्मिक भूमिकम्प से पत्थर फट गया और उसे जीवन के अंधकार में मुक्ति का मार्ग मिल गया। इसीलिए अपना मार्ग निश्चित करने में उसे जरा सी भी दुविधा नहीं हुई, भय नहीं हुआ, गीता का हाथ पकड़ कर वह महानगरी के गाढ़ अंधकार में अज्ञात भविष्य की ओर बढ़ गया।

कुछ दूर जा कर गीता ने सभीत स्वर में पूछा—इस रात में कहां जायेंगे—कानूदा ?

कनाई ने स्नेहसिक्त कण्ठस्वर से उत्तर दिया—इतने बड़े कलकत्ता नगर में लाखों आदमी रहते हैं। हम दोनों को क्या एक रात काटने की जगह भी न मिलेगी ?

गीता दूसरा प्रश्न न कर सकी परन्तु जिस संकीर्ण परिधि में वह बड़ी हुई है, जिन मनुष्यों को उसने देखा है, उन सब के अनुभव से उसे इस आश्वासन पर सन्तोष न हुआ कि रात के अंधेरे में दो अपरिचित नरनारियों के लिए कोई सहृदयता के साथ अपने द्वार खोल देगा। उसकी बस्ती के किसी घर से रद्दी कागज का एक टुकड़ा भी यदि दूसरे घर में गिर पड़े, खुली वायु के लिए कोई दूसरे घर की ओर लगी खिड़की को खोल कर क्षणभर के लिए भी खड़ा हो जाय या कोई रोग की यंत्रणा से अधीर होकर चीत्कार करने लगे तो उसी क्षण में जो असहिष्णु तीव्र और कदर्य प्रतिवाद उठता है उसे स्मरण कर गीता ने एक लंबी सांस ली। वह बगीचे वाली बड़ी कोठी में पूजा के लिए फूल और छः मंजिले घर के टयूब वेल से अपने अजीर्ण रोग ग्रस्त पिता के लिए पानी लेने गई थी परन्तु उन लोगों ने कुत्तों को ललकार दिया था।

बड़ी सड़क के मोड़ पर पहुंच कर कनाई ने टैक्सी बुलाई। कुछ देर बाद गाड़ी एक अंधेरी और संकीर्ण सड़क पर पहुंच कर खड़ी हो गई। कनाई ने एक घर के दरवाजे का कुण्डा खड़का कर पुकारा—विजय दा ! विजय दा !

टैक्सी ड्राइवर ने कहा—बाबू मेरा किराया।

—ठहरो, लेकर देता हूं। कनाई ने फिर पुकारा—विजय दा!

एक व्यक्ति ने दरवाजा खोल कर पूछा—कौन?

—षष्ठी, विजय दा कहां हैं?

—कनाई बाबू? बाबू तो अभी नहीं आये।

—नहीं आए—फिर! तुम्हारे पास कुछ रुपये हैं षष्ठी?

—रुपये, रुपये तो नहीं हैं!

टैक्सी ड्राइवर ने अधीर होकर कहा—बाबू!

गीता ने अपनी धोती के खूंट से पांच रुपये का एक नोट निकाला और ड्राइवर को दे दिया। ड्राइवर बोला मेरे पास भांज नहीं है।

गीता ने कहा, भांज न चाहिए। ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट की और चला गया।

कनाई ने विस्मय के साथ पीछे घूम कर देखा। गीता ने बताया मेरे पास पांच रुपये का एक नोट—उसी समय नोट के इतिहास की मर्मभेदी स्मृति उसके अन्तर में उठी और उच्छ्वसित रुदन ने उसका कण्ठ बन्द कर दिया।

कनाई सब समझ गया। सांत्वना के साथ बोला—अच्छा किया, आओ।

कनाई के विजय दादा अंग्रेजी के एक दैनिक पत्र की सम्पादक मण्डली में काम करते हैं। सन् १९३० के पहले वे अध्यापक

थे। सन ३० के आंदोलन में सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करके नजरबन्द कर दिया। कई वर्ष बाद जब छूटे तब यह नौकरी कर ली। वे बंगाल के एक विशिष्ट नेता हैं—राजनीति में वे साम्य-वादी—कम्यूनिष्ट हैं। बिवाह उन्होंने नहीं किया, नौकर षष्ठीचरण ही उनकी गृहस्थी में सब कुछ है। जूतों की सिलाई वे मोचियों से करवा लेते हैं और चण्डी पाठ का झगड़ा ही नहीं पालते—इन दोनों कामों को छोड़ कर और जितने भी काम हैं वे सब षष्ठीचरण ही करता है। विजय बाबू भी उसपर अकृत्रिम एवं अगाध निर्भरता रखते हैं; केवल बाजार के खर्च का हिसाब लेते समय वे संदिग्ध होकर सजग होते हैं। कारण यह है कि बाजार के हिसाब में षष्ठीचरण मछली नहीं पूरा तालाब उड़ाता है। मछली का खर्च लिखाने के बाद भी भोजन वह निरामिष देता है। जब पूछा जाता है, मछली कहां है, तब उत्तर देता है, वह तो सड़ी हुई थी।

—सड़ी ही सही, है कहां ?—विजय बाबू उसको रंगे हाथों पकड़ने की चेष्टा करते हैं परन्तु अम्लानबदन षष्ठी तुरन्त उत्तर देता है—फेंक दी ! ढेरों मक्खियां उड़ रही थीं।

विजय बाबू षष्ठी की इस उपस्थिति बुद्धि पर प्रफुल्लित होजाते हैं; दस आने पैसे और देकर कहते हैं, शाम को एक रुपये सेर की मछली सवा रुपये सेर के दाम देकर लाना। आध सेर मछली पानी सूखने के बाद डेढ़ पाव रह जायगी। फिर सड़ी न होगी।

रात को विजय बाबू दस बजे आये। कनाई के साथ गीता को

देखकर उन्होंने कोई विस्मय प्रकट न किया। पूछा—क्यों रे, क्या हाल है ?

कनाई के इंगित से गीता ने विजय बाबू को प्रणाम किया। उन्होंने सस्नेह कहा, अच्छी लड़की है यह। बैठ भाई बैठ।

सम्पूर्ण वृत्तान्त सुन कर कनाई ने पूछा, अब क्या करूं ?

गीता बगल के कमरे में सो गई है।

विजय बाबू ने पुकारा—षष्ठी !

षष्ठी आया। विजय बाबू ने पूछा, ताजी पूरियां क्या भाव मिलेंगी ?

षष्ठी सिर खुजाने लगा। विजय बाबू ने कहा, जो भाव दे उससे चार आने सेर के अधिक दाम देकर आध सेर पूरियां और मिठाई ले आ ! समझा ! और एक रुपया उसे दे दिया।

कनाई बोला, मैं खाऊंगा परन्तु लड़की कुछ न खा सकेगी।

विजय बाबू के ओठों पर एक फीकी मुस्कान दीख पड़ी।

—अब क्या करूं ?

—सीधा उपाय है परन्तु है वह तेरे हाथ में !

—बताएं !

—लड़की के साथ विवाह करके गृहस्थी बसा ले !

कनाई स्तम्भित दृष्टि से विजय बाबू की ओर देखता ही रह

गया। विजय बाबू ने एक सिगरेट सुलगाई और आराम के साथ बिछौने पर लेट गये।

कुछ देर बाद कनाई बोला, नहीं विजयदा, यह न होगा। कोई और उपाय बताएं!

—फिर तूने एक झमेला खड़ा कर दिया।

आवेग में भर कर कनाई ने अपने वंश की गाथा सुनाई और अन्त में कहा, इस विषाक्त रक्त से गृहस्थी नहीं बस सकती।

—विषाक्त रक्त चिकित्सा से निर्विष हो सकता है। कल ही रक्त परीक्षा करवाले और फिर चिकित्सा की व्यवस्था कर। खर्च का प्रबन्ध हो जायगा।

कनाई दो चार क्षण मौन रहा फिर बोला, नहीं विजयदा।

—फिर तू उसे इस तरह क्यों ले आया?

—क्यों ले आया, यह तुम पूछते हो? इतना बड़ा अनाचार—अत्याचार—

विजय बाबू बीच मे ही में बोल पड़े—यह तो आदि काल से होता चला आ रहा है। स्त्री बाल्य में पिता की, यौवन में पति की और वृद्धावस्था में पुत्र की सम्पत्ति है। दुर्भिक्ष और राष्ट्र विप्लव में पिता कन्या और स्वामी पत्नी बेचता आ रहा है।—फिर मुस्करा कर बोले—राष्ट्र विप्लव कदाचित हो परन्तु दुर्भिक्ष तो इस संसार की स्थायी व्यवस्था होगया है। दुखियों और दरिद्रों के लिए सदा दुर्भिक्ष है। फलतः यह क्रय विक्रय भी सदा होता रहता है। इस कलकत्ते का यह एक चिरन्तन व्यवसाय है। कलकत्ता

ही क्यों किसी भी देश की पुलिस रिपोर्ट देख, मालूम हो जायगा कि यह प्राचीन व्यवसाय है। इसकी जैसी सैकड़ों लड़कियां—

कनाई ने भी बात काटी—लड़की का मुंह तुमने अच्छी तरह देखा है ?

—अच्छी तरह नहीं देखा फिर भी आज इसे जो मर्मान्तिक दुख हो रहा है उसका अनुमान करता हूं परन्तु दस दिन बाद यह सहज हो जाता।

कनाई खड़ा हो गया। विजय बाबू ने उसकी उत्तेजना का अनुभव किया और हाथ पकड़ कर खींचते हुए कहा, बैठ !

कनाई कोमल-कठोर स्वर में बोला, तुम इतने हृदयहीन हो, यह मैं न जानता था।

विजय बाबू ने कनाई की बात का उत्तर न देकर पूछा, लड़की कुछ लिखना पढ़ना जानती है ?

कनाई ने भौंहें सिकोड़ कर कहा, रहने दो, तुम्हें इसकी चिंता न करनी पड़ेगी।

—अच्छी आफत है ! जो पूछता हूं, उसका उत्तर क्यों नहीं देता !

—सातवें क्लास तक पढ़ी है। मेरी बहन के साथ स्कूल आती थी। साल भर पहले पिता की नौकरी छूटी है और इसकी पढ़ाई बन्द हुई है।

—फिर—विजय बाबू ने मुस्करा कर कहा, फिर इसे किसी नारी कल्याण आश्रम में भेज दे।

—नारी कल्याण आश्रम ?

—हां। कहो तो मिशनरियों को दे दूं। भविष्य कुछ बन ही जायगा। मेरे एक मिशनरी मित्र हैं, अच्छे आदमी हैं, व्यवस्था हो जायगी।

कनाई हंसा—रहने दो विजय दा। आज रात भर के लिए तुमने जगह दे दी है। आगे की चिन्ता तुम छोड़ दो।

कनाई को मि० मुकर्जी, अशोक के पिता का आश्वासन स्मरण आया। उसने सोचा, व्यापार में वे मेरी सहायता करेंगे, मैं दिन भर में पचास मन चावल बेंच लूंगा तो एक दिन में सौ, महीने में तीन हजार—साल में ३६ हजार रुपये मिल जायंगे। गीता को किसी स्कूल में भरती करवा दूंगा, बोर्डिंग में रहेगी और पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो जायगी। उसके मनका सारा द्वन्द शान्त हो गया।

षष्ठी पूरी मिठाई ले आया और खाने के लिए कहने लगा।

विजय बाबू ने बरामदे में दो बिछौने बिछा दिए। सोने योग्य कमरा एक ही है। दूसरे कमरे में रसोई है, सामान रखा है और षष्ठी सोता है। कनाई ने गीता को बुलाया। वह रसोई में एक चटाई पर लेटी थी और रो रही थी। एकान्त अनुगत की भांति वह आई और कुछ खाया भी परन्तु खाते समय रुदन और भी बढ़ गया। कनाई उसे सान्त्वना देने जा रहा था परन्तु विजय बाबू ने इंगित से रोका और उसे बाहर बुला लिया। कुछ देर बाद विजय बाबू ने गंभीर स्वर में पुकारा गीता ! गीता !

गीता आकर चुपचाप खड़ी हो गई। विजय बाबू ने कहा, कमरे का दरवाजा बन्द कर लो और सो जाओ। गीता ने यही किया।

बरामदे में काफी सरदी है—कलकत्ते में जितनी काफी हो सकती है। विजय बाबू लेटते ही सो गये परन्तु कनाई को नींद न आई। वह अनुशोचना नहीं, स्थिर मनके साथ आज की बातों पर विचार करता रहा।

एरोप्लेन की ध्वनि सुन पड़ती है। एक विमान निकला फिर एक—फिर एक—फिर एक। निशीथ आकाश घर्घर रव से मुखर हो गया। बम्बार विमानों का दल शायद आक्रमण करने जा रहा है या फिर लड़ाकू जहाज सीमान्त पर शत्रु बम वर्षकों की खोज करने जा रहे हैं। विजय बाबू के घर से थोड़ी दूर पर ही गंगा-तट पर पोर्ट कमिश्नर की रेलवे लाइन पर गाड़ियां अविराम गति से चल रही है। शंटिंग के समय उनके धक्के का स्वर प्रचण्ड हो जाता है। दूर पर रेल के बड़े यार्ड में भी शंटिंग हो रही है। कभी-कभी इंजन की सीटी बोलती है। मार्ग के निकट बंदूक और गोली बनाने के कारखाने में कच्चा माल आ रहा है, तयार माल बाहर जा रहा है। हजारों आदमी यंत्र के साथ समान ताल पर काम कर रहे हैं—मजूरी भी डबल हो गई है। गली के मोड़ और बड़ी सड़क के उस पार ए. आर. पी. के अड्डे की बंद खिड़कियों की दरारों से रोशनी झलक रही है। वहां कोई गा रहा है। इस झन-झनाहट के बीचमें ड्यूटी पर बैठे बैठे कोई एक विचित्र मानसिकता के प्रभाव से गाने लगा है।

—दस—

सबेरे उठते ही कनाई अशोक के घर पहुंचा। नया जीवन प्रारम्भ करने के आग्रह से वह इतना अधीर हो गया है कि और दिनों की अपेक्षा पहले ही पहुंच गया। अशोक के घर पहुंच कर उसे यह बात खटकी। फाटक पार करते ही उसने देखा कि घर में अभी सफाई हो रही है। कारपोरेशन के भंगी भी कोठी के बाहर नहीं गये। कनाई के पहुंचने का निश्चित समय साढ़े सात है और साढ़े सात का सबसे बड़ा संकेत यह है कि रेडियो समाचार सुनाने लगता है, वह अब तक चुप है। कनाई कुछ लज्जित हुआ और लौट कर कालेज स्ट्रीट एवं बौ बाजार के चौरास्ते पर खड़ा हो गया। एसप्लेनेड की ट्राम आ रही है। वह उत्सुक हुआ। नीला के दफ्तर की विशृंखल फायलों का स्तूप क्या एक ही दिन में ठीक हो गया है? पश्चिम के फुटपाथ से वह पूर्व के फुटपाथ पर आगया। साथ ही साथ ट्राम भी आई परन्तु यह तो डलहौजी जा रही है। फिर एसप्लेनेड जाने वाली ट्राम आई, इसमें पहिली ट्राम की अपेक्षा भीड़ अधिक है परन्तु नीला नहीं है। पीछे एक और ट्राम आ रही है परन्तु वह भी डलहौजी जा रही है। उसके पीछे एक और है परन्तु वह अभी दूर है।

—नमस्कार! हम आल इण्डिया रेडियो से खबरें सुना रहे हैं!

कनाई चौंका—साढ़े सात बज गये—फिर भी वह खड़ा रहा। पीछे वाली ट्राम को यहां तक पहुंचने में ३-४ मिनट से अधिक समय न लगेगा। केवल तीन चार मिनट!

—"खबरें सुना रहे हैं। कल अर्थात् १६ दिसम्बर को नई दिल्ली से प्रचारित मित्रों के सामरिक विभाग की एक सम्मिलित विज्ञप्ति में बताया गया है कि परसों अर्थात् १५ दिसम्बर को चट्ट-ग्राम पर शत्रु अर्थात् जापानी विमानों ने फिर चढ़ाई की। आक्र-मण दो बार हुआ, एक बार सबेरे और दूसरी बार संध्या के बाद। जापानी विमान दोनों बार कुछ बम गिरा कर जितनी जल्दी हो सका भाग गये। क्षति के परिमाण का कभी पूरा विवरण नहीं मिला परन्तु वह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि हानि की मात्रा और हताहतों की संख्या नगण्य है। कारण, बम लक्ष्यभ्रष्ट होकर इधर-उधर गिरे हैं। इसी तारीख को जापानी वायुयानों ने फेनी पर भी आक्रमण किया। वहां भी सामान्य हानि हुई है।"

सम्वाद घोषक की घोषणा सुन कर कनाई को ऐसा जान पड़ा कि इस व्यक्ति को सामन्त नरपति या थियेटर का एक्टर होना चाहिए था। जिस गुरु गंभीर स्वर और राजकीय ढंग से उसने समाचार सुनाया उससे जान पड़ता है कि यह किसी महत्वपूर्ण चार्टर की घोषणा कर रहा है या नये कायदे से आलमगीर पढ़ रहा है। डलहौजी की ट्राम मोड़ पर घूमी।

—"हमारी विमान सेना भी कल बर्मा पर आक्रमण कर आई है। सैनिक ठिकानों पर सीधे बम पड़ते देखे गये हैं। फौजी

वस्तुओं से भरी ट्रेनों पर बम पड़ने से प्रचण्ड विस्फोट हुए। आग की लपटों से आकाश तक प्रकाशित हो गया। आग शायद अब तक जल रही है। हमारे सब विमान सकुशल लौट आये।"

एसप्लेनेड की ट्राम आगई। वह, हां वह—उस ओर की लेडी सीट पर नीला बैठी है। किन्तु उसका मुंह दूसरी ओर है। व्यग्र कनाई देखता रहा। नीला ने इधर न देखा और ट्राम चलने लगी। इच्छा हुई कि वह भी गाड़ी पर चढ़ जाय परन्तु आत्म संवरण कर लिया।

अशोक की कोठी में भी चटगांव और फेनी की बमवर्षा पर आलोचना हो रही है। मुकर्जी कह रहे हैं, डिसम्बर में ही तीन दिन बांमबिंग हुई चटगांव पर, फिफ्थ, टेंथ एण्ड फिफ्टींथ—ठीक पांच दिन के अन्तर से।

अच्छी खासी कांफ्रेंस जम गई है। मुकर्जी के चारों ओर उनके बड़े, मंझले लड़के और दो-तीन कर्मचारी बैठे हैं। अशोक भी है। वही कनाई को वहां ले गया है। मुकर्जी ने स्वागत किया, बैठिए मास्टर जी! फिर बोले, मैंने सायगां और टोकियो रेडियो सुना है। मेरा विश्वास है कि वे लोग सचमुच एक बड़ी 'एयर अटेक' आरंभ करेंगे।

बड़े लड़के अमल ने कहा, सब हेड आफिस तो बाहर चले गये हैं। आवश्यक कागज-पत्र भी वहीं हैं परन्तु गोदामों का माल हटाना तो आसान नहीं है।

मंझले असीम बोले, वह सब जब 'इन्श्योर' है तब हटाने से लाभ भी क्या होगा ?

—होगा। मैं बताता हूं। 'सुबर्ब' की ओर एक गोदाम लेने की चेष्टा करो। अपने बगीचे में एक गोदाम बन गया है। जितनी जल्दी हो सके और दो गोदाम बनवालो।—मंझले लड़के से बोले, तुम बहुओं को बनारस छोड़ आओ। अशोक वहीं रहेगा। मास्टर जी आप भी अशोक के साथ न चले जाइये। मासिक सौ रुपये तक आपको मिल जायंगे।

कनाई ने विस्मय के साथ उनकी ओर देखा फिर बोला मेरे सामने कुछ असुविधाएं हैं। और—आपने कल कहा था—चावल के व्यवसाय में—

—ओह 'एस' ! मैं भूल गया था। अमल तुम कनाई बाबू को अपना एक एजेंट बना लो। क्रय विक्रय पर इन्हें कमीशन दो। इन्हें सिखाओ और बाजार में खड़ा कर दो। जानते हो ये कितने बड़े वंश के लड़के हैं ? और यदि ये स्वतन्त्र रूप से भी कुछ माल खरीदें-बेंचे तो 'पार्टी' देखकर इन्हें 'क्रेडिट' में भी माल दो।

अमल ने स्नेह के साथ मुस्करा कर कहा—बहुत अच्छा। आप आज से ही आफिस आवें। हो सके तो अभी चलें—मैं जा ही रहा हूं। भोजन मेरे साथ वहीं कर लें।

भोजन की बात पर कनाई ने क्षण भर में ही सोच लिया। इस मामले में उसे दुविधा थी परन्तु उस पर ध्यान दिया जाय तो कार्यारंभ के पहले पग में ही बाधा पड़ती है। उसने सोचा एक

दिन का भोजन ग्रहण करना अपने ऊपर बहुत बड़ा ऋण लादना नहीं है, कमसे कम जो अनुग्रह मैं ग्रहण कर रहा हूँ, उससे बड़ा तो नहीं ही है। दुविधा छोड़ कर वह बोला, चलिए।

—आप उस कमरे में प्रतीक्षा करें—मैं अभी आया। अशोक तुम्हें कुछ समझना हो तो तब तक मास्टर जी से पूंछ लो।—अमल बाबू चले गये।

अशोक के चेहरे से आनन्द फूटा पड़ता है। प्राणमय स्वास्थ्यवान लड़के की दोनों आंखें उज्ज्वलता से चमकने लगी हैं। आप बिजनेस' करेंगे 'सर' ?

कनाई मुस्कराया—चेष्टा की जाय।

—ठीक होगा 'सर', एक बर्ष बाद आपको मोटर लेनी पड़ेगी, नहीं तो काम ही समाप्त न होगा।

—कहते क्या हो ?

—देखिएगा, फिर कहिएगा।

लड़के की आन्तरिक शुभेच्छा से कनाई ने तृप्ति का अनुभव किया। अशोक वास्तव में उसे प्यार करता है।

—किन्तु मेरे लिए बड़ी कठिनाई हो जायगी 'सर' !

—क्यों ?

—नये मास्टर आवेंगे। वे आपकी तरह न पढ़ा सकेंगे।

—संभव है मुझ से अच्छा पढ़ावें।

—नहीं। अशोक ने कई बार गरदन हिला कर अस्वीकार किया। कनाई हंसा—अच्छा 'बिजनेस' करने पर भी मैं तुम्हें पढ़ाऊंगा।

अशोक भी मुस्कराया—पढ़ाना फिर आपको अच्छा न लगेगा और 'टाइम' भी न मिलेगा। जानते हैं, बाबा क्या कहते हैं? 'वार-मारकेट' में लाभ उठाने का सबसे अच्छा समय अब आया है। इतने दिन तो जोड़ गांठ करने में ही बीत गये हैं, विशेष कर चावल, आटे और चीनी के व्यापार में। बाबा हंसते हंसते कह रहे थे—हमारे गुदाम की चाभी एक सप्ताह के लिए खो जाय तो बंगाल में आठ दिन चूल्हे भी न जलें!

—सच?

—ओह! बाबा ने चावलों का बहुत बड़ा 'स्टाक' जमा किया है!

कनाई ने अर्थशास्त्र की अच्छी शिक्षा प्राप्त की है परन्तु व्यापारी घर के इस लड़के का सुना और देखा अर्थ ज्ञान देखकर वह विस्मित हुआ।

अमल बाबू ने बाहर से बुलाया—मास्टर जी! कनाई बाहर निकले तो उन्होंने हंस कर कहा, मि० चक्रवर्ती के नाम से तीन बार पुकार चुका हूं। आपने सुना भी नहीं! अब ध्यान रखें। 'बिजनेस क्वार्टर' में मास्टर जी के सम्बोधन से आप लोगों के 'इस्टीमेशन' में हल्के हो जायंगे।

डलहौजी स्क्वायर और उसके आस-पास के रास्तों के चारों ओर ईंट, लोहे, पत्थर और लकड़ी के संयोग से जो विराट भवन

बने हैं उन्हें कनाई ने बाहर से कई बार देखा है। चार, पांच और सात खण्डों के आकाशस्पर्शी भवनों के अतिकाय आकार, अति कठोर दृढ़ता और अत्युच्च अभिव्यक्ति में अपरिमेय ऐश्वर्य का परिचय मिला है परन्तु आनन्दमय श्री के किसी आकर्षण ने कनाई के अन्तर को कभी आकर्षित नहीं किया। आज भी वह जब अमल के साथ एक पंच-खण्डे भवन के पहले खण्ड में पहुंचा तब उसकी स्नायुमण्डली ने एक कम्पन अनुभव किया और वह एक चमक में परिस्फुट हुआ। अपने सिर पर वह एक क्षीण आनुनासिक स्वर सुनकर वह चौंका परन्तु तुरन्त संभल गया। ऊपर से लिफ्ट आई और उसके सामने खड़ी होगई। लिफ्टमैन ने दरवाजा खोला और अमल को सलाम किया।

अमल ने कुछ देर आफिस में बैठ कर डाक देखी और उस पर अपनी सम्मति लिख दी। फिर कनाई से बोला—चलिए, कुछ बड़े दफ्तरों में चलना है। आप भी देख आवें।

कनाई ने अमल को आज एक अद्भुत रूप में देखा। इस रूप की तो उसने कल्पना भी न की थी। कोठी पर कई बार अमल के साथ वार्तालाप हुआ है, शिल्प साहित्य और विज्ञान में उसने ऐसी अज्ञता, यहां तक कि मूर्खता का परिचय दिया है कि कनाई मनाई मन में हंसा है और उसे 'स्वर्णांकुर गर्दभ' की उपाधि दी है। कोठी में ऐश्वर्य विलास के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, अमल बाबू पर उसका प्रभाव प्रसाधन और प्रमोद में ही प्रकट हुआ है परन्तु वही ऐश्वर्य यहां एक विद्युद् शक्ति बन गया है और

अमल बाबू के दृढ़ आत्मविश्वास एवं स्वच्छन्द साहसिक पदविक्षेप में उसका बिस्मयपूर्ण प्रकाश हो रहा है! वह अमल बाबू पर श्रद्धान्वित हुआ। बड़ी बड़ी अंग्रेजी कम्पनियों के अधिकारियों के साथ उनका निर्द्वन्द और समकक्ष व्यवहार देखकर वह मुग्ध हो गया। ईंट-पत्थर और लोहे-लक्कड़ से बनी इस पुरी का आन्तरिक परिचय पाकर तो वह स्तम्भित ही हो गया। यहां तो लक्ष्मी और कुबेर जुआ खेल रहे हैं। लक्ष्मी निरन्तर हार रही हैं और खेल का दान देने के लिए अपनी अक्षय सम्पदा के सम्पूर्ण भण्डारों को उन्मुक्त रखने के लिए बाध्य हो रही हैं। पृथ्वी के शस्य क्षेत्र, किसानों के खलिहान, दुर्गम अरण्य, पहाड़-पर्वत, नद-नदी, उत्तप्त और अन्धकार पूर्ण भूगर्भ—लक्ष्मी की सम्पदा के जितने भी स्थान हैं, सबके समुद्र कुबेर के इसी भण्डार में समा रहे हैं। नगर के मुहल्लों से ट्रेनों, ट्रामों और बसों पर बैठ कर तथा पैदल चल कर जो लाखों आदमी सबेरे से शाम तक यहां दौड़ कर आते हैं और फीके मुंह तथा कुबड़े शरीर लिए काम करते रहते हैं—वे सब कुबेर और लक्ष्मी के इस खेल का हिसाब रखते हैं—दान का बोझ उठाते हैं।

बाहर का काम समाप्त करने के बाद अमल बाबू ने आफिस का एक चक्कर लगाया। कितनी तीक्ष्ण दृष्टि है! काम की शिथिल गति तुरन्त ताड़ ली। कुछ आदमियों का काम मंगाया और उस पर नोट लिखकर डिपार्टमेंट के इंचार्ज के पास भेज दिया।

भोजन करके अमल बोला, चलिए अपना बागीचा देख आयें।

कनाई मन में कुछ चंचल हो गया, उसका अपना काम तो अब तक कुछ भी नहीं हुआ। अमल ने बात समझ ली और हंस कर बोला, आपका काम प्रारम्भ होगया है कनाई बाबू। स्थान, काल और पात्र के संयोग से यह संसार है। पहले जिस स्थान पर आकर खड़े हुए हैं, उसे पहचान लीजिए।

कनाई ने कुछ अप्रतिभ होकर कहा, जी हां। आप ठीक कहते हैं।

मोटर पर बैठ कर अमल ने सिगरेट सुलगाई।—आप सिगरेट नहीं पीते? नहीं? पीजिए भी, 'एट लीस्ट टू कीप कंपनी'—कह कर वह मुस्कराया। कनाई भी मुस्कराया। अमल फिर बोला, आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं कनाई बाबू। मैं अपने मन का एक 'असिस्टेंट' चाहता हूँ—'असिस्टेंट' नहीं 'पार्टनर'—अपना बन्धु! मेरी एक 'सेपरेट बिजनेस' भी है, घर में भी उसे कोई नहीं जानता—बाबा भी नहीं। मैं बताना भी नहीं चाहता। इसीलिए एक बिश्वासी बन्धु चाहता हूं—उसे अपना 'पार्टनर' बनाऊंगा।

गाढ़े स्वर में कनाई ने उत्तर दिया—अविश्वास का काम मैं कभी न करूंगा परन्तु बन्धु तो यह कहने से ही नहीं बन सकता कि मैं बन्धु बनूंगा।

'स्टेयरिंग' थाम कर और अपनी दृष्टि सामने की ओर निबद्ध रख कर अमल ने कहा, आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। खुशामदी आदमी मैं पसन्द नहीं करता। मैं आपका बन्धु हो गया, आप मेरे बन्धु बनने की चेष्टा करेंगे?

कनाई ने हंस कर उत्तर दिया—'विद आल माई हार्ट'!

एक हाथ से 'स्टियरिंग' पकड़ कर अमल ने दूसरे हाथ से सिगरेट केस बाहर निकाला और कनाई को दे कर बोला, फिर आइये, पाप का साथी बनकर बन्धुत्व को गाढ़ और दृढ़ कर लीजिए।

अमल ही फिर बोला, मेरे और भी एक बन्धु हैं, जिस कारखाने को देखने जा रहे हैं, वे उसके मैनेजर हैं। आश्चर्यजनक व्यक्ति हैं!

कलकत्ते से लगभग १५ मील दूर नगर के ही एक गांव में इन्हें जाना है। गाड़ी बड़ी सड़क छोड़ कर एक अपेक्षाकृत संकरी सड़क पर घुसी। इस सड़क पर भी मिलिटरी की लारियां चल रही हैं। किसी-किसी बगीचे में फौज की छावनी भी पड़ी है। नये भवन बन रहे हैं। दो चार स्थानों पर बस्ती तोड़ कर मैदान बनाया गया है—वहां भी छावनी पड़ेगी। सड़क के किनारे बड़े बड़े बगीचों में फौजी लारियां कतार बांधे खड़ी हैं। सड़क पर दीहाती आदमी आ-जा रहे हैं। पेड़ों की भीड़ में फूस के घर, किनारे पर गड्ढों जैसे तालाब और शस्य से समृद्ध खेत दीख पड़े। मटर की लताओं में फूल लग गये हैं, गेहूं, जौ और सरसों के पेड़ों पर गहरी हरियाली चढ़ी है। जनविरल पथ पर गाड़ी मनमानी चाल से जा रही थी, अकस्मात् एक भीड़ सामने आई और अमल ने उसकी गति धीमी कर दी। स्त्रियों, बच्चों और पुरुषों का एक समूह आ रहा है; उनके सिर पर और बगल में दुनिया भर की चीजें हैं, किसी-किसी के कंधे भी भार से लदे हैं; छोटे लड़के गउओं और

बकरियों को हांक रहे हैं। अमल ने गाड़ी रोक ली और एक वृद्ध को बुलाकर पूछा—तुम्हें घर-द्वार छोड़ना पड़ा है ? गांव में क्या पल्टन की छावनी बन गई है ?

वृद्ध उसके मुंह की ओर देखता ही रह गया, कोई उत्तर न दे पाया, उसके दोनों ओंठ कांपे और विशीर्ण अश्रुधारा आंखों से बह कर गालों पर आ गई। सम्पूर्ण दल ही खड़ा हो गया है। स्त्रियां विस्मय के साथ अमल और कनाई को देख रहीं हैं। एक सुश्री सुन्दरी तरुणी की दृष्टि कनाई पर जम ही गई हैं।

अमल ने फिर पूछा—तुम्हें मकानों का मोल मिल गया है ?

एक वृद्धा बोली, मिला है लेकिन उसे क्या करें। पुरखों की देहरी छोड़ कर कहां जांय ! वृद्धा ने आंखें पोंछी। एक दूसरे व्यक्ति ने उसकी असम्पूर्ण बात का स्वर उठा कर कहा, घर-दुआर और ताल-तलैया छोड़ना आसान तो नहीं है बाबू ! उसकी आंखों से भी आंसू बहे, वही नहीं, सभी रोने लगे। कनाई का अन्तर भी व्यथित हुआ।

अमल बोला, क्या किया जाय, लड़ाई हो रही है, आदमियों को कष्ट तो सहना ही पड़ेगा। सिपाहियों को रहने का ठिकाना न देंगे तो वे रहेंगे कहां। बहुत से बड़े-बड़े मकान भी तो लिए गये हैं !

वृद्ध हंसा, बोला, जिनके पास पांच हैं उनसे एक ले लिया गया तो वे दूसरे में रहेंगे। हम क्या करें, कहां जांय ?

—तुम्हें रहने की जगह चाहिए तो मैं दे सकता हूं।······पुर जानते हो ?

······पुर ? जानता हूं !

—वहां रायबहादुर विभूति बाबू के बगीचे में आ जाओ। मैं भी जा रहा हूँ। रहने की जगह मिल जायगी। अभी हमारी टीनों के नीचे रह जाना फिर घर बना लेना। वहां मकान बन रहे हैं—तुम्हें मजूरी भी मिल जायगी।

सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

—क्या कहते हो ?

—देखें, सोचेंगे।

अमल ने पांच रुपये का एक नोट वृद्ध के हाथ में रखा और बोला, लड़कों के लिए कुछ खरीद देना और ठीक समझना तो आना। ···पुर में विभूति बाबू के बगीचे में। वहां तुम्हें जगह मिल जायगी।

गाड़ी पर बैठ कर अमल ने कहा, कितने अभागे हैं बिचारे !

कनाई ने आंखें पोंछी ! अमल बोला, लेकिन वह सुन्दरी लड़की उनके बीच में अच्छी न लगती थी।

लम्बा-चौड़ा बगीचा है। कभी किसी शौकीन धनी ने प्रमोद वासर के रूप में इसे सजाया था। समाज में आदि काल से ही मायावाद, त्याग और संयम आदि की महिमा का अजस्र प्रचार होते हुए भी वशिष्ठ, और बुद्ध एक हो दो हुए हैं। ऋषियों और मुनियों की संख्या भी नगण्य है, अनुपात जोड़ा जाय तो करोड़ों में

शायदएक की भी औसत न पड़े। मनुष्य के निकट इन्द्रत्व के प्रलो-भन और आदर्श को किसी तरह भी खर्व नहीं किया जा सका। व्यवहारिक जगत् में वास्तव में इन्द्रत्व के लिए ही तपस्या होती रही है। साधारण मनुष्यों के नाम ही देख लिए जांय तो इन्द्रत्व युक्त नामों की संख्या ही अधिक मिलेगी। हरिदास इत्यादि भी हैं परन्तु कामना वे हरेन्द्र बनने की ही करते हैं। इन्द्रत्व के गौरव और लोभनीय अधिकारों में नन्दन कानन एक श्रेष्ठ वस्तु है। अप्सरा और सोमरस का सम्बन्ध भी इसके साथ अविछेद्य है। इसीलिए वास्तव जगत् में आध-तोला या एक तोला इन्द्रत्व संचित होते ही, उसके अनुरूप एक नन्दन कानन बनाने का आग्रह भी मनुष्य में स्वभावत: उत्पन्न होता है। ऐसे ही किसी छटंकी इन्द्र का नंदन कानन रायबहादुर बी. बी. मुकर्जी के व्यवसाय-अश्वमेध के फल से हस्तान्तरित होकर अब उनके अधिकार में आगया है।

बगीचे के बीच में सरोवर है और सरोवर के तट पर सुन्दर भवन। कनाई को जान पड़ा, भवन के फर्श पर जो पत्थर लगे हैं उनकी दरारों का रासायनिक विश्लेषण किया जाय तो मर्त्य सुलभ सोमरस और नर्तनरता अप्सराओं की चरण धूलि आज भी मिल जायगी। फिर भी मुखोपाध्याय महाशय विशेष कर अमल बाबू पर कनाई को श्रद्धा हुई। कारण इन्द्रत्व की साधना करते हुए भी नन्दन कानन पर वे इतना अनुराग नहीं रखते। भवन और सरो-वर स्थिर है परन्तु नन्दन कानन को उन्होंने विश्वकर्मा की प्रयोग-शाला बना दिया है—बगीचे को कारखाने में बदल दिया है।

बगीचे में प्रवेश करते ही टीन के ५-६ बड़े बड़े शेडों पर दृष्टि गई।

गाड़ी रुकते ही कारखाने के मैनेजर लपके। स्वस्थ, सबल व्यक्ति हैं। मात्रातिरिक्त आनुगत्य उनके व्यवहार का वैशिष्ठय है। मोटर का दरवाजा खोलकर संभ्रम के साथ मुस्कराते हुए बोले—'गुडमार्निंग सर'!

अमल बाबू ने मुस्करा कर उनका हाथ दबाया और उत्तर दिया, 'गुडमार्निंग'! कैसे हैं जितूदा!

—आपकी दया से जीवित हूं भाई! जीतूदा हंसे।

—काम कैसा चल रहा है?

—प्राण देकर परिश्रम कर रहा हूं। आज स्वयं हथौड़ा पकड़ा था। आदमियों का अभाव है। 'लेबर' नहीं मिलते।

अमल बोला—क्या खिलाइयेगा? आपके लिये मजदूरों की, अवश्य थोड़ी बहुत व्यवस्था कर दी है। 'परमानेंट लेबर' यहीं रहेंगे। लगभग दस पुरुष, बारह स्त्रियां और कुछ लड़के हैं, उनमें से भी कुछ काम दे देंगे।

अमल ने पूरा विवरण सुनाया।

मैनेजर जितू बाबू उत्साहित हो उठे, उनका उत्साह भी असाधारण है।

अमल फिर बोला, उनको देख कर बहुत दुःख हुआ जितूदा! विचारे आश्रयहीन हो गये हैं। सोचा आश्रय देने से उनका भी उपकार होगा और अपना भी।

जितू बाबू की दृष्टि सकरुण हो गई, बोले, आपका कल्याण होगा भाई।

हाथ की घड़ी देखकर अमल ने कहा, चावल का गोदाम देखूंगा। आपने देखा है न? खराब तो नहीं हुए?

—मैं दो बार देखता हूं! आइये स्वयं भी देख लीजिए!

गोदाम की दीवालें ईंट से बनी हैं, ऊपर टीन पड़ी है। दरवाजा खुलते ही कनाई स्तम्भित होगया। गुदाम में एक किनारे से लगाकर दूसरे किनारे तक चावल के बोरे भरे हैं।

अमल ने तीक्ष्ण दृष्टि से चारो ओर देखा। कनाई ने देखा कि अमल की आकृति बदल गई है—उसके अवयव से जितू बाबू के साथ बन्धुत्व का सारा प्रकाश विलीन हो गया है।

बाहर निकल कर अमल ने कहा, ठीक है। कुछ पग आगे बढ़ कर पूछा, ढाई हजार बोरे हैं?

जितू बाबू ने संभ्रम के साथ उत्तर दिया—हां

शेष पांच शेडों में से तीन में लोहे का छोटा-मोटा कारखाना है। मशीनों पर नट काटे जारहे हैं। दो-तीन नापों के हजारों नट बन गये हैं। मिलिटरी कन्ट्राक्ट का माल है। दो शेड अभी बन रहे हैं, ऊपर टीन पड़ गई है, आस पास ईंटें लग रही हैं।

अमल ने पूछा—उन दोनों में भी शायद पांच हजार बोरे आ जायंगे?

जितू ने उत्तर दिया—अधिक आयेंगे। नाप में वे पहले की अपेक्षा १५ फुट अधिक लम्बे हैं।

अमल हंस कर बोला, आप 'वण्डरफुल' आदमी हैं ज़ितू दा!
—वह फिर बदल गया।

जितू बाबू बोले, आपका काम एक ओर है और हमारे प्राण एक ओर। आपके पिता हमारे निकट देवता हैं!

अमल हंसा—देवता के पुत्र को चाय तो पिलाइये! ओह आपका परिचय कराना तो भूल ही गया। ये मेरे बन्धु कनाई चक्रवर्ती हैं और आप मेरे स्वनाम धन्य जितू दा—जितेन्द्र बोस!

जितू बोस ने संभ्रम के साथ झुक कर हाथ आगे बढ़ाया, बोले मेरा सौभाग्य!

कनाई नमस्कार करने जा रहा था परन्तु जितू का हाथ बढ़ते देखकर उसने भी हाथ बढ़ा दिया।

अमल बोला—'वी आर फ्रेण्डस्'—समझे जितू दा!

अमल अद्भुत् व्यक्ति है! कनाई तो अवाक् होगया।

आफिस लौट कर वह फिर बाहर निकला। सरबराह (सप्लाई) विभाग के प्रकाण्ड कार्यालय में पहुंचा। कनाई को भी साथ ले गया। चारो ओर फौजी वरदी वाले चपरासी घूम रहे हैं। एक बौने चपरासी को देखकर कनाई विस्मित होगया। वह तीन फुट से भी कम लम्बा है। अमल को देख कर उसने फौजी ढंग से सलाम किया। अमल ने मुस्करा कर उत्तर दिया और कनाई से बोला, आप यहीं प्रतीक्षा करें, मैं अभी आया।

कनाई उस बौने की बात पर ही विचार करने लगा। याद आया कि लंका के युद्ध में सेतु बांधते समय एक गिलहरी ने

भी सहायता की थी। इस युद्ध में भी मशीनों, कबूतरों, घोड़ों, खच्चरों, बैलों, ऊंटों और हाथियों आदि की कितनी शक्ति नियोजित हो रही है! मनुष्य की चर्चा ही क्या की जाय—इस बौने की श्रमशक्ति भी उपेक्षणीय नहीं है! उसने एक लम्बी सांस ली—आज चालीस कोटि मनुष्यों की शक्ति असाध्य को भी सिद्ध कर सकती थी!

—मिस्टर चक्रवर्ती!

अमल बुला रहा है। कनाई उठा। अमल उसे कमरे के भीतर ले गया और फौजी वरदी वाले एक अंग्रेज के साथ उसका परिचय कराने के बाद बोला—मैं किसी कारण से न आ सकूंगा तो ये आवेंगे।

साहब ने कनाई से साग्रह हाथ मिलाया और कहा, मैं बहुत प्रसन्न हुआ मि० चक्रवर्ती!

गाड़ी पर बैठ कर अमल ने एक घड़ी निकाली और दिखा कर बोला, साहब से खरीदी है, जानते हैं कितने रुपये में?

घड़ी सोने की है।

अमल हंस कर बोला, एक हजार में!

फिर बोला—आप का भाग्य अच्छा है। एक बड़ा आर्डर मिल गया है।

आफिस के अन्तिम घण्टे में अमल बोला—कनाई बाबू, उस कमरे में कुछ लुहार बैठे हैं। जंगल काटने की छुरियां बनाने का आर्डर लेने आये हैं। लोहा हम देंगे, वे बना देंगे। लकड़ी की

मुट्ठियां भी हम पहुंचायेंगे, वे फिट कर देंगे, हम बनाने का खर्च एक छुरी के लिए डेढ़ रुपये तक दे सकते हैं। आप देखें उनसे कहां तक 'सेटेल' कर सकते हैं।

लोहे के देशी कारीगर हैं लेकिन उनकी जानकारी साधारण नहीं है। वे बोले, दो रुपये से कम नहीं हो सकता। हमें दो रुपये देकर भी आप काफी लाभ उठा लेंगे।

कनाई अपना कृतित्व दिखाने के लिये कटिवद्ध था। मोल-तोल करने की कला का प्रत्यक्ष ज्ञान न होते हुए भी उसने पद्धति सुनी है और इसके भी पहिले यह सुन लिया है कि 'कभी किसी को वंचित न करना!' वह बोला कम्पनी एक रुपये बारह आने से अधिक नहीं दे सकती। तुम न करोगे तो हमें दूसरे कारीगर बुलाने पड़ेंगे।—और वह दृढ़ता के साथ उठ कर खड़ा हो गया।

कनाई की दृढ़ता देख करके वे कुछ दबे, एक बोला, छोड़िये बाबू जी, एक रुपया चौदह आने कर दीजिए! इससे कम नहीं हो सकता।

दुविधा से भरे कनाई ने अमल से बताया। उसने हंस कर कहा, आप दबाते तो और भी कम हो सकता था। चलो जाने दो। साथ ही साथ एक 'वाउचर' आया, कनाई को साढ़े बासठ रुपये दलाली में मिले हैं। कनाई विस्मित हुआ।

अमल बोला—हमने 'मेकिंग चार्ज' दो रुपये रखा था। आपने दो आने घटा दिए हैं, इसमें एक आना आपको मिला है।

रुपये लेकर कनाई मोहग्रस्त की भांति बाहर निकला।

वह सोच रहा है, रुपये उसे किस कारगुजारी के बदले में मिले हैं? क्या उसने लुहारों को वंचित नहीं किया?

चलते समय अमल बोला—कल ग्यारह बजे आजाइयेगा।

कर्जन पार्क में पहुंच कर कनाई बैठ गया।

कुछ देर तक वह अमल की बात पर विचार करता रहा। उसने कहा था, आप दबाते तो और भी कम हो जाता! अर्थात् मेरे कारण ही लुहारों को कुछ अधिक मिल गया है। कनाई को कुछ सांत्वना मिली। वह उठा। आफिस समाप्त हुए हैं। सड़क पर भीड़ बेहद बढ़ गई है। एसप्लेनेड के ट्राम-शेड के नीचे अकस्मात् नीला से भेंट हो गई। कनाई के मन का सारा अवसाद क्षण भर में विलीन हो गया।

नीला बुकस्टाल के पास खड़ी थी। कनाई कौतुक के साथ उसके पीछे खड़ा हो गया। नीला समाचार पत्र देखने में एकाग्र थी। कनाई कुछ और झुका—उसकी गरम सांस नीला की गरदन पर पड़ी। नीला ने गरदन घुमाकर पीछे की ओर देखा। श्यामल मुखश्री पर दृप्त अभिव्यक्ति स्पष्ट हो आई थी। परन्तु वह अभिव्यक्ति सस्मित प्रसन्नता में बदल गई और मुख उज्वल हो गया।

—आप?

—हां कामरेड ! आज कनाई ने उसे मिस सेन नहीं, प्रारम्भ से ही कामरेड कहा । परन्तु उसी समय आस-पास की जनता का ख्याल आया और चैतन्य होकर बोला, काफीखाने चाहिए। आज मैं काफी पिलाऊंगा।

नीला मुस्कराई—बदला देते हैं ?

—बदला नहीं। आज मैंने पहली बार उपार्जन किया है। चलिए वहीं बातें करेंगे।

—नौकरी कर ली है ? कालेज क्या छोड़ दिया आपने ?

—कालेज छोड़ दिया है परन्तु नौकरी नहीं की—व्यापार किया है—'बिजनेस'।

—'बिजनेस' ?

—हां, आइये।

काफीखाने में बहुत भीड़ है। कनाई अपनी कहानी न सुना सका, न कह सका कि मेरे जीवन में मर्मान्तक आघात भयंकर रूप में आकर भी परम कल्याणकर मुक्ति दे गया है। और बहुत सी बातें हुईं। पार्टी की चर्चा चली।

बाहर निकल कर नीला बोली, आपने अपनी बात तो की ही नहीं !

कनाई ने पूछा, पार्क चलेंगी ?

संध्या उतर आई थी, सड़क की बत्तियां जल गईं थीं। नीला ने उनकी ओर देख कर कहा, अंधेरा हो गया है—बाबा चिन्ता करेंगे।

—फिर ? मेरी कहानी तो लम्बी है।

—संक्षेप में कहिए।

—संक्षिप्त नहीं हो सकती—अच्छा और किसी दिन सही।

नीला बोली, परसों, शनिवार को। कर्जन पार्क में भेंट होगी। फिर न होगा तो ईडन गार्डन भी चलेंगे।

—अच्छा, मैं प्रतीक्षा करूंगा।

नीला मुस्कराई—शायद मैं ही प्रतीक्षा करती मिलूं। कारण कहानी सुनने का आग्रह कहने के आग्रह से अधिक है।

कनाई बोला, एक बात कह दूं—आज से मुझे मुक्ति मिल गई है। मेरे बन्धन टूट गये हैं—मैं अपने घर के साथ सब सम्बन्ध तोड़ आया हूं।

नीला ने विस्मय के साथ उसकी ओर देखा।

ट्राम आई और दोनों के पास खड़ी हो गई।

घर अर्थात् विजय बाबू के घर पहुंच कर कनाई ने देखा कि विजय बाबू भयंकर रूप से व्यस्त हैं। जीने के नीचे खड़े षष्ठी को बार-बार बुला रहे हैं। वह टैक्सी लेने गया है।

एक भिक्षुक श्रेणी की स्त्री किसी दुःसह वेदना से कराह रही है, गीता पंखा लिए उसके पास बैठी है। बगल में दो लड़के खड़े है और रो रहे हैं, मुंह से जान पड़ता है कि उसी स्त्री के लड़के हैं। मां की वेदना देख कर ही शायद वे रो रहे हैं।

स्त्री आसन्न प्रसवा है और प्रसव-पीड़ा से अधीर हो रही है!

स्त्री जाति से मुसलमान और दक्षिण बंगाल की रहने वाली है। पिछले तूफान में उसके पति की मृत्यु हो गई है। सामरिक विभाग की आज्ञा से, दो सन्तानों का हाथ पकड़ कर और एक को गर्भ में लेकर वह गांव छोड़ कर इस महानगरी में अन्न की खोज में आई है। गर्भ का शिशु आज धरिणी का वक्ष स्पर्श करने के लिए व्यग्र हो रहा है।

विजय बाबू आफिस जाने के लिए बाहर निकले तो देखा कि वह कूड़े के 'डास्टबिन' में पड़ी कराह रही है, लड़के फुटपाथ पर रो रहे हैं। विजय बाबू ने षष्ठी को टैक्सी लेने भेजा है। इसे अस्पताल ले जायंगे।

एक टैक्सी आई, उस पर षष्ठी बैठा है।

—ग्यारह—

कनाई ने पुकारा—गीता!

कोई उत्तर न मिला।

कनाई ने फिर बुलाया। फिर भी उत्तर न मिला तो वह रसोई में देखने गया। कल रात से गीता ने अधिकतर रसोई में ही रहने की चेष्टा की है। रात को विजय दादा के हुक्म ने उसे कमरे में सोने के लिए बाध्य किया था। हुक्म टालने की शक्ति गीता में नहीं है। उसका स्वभाव ही कोमल है परन्तु उसकी नमनीयता में दारिद्र्य की भीरुता का प्रभाव ही अधिक है। थोड़े

से समय में ही उसने समझ लिया है कि यहां मैंने अनधिकार प्रवेश किया है और सम्पूर्णतया दया पर ही निर्भर हूं। कनाई का हृदय उसके लिए करुणा से भर गया। रसोई का दरवाजा धकेल कर उसने पुकारा—गीता !

गीता यहां भी नहीं है। षष्ठी बैठा बीड़ी पी रहा है। कनाई को देख कर उसने बीड़ी बुझा दी।

कनाई ने उद्विग्न हो कर पूछा, गीता कहां गई ?

षष्ठी ने उसकी ओर देख कर कहा, मुझ से पूंछते हैं ?

कनाई विरक्त होकर बोला, और किससे पूछता हूँ !

षष्ठी बोला, नहाने गई है।

—नहाने ? जाड़े की शाम में स्नान क्यों करने गई है ?

—यह मैं नहीं जानता। पूंछा भी नहीं। वह बोली, षष्ठी दादा मैं नहा आऊँ।

गीता बाथरूम से बाहर निकली। उसके बदन पर एक धोती है। भीगे बाल पीठ पर फैले हैं। उसके ओठों पर विनीत और म्लान मुस्कान दीख पड़ी।

कनाई ने पूछा—तुम शाम को नहाने क्यों गईं गीता ?

गीता ने मृदुस्वर में उत्तर दिया, उस स्त्री को छुआ था न !

कनाई ने स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा, तुम मनुष्य को इतना अपवित्र समझती हो ? छि: !

गीता ने क्षणभर के लिए अपनी भीरु दृष्टि कनाई की ओर उठाई, फिर घोर अपराधी की भांति भूमि की ओर झुका ली

और मूर्ति की भांति स्थिर हो गई। उसके सर्वांग पर अपराध की स्वीकारोक्ति स्पष्ट हो गई। कनाई उसकी दशा देख कर और कुछ कहने का साहस न कर सका अपितु करुणार्द्र हो गया। और फिर उसकी करुण दृष्टि गीता की धोती पर विशेष अर्थ लेकर पड़ी। उसने सोचा गीता तो एक ही धोती पहन कर आई है। इसे कपड़ों की आवश्यकता है और मेरे पास भी कपड़े नहीं हैं। मैं सबेरे ही निकल गया था, दिन भर स्नान करने का भी अवसर नहीं मिला। इसी लिए कपड़ों का ख्याल भी नहीं आया। वह स्नेह के साथ गीता से बोला—चूल्हे की आंच के पास बैठो। जाड़े के दिन हैं, इसीलिए कह रहा था। इसके अतिरिक्त गीता, छूने-छाने के विचार को अब हम लोग भूल समझते हैं—अपराध मानते हैं।

गीता चुप रही। कनाई फिर बोला, जाओ, चूल्हे के पास बैठो!

अब वह किसी तरह बोली—चूल्हे में भोजन बन रहा है!

—फिर क्या हुआ?

—चौका छूत हो जायगा।

कनाई के मस्तिष्क में गीता का संकेत बिजली की तरह कौंद गया। मैं प्राचीन चक्रवर्ती वंश की सन्तान हूं। मेरे घर में पाप को कोई मानेया न माने—पाप-पुण्य का विधान सबको कण्ठाग्र है। असहाय अवस्था में गीताके शरीर पर जो अत्याचार हुआ है उसके कारण प्रचलित देशाचार के अनुसार वह अपने आपको अस्पृश्य समझ रही है। कनाई बोला नहीं, नहीं, यह सब व्यर्थ की बातें हैं।

गीता ने इस बार दृष्टि उठा कर कनाई की ओर देखा।

कनाई बोला, तुम देवता की पूजा के फूल की भांति पवित्र हो। तुम ऐसी बातें न सोचो। तुम निष्पाप हो! परम स्नेह के साथ गीता के सिर पर हाथ फेर कर वह बोला, जाओ चूल्हे के पास बैठो। मैं बाजार हो आऊं। कपड़े चाहिए न!

रास्ते में भी कनाई इसी प्रश्न पर विचार करता रहा—मैं गीता के लिए क्या करूं? उसका यह अकारण अपराध-बोध—अपने आपको हीन समझने का यह भाव क्या कभी दूर होगा?

गीता ने कनाई का कहना माना। जाड़े में भी समय असमय नहाने का अभ्यास उसे है फिर भी सरदी लग रही है। बदन पर धोती के सिवा दूसरा कपड़ा भी नहीं है। चूल्हे के पास उसे आराम मिला। दहकते हुए कोयलों की आंच! आग की रक्ताभ दीप्ति की ओर देखती हुई वह बैठी रही। उसकी संध्या इसी तरह चूल्हे के पास बीतती रही है। घर में रसोई वही बनाती थी। हां, इधर कुछ दिन से अभाव के कारण प्रतिदिन चूल्हा न जलता था! कौन जाने आज भी जला है या नहीं? गीता सिहरी। यह सोच कर ममता, दुःख और धिक्कार से उसकी छाती धड़कने लगी कि पेट की कितनी भीषण ज्वाला से पीड़ित होकर मां-बाप ने मेरा शरीर बेंच कर चूल्हा जलाने की व्यवस्था की थी। मां का मुख गीता के सामने आया—वे कभी सुन्दरी थीं परन्तु अब उनकी छाती की प्रत्येक हड्डी बाहर निकल आई है। वे शायद रो रही होंगी, मेरे ही लिए रो रही होंगी। भाई हीरेन शायद घर ही नहीं आया,

मैं नहीं हूं इसीलिए नहीं आया ! पिता, स्वास और दमे के रोगी पिता—बिछौने पर बैठे बीड़ी पीते और ऊब कर खांसते होंगे।

गीता की कल्पना कोरी कल्पना नहीं है। पुराने दृश्यों की जैसी पुनरावृत्ति उसके अन्तर में हो रही है वैसी ही पुनरावृत्ति उसके घर में भी चल रही है। गीता के पिता सचमुच ऊब कर खांस रहे हैं, गीता की कल्पना से कुछ अधिक खांस रहे हैं, कारण ठीक इसी समय में उन पर रोग का निष्ठुर आक्रमण हुआ है और उन्होंने चारपाई पकड़ ली है। दिन भर से पेट में भी कुछ नहीं पड़ा। गीता की मां सरोजिनी ने जरा सा तेल गरम किया है, वही मल रही है। लड़का हीरेन भाग्य से घर आगया है, वह पंखे से हवा कर रहा है। कमरे में अस्वाभाविक निस्तब्धता है—किसी के मुंह के शब्द तक नहीं निकलता। प्रद्योत भट्टाचार्य की खांसी इतनी बढ़ गई है कि कराहने का भी अवसर नहीं मिलता। बाहर रात के आकाश में वायुयान उड़ रहे हैं।

कुछ देर बाद प्रद्योत कुछ स्वस्थ हुआ तो सबसे पहले वायु-यान पर क्रोध-प्रकट किया। दांत से दांत दबा कर बोला, दे—दे—दो—चार बम मेरे ऊपर डाल दे ! मैं मर कर बचूं ! आह ! आह !

सरोजिनी ने पूछा, पानी पिओगे ?

—पानी ? दो !

गिलास भरा रखा था। सरोजिनी ने उठा कर मुंह से लगा

दिया। प्रद्योत ने आग्रह के साथ एक घूंट लिया और फिर बिगड़ कर थूक दिया—इस में क्लोरिएट की गंध है। नल का पानी क्यों दे दिया ?

सरोजिनी चुप रही। प्रद्योत चिल्लाया, तुम हमें मार डालना चाहती हो ?

अब सरोजिनी बोली, टयूबवेल से पानी कौन लाये ? उसने प्रच्छन्न रूप से गीता का उल्लेख किया। गीता टयूबवेल से पानी लाती थी, प्रद्योत वही पीता था।

प्रद्योत ने गरदन झुका ली और एक लंबी सांस छोड़ी। फिर मत्थे पर हाथ रखकर आर्त स्वर से पुकारा—भगवान् !

सरोजिनी की आंखों से आंसुओं की दो पतली धारायें निकलीं और कपोल भीग गये। हीरेन की आंखें भी भीग गईं—पंखा रखकर उसने हथेली की पीठ से आंसू पोंछे। क्रुद्ध प्रद्योत ने पंखा उठा लिया और हीरेन के सिर पर मार कर बोला, तुम नहीं ला सकते ? सड़क के किनारे तो टयूबवेल है, ऐसे नवाबजादे हो कि एक सुराही पानी नहीं ला सकते !

हीरेन एक छलांग में दो-तीन गज पीछे हट गया और चिल्ला कर बोला, नहीं ला सकता !

हीरेन का चीत्कार सुनकर मां-बाप दोनों ही स्तम्भित होगये। हीरेन बकता ही रहा—तेल की लाइन में मैं खड़ा हूं, चीनी की लाइन में मैं मरूं, पैसे मैं दूं और मार भी मैं खाऊं—यह नहीं हो सकता।

हीरेन अब कुछ पैदा करने लगा है। एक दिन उसने घर से ही बारह आने पैसे चुराये थे। इसी मूलधन को लेकर वह रोज शाम को सिनेमा में साढ़े चार आने के टिकट घर पर खड़ा होता है। ठीक मूल्य पर टिकट खरीद कर अधिक मूल्य पर बेंचता है। सरकारी नियन्त्रण के अनुसार कुछ दूकानों पर ही चीनी बिकती है, दूकानों के सामने लोग पांत बांध कर खड़े होते हैं, हीरेन भी पांत में खड़ा होता है और चीनी खरीद कर चाय के दूकानदारों को अधिक मूल्य पर देता है। श्यामबाजार से लगा कर कालीघाट तक उसका इलाका है। चलती ट्राम पर चढ़ना-उतरना उसके बायें हाथ का खेल है, दिन भर में कितनी ही ट्रामें बदलता है, पैसा खर्च किए बिना ही उसका यातायात अवाधगति से चलता है। कुछ बस-कण्ड्राक्टरों के साथ उसकी मित्रता भी है, उनकी बसें मिल जाती हैं तो उनके फुटबोर्ड पर ही खड़ा हो जाता है और कण्ड्राक्टर की सहायता करता है, पुकारता है, लेक, कालीघाट, आइये बाबू आइये! चलती बस पर चढ़ने वालों को हाथ का सहारा देता है। दुखंडी बसों पर ऊपर जाने का अनुरोध करता है—ऊपर जाइये, बाबू ऊपर, एकदम खाली है, एकदम।

हीरेन की रूढ़ निष्ठुर दृष्टि में हिंसक विद्रोह दमक रहा है। घर के असहनीय अभाव का दुःख आज कल उसे प्रत्यक्ष रूप से स्पर्श नहीं करता, भूखा वह नहीं रहता—बाहर से खा आता है और उसकी कमीज नेकर भी जीर्ण नहीं है—चोर बाजार से हाल ही में खरीदी गई है। फिर भी जितनी देर वह घर में रहता है

इतनी देर मां-बाप, विशेषतः दीदी गीता के कष्ट से पीड़ित होता है। उसका मन विषाक्त हो जाता है और घर से भागने के लिये छटपटाने लगता है। सब से अधिक क्रोध उसे अपने पिता पर आता है। वह समझता है, यह असमर्थ, अपदार्थ, चिर रोगी व्यक्ति ही सब कष्टों की जड़ है। लम्बी अनुपस्थिति के बाद वह जब घर आता तब प्रद्योत उसे पीटता। हीरेन दांत पर दांत दबा कर मार सह लेता और मन में कहता, मर, तू मर जा! परसों तक उसने इससे आगे बढ़ने का साहस नहीं किया। परसों से, गीता के निरुद्देश्य होने के बाद से, वह दो दिन तक बराबर दीदी को ढूंढता रहा है। निरुद्देश्य होने के अर्थ को उसने अपनी आयु के अनुपात से आगे बढ़ कर समझ लिया है। गीता की खोज में कितनी ही गलियों की ठोकरें खाने के बाद तिक्त चित्र लेकर आज वह घर आया है। इस घटना के लिये वह गीता और कनाई को अभिशाप देता रहा है परन्तु सब से बड़ा अपराधी अपने असमर्थ बाप को मान रहा है। वह सोचता है, इसने गीता का विवाह क्यों नहीं कर दिया। इस स्थिति में पंखे की एक चोट से ही वह विस्फोटक पदार्थ की भांति फट पड़ा।

कुछ लम्बे क्षणों के बाद सरोजिनी संभली और भयमिश्रित कातर स्वर में बोली—हीरेन—हीरेन!

हीरेन ने गर्ज कर उत्तर दिया—ना

रोग की तीव्रता से परेशान प्रद्योत अपमानित पितृत्व का अधिकार और हाथ में पंखा लेकर चारपाई से उठा और बोला—

मैं तुझे मार डालूंगा !

सरोजनी ने दोनों हाथ बढ़ा कर उसे रोका और कातर अनुरोध किया—ना—ना—एजी नहीं !

हीरेन की हिंसक और तिर्यक दृष्टि और भी स्थिर हो गई, वह अपने स्थान पर जम कर खड़ा हो गया, उसकी प्रत्येक अभिव्यक्ति में आक्रमण का उद्यत संकेत स्पष्ट होने लगा; प्रद्योत रुक गया। सरोजिनी ने उसके पैर पकड़ कर कहा, तुम्हारे पैर छूती हूं—सर्वनाश न करो !

प्रद्योत का क्रोध सरोजिनी पर फूटा। हाथ के पंखे से सरोजिनी को पीटते-पीटते वह बोला, तू—तू—तू, हमारे सब दुर्भाग्यों की जड़ तू है !

हीरेन बाप के ऊपर झपटा, उसके एक धक्के से ही प्रद्योत भूमि पर गिर पड़ा। हीरेन ने पंखा छीन लिया और निष्ठुर प्रहार करने लगा।

—ओरे हीरेन!—हीरेन—हीरेन—चिल्लाती हुई सरोजिनी दौड़ी और लड़के को पकड़ लिया। हीरेन ने मुंह घुमा कर मां की ओर देखा और एक क्रुद्ध निश्वास छोड़ कर पंखा फेंक दिया। बोला, मुझे छोड़ दो !

—नहीं ! सरोजिनी चिल्लाई तू भाग जायगा।

सबल बाहुओं से मां को ठेल कर हीरेन बोला, हां और फिर उंगलियों से मुंह पर गिरे बालों को पलटता हुआ वह बाहर निकल गया। यह चिन्ता क्षण भर के लिए भी उसके मन में न आई कि

कहां जायेगा और क्या करेगा। इस दिशा में वह निश्चिन्त है। उपार्जन करने के कितने ही मार्ग वह जानता है और कितने ही मार्गों की बातें सुनी हैं। अंधेरी गली में दुर्बल व्यक्ति से उसका सब कुछ लिया जा सकता है; लोगों को ठगा जा सकता है; जिन मुहल्लों में खुला व्यभिचार होता है उनकी गलियां पहचान कर बाबुओं को राह दिखाने पर या गहरी रात में गुप्त व्यवसायियों से शराब ला देने पर रुपये मिलते हैं।

अन्धकार में मिल कर हीरेन ने गली पार की और बड़ी सड़क पर पहुंचा। सड़क पर इधर-उधर 'सलिट टेंच' बनी हैं। उधर कुछ 'एयर रेड सेल्टर' हैं। वह चुपचाप एक सेल्टर में घुसा। मेहराबदार सेल्टर के भीतर गाढ़ अंधकार है, स्थान भी संकीर्ण है। हीरेन सावधानी के साथ आगे बढ़ा। एक उग्र गंध आ रही है, भूमि भी गीली है। सामने कुछ चमक भी रहा है और फुफकार का शब्द भी आ रहा है। क्षण भर के लिए हीरेन रुका, फिर बोला, साला जानवर बैठा है। शीत से बचने के लिए पशु भी सेल्टर में आ गये हैं। जेब से दियासलाई निकाल कर हीरेन ने जलाई, उसका अनुमान ठीक निकला। सलाई के प्रकाश में उसने एक कोना ढूंढ़ लिया और वहीं बैठ गया।

बाहर आकाश में वायुयान उड़ रहे हैं। एक बीड़ी सुलगा कर हीरेन विरक्ति के साथ बोला, चल ससुरे! दे, बम फेंक कर पृथ्वी चूर कर दे, तो मैं भी जानूं! अपने पिता की भांति वह भी संसार से विरक्त हो गया है। आज उसके जीवन की आशा

आकांक्षा और सुख-तृप्ति के बीच में जो बाधाएं खड़ी हैं वे चूर हो जांय तो वह अपनी अबाध आकांक्षा पूरी करने के लिए भोग कर ले। हीरेन की यह कामना नई नहीं है; कई बार उसने इच्छा की है, भूकम्प आये और सब कुछ उलट-पुलट जाय, महामारी आये और अधिकांश मनुष्य मर जांय! कभी-कभी उसकी यह अभिलाषा विचित्र रूप में भी उदय हुई है, तब उसने इच्छा की है, यदि मुझे ऐसी अलौकिक शक्ति मिल जाय जिससे बन्दूकों की गोलियां और तोपों के गोले मेरी छाती से टकरा कर सूखे पत्ते की तरह भूमि पर गिर पड़ें, जिसको मैं कहूं 'मर जाओ' वह मर जाय और जिसको कहूं 'जी उठो' वह जी जाय तो बहुत अच्छा हो! आज वायुयान का शब्द सुनकर उसकी वही तिक्त कामना जागी और उसने चाहा कि बम गिरे और पृथ्वी चूर हो जाय।

—बारह—

कनाई जब जागा तब दिन चढ़ आया था; विजय बाबू ने उसे उठाया। कल रात में भी वे दोनों बाहर बरामदे में ही सोये थे। गीता कमरे के भीतर थी।

विजय बाबू की आवाज से कनाई की नींद टूटी तो वह उठा और बोला, बड़ी देर हो गई!

हंसना विजय बाबू के स्वभाव से भी अधिक है, उसे मुद्रा दोष भी कहा जा सकता है। कौतुक में हंसना तो स्वाभाविक है,

बिजय बाबू दुःख में भी हंसते हैं; क्रोध में भी हंसते हैं; यह नहीं कहा जा सकता कि रोते समय भी हंसते हैं या नहीं, कारण उन्हें किसी ने रोते हुए देखा नहीं। विजय बाबू हंस कर बोले, तू भाई, एक स्लीपिंग गाउन और एक जोड़ी घास की चट्टी खरीद डाल; फिर साढ़े आठ बजे नींद खुलेगी तो भी लज्जा न आवेगी। और पाइप पीने लगे तो दस बजे उठने से भी दोष न होगा। धूसर मध्यम वर्ग से शुद्ध मध्यम वर्ग में पहुंच जायगा।

कनाई ने कुछ अप्रस्तुत होकर कहा, अच्छा कल सवेरे देखना, तुम पहले उठते हो या मैं।

—बाजी न लगा, हार जायगा!

—फिर बाजी ही लगाता हूँ।

विजय बाबू बोले, देख मैंने एक आयुर्वेदज्ञ से सुना है कि रोग के दो प्रकार के उपसर्ग होते हैं। एक उपसर्ग वे हैं, जो प्रकट और यंत्रणादायक होते हैं, उन्हें साधारण चिकित्सक भी पहचान लेता है। दूसरे उपसर्ग अप्रकट रहते हैं, साधारण दृष्टि से वे पहचाने नहीं जाते। जैसे बदहजमी, पेट दर्द और खट्टी डकारें 'डिसपेपसिया' के प्रकट लक्षण हैं, अप्रकट उपसर्ग यह है कि खट्टी चीजें खाने का लोभ बढ़ जाता है और लौकी आदि से अरुचि हो जाती है। बाल गिरना और चमड़े में चिनचिनाहट गंज के प्रकट उपसर्ग हैं, अप्रकट उपसर्ग यह है कि आदमी बार-बार सिर पर हाथ फेरता है। चिन्ता में भी हाथ फेरता ही है, सुख में भी फेरता है और निश्चिन्त होने पर भी। इसी तरह दाम्भिकता और

कर्तृत्वाभिलाष आदि धन अर्थात् बुजुर्आपन के प्रकट उपसर्ग हैं और अप्रकट उपसर्ग हैं डींगें मारना, पाइप पीना और स्लीपिंग गाउन पहना। कहते भी हैं लाख रुपये की नींद। तेरी बासठ रुपये की नींद ही क्यों कम हो?

कनाई विजय बाबू की ओर स्थिर दृष्टि से देखता रहा।

विजय बाबू ने पूछा—क्यों? नाराज हो गया क्या?

—नहीं, तुम्हारा मतलब यह है कि मैं यह काम न करूं?

—जा, पहले हाथ-मुंह धो आ। गीता चाय ले आई है।

कनाई ने गरदन घुमा कर देखा, गीता आ रही है; उसके हाथ में धूमायित चाय के दो प्याले हैं।

विजय बाबू बोले, गीता को आज काम में लगाया है, देख कैसी सुन्दर शांत लड़की है।

कनाई स्नेह के साथ मुस्कराया। जाड़े में भी गीता ने सबेरे ही स्नान कर लिया है। उसके बदन पर नई साड़ी है। कल कनाई खरीद कर लाया था। गीता ने चाय के प्याले उतार कर रखे।

कनाई झटपट उठा,—मुंह धो आऊं।

गीता ने प्याले पर पिर्च ढाप दी।

मुंह धो कर लौटने पर कनाई ने देखा, नेपी उपस्थित है और चाय का प्याला उसके हाथ में है। अल्पभाषी नेपी का मुंह रक्तोच्छ्वास से भरा है, अवश्य कोई अद्भुत घटना हो गई है। नेपी ने अवश्य किसी परमानन्द या परम दुःख का स्पर्श प्राप्त किया है।

वह वाचाल की तरह बोल रहा है। कनाई को देख कर चाय का प्याला उसकी ओर बढ़ा दिया।

नेपी अपने अनुभव सुना रहा है। रिलीफ के काम पर जाकर वह बहुत कुछ देख आया है। तूफान में सर्वस्व खो देने वाले एक भद्र परिवार ने भिक्षा मांगने की लांछना से बचने के लिए आत्महत्या कर ली है। परिवार में स्वामी, स्त्री और एक विवाह योग्य कुमारी कन्या थी। तीनों गले में गगरी बांध कर पानी में कूद पड़े।

विजय बाबू के ओठों पर एक विचित्र मुस्कान की रेखा दीख पड़ी। वे चुपचाप सिगरेट पी रहे हैं। गीता विस्फारित दृष्टि के साथ नेपी की बातें सुन रही है।

नेपी बोला, सुना है लोगों ने लड़के और लड़कियां भी बेचीं हैं—अल्पवयसी लड़कियां अधिक बिकी हैं।

कनाई ने सिहरन अनुभव की।

विजय बाबू बोले, गीता ! कनाई आफिस जायगा, षष्ठी को खटखटाओ, नहीं वह बारह बजा देगा। जाओ।

गीता चली गई।

नेपी बोला—विजय दादा, वहां और भी सहायता भेजनी होगी।

विजय बाबू हंसे।

नेपी फिर बोला, विजयदा !

—अच्छा।

नेपी इतनी बात से ही आश्वस्त होकर चला गया। कनाई के साथ उसकी बात-चीत नहीं हुई; एक सश्रद्ध मुस्कान के साथ उसकी ओर देखता हुआ वह चला गया। और नेपी के लिए यही स्वाभाविक है।

कनाई बोला—विजयदा!

विजय बाबू ने मुस्करा कर उसकी ओर देखा।

—तुम क्या कहते हो, बिजनेस करना ठीक नहीं है?

—तू पागल है कनाई, मैं तो हंस रहा था। रुपये की आवश्यकता है भाई। जब संसार में ही छीना झपटी हो रही है तब तू न छीनेगा तो मेरा भाग ही छीना जायगा, तू कोरा रह जायगा। मुझे ही देख, मैं महीने में डेढ़ सौ रुपये लेता हूं और प्रेस के कम्पोजीटर तीस पाते हैं, चपरासी को पन्द्रह मिलते। यहां तो मैं भी छीन कर खाता हूं। मैं तुझ से परिहास कर रहा था!

कनाई चुप हो गया।

विजय बाबू बोले, रुपये की बहुत आवश्यकता है। गीता की भी कुछ व्यवस्था करनी होगी।

गीता! हां गीता की व्यवस्था भी तो उसे करनी पड़ेगी। किन्तु यह शांत, संकुचित और शत संस्कारों के भार से पंगु लड़की तो मार्ग में चलने की भी शक्ति नहीं रखती। इसकी मैं क्या व्यवस्था करूंगा? कनाई यही बात रात भर सोचता रहा है, और प्रायः सारी रात जागता रहा है। अन्तिम पहर में कुछ नींद आई थी इसीलिए सबेरे उठने में देर हो गई। वह बोला—यही बात मैं रात भर

सोचता रहा हूं—नींद भी नहीं आई। मेरी तो समझ में ही नहीं आता कि वह क्या कर सकेगी।

शांत मुस्कान के साथ विजय बाबू बोले, जिस बात में उसकी सब से बड़ी भलाई है वह तो मैं ने तुझे बता दी है कानू परन्तु तू नहीं करता।

कनाई को याद आया। विजय बाबू ने गीता के साथ विवाह कर लेने का प्रस्ताव किया है। साथ ही साथ नीला भी उसके स्मृति पटल पर आई। आज शुक्रवार है। कल शनिवार को आफिस के बाद नीला से भेंट होगी। उसके सम्पूर्ण शरीर में चांचल्य प्रवाहित हो गया।

विजय बाबू बोले, फिर सोच कनाई।

—नहीं। यह नहीं हो सकता विजयदा!

विजय बाबू चुप हो गये।

गीता आई और बोली, भोजन बन गया। कनाई दा स्नान कर लीजिए।

कनाई को देख कर अमल ने कहा, वाह! कपड़े तो बहुत अच्छे लगते हैं।

कल शाम को कनाई ने जो नये कपड़े खरीदे थे वही पहने है। अमल की बात सुन कर वह मुस्कराया।

अमल ही फिर बोला, लेकिन यह आपकी आफिस की ड्रेस नहीं हुई। शूट बनवा डालिए।

कनाई ने कहा, आवश्यकता होगी तो बनवाना ही पड़ेगा।

—आवश्यकता क्यों न होगी। आज ही है। आपको कई जगह भेजना है।

कनाई उत्साहित हो गया। काम लेकर अदम्भ उत्साह के साथ बाहर निकला और शाम को चार बजे प्रसन्न मुख लौटा। काम सब ठीक हो गये थे। आकर देखा, अमल की मेज के सामने कारखाने के मैनेजर जितू बोस भी बैठे हैं। मुख उनका गम्भीर है। उसने हंस कर नमस्कार किया। बोस ने भी उत्तर दिया।

अमल ने पूछा, काम सिद्ध हो गये?

कनाई ने पूरा विवरण सुनाया। अमल भी प्रसन्न हुआ। बोला, अब आपका काम भी हो जाय। बाबा ने कहा था, चावल का व्यापार आरंभ कर दीजिए। बैठिए।

हाथ का समाप्त करके अमल ने कलम फेंक दी और बोला, बस। साथ ही साथ उसका चेहरा भी बदल गया। सिगरेट सुलगा कर उसने चपरासी से कहा, गुंई बाबू को भेज दे! फिर हंस कर जितू बोस से बोला, आज आपको एक नई जगह ले चलूंगा जितू दा।

जितूदा संभ्रम के साथ बोले, अरे बाप रे! यह तो मेरा सौभाग्य होगा भाई!

—परन्तु आज घर न लौटेंगे, वहीं रहेंगे।

—घर! मेरा और घर! जहां रह गया वहीं घर!

—अब आप एक विवाह कर डालें!

—विवाह ? सर्वनाश !

—क्यों ?

—क्यों ? बताऊं, प्रेमी का भी कोई ठिकाना होता है। 'दिन कहीं, रात कहीं, सुबह कहीं, शाम कहीं !' 'कटी जिन्दगी होटल में, मरे अस्पताल जाकर !' हमारे लिए घर और घाट नहीं बना !

अमल हंसने लगा। कनाई के ओठों पर तीखी हंसी दीख पड़ी—ऋणंकृत्वा घृतंपिवेत् का सूत्र सुस्वादु ही नहीं है रंगीन भी है !

नक्शा किनारे की धोती और छोटे बटनों का कुरता पहने, गले में ऐंठी हुई चादर डाले एक अधेड़ व्यक्ति आया और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। अमल बोला—ये मि० चक्रवर्ती हमारे नये एजेण्ट हैं, इन्हें कल से बाजार ले जाना। सब कुछ दिखा-सुना देगा। समझे !

—जो आज्ञा। साथ ही साथ गुंई ने कनाई को एक संभ्रम पूर्ण नमस्कार किया। कनाई ने भी नमस्कार से उत्तर दिया। अमल ने कागज की एक स्लिप पर कुछ लिखा और कनाई को दे दिया, उस पर लिखा है—'रिटर्न हिज़ सेल्यूट वाई नाड ओनली !'

अमल ने कहा, ये हमारी बिजनेस भी देखेंगे, एक पार्टनर होंगे। समझे ?

—जो मैं सब दिखा दूंगा, समझा दूंगा। ये समझ लेंगे—

—ये एम. एस. सी. हैं।—अमल हंसा—और श्यामबाजार के सुखमय चक्रवर्ती का नाम सुना है ? बहुत बड़े धनी थे ?

—अरे बापरे ! उन्हें कौन नहीं जानता ! उनके लड़कों की गाड़ी जब चीतपुर पर निकलती थी तब कोहराम हो जाता था। बेले की एक माला के बदले में एक रुपया देते थे— पैसा तो हाथ से छूते भी न थे !

—ये उनके नाती हैं !

—अरे बाप रे !—गुंई कनाई के पैर छूने लपका।

कनाई बोला,—रहने दो !

अमल कुछ विस्मित हुआ फिर मुस्कराया। कनाई का मुंह देख कर उसने समझ लिया कि गुंई की स्तुति इन्हें सहन नहीं हुई।

गुंई ने विस्मय के साथ पूछा, जी, मुझ से कोई अपराध हो गया ?

अमल ने आश्चर्यजनक तत्परता के साथ काम का आवर्त उत्पन्न किया और परिस्थिति को संभाल लिया, बोला, हां पचास मन चावल की एक बिक्री रसीद बना लाओ। रसीद पर स्टाम्प लगवा लेना। रसीद से हमारी दो नंबर गुदाम से माल मिल जायगा। माल हमने कनाई बाबू के हाथ बेंचा है।

गुंई ने विस्मय के साथ पूछा, पचास मन ? पचीस बोरे ?

अमल ने हंस कर उत्तर दिया, हां, कनाई बाबू के लिए बाबा ने 'स्पेशल परमिशन' दिया है।

गुंई फिर भी शांत नहीं हुआ—फुटकर काम में बहुत झंझट होती है—एक ही बार में हजार मन कर दीजिए।

—नहीं, नहीं,। तुम पचास मन की ही रसीद बनवालो।

रसीद आगई तो अमल ने कनाई से कहा, आइये, चावल बेंच डालें। गुंई तुम भी आओ। अमल की गाड़ी में ही वे रवाना हुए। जितू बोस भी साथ ही हैं। आश्चर्य की बात है—गुंई ने घण्टे भर में ही चावल ढाई रुपये मन के दाम बढ़ाकर बेंच दिए और रुपये लाकर कनाई को दे दिए। अमल ने हंस कर कहा, पचास मन के एक सौ पचीस रुपये आप रख लें और शेष मुझे चावलों के मूल्य के रूप में दे दें। फिर कान के पास मुंह ले जाकर धीरे से बोला, चार आने मन के हिसाब से साढ़े बारह रुपये गुंई को दे दें। मेरे सामने नहीं, उधर ले जा कर दें।

कनाई ने गुंई को पचीस रुपये दे दिए। गुंई ने उसके पैर छूकर धीरे से कहा—पचास मन को कम से कम सौ मन और एक एक हफ्ते का क्रेडिट करवा लीजिए। फिर देखिए मैं क्या करता हूं।

कनाई मुस्कराया, परन्तु वह मुस्कान बलपूर्वक खींच कर लाई गई थी। कल से आज तक दो दिन में ही उसने जो कुछ देखा है उसीसे उसके जीवन की स्वाभाविक स्फूर्ति जड़ हुई जा रही है। मस्तिष्कहीन अमल उसकी आंखों में एक विराट् मूर्ति धारण कर रहा है। जुए में दूसरों के लिए जो भाग्य है उसे वह जुआचोरी ही समझ रहा है। विजय बाबू का तीव्र परिहास ही उसे याद आया।

गाड़ी से अमल ने पुकारा, मि० चक्रवर्ती, आइये, आपको पहुंचाता जाऊं।

कनाई ने सविनय कहा, नहीं, नहीं, आप घर जायें। मैं ट्राम या बस से चला जाऊंगा।

—चलिए भी। उधर हमें भी कुछ काम है। और उसने गाड़ी का मुंह श्यामबाजार की ओर, कनाई के घर की ओर—घुमा दिया।

कनाई बोला, मैं तो वहां न जाऊंगा।

—फिर कहां जायंगे ?

कनाई ने विजय बाबू का पता बताया। अमल बोला, अच्छा, वहीं पहुंचा देता हूं।

गाड़ी चलने लगी। अमल बोला पेट्रोल की मुश्किल है, ब्लैक-मार्केट में भी आवश्यकता के अनुसार नहीं मिलता। नहीं तो एजेण्ट के रूप में आपको कम्पनी से एक सेकेण्डहैण्ड गाड़ी मिल जाती।

—यहीं—बाएं—इसी गली में उतरूंगा।

सुदक्ष नाविक के हाथ की नौका की भांति गाड़ी गली में घूम गई। कनाई उतर कर चुपचाप खड़ा होगया। धन्यवाद देने की समकक्षता का साहस भी उसके पास न रह गया। अमल ने गाड़ी से मुंह निकाल कर और हंस कर कहा, कल ठीक दस बजे पहुंचें! जितू बोस ने भी बाहर मुंह निकाला और एक फौजी सलाम ठोक दिया।

ठीक इसी समय घर का दरवाजा खुल गया। गीता ने शायद कनाई को मोटर से उतरते देखा था। दरवाजा खोल कर बाहर आते ही गीता के मुंह का रंग उड़ गया। अपरिसीम भय से वह

थर थर कांपने लगी, ऐसा जान पड़ा कि वह अभी भूमि पर गिर पड़ेगी। कनाई ने लपक कर उसे पकड़ लिया और पुकारा—गीता! गीता!

गीता विस्फारित दृष्टि से मोटर की ओर ही देखती रही। कनाई ने भी मोटर की ओर दृष्टि घुमाई।

अमल की दृष्टि भी विचित्र हो रही थी। उसने पूछा, यह लड़की कौन है मि० चक्रवर्ती?

—मेरी बहन।

अमल बाबू की गाड़ी उसी क्षण में गरजी और गली में ही दौड़ने लगी। उसके पीछे का लालप्रकाश छोटा होते-होते अदृश्य हो गया।

गीता ने पूछा—वह कौन......वह कौन था कनाई दा?

—वे अमल बाबू हैं। इन्हीं के आफिस में मैं काम सीखता हूँ। तुम इन्हें पहचानती हो?

आतंकित स्वर में गीता ने उत्तर दिया—बूढ़ी के घर में यही... यही था कानू दा—उसकी वाणी रुद्ध-सी हो गई।

कनाई का सम्पूर्ण अन्तर कांप उठा। ऐसा जान पड़ा कि उसके मनमें एक भूकम्प आ गया है और डलहौजी स्क्वायर में बनाया हुआ उसकी कल्पना का विशाल भवन तास के घर की तरह गिर रहा है। अमल बाबू, अमल बाबू में इतना बड़ा पाप? उसका सिर जलने लगा। फिर उसे अपने पूर्वजों की याद आई। एक ही इतिहास है। करोड़ों मनुष्यों को वंचित करने के

बाद मनुष्य जो सम्पत्ति संचित करता है—वह केवल गुप्त व्याधि है ! इसी व्याधि का तरुण उपसर्ग आज अमल बाबू में प्रकट हो रहा है। कल यह वंश भी चक्रवर्ती वंश की भांति जर्जर हो जायगा। अकस्मात् वह उठ खड़ा हुआ और उसका हाथ कुरते की जेब पर पड़ा, जेब में सौ रुपये के नोट पड़े थे और वे 'टाइम' बम की तरह गरम हो रहे थे—जैसे अब फटने ही वाले हैं। घर से निकल कर उसने उन नोटों को मुट्ठी में दाब कर मरोड़ा और सामने रखे हुए कूड़े के टब में फेंक दिया।

—तेरह—

विजय बाबू के घर लौटने का कोई समय नहीं है फिर भी वे दस बजे के पहले नहीं आते परन्तु आज आठ बजे ही आ गये। कनाई अब तक स्तब्ध बैठा है। गीता उस कमरे में भूमि से मुंह लगाये लेटी है। कनाई के साथ सर्वथा अप्रत्याशित रूप में अमल को देख कर वह आशंका से चौंकी थी, कनाई की स्तब्ध मूर्ति ने उस आशंका को और भी बढ़ा दिया है। कनाई से और कुछ पूछने का साहस वह नहीं कर सकी, रसोई में चुपचाप लेट गई है और तब से बराबर रो रही है परन्तु उसके रुदन का स्वर बाहर नहीं आता। जैसे उसके कण्ठनाल में असहनीय उद्वेग का रोड़ा अटक गया है ! वह संवरण भी नहीं होता और उच्छ्वसित रुदन में प्रकट भी नहीं हो पाता। अब क्या होगा ? इस आदमी

ने कानू दा से क्या कहा है ? मेरे ऊपर शायद उपयाचिका होने का लांछन लगाया है और उस बूढ़ी ने इस लांछन की गवाही दी है ! बूढ़ी की स्मृति ने गीता के शरीर में कम्प उत्पन्न कर दिया। वह भयंकर घड़ी भी याद आई। असहाय अवस्था में पड़ कर वह फफक कर रोई थी—बूढ़ी के मीठे प्रलोभन भी उसे शांत न कर पाये थे। तब उस बूढ़ी ने कहा था, बेकार की बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं बेटी, नखरे मैं पसन्द नहीं करती। चुप हो जा, नहीं तो अभी आदमियों को बुलाऊंगी और कहूंगी. "छोकरी को बाबू ने पसन्द नहीं किया, अब रो रही है।" उसके मुख पर वीभत्सता छा गई थी, वह स्थूलांगी बूढ़ी सब कुछ कह सकती है।

घर में तीसरा आदमी षष्ठीचरण है परन्तु वह किसी बात के लिए भी उत्सुक होना नहीं जानता। उसने एक बार कनाई से पूछा था—चाय बना दूं ?

कनाई ने गरदन के संकेत से ही उत्तर दिया था—ना।

षष्ठी चुप होगया और बाहर बैठ कर बीड़ी पीने लगा। संध्या हुई तो रसोई की जुगाड़ में लगा। गीता को रोते देखकर भी उसने एक बार पूछा, क्या हुआ बेटी ? गीता ने भी केवल गरदन हिला दी थी। गरदन हिलाने के दोनों अर्थ थे, 'कुछ नहीं हुआ' या 'कुछ न कहूंगी'। षष्ठी ने इस विषय में भी कुछ नहीं पूछा। एक बार उसने फिर सवाल किया था—सब्जी में इतना नमक डाल दूं ? गीता ने गरदन के संकेत से ही कह दिया था—हां।

कनाई की अवस्था देखकर बिजय बाबू ने पूछा, क्यों रे क्या हुआ ?

कनाई ने एक लंबी सांस छोड़ी। विजय बाबू ने हंस कर कहा, बापरे! इतनी लम्बी सांस! कुम्भक योग किए बैठा था क्या? हाथ के एटेची केस को बिछौने पर फेंक कर विजय बाबू स्वयं भी उसी पर बैठ गये बोले—सबेरे बाहर निकला तो फिर पता भी न मिला—अच्छा आफिस है तेरा! इधर मेरी शामत आगई। गीता तो थी ही, नेपी भी आ गया। गीता ने आज फिर रोना आरम्भ किया था। अकस्मात् श्रीमान् नेपी आगये। उसका मुंह देखने से जान पड़ता था कि संसार का अन्तिम काल उपस्थित है। पूछा, क्या मामला है? बोला, कानूदा कहीं नहीं मिलते। सबेरे उनके घर गया था, मालुम हुआ है कि वे परसों शाम को कहीं चले गये हैं। मैंने कहा, चिन्ता न करो, तुम्हारे कानूदा यहीं हैं, तुम्हारे-ब्रज-गोपाल दल को छोड़ कर मथुरा का राज्य लेने नहीं गये। वह लण्ठ की तरह मुस्कराया और बोला, आज जन सेवा कमेटी की मीटिंग में उन्हें जाना था। हम लोगों की कुछ 'कम्प्लेन' हैं। मैंने कहा, फिर बैठो, कनाई आता ही होगा। वह बैठ गया और बैठा ही रहा। दूसरी ओर गीता की आंखें बराबर बरस रहीं थीं। भोजन करने के लिए भी तयार न हुई। नेपी से कहा, तू ही खा ले—वह भी बोला—नहीं। अन्त में बड़ी मुश्किल से गीता को 'हंसी भाई' और नेपी को 'खुशी-भाई' बनाया। नये सम्बन्ध का व्यवहार देने के लिए तेरी जगह मुझे मीटिंग में जाना पड़ा। वहीं से आ रहा हूं, दफ्तर तक नहीं गया।

विजय बाबू में एक प्रबल आकर्षण शक्ति है। अपने साह-

चर्य से वे आदमी को अनायास ही प्रभावित कर लेते हैं। कनाई अब बोला मैंने कभी भाग्य को स्वीकार नहीं किया परन्तु आज कर्मविपाक के एक ऐसे सूक्ष्म और निष्ठुर परिहास का परिचय मिला है कि उसे 'एक्सीडेंट' नहीं कह सकता। जैसे नाटक की घटनाओं जैसा चक्र है और मैं अदृष्ट 'मास्टर' के संकेत से उस पर घूमा हूं!

विजय बाबू को जैसे भारी आराम मिला। आश्वस्त स्वर में बोल पड़े—आह!—फिर कहने लगे, मान ले भाई, भाग्य को मान ले—कितने ही दुःखों से बच जायगा।

—दुःखों से बच जाऊंगा? उसकी रसिकता का सारा आयोजन तो दुःख देने के लिए ही है!

—उं हुं। धुएं का बादल बनाने के प्रयास में विजय बाबू को इतना ही कहने का अवसर मिला।

—उं हुं? अर्थात्?

—दुःखदाता यदि रसिक हो तो दुःख के दान में भी रसिकता होगी, फिर तो उसे हंसते हंसते भोग भी किया जा सकता है। अब मेरा वक्तव्य यह है कि तू भाग्य को मान ले—तेरे सिवा और भी दो आदमी दुःख से बच जायंगे। एक गीता, दूसरा मैं। कहते हैं, 'जन्म मृत्यु और विवाह भाग्य के आधीन होते हैं'। भाग्य और उसके योगायोग को मान ले और गीता के साथ विवाह कर डाल।

असहिष्णु होकर कनाई बोला, विजय दा, तुम्हारे पैर छूता हूं—तुम चुप हो जाओ!

विजय बाबू क्षण भर चुप रहे फिर ऊंचे स्वर से बोले—'हंसी भाई' ! गीता !

म्लान मुखी गीता आई। विजय बाबू ने उसकी ओर देखकर भौंहें चढ़ाईं और बोले, तुम्हारे साथ यह फैसला तो नहीं हुआ 'हंसी-भाई' !

गीता चुपचाप खड़ी रही।

विजय बाबू बोले, हंसी भाई बनाते समय तुम्हारे साथ 'कण्ट्राक्ट' हुआ है कि आमने-सामने होते ही हम दोनों को हंसना पड़ेगा। हँस, हँस, हँस। 'डैटस् राइट' ! गीता के मुख पर मृदु मुस्कान दीख पड़ी। विजय बाबू फिर बोले—जरा-सी चाय पिलाओगी ? षष्ठी से कहो कि दो रुपये पाउण्ड की जो चाय वह ढाई रुपये देकर और निपुणता के साथ धूल-गरदा झाड़ कर लाया है, वही निकाले। समझीं ?

गीता की मुस्कान और बिकसित हुई। वह मृदु स्वर में बोली —हां, और चली गई। बिजय बाबू चुपचाप सिगरेट पीने लगे।

कनाई बोला, विजय दा !

—बोल !

—तुम्हें आज की घटना सुनाना चाहता हूं।

—सुना डाल !

कनाई ने आवेग के साथ आरंभ किया।—मैं कह रहा था कि कर्मविपाक में—

विजय बाबू ने बीच में ही बाधा डाली—मैं पत्रकार हूँ, हम लोग भूमिका-भणिता छोड़ देते हैं। केवल घटना सुना—

कनाई भी मुस्कराया, फिर कहने लगा। आज की पूरी घटना सुना कर अंत में बोला, कल तुम से कहा था कि तुम मेरी या गीता की चिन्ता न करो। मैं ने सोचा था कि 'बिजनेस-फील्ड' में इतने बड़े आदमी का सहारा मिलेगा। गीता को लिखा-पढ़ा दूंगा और वह अपने पैरों पर दृढ़ हो जायगी किन्तु जिस व्यक्ति ने गीता के साथ जघन्य अत्याचार किया है, अनजान में मैंने उसी की सहायता ली। ये सौ रुपये—

—दे. रुपये मुझे दे। विजय बाबू ने हाथ बढ़ाया।

—रुपये तो मैंने कूड़े के टब में फेंक दिए।

—टब में फेंक दिए? विजय बाबू उठ कर खड़े हो गये और पुकारने लगे, षष्ठी! षष्ठी!

षष्ठी आया तो वे बोले, देख, कानू बाबू ने रद्दी कागजों के साथ सौ रुपये के नोट कूड़े के उस टब में फेंक दिए हैं। ढूंढ़ने पर यदि वे घट कर नव्वे भी रह जांय तो भी मैं तुझे पांच रुपये मेहनताना दूंगा। ढूंढेगा?

षष्ठी बोला, कैसा बचपन है। अच्छा, ठहरिए, लालटेन जला लाऊँ!

—नहीं, बड़ी टार्च ले जा।

कनाई ने रोक कर कहा—नहीं विजय दा!

—ओह! पागलपन नहीं करते। विलास के जल में पैसे

बहाना और घृणा के साथ कूड़े के टब में फेंकना एक ही बात है। दोनों एक जैसे अपव्यय हैं। विजय बाबू धमकी भरे स्वर में बोले।

कनाई बोला, रुपये मेरे हैं, मैं ने ही फेंक दिए हैं।

—मेरा भाग्य कि तू ने जला नहीं डाले। कल गीता को नर्सिंग की ट्रेनिंग में भरती करना है। रुपये चाहिए। मेरा बैंक बैलेंस तो अट्ठाइस रुपये बारह आने रह गया है। जा षष्ठी!

—इन रुपयों से आप गीता को भर्ती करायेंगे?

—अवश्य, इसके सिवा जब उस भले आदमी का पता मिल गया है तब गीता के पढ़ने का सारा खर्च भी उसी से वसूल करूंगा।

कनाई कठोर स्वर में बोला, मान-मर्यादा सर्वथा निरर्थक वस्तु नहीं है विजय दा! तुम्हें अपमान का बोध भले ही न हो परन्तु ऐसे रुपयों से गीता के पढ़ने की व्यवस्था करना उसका घोर अपमान होगा।

विजय बाबू की दोनों आंखें अंगारे की तरह जल उठीं परन्तु उसी समय दोनों हाथों में चाय के प्याले लिए गीता ने कमरे में प्रवेश किया। विजय बाबू ने आत्मसंवरण कर लिया और हास्य-स्मित मुख से कविता की आवृत्ति करते हुए उसकी अभ्यर्थना की—

"प्रछन्न दाक्षिण्य भारे चित्त 'तव' नत
स्तम्भित मेघेर मत

आषाढ़ेर आत्मदान प्रत्याशाय भरा।"❀

गीता, तुम्हारा नाम काजली होना चाहिए।

गीता ने प्रश्नपूर्ण दृष्टि से विजय बाबू की ओर देखा। विजय बाबू ने हंस कर फिर कविता पढ़ी—

"कालो चक्षु पल्लवेर काछे
थमकिया आछे,
स्तब्ध छाया पाति,
हासिर खेलार साथी
सुगभीर स्निग्ध अश्रुबारि;
जेन ताहा देवतारि करुणा अंजलि—
—नाम की काजली ?" +

तुम्हारा नाम मैंने काजली रख दिया। इसी नाम से तुम सेविका रूप में विख्यात होगी। इसी नाम से तुम्हें कल भरती करवा दूंगा।—विजय बाबू ने चाय के दोनों प्याले ले लिए, एक कनाई को दे दिया और दूसरे से स्वयं चुस्की लेते हुए कहा, वाह ! बहुत अच्छी बनी है। तुम न पियोगी हंसी भाई ?

❀ प्रछन्न दाक्षिण्य के भार से तुम्हारा चित्त नत और आत्मदान की प्रत्याशा से भरे अषाढ़ के स्तम्भित मेघ की भांति तृष्णा हरने वाला है।

+ काली पलकों के तट पर हास्य और रुदन का साथी स्निग्ध और गंभीर अश्रुजल स्तब्ध है। जैसे वह देवता की करुणा अंजलि है।—उसका नाम काजली है।

टेबल का किनारा पकड़ कर अवनतमुखी गीता बोली, विजय दा !

—पुकार कर मनोयोग आकर्षित करने की आवश्यकता तो नहीं है, हंसी भाई ! मैं तो तुम्हारे मुंह की ओर ही देख रहा हूं।

—आप युद्ध में काम करने वाली नर्सों की चर्चा करते थे न? उनकी ट्रेनिंग में समय भी कम लगता है और वेतन भी प्रारम्भ से ही मिलता है !

—हां

—मुझे उसी में भरती करवा दें !

विजय बाबू उसका मुंह देखते रहे।

कनाई बोला—नहीं, तुम ऐसी बातें न सोचो गीता।

गीता बोली—आप मना न करें कनाई दा ! और फिर कमरे से बाहर होगई।

ठीक इसी समय कूड़े-करकट से लतपथ षष्ठी ने दर्शन दिए और टेबल पर रुपये रख कर बोला—ये रहे !

विजय बाबू ने गम्भीर स्वर में कहा, अपने पास ही रख लो, फिर ले लूंगा।

कनाई बोला, विजय दा !

—रुपये मैं पार्टी के किसी काम में चंदे के रूप में दे दूंगा।

—जो अच्छा समझो करो किन्तु गीता को 'वार सर्विस' में न जाने दो !

—वह यदि चाहे और उसमें आन्तरिक आग्रह तथा साहस भी हो तो मैं मना न करूंगा।

कनाई चुप हो गया।

विजय बाबू बोले—गीता का सब से बड़ा अपमान तूने किया है कनाई।

कनाई उनकी ओर देखता ही रहा।

—गीता तुझे प्यार करती है, तू ने उसका प्यार ठुकरा दिया है।

—किन्तु मैं तो उसे इस रूप में प्यार नहीं करता। उसे स्त्री के रूप में प्राप्त करने की कभी कल्पना भी नहीं की। तुम विश्वास करो—मैं उसे अपनी बहन उमा से भिन्न नहीं समझता। इसके अतिरिक्त—नहीं, यह नहीं हो सकता विजय दा।

विजय बाबू चुप हो गये।

कनाई बोला—गीता का भार तुमने ले लिया, मैं निश्चिन्त हो गया। अब मुझे भी कोई नौकरी दिलवा सकते हो?

—नौकरी? विजय बाबू ने विस्मय के साथ पूछा—और व्यापार?

—नहीं, व्यापार अब न करूंगा। स्वयं कुछ बना कर उसका व्यवसाय कर सकता तो करता। अब मैं अपना परिश्रम बेचना चाहता हूं।

—हूं। विजय बाबू ने एक सिगरेट सुलगाई और बिछौने पर लेट गये।

—विजय दा!

—सोच रहा हूं। हमारे बंगला पत्र के समाचार विभाग में एक सहायक चाहिए। 'नाइट ड्यूटी' है ? कर लेगा ?

—करूंगा।

—साधारण चेष्टा से ही काम सीख लेगा। बंगला तू अच्छी लिख ही लेता है, वेतन किन्तु पैंतालिस ही हैं।

—कर लूंगा। इसी तरह का काम मैं चाहता हूं।

—हो जायगा। विजय बाबू निर्विकार भाव से सिगरेट के धुएं की कुंडलियां बनाते-बनाते बोले—कल की तरह बाहर दो बिछौने तो बिछा डालो।

आकाश में चन्द्रमा अस्त हो रहा है, अन्धकार पृथ्वी के वक्ष से क्रमशः ऊपर उठ रहा है। सड़कें गाढ़े अंधेरे से भर गई हैं। विशाल भवनों की छतों पर अस्तमितप्राय चन्द्र की म्रियमान ज्योत्स्ना—पुरानी और धुएं से काली चिमनी के ललछर अलोक जैसी प्रभाहीन पीली ज्योत्स्ना का आभास अभी जाग्रत है। इस प्रकाश में छतों की पंक्तिबद्ध कार्निसें रक्ताभ पटभूमि पर गहरे काले रंग से बने चित्र जैसी दीख पड़ती हैं। जाड़ा आज कल से भी अधिक तीक्ष्ण है। नित्य की भांति आज भी आकाश में वायुयान उड़ रहे हैं। शायद चट्टग्राम, काक्सबाजार या दक्षिण-पूर्व के किसी क्षेत्र की ओर जा रहे हैं, या इस महानगरी पर पहरा दे रहे हैं। दिसम्बर के पन्द्रह दिनों में से तीन दिनों में ही चटगांव में चार बार बम गिरे हैं। वहां के मनुष्य दीपशून्य घरों में विनिद्र आंखों की विस्फारित दृष्टि से अंधेरे आकाश की ओर

देखते और कान लगाये बैठे होंगे। मोटर के 'सेल्फ स्टार्टर' का शब्द सुन कर भी वे चौंकते होंगे। इस स्थिति में भी कुछ भिखारी सड़क के किनारे और घर से बाहर बैठने के लिए बनी संकीर्ण जगह में फटी चटाई ओढ़े सो रहे होंगे! विजय बाबू ने बाहर आकर कहा, आज तो कड़ाके की सरदी है। हवा भी काफी तीक्ष्ण है। लिहाफ को अच्छी तरह लपेट कर बिछौने पर बैठते हुए बोले, वाह! आज अच्छी जमेगी। कल 'रूटर' ने लेनिनग्राड के युद्ध का एक अच्छा शब्द चित्र भेजा है। तुम्हें सुनाने के लिए ले आया हूं—

'It was the dead of the night. Frost and blizzrd. With a hiss and a clang shell after shell passed overhead. Somewhere from around the cornr red flames shot upwards and a thunderous explosion reverberated through the street.'

यही कहीं मार्ग में एक नर्स एक और आदमी के साथ बरफ के ढेर पर चल रही है—उन्हें खबर मिली है कि एक स्त्री अकस्मात् प्रसव वेदना से पीड़ित हुई है—और उसकी सन्तान जन्म ले रही है।

'They ran from snowpile to snowpile, stopped and liestened'.

प्रसव-यंत्रणा—कातर मां के कण्ठ स्वर का क्षीणतम संकेत सुनने के लिए वे अपनी श्रवणेन्द्रिय को सजग किए चले जा रहे हैं।

बड़ी देर तक दोनों व्यक्ति स्तब्ध बैठे रहे। कमरे से टाइमपीस की टिक-टिक ध्वनि आ रही है। गीता के श्वास-प्रश्वास भी सुन पड़ते हैं। आकाश से वायुयान का शब्द नहीं आता।

अकस्मात् विजय बाबू ने पूछा—तू क्या किसी और को प्यार करता है कानू ? मुझे तो ऐसा ही आभास मिल रहा है।

कनाई ने कोई उत्तर न दिया। उसे याद आया, कल शनिवार है। एक तीखी हंसी उसके मुंह पर आई। उसने सोचा, नहीं, कल मैं नीला के साथ भेंट न करूंगा। अपने जीवन के विष से उसे जर्जरित करना भूल होगी—नहीं, मुझे किसी को भी प्यार करने का अधिकार नहीं है।

—चौदह—

शनिवार।

वस्तुओं के भाव ने आज अकस्मात् एक छलांग लगाई है। चावल अठारह रुपये. आटा पच्चीस, चीनी मिलती ही नहीं, मिट्टी का तेल लेने के लिए कतार में खड़े हो तो सवेरे के गये शाम को लौटो। मिलों के मजदूर चिल्ला रहे हैं, मंहगाई भत्ता दो। क्लर्क हतबुद्धि हो रहे हैं। अपने जलपान का सिलसिला पहले ही रोक दिया था, आज से बच्चों का जलपान भी बन्द हुआ।

देवप्रसाद ने ग्रहिणी को बुलाकर कहा, देखो, मेरी बदहजमी बढ़ती ही जाती है। रात को रोटी हजम नहीं होती।

ग्रहणी के मुख पर अत्यन्त सूक्ष्म और म्लान हंसी दीख पड़ी। वे चुपचाप खड़ी रहीं। देवप्रसाद बोले—एक मुट्ठी भात ही लूंगा आज से।

ग्रहणी बोलीं—तीन छटांक तो मैदा होता है, उससे कितनी बचत कर लोगे ?

—उंह—बचत की बात नहीं है। उससे बच्चों के लिए जलपान बना देना।

अखबार वाला आकर खड़ा हुआ—बाबू अखबार !

—अखबार कहां गया ?

—अखबार क्या होगा ? ग्रहणी ने पूछा।

देवप्रसाद हंस कर बोले, इसके साथ बन्दोवस्त किया है, सवेरे अखबार दे जायगा, आठ बजे ले जायगा, आधे पैसे लेगा। कहां? अखबार कौन ले गया ? नीला ?

भीतर से उत्तर आया, बाबू !

—अखबार तेरे पास है ?

नीला अखबार लेकर आई।

—पढ़ लिया ?

—वायसराय की स्पीच पढ़ रही थी।

म्लान हंसी के साथ देवप्रसाद ने कहा, बड़ी-बड़ी बातें कही हैं। अखण्ड भारत की परिकल्पना और अल्पमतों के न्यायसंगत स्वार्थों की रक्षा व्यवस्था। "full justice to the rights and legitimate claims of the minorities."

—बाबू मुझे देर हो रही है ! अखबार वाले ने तगादा किया।

—बेटी अखबार दे दे।

नीला ने पिता की ओर देखा। अकारण ही पैर के नाखूनों पर दृष्टि लगा कर देवप्रसाद ने कहा, इसके साथ बन्दोबस्त किया है—साढ़े आठ बजे अखबार वापस लेगा और आधे पैसे पायेगा।

नीला की मां नीला के हाथ से अखबार लेकर आगे बढ़ाते हुए विस्मय के साथ बोलीं—परसों फिर चटगांव-फेनी पर बम गिरे ! १५ तारीख को चटगांव और फेनी पर वायु-आक्रमण !

असहिष्णु अखबार वाले ने अनुनय के आवरण में फिर तगादा किया, मां !

स्वामी के ऊपर शायद क्षोभ प्रकट करने के लिए ही गृहिणी ने अखबार फेंक दिया। अखबार वाला उसे उठाकर बाहर निकल गया—चटगांव और फेनी पर बम ! वायसराय का भाषण ! आज का अखबार''गरमागरम खबरें !

—दोपहर अखबार देखकर ही काटती थी—वह भी गया ! हम क्या आदमी हैं ? कहते-कहते गृहणी भीतर चली गईं। देव प्रसाद मुस्कराये। नीला ने कहा, आप तो शाम को अखबार पढ़ते थे।

—दुनिया की खबरें बहुत देखीं बेटी, सब बेकार हैं। दुधमुंहे बच्चों का जलपान तक बंद हो गया है, तुझे नौकरी करनी पड़ी है—

—मेरी नौकरी से क्या आप प्रसन्न नहीं हैं बाबू ?

—प्रसन्न ?

—क्यों इसमें दोष क्या है ?

—छोड़ बेटी, यह चर्चा ही रहने दे।

नीला विस्मय के साथ पिता के मुंह की ओर देखती रही उनके मुंह से वह ऐसी बात सुनने के लिए प्रस्तुत न थी। वह क्षुब्ध भी हुई।

चर्चा न उठाने की बात कहकर भी देवप्रसाद ही फिर बोले, इस बार उनका स्वर कुछ उच्छ्वसित है—नये जीवन में अपना घर बना कर तू नौकरी करती बेटी तो मैं प्रसन्न होकर देखता, और गर्व के साथ कहता, देखो मैंने कैसी लड़की का निर्माण किया है। परन्तु आज अपनी गृहस्थी के लिये तेरे द्वारा उपार्जित धन मुझे लेना पड़ रहा है—अक्षमता की इस लज्जा को, इस दुःख को मैं सहन नहीं कर पाता।

नीला के मन का सारा क्षोभ पल भर में उड़ गया, उसे याद आया, आज शनिवार है। कामरेड आज उसे अपनी बात सुनायेंगे। दो भावों के संघात से उसकी आंखों में पानी भर आया। नीला ने आंखों के उस जल को पिता से छिपाना आवश्यक नहीं समझा। पिता के पास बैठ कर छोटी बालिका की भांति उनके कंधे पर अपना चिबुक रख कर वह बोली, लड़की और लड़के में क्या सचमुच इतना ही अन्तर है बाबू जी ? दादा जो उदयास्त परिश्रम करते हैं उस पर तो आपने एक बार भी दुःख प्रकट नहीं किया। उनका रुपया लेने में भी आप कभी कुण्ठित नहीं होते।

देवप्रसाद कुछ न बोले। नीला के प्रश्न का कोई आवेग पूर्ण या मन संतुष्ट करने वाला परन्तु मिथ्या उत्तर देने की प्रवृत्ति उनमें नहीं उठी। नीला का उपार्जन ग्रहण करने में उन्हें सचमुच कुण्ठा होती है। उन्होंने जब कन्या को लिखाया पढ़ाया है—एम. ए. तक पहुंचाया है तब नारी जाति के अर्थ-उपार्जनकारी अधिकार को भी युक्तिसंगत मान लिया है। यह सत्य है कि पुरुष के उपार्जन की परिधि में रहकर स्त्री केवल गृह कर्म को ही संभाले तो घर भी सुषमा से मण्डित होजाता है, यह भी सत्य है इस पद्धति की परिणति में नारी जाति की पराधीनता अनिवार्य है। जीवन में सहधर्मिणी और सिंहासन की भागिनी होने का अधिकार प्राप्त करने पर भी सीता को बनबास मिला था और द्रौपदी बाजी पर लगाई गई थी। देवप्रसाद इन सब युक्तियों को स्वीकार करते हैं फिर भी अपने अन्तर की कुण्ठा को पराजित नहीं कर सकते। जो क्षोभ अब तक उनके हृदय को मथ रहा था वह आज के दुर्बल मुहूर्त में प्रकट होगया।

नीला ने फिर बुलाया—बाबू जी!

—बेटी!

—मेरे प्रश्न का आप उत्तर न देंगे?

—युक्ति में तेरी बात ठीक है, कई बार इसी युक्ति से हृदय को सान्त्वना भी देता हूं किन्तु मैं जिनके हाथों से पला हूं, उनका आदर्श मेरे अन्तर में संस्कार के रूप में वर्तमान है—वह नहीं मानता। यही देख—परन्तु वे चुप हो गये।

नीला ने पूछा—क्या कहते थे बाबू जी ?

—रहने दे बेटी।

—नहीं, नहीं, आप बतायें भी तो।

कुछ इधर-उधर करने के बाद देवप्रसाद ने कहा, नेपी कम्यू-निस्ट पार्टी का मेम्बर बन गया है, शायद तू भी उनमें मिल गई है। मैं तुम लोगों का तर्क स्वीकार करता हूं किन्तु अपने हृदय को किसी तरह से भी समझा नहीं सकता। मैं गांधी जी जैसे व्यक्ति……फिर वे बीच में ही चुप हो गये।

नीला की आंखें चमकने लगीं, वह बोली, इस अपवाद का प्रतिवाद तो हम लोग भी करते हैं और सबसे अधिक करते हैं, हृदय में इसके लिए दुखी भी होते हैं परन्तु इधर जापान हमारी सीमा पर अड्डा बना कर जम रहा है, हम रूठे बैठे रहें और वह भीतर घुस आये तो सर्वनाश ही हो जायगा। पलासी युद्ध के पहले रानी भवानी ने कहा था, सायर के राघव वयाल को मारने के लिए नदी काट कर घड़ियाल न बुलाओ। हमारी स्वाधीनता—

देवप्रसाद ने वाधा उपस्थित की ; रहने दे बेटी। राजनीति मुझे अब अच्छी नहीं लगती। तुम्हारा नया जीवन है, नया रक्त है, तुम्हें जो अच्छा लगे, करो। हमारे लिए तो 'मलथुस' की युक्ति ही सत्य है। संसार की स्वाधीन और शक्तिशाली जातियां के उद्यान में हम झाड़-झंखाड़ों ने अनावश्यक रूप से स्थान रोक रखा है। युद्ध और महामारी में ध्वंस होना ही हमारा भाग्य है।

देवप्रसाद के कथन में वेदना का एक ऐसा करुण स्वर था,

जिसके स्पर्श से नीला व्यथित हुई और कुछ क्षणों के लिए हताश होगई।

देवप्रसाद बोले, किन्तु यह तिलतिल जलना सहन नहीं होता बेटी। दुधमुंहे बच्चों का दुख तो और भी नहीं देखा जाता।

नीला की मां ने आकर पिता और पुत्री के वार्तालाप में वाधा डाली—तू आज आफिस-वाफिस न जायगी?

चकित होकर नीला ने पूछा—कै बज गये?

—यह मैं नहीं जानती बेटी, अमर ने स्नान कर लिया है।

—दादा ने नहा लिया? नीला व्यस्त होकर उठी और भीतर चली गई। नीला की मां ने अपने आप ही कहना शुरू कर दिया—नौकरिहा लड़की, दफ्तर जाती है, उसके लिए समय से रोटी बनानी पड़ती है, अच्छा भाग्य है मेरा! फिर स्वामी से बोलीं—आज कोर्ट-वोर्ट न जाओगे? न जाना ही अच्छा, भूत की बेगार ही तो है। देवप्रसाद भी मुस्कराये।

घर के भीतर दो बच्चों ने रोना आरम्भ कर दिया। अमर की जूठी थाली के भोजन पर विवाद शुरू हुआ है। गृहिणी बोलीं, बहू दोनों को अलग-अलग दे दो। नन्हें के मुंह में भी दो-चार दाने डालना। ग्वाला कहता था आज से दूध के दाम बढ़ा दूंगा।

पाउडर समाप्त हो गया है। नीला पाउडर का जितना प्रयोग करती है, वह न करने के ही बराबर होता है। स्नान करने के बाद

मुख की तैलाक्तता को मिटाने के लिए पाउडर का पैड फिरा लेती है। कई दिन से दफ्तर जाने के पहले पाउडर लेने का ख्याल आता है परन्तु लौटते समय याद नहीं रहती। आज वह अपने ऊपर ही विरक्त हुई। पिता के साथ जितनी भी बातें हुईं—उन सब में दुःख और हताशा ही रही है परन्तु एक बात ने उसके अन्तर में विचित्र रूप से एक सलज्ज पुलकित स्वर जगा दिया है। 'नये जीवन में अपना घर बना कर तू नौकरी करती'' ये शब्द उसके भीतर गुंजन करते फिरते हैं। बार बार स्मरण आता है कि आज शनिवार है। उसने दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखा। सामने के बालों में कंघे से कुछ परिवर्तन भी किया, पाउडर का डब्बा कई बार ठोंका, पैड को यत्न के साथ मुंह पर फिराया, फिर दर्पण में स्थिर दृष्टि से देखा। अपने रूप के दैन्य से वह अपरिचित नहीं है परन्तु आज उसे अपनी छवि अच्छी लगी।

नया जीवन—अपना घर ! एक छोटा फ्लैट, थोड़ा-सा हल्का परन्तु सुन्दर सामान, चारों ओर स्वच्छता की उज्वलता, दो अनाडम्बर व्यक्तियों के लिये जितना आवश्यक हो उतना ही मिल जाय—अधिक की आवश्यकता नहीं। ट्राम खड़ी हुई और नीला उस पर चढ़ी।

—उठिए, लेडीज़ सीट। 'लेडी' सुनते हैं ?

भले आदमी ने मुंह पीछे नहीं घुमाया। हाथ फेर कर देखने लगा कि सीट पर 'लेडीज़' की प्लेट लगी है या नहीं। नीला को

याद आया, उस दिन कनाई ने भी इसी तरह प्लेट की परीक्षा की थी।

कनाई की ओर नीला प्रारम्भ से ही आकर्षित है। ऊंचे वंश के कीर्तिमान और सबल तरुण को देख कर सभी आकर्षित होंगे। उसकी सहपाठिनी मण्डली इस विषय में कितने ही रहस्यालाप भी करती रही है। बी० ए० तक वे स्कटिश चर्च कालेज में पढ़ती रही हैं, तब कनाई के साथ वार्तालाप न हुआ था। कनाई विज्ञान का विद्यार्थी था और वार्तालाप में सदा संयत रहता था। छात्राएं उसे दाम्भिक कहती थीं परन्तु उसे केन्द्र बनाकर अपनी मण्डली में रसिकता करने से बाज न आती थीं। ऐंग्लो इण्डियन लड़कियां तक इस रहस्यालाप में भाग लेती थीं। एक दिन कालेज की छात्र समिति के अधिवेशन में कनाई का व्यङ्ग-श्लेषपूर्ण और तीक्ष्ण युक्तियों से सम्पन्न भाषण सुनकर एक ऐंग्लो-इण्डियन लड़की बोली, मैं तो आज सम्पूर्णतया पराजित हो गई। चक्रवर्ती का चेहरा देख कर आधी पहले ही पराजित हुई थी, आज भाषण सुन कर बिल्कुल हार गई।

एक मुखरा एवं प्रखरा बंगालिन ने कहा था, तुम कहो तो मैं चक्रवर्ती से बात करूं—

एंग्लो इण्डियन लड़की निर्लज्ज ढंग की रसिका थी, बोली, जो बादाम टूट नहीं सकता, उसे देख कर लार भी टपकने लगे तो भी उसे संवरण करना ही अच्छा है। दांत तोड़ कर मैं हास्यास्पद

नहीं होना चाहती। इसकी अपेक्षा तुम्हारे दांत सुपारी भंजक हैं, तुम चेष्टा करो, तोड़ लोगी तो मैं भी डौल लगा लूंगी।

नीला की प्रकृति कभी ऐसी नहीं रही, कालेज में कनाई के साथ उसका वार्तालाप भी नहीं हुआ, ऐसे रहस्यालाप में भी उसने किसी दिन मुंह नहीं खोला परन्तु इसका उपभोग किया है और मुस्कराई है। कनाई के साथ उसकी पहिली बातचीत बंगाल छात्र-सभा की कार्यकारिणी समिति के अधिवेशन में हुई, इसके बाद पार्टी के आफिस में। उस दिन ट्राम में कनाई के साथ जो बातचीत हुई वही पार्टी और समिति की सीमा के बाहर पहिली भेंट थी। अब वह आलाप अन्तरंग हो गया है। कनाई की निश्वास का उष्ण स्पर्श उसने अनुभव किया है। आज कनाई उसके सामने अपने जीवन की कहानी स्पष्ट करेगा। इसके अतिरिक्त पिता की वेदनादायक बातों से भी उसके मन में एक अभावित पुलकित कल्पना रसायित हो गई है, जैसे विद्युत-दीर्ण आकाश के वर्षण से पृथ्वी का वक्ष रससिक्त हो जाता है।

शनिवार को आफिस जल्दी बन्द होते हैं।

नीला छुट्टी के समय की उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रही थी। छुट्टी होते ही वह यथासंभव शीघ्र कर्जन पार्क पहुंची। प्रत्याशा थी कि कनाई बैठा होगा। किन्तु वह कहां है? यह सोचकर उसने खिन्न होकर भी उत्साहित रहने की चेष्टा की कि कनाई आवेगा तो वह कह सकेगी—पहले मैं ही पहुंची हूं। वह बैठी परन्तु कनाई न आया। धीरे-धीरे संध्या का प्रकाश भी म्लान होने लगा।

लेड ला कम्पनी की घड़ी में ६ बजने लगे। विरक्त होकर वह खड़ी हो गई। मैं ही क्यों प्रतीक्षा करती रहूं ? उसके मन में प्रश्न उठा फिर भी वह दो-चार मिनट और ठहरी। अन्त में एक लंबी सांस लेकर चली और ट्राम पर बैठ गई।

एक प्रचण्ड धक्के ने नीला के एकाग्र और चिन्तान्वित मन की कल्पना का तार तोड़ दिया। धक्का वास्तविक था। धर्मतल्ला और एसप्लेनेड के चौराहे पर ट्रामों की लम्बी कतार खड़ी है। नीला वाली ट्राम के ड्राइवर ने अपनी गाड़ी को रोकने की बड़ी चेष्टा की फिर भी आगे खड़ी ट्राम के साथ वह भिड़ गई और एक धक्का लगा। नीला का सिर बगल की खिड़की के काठ से टकरा गया। गनीमत यह रही कि लोहे की छड़ से नहीं टकराया। ट्राम के सारे यात्री ड्राइवर पर खड्गहस्त होकर कलरव करने लगे किन्तु नीला मुस्करा कर नीचे उतर गई। उसने सोचा, मुझे चैतन्य करने के लिए ही किसी कौतुकी ने यह धक्का दिया है। बंगाल के गरीब बाप की काली लड़की की कल्पना का नीड़—विवाह का सुख स्वप्न इसी तरह टूटना चाहिए। ऊंचे ब्राह्मण वंश की सन्तान कनाई मुंह से चाहे जो कहे, विद्यार्थी जीवन में आदर्शवाद की कितनी ही डींगे मारे, विवाह तो उसे किसी एक जड़ाऊ गहनों और बनारसी साड़ियों वाली शायद नतमुखी ऊंचे कुल की कन्या से ही करना पड़ेगा। वह लड़की शायद थर्डक्लास तक पढ़ी है, टेढ़े-मेढ़े और असमान अंग्रेजी तथा बंगला अक्षरों में आप नाम लिख सकती है, हरमोनियम पर सिनेमा के दो चार गीत गा सकती

है, नाटक के खेल की आलोचना कर सकती है, आंखों में आग भर कर नौकरों और नौकरानियों को डांट सकती है तथा अन्न-पूर्णा की भांति हंसते-हंसते भिखारियों को अनाज दे सकती है। वह व्रत रख कर दूर्वागुच्छ की राखी बांधेगी और वर मांगेगी कि मुझे प्रत्येक जन्म में ऐसा ही सौभाग्य मिले, मैं इसी तरह जन्म-जन्मान्तरों में दीनों, दरिद्रों और कंगालों को अपने समृद्ध गृहस्थ की जूठन देकर कृतार्थ और अपने हाथ को धन्य एवं जन्म को सार्थक बनाती रहूँ तथा जन्मान्तर के लिए पुण्य संचय करती रहूं। अर्थात् उसके सौभाग्य और पुण्य को सार्थक करने के लिये कंगाल और भिक्षुक जन्म जन्मान्तर तक बने रहें। नीला इस अर्थ को सोच कर मुस्कराई।

धर्मतल्ले के फुटपाथ पर पालिश करने का सामान लिये लड़कों की एक कतार बैठी है। युद्ध के बाजार में इन बालक व्यवसायियों का उद्भव हुआ है। इधर से विदेशी सैनिकों के जो गोल निकलते हैं ये उनके जूतों पर पालिश करते हैं और अपनी जीविका उपार्जन करते हैं। नीला सोच रही है, वर्णाश्रम मर्यादा की इस युद्ध में शायद समाप्ति हो गई है। इन लड़कों में यद्यपि पूरब के मोचियों और मुसलमानों की संख्या अधिक है परन्तु तीक्ष्ण दृष्टि से देखा जाय तो ब्राह्मणों और मध्यमवर्ग के बंगालियों के लड़कों की संख्या भी कम न निकलेगी। परन्तु इस संख्या की ओर कोई ध्यान नहीं देता, ध्यान देने का आग्रह भी किसी में नहीं है—कारण यह एक अति प्राचीन वृद्ध की मृत्यु है, जिसकी सब इन्द्रियां जरा

से जीर्ण हो गई हैं और अब स्वाभाविक मृत्यु हो रही है। धर्म, वर्ण और सम्प्रदाय आदि से परे धरित्री के रूप से रूपान्तर में प्राणशक्ति का जो प्रवाह चल रहा है वह निरासक्त भाव से ही मुक्ति का आग्रह लिये नये कलेवर में आगे बढ़ रहा है। एसप्लेनेड चौराहे के दक्षिणी फुटपाथ के मोड़ पर पहुंच कर नीला रुक गई। एक व्यक्ति यहां नियमित रूप से सस्ते सेंट का विज्ञापन बांटता है, उसने गंधसिक्त आयल पेपर का एक टुकड़ा नीला की ओर भी बढ़ाया। नीला ने विरक्ति के साथ उसका हाथ पीछे हटा दिया। नीला ने देखा यहां भी एक दुर्घटना हो गई है।

एक थर्ड क्लास घोड़ा गाड़ी फौजी लारी के साथ टकरा गई है। गाड़ी या उसके सवारों को कोई क्षति नहीं पहुंची परन्तु एक घोड़ा—अस्थि कंकाल सार मर्कट जातीय घोड़ा—घोड़ों को आबद्ध रखने वाले लोहे के फ्रेम में फंस गया है और गाड़ी उस के ऊपर चढ़ आई है। घोड़े के पिछले पैरों से रक्त बह रहा है। दुर्घटना अभी हुई है। गाड़ीवान भी अपनी गद्दी से अभी उतरा है परन्तु एक किशोर इतने समय में ही सहायता के लिये पहुंच गया है और गाड़ी के पहिये को प्राणपण से ऊपर उठाने की चेष्टा कर रहा है। नीला ने देखा वह नेपी है। उसकी मांधाता के समय की साईकिल भी सामने पड़ी है। आनन्द और अहंकार से नीला का हृदय भर आया। किन्तु अकेला नेपी भरी गाड़ी नहीं उठा पाता। आस पास भीड़ जमा हो गई है परन्तु उस में से और कोई व्यक्ति नेपी की

सहायता के लिये आगे नहीं बढ़ता। कुछ श्वेताङ्ग सैनिक भी खड़े हैं और नेपी की वीरता देख रहे हैं। नीला की इच्छा हुई—हाथ के बेग को फैंक कर वहीं दौड़े। धोती के आंचल को उसने कमर में लपेटना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु इसी समय दो सैनिक नीला की बगल से निकले और लम्बे डग रखते हुए नेपी की ओर बढ़ गये। नीला ने देखा कि ये दोनों सैनिक अभी आये हैं, जो पहले से ही खड़े हैं उनके साथी नहीं हैं। नेपी के साथ हाथ लगा, कर उन दोनों ने गाड़ी उठा ली।

सड़क के किनारे पशुओं के पानी पीने की हौज है। हौज से पानी ले कर उन्होंने घोड़े का रक्त धोया और उसे पानी पिला दिया फिर मिट्टी रक्त और पानी से सने हाथ नेपी की ओर बढ़ा दिए। शर्मीले नेपी ने सलज्ज मुस्कान के साथ अपना हाथ बढ़ाया। नीला भी निकट पहुंच गई थी, उसने पुकारा—नेपी!

नीला को देख कर नेपी का मुख प्रसन्नता से खिल गया और सैनिक आदर के साथ उसकी ओर देखने लगे। नेपी को इतनी देर बाद कहने योग्य बात मिली, वह बोला, मेरी बहन!

सैनिकों ने नीला को अभिवादन किया और नेपी के साहस की प्रशंसा की।

नीला बोली, आपने काले आदमियों की विपत्ति में जो सहायता की है, उसके लिए मैं धन्यवाद देती हूं।

एक सैनिक बोला, हमारे जो देशवासी फुटपाथ पर खड़े हंसते रहे हैं उनके व्यवहार से हम लज्जित हैं परन्तु वे पेशेवर सैनिक हैं—टामी!

दूसरा बोला, यहां खड़े होकर हम भीड़ आकर्षित कर रहे हैं। पार्क में न चलें ?

सैनिकों में से एक का नाम जेम्स स्टुअर्ट और दूसरे का हेरेल्ड मैकेंजी है। युद्ध से पहले वे आक्सफोर्ड के विद्यार्थी थे। हेरल्ड हंसकर बोला, बचपन में हमने भारत का नाम सुना था, सुना था ब्रिटिश साम्राज्य में यह अद्भुत देश है, इसके मनुष्य विचित्र हैं, जंगलों में असंख्य सिंह रहते हैं और पग-पग पर सांप मिलते हैं। उसी समय इस देश को देखने की इच्छा हुई थी। आक्सफोर्ड में पढ़ते समय महाशय टैगोर और मि० गांधी के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानने की चेष्टा की परन्तु यह स्वप्न में भी अनुमान न हुआ था कि हमें उस रूप में भारत आना पड़ेगा।

नीला ने पूछा, हमारा देश आपको कैसा लगा ?

जेम्स बोला—बहुत अच्छा ! जब ट्रेन पर कोई लम्बी यात्रा करता हूं तब ऐसा जान पड़ता है कि यह जादू का देश है।

—मनुष्य कैसे जान पड़े ? जो कहानियां आपने सुनी थीं उनके पात्रों जैसे हैं या नहीं ?

हेरेल्ड बोला, पहले-पहल तो सचमुच अद्भुत मालुम होते थे। हमारे राजनीतिज्ञ इनके लिए असभ्य और बर्बर आदि जिन विशेषणों से काम लेते हैं, वे ठीक ही जान पड़े थे परन्तु अब यह पता चलता है कि इस देश के शिक्षित व्यक्ति हमारे देश के पण्डितों से किसी अंश में भी कम नहीं हैं। यहां अशिक्षित मनुष्यों की संख्या अवश्य अधिक है परन्तु यह पराधीनता का

अनिवार्य परिणाम है। और—वह बीच में ही रुक गया और संकोच के साथ मुस्कराया।

नीला ने हंस कर कहा—आप संकोच न करें—कहें—

हेरल्ड बोला—आपके देश की साधारण जनता बहुत गरीब है और आपने उन्हें गरीब समझ कर अस्पृश्य बना रखा है। फलस्वरूप वह अत्यन्त भीरु हो गई है, अपने आपको मनुष्य भी नहीं समझती।

भावुक नेपी क्षण भर में दीप्त हो गया, बोला—परन्तु हमारा यह देश अंग्रेजी शासन की प्रतिष्ठा के पहले संसार में सब देशों से अधिक समृद्ध था।

जेम्स बोला, इस वितर्क की आशंका से ही हेरल्ड शायद संकोच कर रहा था।

हेरल्ड ने कहा, किन्तु मिस सेन, मेरी धारणा है कि आपके देश में जो अस्पृश्य हैं उनकी अवस्था उन दिनों भी अच्छी नहीं थी जब यह देश समृद्धिशाली था। वे तो सदा निर्धन ही रहे हैं।

—धनी और दरिद्र आपके देश में भी हैं और धनियों की दाब के भय से दरिद्र सदा गूंगे रहते हैं। पराधीन देशों में यह लीला कुछ अधिक होती है। आप ध्यान से देखेंगे तो एक अशिक्षित गरीब ईसाई को अपने ही जैसे अशिक्षित और गरीब हिन्दू या मुसलमान से अधिक साहसी पायेंगे। वह हमारे शासकों का धर्मावलम्बी जो है!

नेपी का मुंह और आंखें लाल हो आई थीं, वह कुछ कहने ही

बोलता था कि नीला ने रोका—आज यह चर्चा रहने दीजिए; फिर किसी दिन भेंट हुई तो देखा जायगा। अब हम आपसे विदा लेंगे।

जेम्स बोला, कुछ मिनिटों के लिए और क्षमा करें। हमें आपसे एक बात पूंछनी है।

—पूछिए !

एक समाचार पत्र निकाल कर उन्होंने पूछा, इसकी आलोचना क्या विश्वस्त है ? हम आपके देश का एक नाटक देखना चाहते हैं। आपने यह नाटक देखा है ?

समाचार पत्र में 'संघर्ष' नामक नाटक की समालोचना है। कल रविवार को नाटक का शततम अभिनय होगा। पत्र में नाटक की यथेष्ट प्रशंसा की गई है। नाटक का अभिनय नीला ने नहीं देखा, परन्तु पुस्तक पढ़ी है और यह भी सुना है कि अभिनय अच्छा हो रहा है। वह बोली, हां, नाटक मैंने पढ़ा है, अच्छा है, सुना है अभिनय भी अच्छा हो रहा है।

—आप ने देखा नहीं ?

—नहीं

कुछ संकोच के साथ जेम्स ने नेपी से कहा, सेन, तुम हमारे साथ नाटक देखने चलो तो हमें बड़ी प्रसन्नता हो। हम बंगला पढ़ रहे हैं परन्तु अभी समझ नहीं पाते। तुम हमें समझा दोगे। अवश्य आप से अनुरोध नहीं कर सकता—

नीला बोली, आप यदि हमारा आतिथ्य ग्रहण करें तो नेपी के साथ मैं भी आ जाऊंगी।

दोनों ने अभिवादन करने के बाद कहा, हम आनन्द के साथ निमंत्रण ग्रहण करते हैं!

नीला भाराक्रान्त मन लिए घर लौटी, जैसे कुछ अच्छा न लगता हो। कपड़े बदले बिना ही वह बिस्तरे पर लेट गई। मां आई।

—तू लेट गई, क्यों?

—ऐसे ही—

मां बोलीं, उस कमरे में अमर लेट रहा है कहता है सिर में दर्द है, इधर तू लेटी है—ऐसे ही। दासी बांदी मैं हूं—जलपान ले आऊं? मेरा तो—

नीला ने उन्हें रोका—दादा के सिर में दर्द है?

बाहर जाते जाते वे बोलीं—दर्द है या नहीं—मैं नहीं जानती, हां, भाग्य में आग अवश्य लग गई है। नौकरी से आज जवाब मिल गया है।

—पन्द्रह—

रविवार।

नीला बड़े सबेरे उठी है। गृहस्थ बंगाली बालाओं का यह चिरन्तन अभ्यास है। नगरों विशेष कर कलकत्ते के मध्यम वर्ग वाले घरों की स्त्रियां रात रहते ही उठ बैठती हैं। नीला इसका अपवाद नहीं है। आज जब वह कमरे से निकल कर बरामदे में खड़ी हुई

तब रात थी। रात में उसे अच्छी नींद नहीं आई। कल का दिन उसके लिए बहुत बुरा रहा है।

दादा की नौकरी छूट गई। महीने में पैंतिस रुपये की आय घट गई और परिवार उनके बच्चों से ही है। एक लड़की और तीन लड़के। लड़की की आयु ६ वर्ष है, उसका खर्च भी बहुत कम है, दूध उसे मिलता नहीं, खाती वह कई बार है परन्तु दादा की थाली में, बुआ अर्थात् नीला की थाली में और दादी की थाली में—इसी तरह उसका पेट भर जाता है। नीला ने इस व्यवस्था का प्रतिवाद किया है परन्तु मां ने कहा है, रहने दे बेटी, इसे मैं स्कूल न जाने दूंगी। तू चिन्ता न कर—इसे कोई कष्ट न होगा।

नीला जानती है, मां को इतने दिन तक उसका कुमारी रहना पसन्द नहीं है, वे इसके लिए मर्मान्तक पीड़ा भी अनुभव करती हैं। उनकी धारणा है कि नीला यदि स्कूल कालेज न जाती तो अब तक कभी अविवाहित न रहती।

नीला की भाभी ने भी एकान्त में अनुनयपूर्ण अनुरोध किया है कि वह लड़की को थालियों की जूठन खाने से न रोके। नीला दुःखित होकर भी चुप हो गई है। अपने भाभी के अन्तर को भी वह पहचानती है। वे अपने स्वामी के स्वल्प उपार्जन के लिए लज्जित हैं।

दादा को देख कर नीला को सब से अधिक दुख होता है। वे इतने निरीह और शांत हो गए हैं कि उनके मुंह पर कभी हंसी भी नहीं दीख पड़ती—सदा गूंगे बने रहते हैं। जब घर में होते

हैं, तब भी उनका कण्ठस्वर नहीं सुन पड़ता। बाहर निकल कर कभी पिता के पास नहीं बैठते। जैसे व्यर्थता की सजीव मूर्ति हों। कल जब से आये हैं, कमरे से बाहर नहीं निकले। रात में भोजन भी नहीं किया। सिर दर्द लिए लेटे ही रहे, उठे भी नहीं। पिता ने स्वयं एक बार जाकर पुकारा था। दादा ने मृदुस्वर में उत्तर दिया था—सचमुच सिर में दर्द है बाबा।

देवप्रसाद चुपचाप चले गये। रात को खाने बैठे तो हंस कर गृहिणी से बोले, तुमने सांप को मेंढक खाते देखा है?

नीला की मां कुछ समझ न सकीं, उनके मुंह की ओर देखती रहीं। देवप्रसाद बोले, हमारी गिरस्ती मेंढक है—हमें सांप ने पकड़ा है। मेंढक पहले उछलने की चेष्टा करता है, टर्राता है परन्तु सांप उसे निगलता रहता है, मेंढक भी निर्जीव हो जाता है, चिल्लाने के स्थान पर धीरे धीरे कराहता है फिर शांत हो जाता है।

नीला का मन पहले ही तिक्त हो रहा था; कनाई के व्यवहार से उसे चोट लगी है। कनाई ने जिस आन्तरिकता और आवेग के साथ बुलाया था उसे नीला ने बहुत कुछ समझ लिया था। इस स्थिति में पिता की बात सुनकर उसे दुःख से भी कुछ अधिक मिला, उसका सम्पूर्ण अन्तर सकरुण भाव से शोकार्त हो गया। उसने कई बार लम्बी सांसें लीं और वे सब की सब कांपती हुई आईं। कई बार उसने यह सोचने की चेष्टा भी की कि अच्छा हुआ कनाई से भेंट नहीं हुई। नीड़ बनाने की सब कल्पनाओं को मिटा कर उसने सोचा है, अब मैं जीवन भर उदयास्त परिश्रम करूंगी

और दादा के बच्चों को मनुष्य बनाऊंगी। यही मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य होगा। राजनीति से सम्पर्क छिन्न कर लेने की बात भी उसने कई बार सोची है।

जेम्स और हेरेल्ड को नाटक देखने का निमन्त्रण देने की बात भी उसे पीड़ित करती रही है। वह सोचती रही है, उनके साथ आज अकस्मात् भेंट हो गई थी। वे विदेशी सैनिक और सर्वथा अपरिचित हैं। किसी एक घटना से उनके सम्पूर्ण आचरण पर विचार नहीं हो सकता। उत्तेजित मुहूर्त में उन्हें निमन्त्रण दे देना घोर अन्याय हो गया है। आज जहां यह घटना हुई है, उसी जगह एक होटल के सामने कुछ दिन पहले कुछ मतवाले सैनिकों ने लोगों के साथ अत्यन्त अभद्र व्यवहार किया था। बाबा इस निमंत्रण की बात सुनेंगे तो अवश्य असन्तुष्ट होंगे। वे कितने ही उदार क्यों न हों, सहशिक्षा की सीमा से आगे नहीं बढ़े। विदेशी सैनिकों के साथ वार्तालाप करने की बात सुनकर वे क्रुद्ध भी हो सकते हैं।

नीला पिता के इन विचारों से सहमत नहीं है परन्तु उन्हें दुखी नहीं करना चाहती। विदेशी जब लाखों की संख्या में यहां आये हैं, सड़कों पर घूमते हैं तब उनसे आलाप-परिचय भी अवश्य होगा। परिचय और बन्धुत्व में नीला को कोई दोष नहीं दीख पड़ता परन्तु इससे अधिक जाने में वह भी भलाई नहीं देखती। उनमें भद्र, शिक्षित और वास्तविक मनुष्य भी बहुत से हैं परन्तु युद्ध के इस वातावरण में, जीवन मरण की अनिश्चितता के भूले पर जीवन

के प्याले को भोगरस से पूर्ण कर लेने की इच्छा उनके लिए भी अस्वाभाविक नहीं हो सकती। सामयिक रूप से कुछ प्रेम भी कर सकते हैं परन्तु युद्ध के बाद वह प्रेम नशे की भांति उतर सकता है—उतरना ही स्वाभाविक है। नीला जीवन की इस समस्या को इतने हल्के रूप में ग्रहण नहीं कर सकती।

—कौन? नीला? देवप्रसाद भी बाहर आ गये हैं।

—हां, बाबा! नीला चैतन्य होगई। उजाला होगया है। वह काम में हाथ लगाने के लिए उद्यत हुई।

देवप्रसाद बोले, आज बहुत जल्दी उठ बैठी हो बेटी!

नीला ने हंस कर उत्तर दिया—आज सबेरे ही नींद टूट गई।

"आनन्द बाजार, अमृतबाजार, लोकमान्य—" अखबारों के हाकर सड़कों पर आगये हैं। कूड़े की गाड़ियां चलने लगी हैं। पहिली ट्राम भी आगई है।

—आगया बाबू! आगया! अखबार वाले ने दरवाजे पर आवाज लगाई।

नीला ने दरवाजा खोल कर अखबार ले लिया। वह बोला—तीन आने पैसे हों तो दे दें—

—ठहरो, देती हूँ परन्तु रुपये की भांज देनी होगी!

—भांज? भांज कहां से लाऊं?

—फिर?

वह बकता-बकता चला गया—भांज! भांज! भांज! सब भांज मांगते हैं! रेजगारी तो इस देश में रही ही नहीं!

नीला मुस्कराई, सचमुच यह भी एक बड़ी समस्या हो गई है। रेजगारी के दर्शन ही नहीं होते। ट्राम और बस में टिकट के लिए रेजगारी न दो तो वे उतार देते हैं, बाजार में भांज न हो तो सौदा नहीं मिलता या फिर पूरे रुपये की चीज खरीदनी पड़ती है। कल ही एक रुपये का साबूदाना लेना पड़ा है! घर की महरी भांज के बिना बाजार से खाली हाथ लौट आई थी!

नीला ने अखबार पिता को दे दिया। देवप्रसाद बैठ कर उसे देखने लगे और बोले, महरी तो अभी आई नहीं।

नीला ने हंस कर कहा, मैं आग जला कर चाय बना लाती हूं।

चाय ही देवप्रसाद का एकमात्र नशा है।

चाय बना कर नीला ने पिता के सामने प्याला रख दिया। देवप्रसाद ने पूछा—तेरा?

नीला अपना प्याला भी ले आई और बैठ गई। देवप्रसाद ने समाचारपत्र उसके सामने रख दिया।

'अराकान क्षेत्र में जापानियों से संघर्ष' 'रूस में तुमुल संग्राम' 'अफ्रीकन युद्ध में भारतीय सैनिकों की वीरता'।

देवप्रसाद बोले, मि० बी. आर. सेन की रिपोर्ट पढ़।

प्रसीडेंसी और वर्धमान डिवीजन के एडीशनल कमिश्नर मि० बी. आर. सेन ने मेदिनीपुर के तूफान पीड़ित क्षेत्र का स्वयं निरीक्षण किया है और यह रिपोर्ट दी है—

"एक गांव के एक सौ पच्चीस निवासियों में से केवल एक बचा है। एक और गांव के एक सौ छत्तीस निवासियों में से केवल चार बचे हैं—एक सौ बत्तीस मर गये हैं। प्रतिशत ५० पीने योग्य जल के अभाव में अपने घर छोड़ कर चले गये हैं। लोग खुले मैदानों में रह रहे हैं। मनुष्य पानी, अन्न और वस्त्र के लिए हाहाकार कर रहे हैं। कितने ही मीलों की यात्रा करने के बाद भी मुझे किसी गाय-बैल के दर्शन नहीं हुए।"

नीला ने एक ठण्डी सांस ली।

देवप्रसाद बोले, हम तो स्वर्ग सुख भोग रहे हैं, बेटी!

कुछ देर चुप रहने के बाद फिर बोले, कल रात को मैं बहुत लज्जित हुआ। पिता कहा करते थे, ऊपर की ओर, अपने से बड़ों की ओर देख कर अपनी अवस्था पर विचार न करो। करोगे तो दुःख की सीमा भी न रहेगी। सदा नीचे की ओर देखो, उनकी अवस्था पर ध्यान दो जो तुम से नीचे हैं, तुम से भी अधिक कष्ट सह रहे हैं। तुम्हारे मन में क्षोभ न होगा, शांति मिलेगी। कल यह बात याद आई और रवीन्द्रनाथ की यह युक्ति भी याद आई कि 'विपदे मोरे रक्षा करो, ए नहे मोर प्रार्थना, विपदे जेन ना करि आमि भय!"* और तब मैंने अपनी भूल समझी।

पिता की बात से नीला को भी सांत्वना मिली। उसने समाचार

---

* मेरी यह प्रार्थना नहीं है कि तुम मुझे विपत्ति से बचा लो। विपत्ति से मैं डरूं नहीं!

पत्र का पृष्ठ पलट दिया। देखा आमोद प्रमोद के बड़े बड़े और विचित्र रूप रंग के विज्ञापन पाठकों को आकर्षित कर रहे हैं। 'संघर्ष' के विज्ञापन पर उसकी दृष्टि गई। उसने सोचा, मुझ से भूल हो गई। विदेशी सैनकों को निमन्त्रण देना उचित नहीं हुआ परन्तु अब तो जाना ही पड़ेगा। न जाऊंगी तो वे क्या सोचेंगे, अपने देश में जायेंगे तब क्या कहेंगे। कुण्ठित स्वर में बोली—बाबा !

—क्या है बेटी ?

—मैंने एक काम कर डाला है।

—क्या ? देवप्रसाद ने विस्मय के साथ पूछा।

—दो बन्धुओं को थियेटर दिखाने का वचन दे दिया है। 'संघर्ष' नाटक अच्छा हो रहा है। आज उसकी सौवीं रात का उत्सव है।.........सभापतित्व करेंगे।

बन्धु का अर्थ देवप्रसाद के बांधवी ही समझा। हंस कर बोले, अच्छी बात है, चली जाना।

—नेपी को साथ ले जाऊंगी।

—अच्छा।

देवप्रसाद इस बात से लज्जा और वेदना का अनुभव करते हैं कि नीला उपार्जन करके उन्हें देती है। आज उसने थियेटर में कुछ रुपये अपव्यय करने की अनुमति मांगी तो वे प्रसन्न हुए और आज्ञा देकर तृप्ति का अनुभव किया। थियेटर में रुपये खर्च करने को वे अपव्यय ही समझते हैं।

पिता की अनुमति पाकर नीला आश्वस्त हुई परन्तु उसका

मन अपने आप को अपराधी मानता ही रहा। किसी को न्यौता देकर नाटक दिखाने की सामर्थ्य भी तो चाहिए। चार आदमियों में कम से कम आठ रुपये लगेंगे। घर के छोटे बच्चों का दूध तक बंद हो गया है, दादा की नौकरी छूट गई है; ऐसे दिनों में विलास के लिए यह व्यय—वह किसी तरह भी अपना समर्थन कर सकी।

थियेटर में पहुंच कर नीला को और भी अनुताप हुआ। भीड़ के कारण टिकट घर तक पहुंचना भी असंभव था। नेपी किसी तरह वहां तक गया परन्तु लौट आया।

दो रुपए के टिकट समाप्त हो चुके हैं, जो दो एक हैं, उनकी सीटें एक साथ नहीं हैं और खम्भों की आड़ में पड़ती हैं। नीला की आत्मग्लानि और भी बढ़ गई। जेम्स और हैरेल्ड भी पास ही खड़े थे। उन्होंने पांच रुपए का एक नोट नेपी के हाथ पर रख दिया।

तीन रुपये की सीटें काफी आगे हैं और मिल भी गई हैं दूसरी पंक्ति के बीच में। सैनिक नीला के पास बैठे। नीला अपने ऊपर ही बिगड़ रही है, आत्म-ग्लानि में अभिनय का आनन्द डूब गया है।

जेम्स ने नीला से पूछा, आप कुछ अस्वस्थ हैं मिस सेन?

नीला चौंकी, अपनी दुर्बलता को संयत करने के बाद हंस कर बोली, नहीं तो।

—परन्तु ऐसा जान पड़ता है कि आप कुछ बेचैन हैं।

नीला हंसी, बोली, हम लोगों का जीवन दुख-कष्ट से इतना भरा है कि दुखांत नाटक सहन नहीं होता। मैं नाटक के अन्त को सोच कर पीड़ित हो गई हूं।

इधर मंच पर यवनिका उठी। नेपी ने नीला का हाथ पकड़ कर कहा, कानूदा !

आलोकोज्वल रंगमंच पर सभापति और सभ्रांत अतिथि बैठे हैं। शततम अभिनय का उत्सव हो रहा है। अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को पुरष्कार मिल रहे हैं, नाटककार का अभिनन्दन हुआ है और उपहार मिला है। सभ्रांत व्यक्तियों के बीच में कनाई भी बैठा है। क्षण भर के लिए नीला की उदासी हवा हो गई और मुख चमकने लगा परन्तु दूसरा क्षण उसके लिए और भी गहरी उदासी ले आया।

पहले वह विस्मित हुई थी—कनाई एक दिन में ही इतना विशिष्ट हो गया ? फिर उसने सोचा, इस विशिष्टता के कारण ही क्या कल उसे मुझ से भेंट करने का अवसर नहीं मिला ? यह विशिष्टता भी कैसी है ? कनाई कहता था, मैंने व्यवसाय आरंभ किया है। पुराने धनी वंश की सन्तान को एक दिन में ही धनोपार्जन का स्वाद मिल गया है। उसके रक्त में गुप्त धनी-जनोचित मनोवृत्ति जग गई है ! इसीलिए अपने कुलीन बांधवों की सहायता से मंच पर आसन संग्रह करने में उसे संकोच नहीं हुआ।

नीला के पतले ओंठों की मिलन रेखा धनुप की भांति वक्र हो गई।

—सोलह—

कनाई किन्तु विजय बाबू के स्थान पर समाचारपत्र का प्रतिनिधि होकर आया है। इसीलिए उसे मंच पर विशिष्ट अतिथियों के बीच में आसन मिला है। उसने कल अर्थात् शनिवार से ही नौकरी कर ली है। विजय बाबू जिस समाचार पत्र में काम करते हैं, वह एक बड़ी और प्रतिष्ठित संस्था है; वहां से एक अंग्रेजी और एक बंगला दैनिक प्रकाशित होता है; मासिक और साप्ताहिक पत्र भी निकलते हैं। कनाई ने बंगला दैनिक 'स्वाधीनता' में नाइट एडीटर के रूप में नौकरी की है। रात के दस बजे से सवेरे चार बजे तक उसकी ड्यूटी है।

विजय बाबू ने कनाई से कहा था, कर सकेगा। रात का काम है! 'रात हुई है दिवस सजन ये, दिन है रात समान।' परन्तु इसमें प्रेम या विरह की संजीवनी सुधा नहीं है। समझ ले!

कनाई हंसा था—संसार के अ-प्रेमियों और अ-विरहियों से ही कारखानों की 'नाइट शिफ्टें' चलती हैं विजय दा।

बार बार गर्दन हिला कर वे बोले थे, उंहुं! उनमें नब्बे प्रतिशत विवाहित हैं। तू भी एक काम कर नौकरी कर ले और एक विवाह कर डाल। उसके मुंह का स्मरण करते-करते वक्त मजे में कट जायगा। नींद का झोंका तक न आयेगा।

कनाई शनिवार को ही ड्यूटी पर बैठ गया। नीला के साथ भेंट न करने का उसने निश्चय भी किया था फिर उसी समय विजय बाबू उसे पत्र के अधिकारियों से मिलाने भी ले गये।

विजय बाबू की सिफारिश थी और उन्होंने कनाई का लिखा हुआ एक लेख भी अधिकारियों को दिखाया था। लेख कनाई ने सवेरे ही लिखा था। अमल बाबू के ऊपर उसका जो क्रोध उमड़ रहा था वही लेख की मूल प्रेरणा थी। लेख में पूंजीपतियों की उस गुप्त और कुटिल मनोवृत्ति का भांडा फोड़ा गया है जो उनकी दया की आड़ में खेला करती है। अधिकारी सन्तुष्ट होगये। कनाई को स्थान मिल गया और उसका लेख सोमवार की संख्या के आर्थिक विभाग में छापने के लिए ले लिया गया।

नये कर्म जीवन को कनाई ने आनन्द के साथ ग्रहण किया। उसने सोचा इस सुयोग से मैं अपने जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों की उपलब्धि जनता के सामने उपस्थित करूंगा। यही नहीं, उसने कई रंगीन कल्पनाएं भी कीं। आत्म-विकास की आकांक्षा प्राण शक्ति का स्वाभाविक धर्म है। इसी आकांक्षा या प्रेरणा से उत्पन्न कनाई के जीवन स्वप्न ने नये कार्य को केन्द्र बना कर एक महत् भविष्य की रचना कर डाली। उसने सोचा, बुद्धि और नैपुण्य के कृतित्व से मैं इस सामान्य कार्य को ही असामान्य बना लूंगा, अपने जीवन की निरलस और निगूढ़ साधना के सब फलों से पत्र की समृद्धि को समृद्धतर कर दूंगा, और एक दिन इस पत्र का सम्पादक बन जाऊंगा। सम्पूर्ण देश को नूतन आदर्श से प्रभावित कर दूंगा। देशवासी मेरे संकेत से मेरे द्वारा निर्वाचित सत्यनिष्ठ देशभक्त के मस्तक पर ही नेतृत्व का मुकुट रखेंगे। स्वार्थी राजनीतिज्ञों की ओर से मेरे पास कितने ही लोभ पूर्ण

प्रस्ताव आयेंगे, परन्तु मैं उन्हें ठुकरा दूंगा। शासनतन्त्र के क्षुद्र-तम अन्याय की भी कठोर, तीव्र और निर्भीक आलोचना करूंगा। इसके बदले में जो दण्ड मिलेंगे उन्हें मस्तक उठा कर हंसते २ वरण करूंगा। दण्ड भोगने के बाद विजयी होकर लौटूंगा। इसी समय उसके मन में एक अवान्तर प्रश्न भी उठा—उस दिन जेल के द्वार पर मेरा स्वागत करने कौन आयेगा ?

रात में विजय बाबू कनाई को स्वयं आफिस पहुंचाने गये। आफिस में ५ व्यक्ति और बैठे हैं। वे सब कनाई के सहयोगी होंगे। उनमें से एक विजय बाबू के समवयसी हैं, कनाई उन्हें पहचानता है, उनका नाम गुणदा बाबू है। पहले वे विजय बाबू के राजनैतिक सहयोगी थे, अब वे रात के भार प्राप्त सम्पादक हैं। विजय बाबू ने कनाई को उन्हें सौंपते हुए कहा—गुणदा बाबू, कनाई को भी अपने दल में भर्ती कर लीजिए !

गुणदा बाबू ने तिर्यक दृष्टि से देखते हुए कहा, दल नहीं गोल या लेहंड कहिए। यहां खड़े खड़े सोना पड़ता है फलतः चतुष्पद ही होना चाहिए।

विजय बाबू हंस कर बोले, वह मैंने इससे कहा था परन्तु यह राजी नहीं होता—व्याह यह करना ही नहीं चाहता। द्विपद को चतुष्पद करने का भार अब आप पर रहा।

गुणदा बाबू ने उत्तर दिया, इस मैदान में मेरी अयोग्यता पहले ही प्रमाणित हो चुकी है। इन दो बंदरों को किसी तरह भी विवाह के लिए राजी नहीं कर सका। इसी लिए बैल के स्थान

पर बन्दर बना लिया है और कलाबाजियां खाने के लिए बाध्य करके काम चला रहा हूं। इसके साथ भी यही करूंगा। और हो सका तो—वे हंसे।

विजय बाबू विदा लेकर चले आये।

कनाई का मन लग गया। उसने देखा कि मण्डली आन्तरिक स्नेह से जुड़ी है। गुणदा बाबू का हास परिहास उसे सजीव बना रहा है। परिहास अवश्य आदिरसात्मक है परन्तु मण्डली के सदस्य नशे की भांति उसके अभ्यस्त हो गये हैं। गुणदा बाबू के गम्भीर होते ही किसी को नींद आने लगती है, कोई जम्हाइयां लेता है और कोई शरीर तोड़ता है। कनाई सिर झुका कर काम में भिड़ गया। गुणदा बाबू बोले—कनाई, तुमने विवाह तो किया ही नही—

कनाई मुस्कराया।

—कभी प्रेम भीं नहीं किया? सच बताना भाई!

—नहीं

—तुम बड़े अभागे हो। बात कुछ ऐसे ढंग से कही गई कि कनाई भी हंसे बिना न रह सका।—राम! राम! नारी प्रगति के इस युग में, 'को-एजूकेशन' के समारोह में ६ बर्ष तक तुम विश्व विद्यालय में क्या करते फिरे?—फिर अपने साथियों को आकर्षित करके बोले इसे कहते हैं, खोदा पहाड़ निकला चूहा!—फिर कनाई की ओर घूमे—देख भाई, इनमें से दो विवाहित हैं, एक प्रेम सागर में गोते खा रहे हैं और दूसरे कूदने के लिए

दीवाने हो रहे हैं। इनकी रात्रि जागरण की इस विरह गोष्ठी में मुझे प्रेमपत्र वाहक प्यादे की तरह रसिकता करनी पड़ती है, तुम इधर ध्यान न देना।

बीच-बीच में चाय आती है, बीड़ियां, सिगरेटें और सिगार जलते हैं—गुणादा बाबू सिगार पीते हैं। धुएं से कमरे की आयु भारी हो रही है। परिहास भी होता है और काम भी। रूटर, ए. पी. और यू. पी. आदि समाचार देने वाली संस्थाओं से जो तार आ रहे हैं, झपाके के साथ उनके अनुवाद हो रहे हैं। गुणादा बाबू अनुवाद देखते हैं। कनाई का अनुवाद देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए, वे बोले, वाह, तुम तो बहुत अच्छा लिखते हो।

कनाई उत्साहित हुआ। मुस्करा कर अनुवाद करने लगा। रूटर का तार है—

LONDON :--The Garman News agency amounces that Calonge was attaeked by the R. A. F. Last night.

LONDON :-- Last night heavy bombers caused garet damage to industrial district of Calonge. Fighters have made several night-raids on northern France and the low ountries

कनाई ने अनुवाद कर दिया। किसी ने क्लांति अनुभव की तो उसका काम भी कनाई ने समेट लिया। एक बात पर तुमुल आलोचना होने लगी। प्रश्न उठा, रूसी स्टालिनग्राड ले लेंगे या नहीं? एक ने कहा, प्रत्येक इंच भूमि के लिए प्राणपण युद्ध करने के बाद भी वे उसे अपने अधिकार में नहीं कर सके, वे अब जर्मनों के हाथ से उसे किसी तरह भी नहीं छीन सकते।

कनाई ने प्रतिवाद किया—रूसी पूंजीवादियों की तरह किराये के सैनिक नहीं हैं। वे अपने लिए लड़ रहे हैं। वेरोशिलेव ने कहा है—

"Whoever can lift a rifle, should have one."

गुणदा बाबू ने इस वितर्क में भाग नहीं लिया अपितु बाधा डाली। वे बोले, देखो यहां पर यह सब कुछ नहीं हो सकता, जो बैल चीनी के बोरे लाद कर ले जाते हैं, वे चीनी नहीं खाते—चीनी उनके लिए होती भी नहीं। तुम लड़ाई की खबरें अनुवाद करते हो, उन पर आलोचना करना तुम्हारा काम नहीं है। करोगे तो तुम को तुम्हारी घर वाली की कसम दिला दूंगा। फिर भी न मानोगे तो नाइट एडीटरशिप छोड़ दूंगा।

—छोड़ देंगे ?

—छोड़ूंगा नहीं ? मेरी घर वाली भयंकर झगड़ालू है। दिन में कण्ट्रोल की दुकान पर 'क्यू' की लाइन में सब से अन्त में खड़े रहने के कारण उससे छुट्टी मिल जाती है परन्तु वह तो रात में भी लड़ती है इसीलिए यह नौकरी कर ली है और यहां आकर तुम लोगों से हंस-बोल कर समय पार करता हूं। अब तुम भी कलह आरम्भ कर दो तो फिर यह नौकरी करने से क्या लाभ होगा। गुणदा बाबू ने जोर के साथ घण्टी बजाई और फिर आवाज लगाई, अरे जगुआ! ज''गु''! चाय ले आ'''चाय!

वास्तव में गुणदा बाबू ऐसी अलोचनाएं पसन्द नहीं करते। कारण यह नहीं है कि उन्हें रूस जैसे साम्यवादी देश की जीत

में आनन्द नहीं मिलता अपितु उनके हृदय पर देश के दुःख का बोझ इतना भारी और बंधन की वेदना इतनी गहरी है कि वे इसको एक ओर ठेल कर आनन्द से उच्छसित नहीं हो पाते।

पहले दिन का अनुभव कनाई को अच्छा लगा। उसने अपने अन्तर में एक भविष्य की रचना कर डाली। रंगमंच और चलचित्रों की समालोचना भी इस पत्र में प्रकाशित होती है परन्तु उसके साथ कनाई का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह भार उसके कंधे पर अकस्मात् आ गया है।

आज रविवार है। कल सोमवार के अंक में कनाई का लेख प्रकाशित होगा। लेख के प्रूफ देखने के लिए कनाई दोपहर को दो बजे दफ्तर आया था। रविवार के कारण अधिकांश कर्मचारी छुट्टी पर हैं और कर्म गुंजन से मुखर कार्यालय स्तब्ध प्राय हो रहा है। आर्थिक विभाग के सम्पादक स्वयं प्रूफ देख रहे हैं, कनाई कापी पढ़ रहा है।

लेख में कनाई ने अमल बाबू के बगीचे में देखे हुए दृश्य का वर्णन किया है और इंग्लैण्ड के शिल्प-विपल्व के पहले चरण की अवस्था के साथ उसकी तुलना की है। उसने लिखा है, विदेशी शासन के कूट-कौशलों की बाधा के कारण जो क्रांति-कारी परिवर्तन अब तक नहीं हुआ, युद्ध के विपर्य से उस अवस्था की गति अब इस देश में तीव्र हो रही है। गृहहीन नर नारियों के दल अपना माल असबाब सिर पर रखे और पशु साथ लिए सड़कों पर भटक रहे हैं, रास्ते में कारखाने के मालिक नें उन्हें

देखा तो अपनी मोटर रोक कर उनकी राम कहानी सुनी और रुपये दिए, अपने कारखाने में मनोरम आश्रय देने का आश्वासन भी दे गये। उनके लिए मजदूरों की समस्या हल हो गई। कारखाने में तीव्र दृष्टि वाले मैनेजर और क्लर्क हैं, वे पूरा काम करवा ही लेंगे और अभागों को करना पड़ेगा, न करेंगे तो कहां जायंगे— भागने का मार्ग भी तो बन्द है। कारखाने में फाटक है और उस पर गोरखे पहरेदार हैं, उनकी कमर में खुखरी और हाथ में बंदूक है। गृहहीनों के बूढ़े मुखिया के पोपले मुंह के दोनों ओंठ अवरुद्ध रुदन से कांपेंगे और आंसुओं की पतली धारा गालों पर लुढ़केगी—वह विधाता से मुक्ति देने की प्रार्थना करेगा। उस सुन्दरी तरुणी का उल्लेख करते समय कनाई को बार-बार गीता की दुर्दशा याद आई। अमल बाबू के कारखाने की बंदिनी बाला के भविष्य की कल्पना से ही वह सिहरने लगा।

कनाई ने यह दृश्य दिखाने के बाद इंग्लैण्ड की तत्कालीन अवस्था चित्रित की है—

"Terreible crulty charctarised much of the development of industrial capitalism, both on the Continent and in England. The birth of modern industry is heralded by great slaughter of the innocents."

कुटीरवासियों के दल एकत्रित किए जाते थे और कारखानों में भेजे जाते थे। हमारे देश में कभी चाय-बागानों के लिए प्रलोभनों और कौशलों से फंसाकर कुली जमा किए जाते रहे हैं।

उन कुलियों की करुण गाथाएं हम से छिपी नहीं हैं । इंग्लैंड में भी उस समय ऐसे अत्याचार हुए थे ।

"As Lancashire was thinly populated and a great nembei of hands were suddenly wanted, thousands of halpless creaturese were sent down to the north from London, Birmingham and other towns."

लेख में कनाई ने यह भी लिखा है कि बाजार की मंहगी के कारण लोग धन प्राप्त करने के लोभ में युद्ध उद्योग से सम्बन्ध रखने वाले कारखानों की ओर से आकर्षित हो रहे हैं ।

टेलीफोन की घण्टी बजी । सम्पादक ने रिसीवर उठा लिया ।

—हलो ! कौन ? विजय बाबू ?

विजय बाबू ने सम्पादकीय विभाग से टेलीफोन किया है । अपने विभाग में आज वे ही इंचार्ज हैं । आर्थिक आलोचना विभाग के सम्पादक ने कहा, आदमी ? यहां तो कोई नहीं है । आज नवेन्दु की ड्यूटी थी । वह आया नहीं, सुना है बीमार हो गया है ।

—मैं ? नहीं । शाम को मैं 'फ्री' नहीं हूं—एक आवश्यक काम है ।

—यहां ? यहां हैं, नये सज्जन—कनाई बाबू । रात में उनकी ड्यूटी है ।

—अच्छा ! वे आपके अपने आदमी हैं ? अभी भेजता हूं ।

रिसीवर रखकर उन्होंने पूछा, विजय बाबू आपके आत्मीय हैं ।

मंद मुस्कान और परम श्रद्धा के साथ कनाई ने उत्तर दिया—परमात्मीय, सहोदर से भी अधिक।

—आपके लेख में भी विजय बाबू का प्रभाव है।

कनाई ने कोई उत्तर न दिया। सम्पादक महोदय फिर बोले, आपको विजय बाबू ने बुलाया है, प्रूफ देखकर आप चले जांय। लीजिये, झटपट देख लें।

प्रूफ देखने के बाद कनाई तिखंडे पर विजय बाबू के कमरे में पहुंचा। विजय बाबू ने स्नेह के साथ पूछा, आओ! प्रूफ देख चुके?

—हां!

विजय बाबू हंसे—कल ही कनाईचन्द्र विख्यात व्यक्ति हो जायगा।

कनाई चुप ही रहा। विजय बाबू फिर बोले, लेख अच्छा हो गया है, इसे किसी अंग्रेजी दैनिक में भी दे दे—कुछ मिल भी जायगा।

कनाई बोला—एक पत्र में छप जायगा तो दूसरा उसका ट्रांस-लेशन छापेगा?

विजय बाबू हंस कर बोले—ट्रांसलेशन तो न छपेगा—कुछ बदल देना—मैं ठीक कर दूंगा। 'जर्नलिज्म' की पहली और प्रधान 'टैक्टिस' एक मुरगी को पांच दरगाहों में जिबह करने का कौशल है। मैं तुझे सिखा दूंगा। दूसरी 'टैक्टिस' दूसरे के लेख को ऐसे आत्म-सात करना है कि उसका लेखक भी न पकड़ सके, तीसरी 'टैक्टिस'

प्रतिवाद में गालियां देना है—शुद्ध गालियां और जब कभी बंगला में कुछ लिखा जाय तो उसमें महाकाल-वहाकाल अवश्य जोड़ दिया जाय। ताण्डव नृत्य, दिग्वसना और लोल जिह्वा जैसे शब्दों के व्यवहार का अभ्यास भी कर डाल।

कनाई हंसा, पूंछा, बुलाया क्यों है ?

—ये देखो। मतलब की बात तो भूल ही गया। एक काम कर—ड्यूटी से फालतू काम है। थियेटर देख आ।

—थियेटर ? कनाई विस्मित हुआ।

—हां। आज 'संघर्ष' नाटक का शततम अभिनय है। नाट्य-कार मेरे मित्र हैं, उन्होंने आग्रह के साथ कार्ड भेजा है।

—थियेटर-सिनेमा मैं नहीं देखता विजयदा। फिर बुलाया तुम्हें गया है—तुम उनके मित्र हो—

विजय बाबू ने बात काटी—मित्र तो हूं परन्तु मुझ से भी अधिक घनिष्ठ मित्रों को न्यौता देने की सुध उन्हें न आई होगी। वस्तुत: उन्होंने विख्यात दैनिक के अन्यतम सम्पादक को न्यौता दिया है जिससे अभिनय के वर्णन द्वारा उनकी प्रतिभा का गौरव दैनिक पाठकों की मण्डली तक पहुंच जाय। मैं नहीं जा सकता, इस लिए पत्र की ओर से तुझे जाना होगा। और कोई है नहीं; तू ही जा।

कनाई ने चुपचाप कार्ड ले लिया।

—संध्या के ६ बजे से आरम्भ होगा। तू कुछ यहीं खा ले।

विजय बाबू ने घण्टी बजाई। चपरासी को चाय और टोस्ट लाने की आज्ञा दी।

थियेटर और सिनेमा में कनाई के लिए कोई आकर्षण नहीं है। बचपन में जब उसके पिता के पास कुछ धन बचा रह गया था तब वह भी थियेटर देखने जाता था। बादाम का शरबत पीने की तरह थियेटर देखने की प्रथा उन दिनों भी किसी तरह घसीटी जा रही थी। आयु की वृद्धि के साथ कनाई के मन में अपने परिवार की भांति थियेटर के लिए भी वितृष्णा बढ़ गई। इसके बाद शिक्षा और विचार शक्ति के प्रभाव से कला और साहित्य के सम्बन्ध में उसकी जो रुचि बनी वह आज के थियेटर और सिनेमा देख कर पीड़ित होती है। फिर आज के दुर्दिनों में आमोद-प्रमोद की कल्पना से भी उसका अन्तर विद्रोह करने लगता है। सिनेमा-गृहों के सामने जब वह विचित्र वेश-भूषा का विलासी समारोह देखता है तब उसकी आंखों में अपने घर के सामने वाली बस्ती घूम जाती है। पृथ्वी का एक अंश कल्पनातीत दारिद्र्य की चक्की में पिस कर शोचनीय अवस्था में पहुंच गया है और दूसरा अंश विलास के विष से मर रहा है; एक ओर मनुष्य रो कर मर रहा है दूसरी ओर हंस कर। गीता के घर का चित्र उसके सामने विशेष रूप से स्पष्ट होता है। परन्तु आज नौकरी के लिए उसे थियेटर देखने जाना पड़ा।

थियेटर हाल में सचमुच समारोह है। सिंहद्वार की छत पर नौबत बज रही है। दरवाजे पर 'वेलवेट' के गहरे लाल रंग के

परदे पड़े हैं। दोनों ओर दो पूर्ण घट रखे हैं, उनपर आम के पल्लव हैं और पल्लवों पर डाल वाले हरे नारियल। 'कोरिडर' के खम्भे रंगीन कपड़ों से मढ़े हैं। दरवाजों पर नट के परदे पड़े हैं। टिकट घर के सामने भारी भीड़ जमा हो गई है। सुसज्जित नर नारियों का मेला है. प्रमोद-विलास की बाजार लगी है।

इतने बड़े पत्र के प्रतिनिधि कनाई को बाक्स में स्थान दिया गया। बगल में ही थियेटर का रैस्तरां है, वहां तिल धरने को भी स्थान नहीं मिलता। सामान देने वाले लड़के फिरकी की भांति घूम रहे हैं। वे ट्रे पर मिट्टी के कुज्जे, केक और बिस्कुट लिए हैं, हाथों में चाय की केतली है। हाल के भीतर उनका स्वर गूंज रहा है—चाय, केक, बिस्कुट, पटोटो चिप्स! साल्टेड बादाम!

हाल के भीतर भी रंगीन कपड़ों की सजावट है। रंगमंच पर पाद-प्रदीपों के सामने रंगीन फूलों के ढेर लगे हैं।

एक सज्जन ने आकर पूछा, आप 'स्वाधीनता' के प्रतिनिधि हैं?

—हां

वे विनय के साथ बोले, तो आइये। मीटिंग के समय स्टेज पर आपकी 'सीट' रखी गई है! भीतर जाते-जाते वे बोले—एक कालम कस कर लिख दीजिएगा!

कनाई मुस्कराया। रंगमंच के भीतर स्टेज पर सम्भ्रांत अतिथि बैठे हैं। वह भी वहीं बैठा। धीरे धीरे यवनिका हटी। सामने का प्रेक्षागृह दर्शकों से भरा है। स्टेज का प्रकाश आगे के कीमती आसनों पर बैठे दर्शकों के मुंह पर पड़ रहा है। सहसा कनाई की

दृष्टि दो योरोपीय सैनिकों पर पड़ी। वह प्रसन्न हुआ—ये लोग भारत को जानना चाहते हैं। और उनके पास कौन बैठा है—नेपी? और नेपी के पास—नीला? हां, नीला ही तो है!

नीला ने भी कनाई की ओर देखा—दोनों की दृष्टि मिली। ठीक इसी मुहूर्त में सैनिकों में से एक ने बीच में बैठे हुए नेपी की ओर झुक कर शायद नीला से कुछ पूंछा। नीला ने भी मुंह घुमा कर उसे उत्तर दिया। कनाई की भौंहों में बल पड़ गये। नीला इन विदेशी सैनिकों के साथ थियेटर देखने आई है? उसने मुंह फिरा लिया।

—सत्रह—

सभापति देशभक्त और पंडित हैं। नाटक की सफलता के लिए नाटककार और रंगमंच के अभिनेताओं एवं कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करने के बाद आपने कहा—संसार में महा दुर्योग आने वाला है। बंगाल पर भी वह दुर्योग घनीभूत हो रहा है। आज मनुष्य का जीवन ही संकट में नहीं है—मनुष्य ने युगयुगान्तर तक जो साधना की है उसका सम्पूर्ण फल, उसकी समस्त सम्पदा भी संकट ग्रस्त है। साहित्यिक और कलाकार का कर्तव्य आज गुरु भार बन कर महान् उत्तरदायित्व में परिणत हो गया है। उनके सामने मानव जाति को अपनी प्रेरणा से जाग्रत करने का कार्य है। जिस शक्ति से मनुष्य मानव सभ्यता और मानव संस्कृति की रक्षा कर सकता है, साहित्य और नाट्य-कला द्वारा वही शक्ति

उसे देनी होगी। वर्तमान बंगला नाटकों और उनकी अभिनय कला की गति एवं प्रकृति को मैं अधिक आशाप्रद न मानूं तो आप मुझे क्षमा करें, आज मैं इस विषय की आलोचना भी नहीं करना चाहता। मैं केवल अनुरोध कर रहा हूं कि साहित्यिक और कलाकार अपना कर्तव्य संभाले। इस दुर्योग के बाद नव प्रभात भी होगा। आप उस नवप्रभात में जाग्रत होने वाली स्वाधीन और सबल जाति के स्वागत गान लिखें। आपका मंगल हो।" निमंत्रित अतिथियों एवं दर्शकों ने करतल ध्वनि के साथ सभापति के कथन का साग्रह समर्थन किया। सभाभंग हुई—विशिष्ट अतिथि दर्शकों में अपने स्थान ग्रहण करने के लिए रंगमंच से उठे। यवनिका फिर गिरी। कनाई कुछ चकित होकर ही सब के साथ उठा। वह कुछ अन्यमनस्क होगया था। उसका तिक्त चित्त नाट्यकार की चिन्ता में उलझा था। वह विचारा आज जैसे कृतार्थ होगया है परन्तु विशिष्ट व्यक्तियों के बीच में अपरिचित व्यक्ति की भांति बैठा था। उसके गले में माला भी अन्त में डाली गई थी। नाट्य-परिचालक और प्रधान अभिनेता को भी माला पहले ही मिल गई थी। सभापति के अतिरिक्त अन्य भाषण कर्ताओं ने भी नाट्यकार की उपेक्षा करके नाट्य परिचालक और प्रधान अभिनेता की निर्लज्ज रूप से प्रशंसा की है। एक अध्यापक तथा नाटककार तो इस बात में सबसे बाजी मार ले गये हैं। पुरस्कार ग्रहण करने के लिए फैले हुए नाटककार के हाथों में कंगाली का स्पष्ट आभास देखकर कनाई को बड़ी चोट लगी।

दूसरी ओर इंग्लैंड है और बर्नार्ड शा हैं ! कनाई को योरोपीय नाट्य-साहित्य के सम्बन्ध में लिखी एक पुस्तक का यह स्थल याद आया—"If writers have still a great deal to learn from the theatre as regards technique, the dramatists are of greater importance to the actors and managers to understand problem.

अभागे देश का अभागा नाटककार ! परन्तु नाटककार को ही दोष क्यों दिया जाय ? इस देश का भाग्य क्या कहीं भी उतना प्रसन्न, उतना उज्ज्वल और उतना ऊंचा है ? सब से बड़ा दुर्भाग्य तो यह है कि इस देश की स्त्रियों का भविष्य ही नहीं रह गया। भावी माताओं के उस नीड़ की आशा तक विलुप्त हो रही है जिसमें भावी जाति बनेगी। वह काली बंगाली लड़की अपने अंधेरे भविष्य का कूल-किनारा न देख कर और आकाश कुसुम की कल्पना लेकर उस विदेशी सैनिक के पास कंगालिनी की भांति बैठी है ! कनाई को नीला पर अश्रद्धा हो गई। वह इतनी अन्तःसार शून्य है ? वह क्या यह समझती है कि युद्ध के बाद यह श्वेतांग उसे अपने साथ ले जायगा—अपने देश के समाज में प्रतिष्ठित करेगा ? कनाई के मुंह पर तिक्त, तीव्र और श्लेषपूर्ण हंसी दीख पड़ी।

उधर यवनिका उठ गई है और अभिनय होने लगा है। एक के बाद दूसरा दृश्य दर्शकों के सामने आ रहा है। दर्शक स्तब्ध हैं। कभी-कभी उनकी मुग्ध साधुवाद ध्वनि उठती है। नाटक वास्तव में अच्छा है और अभिनय भी सुन्दर हो रहा है परन्तु कनाई को बहुत अच्छा नहीं लगता। उसका मन इसी तिक्त चिन्ता में व्यस्त है।

पहले अंक की यवनिका गिरी। चाय बेचने वाले लड़कों के चीत्कार और दर्शकों के पारस्परिक आलाप से प्रेक्षागृह कलरव मुखर हो गया। एक लड़का चाय की ट्रे लिए पुकार रहा है चा गरम! हाट-टी! चप कटलेट! पटोटोचिप्स! कनाई विस्मय के साथ उसे देख रहा था। उसने पुकारा हीरेन! वह गीता का भाई हीरेन है। कनाई के मन में प्रश्न उठा—हीरेन यहां चाय बेंच रहा है?

—कानूदा! दूसरी ओर से किसी ने बुलाया।

कनाई ने मुंह घुमाकर देखा—नेपी बुला रहा है। दृष्टि मिलते ही उसने मधुर मुस्कान के साथ कहा—हम भी आये हैं कानूदा!

कनाई बोला—देखा है, परन्तु ये दो टामी कहां से पकड़े हैं?

—वे टामी नहीं है। आक्सफोर्ड में पढ़ते थे। टामी कहने से वे नाराज होते हैं—बड़े सज्जन हैं।

कनाई ने श्लेष के साथ कहा—अच्छा! इसीलिए—

—आइये, आप परिचय कर लें!

—रहने दो, अभी परिचय करने-कराने में सुविधा न होगी।

नेपी कुछ दब गया, कनाई की बातों में उसे अनात्मीयता का एक प्रछन्न स्वर मिला, जो उसे दूर हटा रहा था। फिर भी उसने अप्रतिभ की भांति पूछा—नाटक अच्छा है, है न?

कनाई ने मुस्करा कर उत्तर दिया, पता नहीं!

नेपी ने सोचा, मेरे प्रश्न का यह उत्तर तो नहीं है। इसका अर्थ तो यह है कि कनाईदा अपना मत व्यक्त ही नहीं करना

चाहते। वह सचमुच आहत हुआ। कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा फिर धीरे धीरे अपने स्थान की ओर चला गया। कनाई हीरेन को ढूंढ रहा था।

नीला ने मुस्करा कर पूछा—क्यों तुम्हारे 'हीरो' ने क्या कहा ?

नेपी के मुंह पर एक फीकी मुस्कान ही दीख पड़ी। हीरो शब्द सुनकर विदेशी सैनक आकर्षित हुए। हेरेल्ड बोला, नाटक के हीरो ने वास्तव में बहुत अच्छा अभिनय किया है।

नीला हंस कर बोली—हां, वे एक अच्छे अभिनेता हैं परन्तु मैं नृपेन के हीरो की चर्चा कर रही थी। वह विदेशी सैनिकों को कनाई का परिचय देने का लोभ संवरण न कर सकी। नृपेन अभी जिनके साथ वर्तालाप कर रहा था, उन्हें आपने देखा है ? मीटिंग के समय वे स्टेज पर ही थे—वे ही नृपेन के हीरो हैं।

—वे अवश्य कोई विशिष्ट व्यक्ति हैं ?

—आप के साथ भेंट करवा दूंगी—उनमें आप को हमारी नवीन जाति का परिचय मिलेगा।

—हमें बड़ी प्रसन्नता होगी मिस सेन !

नेपी ने नीला का हाथ पकड़ कर दबाया। नीला ने उसकी ओर देखा तो उसने धीरे से कहा उंहुं। ना का उच्चारण करने में उसे संकोच हुआ। अंग्रेजी 'नो' के साथ उसकी समता है, कहीं सैनक भी न समझ लें।

यवनिका उठी और नाटक फिर होने लगा। नीला विस्मित होकर भी चुप रह गई। वह समझ गई कि नेपी जो कुछ

कहना चाहता है वह इन विदेशियों के सामने बंगला में भी नहीं कह सकता। अपनी उत्सुकता को दबाकर उसने अभिनय देखने में मन लगाने की चेष्टा की परन्तु यह प्रश्न उठता ही रहा कि कनाई ने क्या कहा है ?

अभिनय के बीच में नेपी ने दबे गले से कहा, कनाई दा इन्हें टामी कहते थे।

नीला की भौंहें कमान हो गईं।

नेपी बोला—तुम भेंट न करवाना।

—हुं

—मैंने भेंट कराने के लिए कहा था, वे बोले, रहने दो !

—हुं। कनाई की अभद्र मनोवृत्ति का परिचय पाकर नीला का अन्तर क्षुब्ध हो गया। कनाई को कम से कम मिल तो लेना ही चाहिए था। साधारण नमस्कार भी क्या वह न कर सकता था ? मनुष्य के साथ मनुष्य के परिचय की भी उपेक्षा करना निम्न श्रेणी के दांभिकों जैसी अभद्रता है ! कनाई ने दंभ का यह मूलधन कहां से प्राप्त कर लिया ?

द्वितीय अंक समाप्त होते ही नीला की इच्छा हुई कि वह कनाई के पास जाय और उस की दांभिकता का उत्तर दे आये।

परन्तु कनाई इसी समय बाहर चला गया। नेपी बोला—कानूदा चले गये !

नीला ने कोई उत्तर न दिया। अवज्ञा करने के प्रयास में ही वह अन्यमनस्क हो गई। नेपी बोला—कनाई दा को नाटक अच्छा

नहीं लगा। मैंने पूछा था, नाटक अच्छा है, उन्होंने हंस कर उत्तर दिया—पता नहीं।

नीला का अन्तर जल उठा। कनाई ने किस अहंकार से नेपी की अवगणना की? कुछ क्षण के बाद वह उठी। विदेशी सैनिकों से हंस कर बोली, मैं अभी आती हूं, पांच मिनट में, और कोरीडर में आ गई।

कनाई रेस्तरां के सामने खड़ा था, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो। इसी समय रेस्तरां का एक लड़का प्रेक्षागृह से खाली ट्रे ले कर निकला। कनाई हीरेन की ही प्रतीक्षा में था। हीरेन कनाई को देखे बिना ही जा रहा था—पांच कटलेट—चार चप। जल्दी!

कनाई ने उसका हाथ पकड़ कर बुलाया—हीरेन!

हीरेन ने चौंक कर देखा, क्षण भर के लिए वह स्तम्भित हो गया। फिर उसकी आंखें हिंसक पशु की भांति जल उठीं। उसने हाथ की खाली ट्रे फेंक दी, क्षिप्रगति से जेब में हाथ डाल कर चाकू निकाली और दांतों से उसे खोल कर कनाई पर झपटा। नीला आतंक से अभिभूत हो गई, उसके गले से पतली आवाज तक न निकली। कोरिडर में जो लोग खड़े थे वे हां हां करने लगे। कनाई चाकू देख कर ही प्रस्तुत हो गया था। उसने हीरेन का हाथ पकड़ लेने की चेष्टा की, पकड़ भी लिया, फिर भी बाएं हाथ की कब्जी पर छुरी से चोट लग गई। स्नेह के साथ उसने पुकारा हीरेन—हीरेन! सुन-सुन!

हीरेन ने न सुना, एक झटके के साथ अपना हाथ छुड़ा कर वह थियेटर के बाहर भाग गया। कनाई ने उसका अनुसरण किया और पुकारा—हीरेन! हीरेन!

लोग कनाई को रोकने लगे, उसके पीछे न जाइये, न जाइये! नीला का यह उद्विग्न आवाहन भी कनाई ने सुना—कनाई बाबू! साथ ही साथ नेपी ने भी पुकारा कानूदा! कानूदा! ठीक इसी समय मानो सम्पूर्ण नगर की अन्तरात्मा मर्मभेदी आतंक के भयार्त स्वर से चन्द्रालोकित शीत के कुहेलिका-रहस्य-घन आकाश को चीर कर चीखी—ऊं, ऊं, ऊं!

साइरन! साइरन बज रहा है। कनाई चौंक कर रुक गया। नेपी ने आकर उसका हाथ पकड़ा और बोला, आगे न जाइये, लौट चलिए।

कनाई की एंडी से चोटी तक उत्तेजना की एक लहर दौड़ रही है, साइरन बज रहा है। फिर भी उसने पूछा, नेपी साइरन बज रहा है?

—हां, लौट चलिए।

—चलो।

—वह लड़का कौन था, कानूदा?

—गीता को देखा है न? वह गीता का भाई था। नेपी ने गीता को देखा है, उस दिन सामान्य परिचय भी हुआ है। उसके कान में यह भनक भी पड़ी है कि गीता पर कोई बड़ी विपत्ति आई थी, कनाई ने उसका उद्धार किया है।

थियेटर में पहुंचते ही नीला ने निस्संकोच भाव से कनाई का हाथ अपने हाथ में ले लिया और पूछा चोट बहुत लगी है ?

कनाई ने हाथ फैला कर दिखाया, स्वयं भी पहली बार ही देखा और हंस कर बोला जरा सी खाल कट गई है। कोरिडर दर्शकों के कलरव से पूर्ण है। साइरन अब तक एक अशुभ क्रंदन-कातर स्वर में रुक रुक कर बज रहा है। कुछ दर्शकों के साथ जेम्स और हेरेल्ड भी बाहर आगए हैं। उनका श्वेत मुख उत्तेजना के रक्तोच्छ्वास से भर गया है। उन्होंने नीला से कोरिडर में पड़ी बेंच पर बैठने का अनुरोध किया। कनाई भी बोला, आप बैठ जांय।

नीला उद्विग्न होकर बोली, हाथ तो आप को धो लेना चाहिए।

कनाई ने संक्षिप्त उत्तर दिया—कोई आवश्यकता नहीं।

घटना का गुरुत्व साइरन की ध्वनि से उत्पन्न उद्वेग और आतंक में दब गया है। नीला के पास कुछ और महिलाएं बैठी हैं, उनमें से एक कांप रही है। एक लड़की के चेहरे का रंग उड़ गया है, वह पुतली की तरह बैठी है। एक प्रौढ़ा सम्भवतः इष्टमंत्र का जप कर रही है। एक लड़की गोद में एक नया शाल लिए है, उस पर एक नई माला रखी है। शाल आज ही नाटककार को उपहार में मिला है। लड़की शायद नाटककार की कोई आत्मीय है। अन्दर अभी अभिनय हो रहा है। कनाई सड़क की ओर आकर खड़ा हुआ।

नीला ने नेपी से दबी आवाज़ में पूछा, कनाई बाबू उस लड़के को पहचानते हैं ? तू जानता है, कौन है ?

—वह गीता का भाई है।

—गीता का भाई ? गीता कौन है ?

—ओह, तुम शायद नहीं जानतीं ? गीता एक लड़की है। कनाईदा ने उसे विपत्ति से बचाया है और विजयदा के यहां लाकर रखा है।

—विपत्ति से बचाया है ? बिजयदा के यहां रखा है ?

—हां, कनाईदा भी अब वहीं रहते हैं। अपने घर से चले आये हैं।

—चले आये हैं ?

—हां, सब सम्बन्ध तोड़ आये हैं।

—गीता के लिए ?

नेपी ने अपनी दीदी के मुंह की ओर देखा और बोला—यह मैं नहीं जानता। क्षण भर बाद उसने पूछा, तुम क्या बहुत 'नर्वस' हो गई हो ?

नीला ने भौंहें तिरछी कीं, नेपी की ओर देखा और बोली, क्यों 'नर्वस' क्यों होने लगी ? उसका कण्ठस्वर तीक्ष्ण हो गया।

अभिनय समाप्त हो गया। प्रेक्षागृह का द्वार खुल गया, कोरिडर उत्कण्ठित जनता से भर गया।

कनाई बाहर वाले फाटक के मुख पर खड़ा है। सामने जन

शून्य चन्द्रालोकित राजपथ है। ऊपर हिमवाष्प कुहरे की भांति जम गई है, उस पर शुक्ल पक्ष की धुली हुई चांदनी पड़ रही है। सड़क के दोनों किनारों पर रिक्शाओं, घोड़ागाड़ियों, टैक्सियों और मोटरों की पंक्ति है। उनमें रोशनी नहीं जलती। चन्द्रालोक में वे निशब्द खड़ी हैं।

सड़क से एक पुलिस लारी निकली। दो महिलाओं के साथ एक भले आदमी भीड़ से बाहर आये। उनके पीछे एक और सज्जन हैं, वे कह रहे हैं—हमारी मोटर है, हम चले जांयगे। थियेटर के अधिकारियों में से किसी ने बताया, गाड़ी चलाने का हुक्म नहीं है, आप बाहर न जांय। बाहर निकलने के लिए उत्कण्ठित दर्शकों का एक समूह और आगे आया। साथ ही साथ बाहर ए० आर० पी० की सीटी भी बजी। ए० आर० पी० के और पुलिस के जवान वरदी पहने, सिर पर लोहे के हेलमेट लगाये आये और मार्ग रोक कर खड़े हो गये।

कनाई सोच रहा था—जेम्स और हेरेल्ड की ओर देख कर ही सोच रहा था। आज शायद जापानी बम वर्षकों का हिंसक दल बंगाल के ज्योत्स्ना पुलकित आकाश पर हिंसक आक्रमण करने आ ही गया है। उन्हें भगाने के लिये जो दौड़ेंगे और आकाश में युद्ध करेंगे वे इन्हीं जेम्स और हेरेल्ड की जाति के लोग हैं परन्तु यह काम करने का वास्तविक अधिकार मुझे—हमें—चालीस कोटि मानवों की वासभूमि भारत के लाखों स्वस्थ, सबल और बुद्धिमान युवकों को है। उसे याद आया, लंदन में ट्यूब

स्टेशन के आश्रयस्थल में बैठी एक वृद्धा ने कहा था—"This night our lads are giving the Nazis a hot chase."

कनाई ने एक लम्बी सांस छोड़ी, यदि ऐसा होता तो आज मेरे बदन पर भी जेम्स और हेरैल्ड की भांति फौजी वरदी होती और उस पर वायु सेना का संकेतिक चिह्न लगा होता। इन्हीं की भांति उत्तेजना के रक्तोच्छ्वास से मेरा मुंह भी भर जाता—उस मुख की ओर देख कर नीला विस्मित हो जाती है। 'आलक्लियर' की संकेत ध्वनि के साथ एक मीठी मुस्कान के साथ नीला का हाथ दबा कर कहता, मैं चला। नीला के कंपित अधरों पर यह प्रश्न अटक जाता कि—कहां? मैं स्वयं ही कहता—To give them a hot chase—यहां उनका पता न चलेगा तो सीमान्त के एरोड्राम जाऊंगा, वहां से नया वायुयान लेकर उनके इलाके में पहुंचूंगा और इसका बदला दे आऊंगा—दे आऊंगा। नीला का मुख आकाश के नीलाभ तारे की भांति दमकता, साथ ही साथ आंखें सजल हो जातीं।

नीला ने प्रायः अकस्मात् ही पूछा—गीता को तू ने देखा है नेपी ?

नीला के पूर्ववर्ती उत्तर के तीक्ष्ण स्वर से नेपी कुछ शंकित हो गया था, अपनी दीदी के ऐसे स्वर से वह डर जाता है। नीला इस स्वर में बहुत कम बोलती है परन्तु जब बोलती है तब घर भर शंकित हो जाता है; वह नीला भी बिल्कुल बदल जाती है, काली लड़की विद्युत शिखा की भांति ज्वालामयी बन जाती है।

नेपी ने शंकित स्वर में अनजान की भांति मुस्करा कर कहा—देखा है, बड़ी अच्छी लड़की है दीदी !

नीला ने तीक्ष्ण दृष्टि से नेपी की ओर देखा फिर दृष्टि फिर। ली। उसके ओठों पर व्यङ्ग-वक्र और तीखी मुस्कान आई। बड़ी अच्छी लड़की है। शांत शिष्ट ! उसे विपत्ति से बचाया है और अपना घर भी छोड़ दिया है और भाई बहन का उद्धार करने वाले को छुरी मार रहा था ! खूब !

—लड़की पर क्या विपत्ति आई थी रे ?

कुछ सोच कर और मनमें अनुमान लगा कर नेपी बोला, उसके मां–बाप शायद रुपये लेकर किसी बूढ़े के साथ-

—व्याह कर रहे थे। नेपी की बात नीला ने पूरी की—बंगाल का चरमतम रोमांस !

दुम दुम–! दूर से विस्फोरण की ध्वनि आई। जनता का गुंजन, गवेषणा, हास, परिहास और कलरव क्षण भर में स्तब्ध हो गया। नीला भी चौंकी। नेपी ने भी उसकी ओर देखा। जेम्स और हेरेल्ड नीला के निकट आकर खड़े हो गये। जिज्ञासापूर्ण दृष्टि के साथ उनसे पूछा—यह आवाज कैसी है ?

जेम्स बोला, शायद 'एण्टी–एयर-क्राफ्ट' से गोली चल रही है।

क्षणिक स्तब्धता के बाद जनता फिर मुखर हो गई।

—बम गिरे क्या ?

—सुनते नहीं !

—चलो, वह तो स्टेज पर हथौड़ी पीट रहे हैं। बम कहीं ऐसे फटते हैं !

कनाई स्थिर खड़ा था। बम? उसे भी विश्वास न हुआ। जब साइरन बजा है तब बम गिरना भी अस्वाभाविक नहीं परन्तु विस्फोट की ध्वनि का जो भयंकर रूप कल्पना में है उसके साथ यह ध्वनि तो नहीं मिलती। मीलों तक भूमि में कंपन का प्रवाह दौड़ेगा, यहां तो भूमि नहीं कांपी। वायुमण्डल में वेगवान् आंधी उत्पन्न होगी, उसकी लपेट में बड़े-बड़े भवन तास के पत्तों की तरह उड़ जायंगे। परन्तु यहां तो उसके क्षीणतम स्पर्श का भी आभास नहीं मिला।

फिर कुछ शब्द सुन पड़े। जनता की उत्कण्ठा भी बढ़ गई। सांस रुद्ध-सी होने लगी। बाहर सड़क पर ए० आर० पी० की सीटी बज रही है।

चाय के स्टाल पर बेहद भीड़ है परन्तु कोलाहल का नाम तक नहीं है। लोग चुपचाप चाय पी रहे हैं। एक आदमी स्टाल से बाहर निकल कर बोला—पेट में चाकू मारने से मर जायगा नहीं तो साले का पेट साफ़ कर देता। ऐसा बेहया और बदजात आदमी तो मैंने देखा नहीं! स्टाल वाले का मुख परितृप्ति की हंसी से खिल रहा है। उसकी दुकान के इतिहास में ऐसी बिक्री कभी नहीं हुई।

अकस्मात् एक व्यक्ति चिल्लाया—मैं जाऊंगा—मैं जाऊंगा!

मित्रों ने उसे रोका—पागल हो गये हो?

वह पागल नहीं तो पागल जैसा अवश्य था, झटके के साथ अपने आपको छुड़ाकर बाहर निकल गया—मेरा लड़का बीमार

है—कहीं डर के मारे ही—बात पूरी करने के पहले ही वह दूर चला गया।

राकेट जैसी कोई चीज आकाश में उठ रही है, फट रही है और फुलझड़ी की तरह झड़ रही है। जेम्स बोला—'एयर रेड स्टिल गोइंग आन'।

नीला ने कोई उत्तर न दिया। स्तब्ध बैठी रही। नेपी शंकित हो गया। कनाई ने निकट आकर मृदु स्वर में पूछा—बैठी हैं ?

नीला चुप ही रही।

कनाई फिर बोला—एक नया अनुभव हो रहा है।

नीला के मुख पर फिर व्यङ्ग-वक्र मुस्कान आई।

साइरन फिर बजा। एक ही लम्बे और समान स्वर से आश्वास की स्वतोच्चारित ध्वनि जैसी मोद ध्वनि हुई। 'आल-क्लीयर !' विपत्ति गई, मृत्यु को गर्भ में लेकर आने वाले शत्रु के बमवर्षक हवा हो गये।

कनाई ने घड़ी देखी—सवा बारह बजे हैं। साइरन दस बज कर सत्रह मिनट पर बजा था।

चारों ओर कलरव आरम्भ हो गया—आश्वास और उल्लास का कलरव—आल-क्लीयर ! बच गये ! जनता टूटे बांध के जल स्रोत की भांति निकलने लगी। नीला नेपी का हाथ पकड़ कर खड़ी हो गई। जेम्स और हेरेल्ड ने इतनी देर बाद कहा, भगवान्

का धन्यवाद ! हम आपसे क्षमा चाहते हैं मिस सेन, हमारे ही लिए आपको ऐसे संकट में घर से अलग रहकर और भी अधिक उद्वेग सहना पड़ा है।

नीला ने पीले मुख पर हंसी लाकर कहा, ऐसा न कहें। आप तो हमारे ही अतिथि हैं। परन्तु अब मैं विदा चाहती हूँ।

—नहीं, नहीं। हम आपको घर पहुंचा कर जायंगे।

—कोई आवश्यकता नहीं। आपको असुविधा होगी। ५-७ मिनट में मैं घर पहुंच जाऊंगी। नेपी साथ है। नीला की बातों में भद्रता का अभाव न था परन्तु अनिच्छा जैसी कोई और वस्तु भी थी जिसका उलंघन करना विदेशियों के लिए संभव न हो सका। अभिवादन करने के बाद वे चले गये।

लोग रिक्शाओं, मोटरों और टैक्सियों पर बैठ रहे हैं और वे गतिवान् हो रही हैं। लोग पैसे भी नहीं पूछते, बैठते हैं और कहते हैं चलो ! बहुत से लोग पैदल जा रहे हैं। छोटे बच्चे को पिता ने गोद में ले लिया है, उससे छोटा मां की गोद में है। अपेक्षाकृत बड़ा जाड़े में ठिठुरता हुआ चल रहा है। कुछ ट्राम की प्रतीक्षा में खड़े हैं। जो ट्रामें रास्ते में ही रुक गई हैं, वे आयेंगी।

कनाई को आफिस जाना है परन्तु इसके पहले वह नीला और नेपी को घर तक छोड़ आना चाहता है। जेम्स और हेरैल्ड को उसने जाते देखा है। वह बढ़ा।

नीला ने नेपी से कहा, चलो।

कनाई बोला, ठहरो मैं भी चलता हूं, आपको पहुंचा कर—

नीला घूम कर खड़ी हो गई, ज्योत्स्ना के प्रकाश में उसके मुख पर वही व्यङ्ग से वक्र और तीखी हंसी स्पष्ट दीख पड़ी। तीक्ष्ण कण्ठ स्वर में हास्य को पुटि देकर वह बोली, नहीं कनाई बाबू, हम किसी विपत्ति में न पड़ेंगे—उद्धार करने की आवश्यकता न होगी। आप जहां जाना चाहते हैं, चले जांय।

कनाई को जान पड़ा कि नीला का तीक्ष्ण कण्ठस्वर उसके मर्म-स्थल पर चाबुक की भांति आघात कर रहा है। एक कठोर उत्तर उसके ओठों तक आया परन्तु उसने आत्मसंवरण किया। मृदु मुस्कान के साथ उसने नमस्कार किया और बोला, अच्छा फिर मैं जा रहा हूं!

—अठारह—

दूसरे दिन २१ दिसम्बर को कनाई सवेरे आफिस से लौट रहा था। कल रात का साइरन निराधार आशंका का संकेत न था। जापानी बमवर्षक वास्तव में आये थे, कलकत्ते के एक उपनगर में कुछ बम भी फेंक गये हैं। सैनिक विभाग ने रात को ही विज्ञप्ति प्रकाशित कर दी थी। सरकारी प्रचार विभाग की ओर से उसकी कापी समाचार पत्रों को भी भेजी गई थी। कनाई ने ही उस विज्ञप्ति का अनुवाद किया है।

राजपथ पर जनता का आवागमन अभी आरम्भ नहीं हुआ, जीवन के चक्र में कर्म शक्ति का प्रवाह पूर्णोद्यम से संचारित

नहीं हुआ। सड़क के अधिकांश स्थल जल-शून्य हैं, सदा की भांति रेस्तारेंटों के सामने और चौराहों पर ही आदमी दीख पड़ते हैं। परन्तु आज उत्तेजना के चिह्न भी मिल रहे हैं। समाचार पत्रों के हाकर दौड़ रहे हैं और ऊंचे एवं उत्तेजित स्वर में चिल्ला रहे हैं...बम! बम! कलकत्ते में जापानी बम गिरे!

सरकारी विज्ञप्तियों में उस स्थान का उल्लेख नहीं किया गया जहां बम गिरे हैं, समाचार पत्रों में भी नहीं है। जनता स्थान का निर्णय करने के लिए उत्तेजित गवेषणा कर रही है। ट्राम में भी यही चर्चा है। कोई उत्तर में बताता है, तो कोई दक्षिण में। एक सज्जन बोले, मुझे निश्चित रूप से पता चला है कि पश्चिम और दक्षिण के कोने में बम गिरे हैं। उस क्षेत्र का चिह्न तक मिट गया है, बड़े बड़े तालाब बन गये हैं—एक कुली का शव मिला है, उस का चमड़ा तक उड़ गया है।

कनाई मन में हंसा। उसे जो समाचार मिला है उसके अनुसार पश्चिम और दक्षिण का कोना ठीक है, शेष विवरण अफवाह से अधिक महत्व नहीं रखता।

वे सज्जन कह रहे थे—रविवार को आरम्भ हुआ है, यह उन के आक्रमण का निश्चित दिन है। इस बार देखियेगा रविवार बीतने के पहले ही साइरन बोलेगा। कहीं सवेरे सूर्योदय के समय आक्रमण न हो जाय।

कनाई ने प्रतिवाद करना चाहा परन्तु चुप रह गया। ट्राम केशवसेन स्ट्रीट के मोड़ पर पहुंची। कनाई की आंखों में नीला का

चित्र आ गया। रात की घटना भी याद आई। उसने सोचा, नीला ने क्या मेरे मन की विरक्ति भांप ली थी? इस बात के स्मरण से वह फिर विरक्त हो गया कि नीला विदेशी सैनिकों के साथ अभिनय देखने आई थी। नीला के चित्त को इतना तरल स्वीकार करने में उसे कष्ट हुआ। जाति धर्म और धन मान का वैषम्य यदि संसार से मिट जाय और नया राष्ट्रधर्म प्रचलित हो जाय तो भी काले और गोरे का वर्ण वैषम्य तो रहेगा। अरी काली लड़की, कालों के साथ रहने में ही तेरा कल्याण है। कौव्वे और मोर पंख की कहानी क्या तूने नहीं पढ़ी? काले गोरे का विवाह भी विरल नहीं है, नया विधान मानने वाले मानव समाज में इसका प्रचलन और भी अधिक होगा परन्तु सुन्दर रूप का अनुराग तो न मिट जायगा। उन विदेशियों का अनुराग सत्य भी हो सकता है परन्तु सामयिक मोह निकलने की संभावना ही अधिक है। इसका प्रमाण तुम्हारी जैसी शिक्षिता तरुणी को देने की आवश्यकता नहीं है, यदि आवश्यकता हो तो प्रमाण दे देने पर भी तुम्हारी आंखें न खुलेंगी। तुम कहती हो, हमारे ऊपर विपत्ति न आयेगी परन्तु विपत्ति तो आगई है, तुम उसे देखती नहीं। गाड़ी विवेकानन्द रोड के मोड़ पर खड़ी हुई, कनाई उतर पड़ा।

सड़कों पर भीड़ बढ़ गई है। बम वर्षा की आलोचना प्रबल से प्रबलतर हो गई है। ऐसा जान पड़ता है कि लोग प्रचण्ड बम वर्षा का समाचार सुनने के लिए उद्ग्रीव हो रहे हैं।

मनुष्य वर्तमान से सदा असन्तुष्ट रहता है। वर्तमान को जब

तक मिटा न दिया जाय तब तक भविष्य नहीं आता। भविष्य में ही जीवन की स्वप्न राज्य जैसी कल्पना रूप ग्रहण करती है। परन्तु भविष्य जब आता है—वर्तमान बनता है तब पुरानी कल्पना स्वप्न की भांति अलीक हो जाती है। मनुष्य ने समाज व्यवस्था में जो परिवर्तन चाहा है; वह काल के निष्ठुर पदक्षेप से भी कठोर निकला है। कनाई ने लम्बी सांस भी ली और मुस्कराया भी। सुखमय चक्रवर्ती के पुराने भवन को पहले ही धूलिसात् हो जाना चाहिए था, बड़े-बड़े भूकम्प आये हैं, थोड़े दिन हुए एक प्रबल तूफान भी गुजर गया है फिर भी वह भवन नहीं गिरा। काल उसे तोड़ नहीं पाया परन्तु मारवाड़ी महाजन की डिगरी तोड़ देगी—पुराना भवन टूटेगा, उसके स्थान पर नया बनेगा परन्तु वह सुखमय चक्रवर्ती के भवन का रूपान्तर ही होगा।

रास्ते में हाकर चिल्ला रहे हैं: कलकत्ते में बम गिरे—कलकत्ते में बम! एक लड़का कनाई के सामने 'स्वाधीनता' लेकर खड़ा हो गया। कनाई मुस्कराया। वह बोला—बाबू अखबार। कलकत्ते में बम पड़े हैं। 'स्वाधीनता' ने पूरी खबर दी है।

कनाई बोला, हलवाई मिठाई नहीं खाते।

लड़का अवाक हो गया। कनाई गली में घुसा।

घर पहुच कर कनाई हैरान हो गया। देखा, विजय बाबू डेक चेयर पर बैठे हैं, उनके सामने तख्त पर नीला बैठी है, बगल में एक सूटकेस रखा है, नीला का एक हाथ उसके हुक पर है। जैसे

यह सूटकेस लेकर वह अभी आई है। तख्त के एक किनारे पर नेपी जमा है। गीता प्यालों में चाय डाल रही है।

विजय बाबू ने हंस कर पूछा, क्या हाल है? सचमुच शेर आया था?

कनाई हंसा—मुझे तुम मिथ्यावादी कनाई ग्वाला समझते हो?

—नहीं नहीं, बैठ, चाय पी ले। गीता, हंसी भाई, पहले अपने कनाई दा को चाय दो। हम तो बमवर्षा के बाद भी सोये हैं, इस की सारी रात बम् बम् करते करते कटी है। कल शायद झपकी भी नहीं ले पाया?

—नहीं!

—अच्छा, चाय पीकर तुम श्रीमान् नेपी का उद्धार करो।

क्यों? नेपी को क्या हुआ?

—जन सेवा समिति का सदस्य ठहरा बिचारा, जनता की सेवा करने के लिए व्याकुल हो रहा है। बम पीड़ित क्षेत्र में जायगा और तुम को साथ ले जायगा, इसी लिए बैठा है।

नीला अकस्मात् सूटकेस उठाकर खड़ी हो गई—मैं चली विजयदा।

—कहां? विजय बाबू व्यस्त हो गये।

—किसी होटल में व्यवस्था कर लूंगी।

—अरे, होटल तो मैं ही खोलूंगा। तुम व्यस्त क्यों होती हो?

—नहीं।

—नहीं क्या, मैं जो कहता हूं वह सुनो। बैठो, चाय पी लो।

आज यहीं से दफ्तर चली जाओ। शाम को लौट कर देखना, होटल का पक्का बंदोबस्त न मिले तो जो जी में आवे वह करना। घण्टे भर में मैं दूसरा घर ढूंढ़ लूंगा। तीन-तीन बिना बुलाये गाहक मिले हैं, होटल न खोलूंगा—मैं तो घर छोड़ने वालों का अड्डा बनाऊंगा। देखो तो कैसा बन्दोबस्त करता हूं।

नीला हंस कर बोली—अच्छी बात है। आप होटल खोलें, मैं "ओपनिंग" के दिन ही आ जाऊंगी। आज जाने दें। सूटकेस लेकर वह बाहर चली गई।

—नीला! नीला! विजय बाबू ने भी कुरसी छोड़ दी।

कनाई विस्मय के साथ देखता रहा। इच्छा होते हुए भी कुछ पूंछना उसने उचित न समझा। विजय बाबू बाहर चले गये। कनाई ने नेपी की ओर देखा। नेपी ने फीकी हंसी के साथ कहा—दीदी घर से चली आई हैं।

कनाई ने नेपी के शब्दों को ही प्रश्न के स्वर में दुहराया—घर से चली आई हैं?

—बाबा के साथ—नेपी कहते-कहते रुक गया। कनाई भी चुप हो गया।

प्रसंग पलट कर नेपी ने कहा, सुना है राधिकापुर में आबादी पर बम गिरे हैं। वहां जाना चाहिए कानूदा।

कनाई नीला की चिन्ता में था। वह घर छोड़ कर चली आई है। पिता के साथ—क्या हुआ है पिता के साथ? झगड़ा! क्यों? शायद क्यों निश्चित रूप से उन्होंने विदेशी सैनिकों के साथ

घनिष्ठता रखने पर डांटा है। नीला नौकरी करती है—समर्थ आधुनिका है, वह क्यों सहने लगी ? कनाई के मुंह पर तीखी मुस्कान दीख पड़ी।

बात भी यही है। साइरन बजा तो देवप्रसाद नीला और नेपी के लिए उद्विग्न हो गये। अस्थिर होकर कमरे में घूमने लगे। कई बार जी चाहा कि थियेटर तक दौड़ जांय। 'आलक्लियर' का संकेत होते ही वे थियेटर पहुंचे। घर से थियेटर दूर भी न था। भीड़ में ढूंढ़ते ढूंढ़ते उन्होंने देखा, नीला जेम्स और हेरेल्ड के साथ हंस कर विदा ले रही है। जेम्स और हेरेल्ड अभिवादन कर रहे हैं। वे स्तम्भित हो गये। अपने अस्तित्व को छिपा कर वे दोनों के पीछे पीछे चले। घर के दरवाजे पर पहुंच कर पुत्र और कन्या के सामने खड़े हो गये। नीला उन्हें देख कर विस्मित हुई, पूछा बाबा ?

देवप्रसाद स्थिर दृष्टि से कन्या की ओर देखते रहे।

नीला के मन में किसी अन्यान्य के स्पर्श से संचारित दुर्बलता न थी। वह निस्संकोच स्वर में बोली—आप भी बाहर ही रह गये थे क्या ?

देवप्रसाद ने कुण्डा खड़का कर कहा—दरवाजा खोलो !

अब नीला को देवप्रसाद के मन की अव्यक्त विरक्ति का आभास मिला। नेपी ने और भी स्पष्ट रूप से इसका अनुभव किया, वह पिता की इस मुद्रा से अच्छी तरह परिचित है। देवप्रसाद की इच्छा और आदेश की सीमा लांघ कर वह चुपचाप

अपने चुने हुए मार्ग पर चलता है। कभी कभी देवप्रसाद उसकी राह रोक कर खड़े हो जाते हैं, तब उनकी आंखों में यही दृष्टि दीख पड़ती है। नीला का हाथ छू कर नेपी ने संकेत से सावधान करने का प्रयास किया परन्तु नीला समझ न सकी, समझने की चेष्टा भी उसने न की। पिता के आन्तरिक उत्ताप की जो झलक उसे मिली उससे वह भी कुछ गरम हो गई। ठीक इसी समय मां ने द्वार खोल दिया। नीला और नेपी को देखकर वे बोलीं—धन्य है बेटी! अच्छी लड़की हो तुम! गम्भीर उत्कण्ठा से उनके अन्तर में जो विरक्ति उठी थी वह शब्दों में भी आगई।

नीला गरम हो ही गई थी, मां के शब्दों ने उसे और उकसाया, वह बोली, क्यों मां?

—इतनी रात बीत गई—अब तक तुम—

नीला ने बात काटी—मुझे क्या मालुम था कि साइरन बज जायगा—मैं तो दस बजे तक लौट आने वाली थी। कोई बुरी बात तो मैंने की नहीं!

—बुरी बात नहीं की? देवप्रसाद ज्वालामुखी की भांति फटे। घर के बाहर वे अपने को किसी तरह संभाले थे। अब क्रोध भरे स्वर में गर्जन-सा करते हुए बोले—बुरी बात नहीं की?

नीला स्तम्भित हो गई; पिता का रूप देख कर और कण्ठस्वर सुनकर क्षण भर के लिए वह हतवाक् रह गई, उनका यह रूप उसके लिए सर्वथा नवीन था।

अपनी छाती पर हाथ रख कर कह सकती हो कि तुमने अन्याय नहीं किया?

अभिमान से नीला के दोनों ओंठ थर-थर कांपने लगे। उत्तर में वह दृढ़ स्वर से कहना चाहती थी, नहीं, परन्तु इतना छोटा शब्द भी उसके मुंह से न निकला।

—वे दोनों योरोपियन सोल्जर कौन थे? उनसे तुम्हें क्या काम था? थियेटर में—क्रोध और क्षोभ से देवप्रसाद का कण्ठ रुद्ध हो गया, बात भी पूरी न हो सकी।

नीला को जान पड़ा कि पैरों के नीचे की पृथ्वी घूम रही है और इस क्रुद्ध आरोप के अन्तराल से एक जघन्य कुत्सा का कुत्सित मुख वीभत्स हास्य कर रहा है।

—उच्छृंखल—टामी—

—नहीं। टामी का जो अर्थ हम समझते हैं, वे वैसे नहीं हैं। वे आक्सफोर्ड के विद्यार्थी हैं, अपने आदर्श के लिए सैनिक हो कर आये है। नीला ने दृढ़ कण्ठ से प्रतिवाद किया।

—होंगे आक्सफोर्ड के विद्यार्थी। विदेशी हैं उनका तुम्हारा साथ कैसा?

पिता के मुख की ओर स्थिर दृष्टि से देखती हुई नीला बोली, वे हमारे मित्र हैं। हमारे ही निमन्त्रण पर हमारे देश का नाटक देखने आये थे!

देवप्रसाद स्तम्भित हो गये। नीला—उनके असीम स्नेह की पात्री नीला! जिसमें वे अपने जीवनादर्श की भावी महनीय मूर्ति देखने की निरन्तर प्रत्याशा करते थे वह यही है? उनके मन में प्रश्न उठा, यही मेरे जीवनादर्श का भावी रूप है? उनका तन-मन कांपने लगा।

नीला की मां अब तक अवाक् होकर सुन रहीं थीं, विदेशी सैनिकों के साथ कन्या की मित्रता का उल्लेख और नीला के मुख की स्वीकारोक्ति सुन कर वे चुप न रह सकीं, छि, छि, छिः ! मेरा भाग्य !

नीला बोली—पिता होकर भी आपने मेरा आज घोर अपमान किया है ।

देवप्रसाद बोले—कल तू नौकरी से 'रिजिग्नेशन' देगी ।

—'रिजिग्नेशन' ? क्यों ?

—मैं कहता हूं । तुम्हारे प्रति मेरा जो कर्तव्य है वह अब मैं अविलम्ब पूर्ण करूंगा—तुम्हारा विवाह होगा ।

धीर कण्ठ से नीला बोली—नहीं ।

—नहीं ? देवप्रसाद जैसे आतंकित स्वर में चीत्कार कर उठे ।

—नहीं । नीला उत्तर देकर दरवाजे की ओर बढ़ी ।

मां चिल्लाई—नीला !

—मैं जा रही हूं ! अब तुम्हारे साथ रहना असम्भव है ।

देवप्रसाद बोले, मैं मना करता हूं, तुम न जाओ । फिर भी तुम जाना चाहो तो रात में नहीं, सवेरे जाना ।

नीला कुछ सोच कर लौटी ।

देवप्रसाद ने पुकारा—नेपी !

किसी ने उत्तर न दिया, नेपी घर में आया ही नहीं, बाहर ही रह गया था । देवप्रसाद ने बाहर निकल कर देखा, बरामदे में कोई नहीं, सड़क भी सूनी है । फिर भी उन्होंने पुकारा—नेपी !

नेपी अपने अभ्यास के अनुसार पहले ही खिसक गया है।

नीला रात भर सोई नहीं। अशान्त भाव से कमरे में घूमती रही। देवप्रसाद को भी नींद नहीं आई। नीला की मां अन्धेरे में रोती रहीं।

सवेरा होते ही नीला एक सूटकेस में कुछ कपड़े लेकर घर से निकली। सड़क पर पहुंच कर उसने सोचा, कहां चलूं? विजय बाबू का घर याद आया, सोचा, नेपी भी वहीं गया होगा। विजय बाबू का आश्रय सुरक्षित भी है। परन्तु कनाई ने गीता नाम की लड़की को भी वहीं लाकर रखा है। वहां मेरा जाना क्या ठीक होगा? बहुत कुछ सोचने के बाद नीला ने कम से कम एक दिन वहीं रहने का निश्चय किया। उसने सोचा, विजय बाबू का परामर्श भी मिल जायगा और यह भी देख लूंगी कि गीता कैसी है।

यहां आकर नीला ने विजय बाबू को सारी कहानी सुनाई।

विजय बाबू हंसकर बोले, हरि, हरि, मेरा भाग्य तो अकस्मात् खुल गया नीला! और कुछ लोग इसी तरह आ जांय तो मैं एक लम्बा-चौड़ा होटल खोल लूं।

विजय बाबू ही फिर बोले—मैं सोच रहा था कि श्रीमान् नेपी इतने सवेरे ही यहां कैसे आ गये हैं, और दरवाजे पर कुण्डली मारे क्यों पड़े हैं? पूछा तो पता चला कि जहां बम पड़े हैं श्रीमान् वहीं पधारेंगे। समय का अन्दाज नहीं हो पाया इसीलिए रात

को ही घर से निकल पड़े हैं और यहां आ कर सो रहे हैं। ओ रे रास्केल !

नेपी अप्रतिभ की भांति हंस रहा था।

विजय बाबू ने षष्ठी को बुलाकर कहा षष्ठीचरण, सेर भर गरम जलेबी ले आओ।' कहना पूरी तौले और चीज अच्छी हो लेकिन भाव में सेर भर के लिए दो आने से ज्यादा अधिक न देना। समझे? इसी समय गीता कमरे में आई। नीला ने उसे देखते ही अनुमान कर लिया। फिर भी पूछा—यह कौन है विजयदा ?

स्नेह के साथ हंसते हुए विजय बाबू ने कहा, यह ? यह मेरी हंसी भाई है। इसके साथ मेरा 'कण्ट्राक्ट' हुआ है कि हम दोनों एक दूसरे को देखते ही हंसेंगे।

सस्मित और सलज्ज हास्य के साथ गीता नीला की ओर देख रही थी नीला भी हंसी थी—करुणापूर्ण हंसी, जिस करुणा में सस्नेह अवज्ञा रहती है। स्नेह के आवरण में लिपटी इसी अवज्ञा से नीला ने गीता को देखा था—यही गीता है।

विजय बाबू ने कहा था, हंसीभाई, चाय बना लाओ ! देखो, दो आगन्तुक हाजिर हैं। नेपी को तो तुम जानती ही हो, तुम्हारा खुशीभाई है। और ये हैं नीला—श्रीमती नीला सेन, नेपी की दीदी।

गीता ने झट से नीला के पैर छू कर प्रणाम किया था। नीला ने चकित होकर पूछाथा—यह क्या ?

गीता सलज्ज मुस्कान के साथ बाहर चली गई थी।

विजय बाबू ने कहा था, बड़ी अच्छी लड़की है री !

—लड़की है कौन विजय दा ?

—बहुत दुःखी है। कनाई ने इसका उद्धार किया है।

—उद्धार किया है ?

—वह बहुत करुण इतिहास है

कनाई ने कमरे में प्रवेश किया और नीला चुप हो गई।

विजय बाबू भी नहीं लौटे, नीला भी नहीं आई। कनाई ने छज्जे पर निकल कर सड़क की ओर देखा, दोनों में से कोई भी न दीख पड़ा। मन में वह नीला पर ही बिगड़ा। यदि वह यहां रहना नहीं चाहती तो आई ही क्यों, विजयदा को चंचल करने की क्या आवश्यकता थी। और नीला ने जो मार्ग ग्रहण किया है, जब उन विदेशियों के मोह में ग्रस्त हो गई है और उन में से एक को जीतना चाहती है तब उसे उपयुक्त स्थान भी ढूंढ़ना होगा। वह स्थान विजय बाबू का यह संकीर्ण और टूटे पलस्तर वाला कमरा नहीं हो सकता—उसे प्रथम श्रेणी के किसी आधुनिक होटल में जाना चाहिए था। रूपमाधुर्यवर्जिता चित्रांगदा अर्जुन को जीतने के लिए जैसे वसन्त पुष्पित कानन के पट पर पुष्प धनु से लावण्य उधार लेकर खड़ी हुई थी, वैसे ही नीला को भी किसी फर्स्टक्लास होटल के सज्जित कमरे में बैठना होगा और प्रसाधनों से निपुणता के साथ मंडिता होकर उनका स्वागत करना पड़ेगा।

. नेपी ने बुलाया—कानूदा !

कनाई ने देखा, नेपी तख्त के उसी कोने में बैठा है। वह बोला—राधिकापुर न चलेंगे—समय न निकाल सकेंगे ?

नेपी भी विचित्र है। नीला चली गई है परन्तु इसमें उद्वेग का चिह्न तक नहीं आया। यह पूंछने की आवश्यकता भी इसने नहीं समझी कि कहां जा रही हो। विस्मय की बात है, इस सुकुमार तरुण वयस में ही इसने घर और संसार की माया-ममता को तिलांजलि देखर अपने आपको कर्म के उन्माद में कैसे विलुप्त कर लिया है। अपने आप में ही सम्पूर्ण और समृद्ध होकर फल जैसे बीज से अंकुर और अंकुर से पत्र-पल्लव-सघन वृक्ष बनने की कामना से वृन्त के बंधन से मुक्त होकर चू पड़ता है, नेपी भी इसी तरह घर छोड़ कर कर्म के पथ पर निकल पड़ा है और प्रत्येक पग पर उसका जीवन सार्थक रूप से विकसित हो रहा है। उसकी इस अनासक्ति में किसी के लिए विराग का एक विन्दु भी नहीं है। कनाई ने सोचा, और मैं परिवार के प्रति तीव्र विराग से भर कर उसे छोड़ आया हूं। नेपी और मुझ में यही भेद है।

नेपी ने फिर बुलाया—कानूदा !

कनाई रात भर जागा है, उसका शरीर क्लान्ति और अवसाद से अवसन्न हो रहा है। फिर भी वह नेपी के आह्वान को टाल न सका। बोला, हां, अवश्य चलूंगा।

—तो फिर देर क्यों करते हैं ?

—विजयदा और तुम्हारी दीदी लौट आवें ?

—वह विजयदा सब ठीक कर लेंगे। देर हो गई तो फिर हम वहां काम क्या करेंगे ?

कनाई मुस्कराया—अच्छा पांच मिनट ठहरो, मैं स्नान कर लूं।

स्नान से निवृत्त होकर कनाई बोला, चलो। नेपी बोला, कुछ और ठहरना पड़ेगा, गीता खाना बना रही है।

—अभी तो चाय के साथ जलेबियां खाई हैं।

—गीता दोपहर के लिए बना रही है। रसोंई से गीता बोली, मैं बना चुकी कानूदा ! अभी लाई !

कनाई गीता की चिन्ता में उलझ गया। यह म्लान मुखी लड़की जैसे संसार भर का दुख अपने ऊपर उठाये घूम रही है। गंभीर रात में यह रोती है, इसकी रुदन से भाराक्रान्त निश्वासों के शब्द कनाई ने सुने हैं। इसके साथ जो निष्ठुर अत्याचार हुआ है उसकी स्मृति यह नहीं भूलती। कनाई को अमल बाबू की याद आई। अमल की कार्यशक्ति विस्मय की वस्तु है, मानवोचित भद्रता भी उसमें है, एक दिन में ही उसने अपनी प्रीति का जो परिचय दिया है वह भी अकृत्रिम है फिर भी गुप्त व्याधि जैसी लालसा के जघन्य रूप ने उसे भयंकर बना दिया है। कनाई को 'टालस्टाय' के Resurrection के नायक प्रिंस दिमित्रि याद आये। संसार भर के धनियों में यही व्याधि फैली है। आदर्शवादी प्रिंस दिमित्रि भी धीरे धीरे इससे ग्रस्त हो गये थे।—

"Now the purpose of women, all women except those -

of his own family and the wives of his friends, was a definitely one; women were the best means towards an already experienced enjoyment."

गीता ने एक टिफिन कैरियर लाकर सामने रख दिया।

स्नेह और उत्साह से भर कर कनाई ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा, तुम्हारे बनाए भोजन से ऐसी लुभावनी गंध आ रही है कि इसे अभी समाप्त कर देने की इच्छा होती है।

नेपी खड़ा हो गया था. टिफिन कैरियर भी उसने उठा लिया और बोला. चलिए।

कनाई की प्रशंसा से गीता के मुख पर तृप्ति की रेखा तक न आई, वह अस्वाभाविक रूप से फीका और म्लान था। अब तक कनाई ने ध्यान नहीं दिया, या गीता ही आत्म संवरण किए थी। कनाई ने विस्मय और स्नेह मिश्रित स्वर में पूछा, क्यों गीता, क्या हुआ ?

गीता के ओंठ कांपे परन्तु वाणी कण्ठ में ही रह गई, हृदयावेग उच्छ्वसित हो गया और आंखों से आंसू टपकने लगे।

कनाई बोला—गीता ?

—नेपीदा कह रहे थे, कल हीरेन ने आपको—कण्ठ फिर भर आया और गीता चुप हो गई।

काण्डाकाण्डज्ञानहीन नेपी ने गीता को रात की घटना सुना दी है। कनाई ने हंस कर गीता के सामने अपना हाथ फैला कर दिखाया,—यह देख—जरा सी खाल छिल गई है। हीरेन ने

समझा था कि मैं उसे मारूंगा। वैसे तो वह मेरा बहुत आदर करता है।

गीता के आंसू फिर भी न रुके।

कनाई सान्त्वना देते हुए बोला, रोती क्यों हो, इसलिए कि हीरेन तुम्हारा भाई है ? मेरा ही कोई भाई मुझे मारने आता तो तुम इस तरह न रोतीं ! फिर तुम मुझे दूसरा समझती हो ? पोंछो, आंसू पोंछ डालो !

गीता ने आंसू पोंछ डाले। कनाई बोला, केवल आंसू पोंछने से ही काम न चलेगा, मन को प्रसन्न करो। तुम को नया मनुष्य बनना है। मैं ने सुना है, तुम रात में रोती हो। क्यों ? छिः ! अब न रोना !

गीता बोली—बाबू और मां की कोई खबर नहीं मिल सकती कानू दा ?

कानू ने विस्मय से उसकी ओर देखा।

—बाबू का दिल बहुत कमजोर है। कल साइरन बजा था, जाने क्या हुआ हो—फिर उसके ओंठ कांपे और आंखों से बूंदें ढुलकीं।

कनाई को अपना घर भी याद आया। मां और भाई बहन कैसे हैं ? जीवन पथ पर वक्रगति से चलने वाली छोटी चाची क्या करती हैं ? रोग से जीर्ण और दांभिक वृद्ध मंझले बाबू क्या कहते होंगे ? सुखमय चक्रवर्ती की मृतकल्प स्त्री—दृष्टि और श्रवण शक्ति हीन, तैल हीन दीप की बत्ती जैसी जलने वाली वह

वृद्धा अब कैसी है ? साइरन की ध्वनि तो इन सब ने भी सुनी होगी परन्तु उत्कण्ठा और उद्वेग के ऐसे समय में इतने अस्वस्थ मनुष्यों की सहायता के लिए कोई स्वस्थ सहायक भी न मिला होगा।

नेपी ने असहिष्णु होकर बुलाया—कानूदा !

कानू ने गीता से कहा, शाम को उधर जाऊंगा—अब इधर हो आऊं ?

—ठहरिए ! गीता ने कनाई के पैर छुए।

—क्यों ? यह प्रणाम कैसा ?

आज विजय दा मुझे नर्स का काम सिखाने वाले दफ्तर में ले जायगे।

कनाई एक लम्बी सांस लिए बिना न रह सका। गीता जिस वातावरण में पली है, उसकी कल्पना ने शैशव से जो मार्ग पहचाना है, आज वह मार्ग भी खो गया !

—उन्नीस—

जाड़े के दिन और नया इण्डियन स्टैण्डर्ड टाइम—सवेरा होते ही आठ बज जाते हैं। इतनी देर में ही लोगों के आफिस जाने का समय भी हो गया है। कलकत्ते की सड़कें मोटरों, ट्रामों, बसों, गाड़ियों और रिक्शाओं से भर गई हैं। फुटपाथों पर पैदल चलने वालों की भीड़ है। कल के और आज के कलकत्ते में कोई

अन्तर नहीं पड़ा। रात के हवाई हमले से सवेरे बिखरी हुई जनता में जो उत्तेजना दीख पड़ी थी उसका प्रवाह भी कार्य-चक्र के द्रुत आवर्तों पर जलस्रोत की भांति बह गया है। आलोचना हो रही है, उसमें उत्तेजना भी है परन्तु बम के आघात से शृंखला की कोई कड़ी नहीं टूटी। कनाई को कुछ आश्चर्य हुआ। उसने सोचा जो निरस्त्र और पराधीन जाति दीर्घ काल से युद्ध की अभिज्ञता से पृथक् है उसमें यह सह्य शक्ति कैसे आई? उदराग्नि की ताड़ना से मनुष्य की बोध शक्ति ही तो कहीं इतनी निकम्मी नहीं होगई है कि विपत्ति के गुरुत्व को समझने वाली मानसिक चेतना भी वह खो बैठा है? परन्तु नहीं, ऐसी बात मैं क्यों सोचूं? मैं भी तो इन्हीं में से हूं, नेपी भी तो है, हम बमविध्वस्त बस्ती के निवासियों की सहायता करने जा रहे हैं। ऐसा बोध और ऐसी प्रेरणा दूसरों में नहीं है, यह मैं कैसे समझूं? किस अधिकार से सोचूं?

वे दोनों उपनगर को जाने वाली बस के अड्डे पर पहुंचे।

सड़क से कुछ फौजी लारियां निकल गईं। उन में चीनी सैनिक बैठे थे। उधर उपनगर से भी सैनिक लारियों की एक पंक्ति आई, ये लारियां नित्य आती हैं, नित्य क्यों निरन्तर आती हैं, क्लान्तिहीन सामरिक गतिशीलता में विराम नहीं होता। परन्तु आज वह यातायात अकस्मात विशेष अर्थ से पूर्ण हो गया है। उससे युद्धरत अवस्था की शंकाजनक एवं गुरुत्व पूर्ण उपलब्धि जाग्रत होती है।

............पुर का मार्ग पूछते समय कनाई को अमलबाबू का

कारखाना याद आ गया। मार्ग का विवरण सुन कर जान पड़ा कि यह तो वही······पुर है। उन गृहहीन मनुष्यों की याद भी आई। वे गायें, वे बकरियां, वे माल असबाब लादे हुए अभागे प्राणी, वह वृद्ध, वह वृद्धा और वह सुन्दरी तरुणी—सब उसकी आंखों के सामने घूम गये। उसने अपने रक्तस्रोत में एक उत्तेजना अनुभव की। बम शायद अमल बाबू के बगीचे में उन्हीं अभागों पर गिरा है। उसका मन चंचल हो गया, उसने ड्राइवर से पूछा, गाड़ी कितनी देर में चलेगी ?

ड्राइवर ने कोई उत्तर न दिया।

कनाई के फिर पुकारा—ए भैया !

ड्राइवर ने निर्लिप्त भाव से उत्तर दिया, सीटी बजेगी तब चलेगी। वह धावमान यन्त्रयान के साथ अपना अस्तित्व मिला कर—इन्द्रियों की अनुभूति को स्टीयरिंग, गीयर और ब्रेक के साथ जोड़कर आठ घण्टे ड्यूटी देता है। इस बीच में जो स्थिर मुहूर्त आते हैं उनमें वह क्लान्त और अलस आनन्द का उपभोग करता है। वह एकाग्र होकर राजपथ की जनता को देख रहा था।

समय के साथ-साथ सड़क पर जनता की भीड़ भी बढ़ रही है। बस-यात्रियों के चारों ओर भिक्षा प्रत्याशी भिक्षुक घूम रहे हैं।

—बाबा ! राजा बाबू ! अनाथ की ओर देखो !

—अन्धे पर दया करो बाबा !

कनाई······पुर की चिन्ता कर रहा है।

नेपो मृदु स्वर में बोला—एक इकन्नी दें कानूदा ! कानूदा !

कनाई ने जेब में हाथ डाला।

नेपी बोला, यह स्त्री भले घर की जान पड़ती है, पेशेवर भिखा-रिन नहीं है।

कनाई ने मुंह फिरा कर देखा तो पत्थर हो गया। जेब में पैसे ढूंढ़ने वाला हाथ वहीं रह गया—निश्चेष्ट होगया। उसने देखा, पुराने कपड़े का लम्बा घूंघट डाले और पतला हाथ फैलाए एक स्त्री खड़ी है। कौन है यह? मुंह पर घूंघट है परन्तु अन्य अवयवों से परिचित जान पड़ती है। कनाई ने लम्बे घूंघट वाली इस संकुचिता स्त्री को अपने घर में भी कितनी ही बार आते जाते देखा है। फिर यह गीता की मां हैं? वही तो जान पड़ती हैं! परन्तु इनके हाथ सूने हैं और बदन का कपड़ा भी बिल्कुल सफेद है। तो क्या—गीता के पिता—? कनाई का सर्वांग सिहरा। वह उठ कर खड़ा हो गया। जेब से रुपया निकाल कर नेपी को दिया और बोला—तू जा नेपी, मैं न जा सकूंगा।

नेपी विस्मित होगया—क्यों? कानूदा! कानूदा!

भिखारिणी सचमुच गीता की मां सरोजिनी है। नेपी के मुंह से कनाई का नाम सुनकर वह चौंकी, जरासा घूंघट हटा कर देखा, कनाई ही बस से उतर रहा है। क्षण भर में वह फुटपाथ चीर कर बगल की गली में घुस गई।

सरोजिनी का इतिहास मर्मभेदी है।

बीसवीं सदी की यांत्रिक सभ्यता के आधार पर खड़ी यह महानगरी प्रचण्ड कर्म शक्ति का एक विराट् ववण्डर है। इस ववण्डर में चक्कर खाने वाला मनुष्य आत्मा और दिशा तक भूल गया है, अपने सिवा दूसरे की चिन्ता करने का अवसर तक उसे नहीं मिलता। रास्ते में किसी का शव पड़ा मिल जाता है तो क्षण भर रुकने और एक-आध बार हाय हाय करने के बाद उसे फिर दौड़ना पड़ता है। पारस्परिक सहानुभूति एवं साहाय्य पर धीर गति से चलने वाला समाज यहां नहीं है। वहां अर्थहीन मनुष्य की साहाय्य शक्ति का ही कुछ मूल्य लग जाता है, और सहायता देने वाली वह शक्ति विनिमय की अनिवार्य वस्तु भी होती है। यहां व्यक्ति की आर्थिक क्रय शक्ति पर ही उसके प्राप्य का निश्चय होता है। मनुष्य के मरने पर भी किसी की सहानुभूति या सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती। पैसे खर्च करने से किराये के वाहक मिल जाते हैं या सत्कार समिति की गाड़ी आ जाती है, दूकानों पर संस्कार की सब चीजों के ढेर सजे हैं, जिसमें जितनी शक्ति है वह वैसी ही चीजें खरीद सकता है। सरोजिनी और उसके स्वामी पर इन कुछ दिनों में जो कुछ बीता है उसका पता लगाने का अवसर भी किसी को नहीं मिला—उसे जानने की प्रवृत्ति भी किसी में नहीं जागी।

हीरेन के गृहत्याग के बाद रुग्ण, क्रोधी, निष्ठुर स्वामी को लेकर निरुपाय सरोजिनी ने आकाश की ओर देखा था। भगवान् को बार बार बुला कर अपनी और स्वामी की मृत्यु कामना की

थी, कहा था, उठा लो, मुझे और इन्हें उठा लो ! हमें मुक्ति दो ! सहायता देने वाला कोई मनुष्य उसे नहीं मिला। पहले, जब अभाव चरमावस्था में न पहुंचा था तब, वह कभी कभी चक्रवर्तियों के घर जाती थी और कनाई की मां के पास खड़ी होती थी। कनाई की बहन उमा गीता की सहेली थी, परिचय के इसी क्षीण सूत्र को लेकर और लम्बा घूंघट काढ़ कर वह पहुंचती थी। कनाई की मां यथासाध्य सहायता भी करती थीं। परन्तु जब से कनाई और गीता गये हैं तब से वह उस घर की चौखट लांघने का साहस भी नहीं कर सकी। मंझले बाबू, मंझली मालकिन और कनाई के पिता दुखण्डे के बरामदे में खड़े होकर इस निस्तब्ध घर को निशाना बना कर जो गालियां देते हैं, उनको सुन कर वह चुपचाप रोती ही रही है।

—खानगी का घर है। खानगी की बेटी हमारे लाल को मोहिनी माया में भुला कर उड़ा ले गई।

गीता के पिता ने कनाई और चक्रवर्ती बंश को दांत पर दांत रगड़ कर गालियां दी हैं—लुच्चों का वंश है, बकरियों का वंश है—उनकी गालियां अश्लीलतम हुई हैं। दोपहर के भोजन का समय बीतने के बाद उन्होंने सरोजिनी को गालियां दी हैं, निकट जाने पर मारा है।

सरोजिनी प्रत्याशा कर रही थी कि हीरेन लौटेगा परन्तु वह नहीं लौटा। मां-बाप और गीता के लिए हीरेन को दुःख बहुत हुआ परन्तु चरम दरिद्रता की निष्ठुर पीड़ा से जर्जर इस अस्वस्थ

परिवार से निकल कर उसे स्वस्ति मिली है, आराम का अनुभव हुआ है इसी लिए वह नहीं लौटा। कनाई को देख कर उसे गुस्सा आया और वह छुरी मारने दौड़ा—यह गुस्सा दुखी और लज्जित माता पिता के लिए उठी सहानुभूति का ही एक विचित्र प्रकाश था, गीता की प्रीति एवं ममता का ही वक्र रूपान्तर था। वह इन सब को प्यार करता है परन्तु इस प्यार के लिए उसका तरुण मन दुःख और कष्ट में लौटने के लिए तयार नहीं हुआ।

सरोजिनी ने कनाई को मन ही मन में आशीर्वाद दिया है, अपने मानसलोक में गीता और कनाई को पास-पास खड़ा देख कर स्वस्ति की सांस ली है, उनके लिए मंगल कामना की है। बूढ़ी ब्राह्मणी ने उसे पूरा वृत्तान्त सुनाया है। उसने कहा है, तिरस्कार के साथ कहा है, जब तूने चक्रवर्तियों की लड़की के साथ अपनी लड़की को उस घर में आने-जाने दिया है तब उसका फल भी भोग। वह लड़का चक्रवर्तियों का लड़का है, उसने गीता को पहले ही नष्ट किया है, गुप्त प्रीति थी दोनों में नहीं तो छोकरे को देख कर वह फफकती क्यों? छोकरे को सब कुछ सुना दिया! कहने लगी हाय अब मैं कहां जाऊंगी!—बूढ़ी ने गाल पर उंगली रख कर हैरानी भी प्रकट की थी।

सरोजिनी ने मन में अपरिसीम तृप्ति का अनुभव किया था। सोचा था, मेरी गीता चरम लांछना से बच गई। वह कनाई से जब सब कुछ कहने में समर्थ हुई है तब अवश्य उसे प्यार करती है और कनाई जब सब कुछ सुनकर भी उसके लिए परिवार छोड़ गया

है तब वह भी गीता को चाहता है। दोनों का प्यार स्थिर हो। दोनों के विवाह की प्रत्याशा सरोजिनी ने नहीं की, उसने सोचा, दोनों पति-पत्नी की तरह तो रहेंगे। इस नगर में ऐसे नर नारियों का भी अभाव नहीं है। इसी मुहल्ले में कई घर ऐसे हैं! उसकी आंखों में पानी आ गया था और वह शीर्ण मुख पर बहने लगा था—आंसुओं को पोंछ डालने की इच्छा भी उसे नहीं हुई।

बूढ़ी ने सान्त्वना देते हुए कहा था, वह बाबू आज भी आया था. बहुत अमीर आदमी है। कहता था, पुलिस में रिपोर्ट लिखा कर मुकदमा खड़ा कर दो।

सरोजिनी कांप उठी थी।

—खरच-वरच सब वही करेगा। अमीर है—तरंग पर चढ़ा है—समझी!

सरोजिनी ने गरदन हिला कर अस्वीकार किया था।

—तो फिर मैं क्या कर सकती हूं?—और वह तमक कर चली गई।

इसके बाद कुछ दिन चरम अभाव में बीते। घर में एक पुराना और खाली ट्रंक था, वह एक रुपये में बेचा गया। लड़ाई का बाजार, चावल अठारह रुपये मन, रोगी पति रात में साबूदाना खाते हैं, उनके लिए दवा और अफीम भी चाहिए—रुपया कितनी देर ठहरता? मकान मालिक भी आया था। उसे तीन महीने का किराया देना है। चिड़चिड़े प्रद्योत ने उसे कानून का भय दिखाया था। वह कह गया, कानून! तेरे जैसे किरायेदार को निकालने में

कानून देखना पड़े तो मैं कलकत्ते में रह चुका। कल का दिन देता हूं, परसों गुण्डे भेजकर निकलवा दूंगा। हिम्मत हो तो अदालत चले जाना।

मकान मालिक चला गया। प्रद्योत खांसते-खांसते बेदम हो गया। बड़ी सुश्रुषा के बाद सरोजिनी उसे स्वस्थ कर पाई। स्वस्थ होते ही प्रद्योत ने उस दिन की तरह हाथ से पंखा छीन लिया और उसे पीट डाला। निरुपाय होकर सरोजिनी बाह्मन दीदी के घर गई। उसके सामने लम्बा दिन था और घर में अनाज के नाम पर एक दाना तक न था, रुग्ण पति उसे पीटने के बाद थक कर फिर खांसने लगे थे। चावल चाहिए, साबूदाना चाहिए, अफीम चाहिए। उसने सोचा, बाह्मन दीदी शायद कहीं रसोई बनाने की नौकरी ही दिला दें।

बाह्मन दीदी ने आश्वासन के साथ एक सेर चावल भी दिए।

उसी दिन शाम को बाह्मन दीदी व्यस्त भाव से प्राय: दौड़ती-दौड़ती आईं। कहने लगीं—मैं जो कहूं वह करे तो कुछ दिला दूं!

शंका-विस्फारित नेत्रों से बूढ़ी की ओर देखकर सरोजिनी ने पूछा था—जैसे ब्राह्मणी की बात उसकी समझ में ही नहीं आई। प्रश्न भी एक शब्द का ही था—ऐं!

सरोजिनी को एक सफेद धोती देते-देते कह बोली थी—यह पहन ले!

सरोजिनी ने विस्मय के साथ कपड़े की ओर देखा था।

बाम्हन दीदी बोलीं थी—हाथ से चूड़ियां उतार दे, मांग

सिंदूर—बात अधूरी ही रखकर वह सरोजिनी का आंचल खींचने लगी थी और फीका सिंदूर पोंछ देने के लिए उद्यत हो गई थी।

सरोजिनी दो पग पीछे हटकर बोली थी—नहीं।

—नहीं कैसे, सुन, वह आज फिर आया है, मैंने कहा है—गीता का बाप मर गया है—आप कुछ सहायता करें। मैं जो कहती हूं वह कर, बीस-पच्चीस रुपये मिल जांयगे।

सरोजिनी अवाक् होकर उसका मुंह देखती रही।

वह फिर बोली—लोग ऐसे ही भीख नहीं देते, उनके सामने रोना पड़ता है, झूठ बोलना पड़ता है।

उस कमरे से प्रद्योत ने दांत पीस कर और चिल्लाकर कहा था—जो कहती हैं, सुन हरामजादी।

सरोजिनी मिट्टी की पुतली बन गई, ब्राह्मनी ने सिंदूर पोंछ दिया, चूड़ियां उतार दीं और भूमि से सफेद धोती उठाकर देते हुए कहा, यह पहन ले।

इस के बाद सरोजिनी ब्राह्मनी के घर गई थी। अमल के सामने आज जैसे नंगे हाथ फैलाकर तथा निस्पन्द होकर खड़ी हुई थी। अमल ने चुपचाप उनके हाथ पर दस-दस रुपये के दो नोट रख दिए थे। निस्पन्द हाथों पर पड़े नोट भी निस्पन्द थे। अवगुण्ठन के भीतर से दो आंसू उन पर टपके। अमल ने एक नोट और दिया. और बोला, फिर और भी देखूंगा, आज इतने ही हैं।

ब्राह्मणी बोली थी, यह पुलिस में रिपोर्ट लिखाएगी। कह सुनकर,

राजी किया है। मुसीबत के ये दो दिन बीत जांय। आ, बहू आ! सरोजनी का हाथ पकड़ कर वह कमरे से निकाल लाई थी। रास्ते में उसके हाथ से एक नोट लेकर बोली थी, यह मेरी कमीशनी है। तेरे लिए बीस रुपये भी बहुत हैं, फिर और दिला दूंगी। फिर हंस कर और उसके मुंह की ओर देख कर कहने लगी—खा-पी कर शरीर बना ले! तू तो सफेद धोती में भी खिल रही है। कौन कह सकता है कि तू गीता जितनी बड़ी लड़की की मां है! बूढ़ी मुस्कराई थी। सरोजिनी वह मुस्कान देख कर शंकित हो गई थी। ब्राह्मणी यह कह कर चली गई कि 'अब घर जा'। सरोजिनी सड़क पर गुमसुम खड़ी रही। बूढ़ी की बात पर वह सोचने लगी। ब्लैक आउट की चन्द्रालोकित रात थी, ज्योत्स्ना की प्रभा गली में आगई थी, अस्फुट प्रदोषालोक जैसे धुंधले प्रकाश में सफेद धोती पहने सरोजिनी अशरीरी की भांति कितनी देर तक खड़ी रही, यह भी उसे भूल गया। साइरन की ध्वनि सुन कर वह चौंकी और रुग्ण प्रद्योत के दुर्बल हृदय का स्मरण कर दौड़ती हुई घर गई।

प्रद्योत आंखें फाड़े बैठा था और गुस्से से कांप रहा था। सरोजिनी को देखते ही वह चिल्ला कर बोला, कहां थी, इतनी देर कहां लगी?

सरोजिनी की समझ में न आया कि वह क्या उत्तर दे।

—इतनी देर कहां लगी? सरोजिनी की ओर देख कर वह बोला था, सिंदूर पोंछ डाला है, सफेद धोती पहन ली है, वाह बहार आ रही है!

विस्मय के साथ सरोजिनी बोली, क्या कहते हो तुम ?

—क्या कहता हूं ? मैं क्या इतना भी नहीं समझता ? हराम-जादी ब्राह्मणी तुझे विधवा बनाकर ले गयी थी—ओह ! वह अपने सिर के बाल नोचने लगा था।

इंगित का अर्थ समझ कर सरोजिनी स्तंभित हो गई थी। उन्मत्त प्रद्योत अकस्मात अपने बाल नोचना छोड़कर सरोजिनी पर झपटा था और दोनों हाथों से उसका गला दबा कर रगड़ने लगा था। इसके बाद सरोजिनी सब कुछ भूल गई। होश आने के बाद उसने देखा कि वह भूमि पर पड़ी है, प्रद्योत नहीं हैं और वे दोनों नोट भी गुम हैं।

साइरन जब विपत्ति की सूचना दे रहा था तब प्रद्योत ने समझा था कि सरोजिनी मर गई है। नोट लेकर वह खिसक गया था।

सरोजिनी दुखी हुई फिर भी उसे ऐसा जान पड़ा कि वह मुक्त हो गई है—पूर्ण मुक्ति मिल गई है। अपनी पुरानी धोती, एक मग, एक अलमोनियम का तुड़ा-मुड़ा गिलास और एक थाली लेकर वह भी घर से निकल गई। वह जानती थी कि सबेरा होते ही मकान मालिक गुण्डों को साथ लेकर आवेगा।

सरोजिनी ब्राह्मणी के घर भी नहीं गई। घर छोड़ने के पहले एक बार इच्छा हुई कि सफेद धोती बदल ले और हाथ में दो लाल सूत ही बांध ले परन्तु फिर उसका मन विद्रोही हो गया। उसने सोचा, यही वेश अच्छा है। ब्राह्मणी ने भीख मांगने के सम्बन्ध में जो उपदेश दिया था वह भी याद आया। वह इसी वेश में घर

से निकली और बस स्टैण्ड के पास खड़ी हो कर नंगे हाथ फैलाने लगी। उसका पेट भूख से जल रहा था परन्तु कनाई को देख कर अपने मिथ्याचरण की लज्जा वह न संभाल सकी। बगल की गली में घुस कर छिप गई।

•

कनाई सरोजिनी को फुटपाथ पर ही ढूंढ़ता रहा फिर निराश हो गया। उसने सोचा, गीता के पिता का देहान्त ही हो गया है। विधवा सरोजिनी देवी सड़क पर भीख मांग रही हैं। प्रद्योत बाबू नहीं रहे—वे मुक्त हो गये परन्तु उनका प्राणान्त कैसे हुआ? उसने सोचा, शायद गीता की आशंका ही ठीक निकली है। दुर्बल हृदय के प्रद्योत बाबू का कल हार्ट फेल हो गया है। श्मशान से लौट कर कपर्दक और स्वजन-सहाय विहीन सरोजिनी देवी भिक्षा मांगने के लिए राजपथ पर आई हैं, मकान मालिक ने शायद घर से भी निकाल दिया है।

कनाई ने एक लम्बी सांस छोड़ी। बस चली गई है। जिस सड़क पर वह गई है, कनाई कुछ देर तक उसकी ओर देखता रहा। बस की द्रुतगति की भांति नेपी के जीवन की गति भी द्रुत और दुविधा हीन है, जो पीछे छूट गया है उसके प्रति नेपी के हृदय में कोई ममता नहीं है। इसी लिए वह इस परिस्थिति में भी विपन्नों की सेवा करने चला गया है परन्तु मेरे जीवन की गति को गीता ने पंगु कर दिया है। विजयदा ने यद्यपि गीता

का सब भार ले लिया है फिर भी उसने मुझे नहीं छोड़ा।—कनाई चाय की एक दुकान में घुसा और सोचने लगा कि लौट कर गीता से क्या कहूंगा। माता-पिता के लिए उसके हृदय में गहरी ममता है। जिन माता पिता ने उदरान्न के लिए उसे जघन्यतम लांछना के हवाले करने में संकोच नहीं किया, उनका उल्लेख करते समय उसके होंठ कांपने लगते हैं परन्तु यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बंगाली स्त्री का सनातन रूप भी यही है। जिसने बाल्यकाल में पिता, यौवन में स्वामी और प्रौढ़ावस्था में पुत्र के रक्षण में रहकर सहस्रों वर्ष अक्षम और असहाय बनकर बिता दिए हैं—वह इस से अधिक और कर भी क्या सकती है? सब अधिकारों से वंचित होकर उसने पिता स्वामी और पुत्र की सेवा करने का यही एक अधिकार प्राप्त किया है। उसकी सम्पूर्ण जीवनी शक्ति सहस्र धाराओं से स्नेह, प्रेम, भक्ति, प्रीति, ममता और सेवा से भर कर इसी एक पथ पर वेगवती हुई है। जीवन की अब वंचनाओं की वेदना आत्मत्याग की कृच्छ साधना में रूपान्तरित हुई है। कनाई को अपनी मां, दादी और नब्बे वर्ष की जड़पिण्ड जैसी वृद्धा परदादी की सुध आई। उसका मन चंचल हो गया। उसने सोचा, घर तो यहां से दूर नहीं है—एक बार देख ही लिया जाय!—वह चाय के खाली प्याले पर दृष्टि लगाये बैठा रहा। उस ""पुर की ओर एक और बस जा रही है। नेपी अब बहुत दूर निकल गया होगा। कनाई को ऐसा जान पड़ा कि मेरे जीवन को एक ओर से नेपी खींच रहा है,

दूसरी ओर से गीता आकर्षित कर रही है। गीता का प्रभाव ही अधिक है। नहीं तो चाय की दुकान पर बैठ कर मैं उनकी चिन्ता क्यों कर रहा हूं जिन्हें जीवन के पथ पर अग्रसर होने के लिए पीछे छोड़ आया हूं—परित्याग कर आया हूं! कुछ देर पहले भी गीता की बात सुनकर उनकी सुध आई थी। और जब मैं चिन्ता कर ही रहा हूं तब निस्संकोच होकर उनका समाचार लेने क्यों नहीं जा पाता? नेपी होता तो क्या करता? अवश्य वह बिना किसी दुविधा के वहां जाता और अपना कर्तव्य पालन करने के बाद चला आता। फिर मेरे मन में इतनी दुर्बलता क्यों है? कनाई के मुंह पर एक करुण मुस्कान आई। मेरी नसों में तो सुखमय चक्रवर्ती के वंश का अस्वस्थ रक्त है, मेरे हृदय पर उनके उस पुराने, अंधेरे और गोरखधंधे जैसे भवन का प्रभाव है जिसमें मैं इतने दिन रहा हूं!—कनाई ने अपने अन्तर को खींच कर सीधा किया और चलने के लिए उद्यत हो गया। उसने सोचा, घर के हाल चाल लेकर और जो कुछ करने योग्य होगा वह निपटा कर चला आऊंगा। नेपी भी बहुत दूर चला गया होगा। अकस्मात् उसे नीला का स्मरण हुआ। विजय दा क्या उसे वापस ले आये हैं? या वह एकाकिनी भी अपने सामने के पथ पर निर्भय होकर चली गई है?

—बीस—

चक्रवर्ती भवन की अंधेरी सीढ़ियों पर चढ़ते-चढ़ते कनाई रुक गया। मंझले बाबू गहरे आवेग के साथ और अभिनय की तरह

एक छंद की आवृत्ति कर रहे हैं। कनाई ने सोचा, मंझले बाबू ने क्या आज सवेरे ही शराब पी ली है। वे कह रहे हैं—

"नारायण—नारायण
डूब गया मैनाक सिन्धु के गहरे जल में;
गगन-लगन अभ्रंलिह विंध्या उसका बन्धु,
मस्तक उसका झुका हुआ है धरणी तल में;
मिटी न फिर भी इच्छा ?......"

मंझली मालकिन का स्वर सुन पड़ा—इतनी चिन्ता क्यों करते हो ?

—क्यों करता हूं ? मंझले बाबू के कण्ठस्वर में ज्वालामुखी के गर्जन का आभास मिला।

मंझली मालकिन ने सविनय कहा, वे कोई उपाय करेंगे ही।

—करेंगे ? वे ही उपाय करेंगे ? मंझले बाबू अभिनेता की भांति हंसे। फिर बोले—उपाय तो उन्होंने कर दिया है। चक्रवर्ती बंश का ध्वंस होगा। बम के आघात से टूटा भवन चूर्ण हो जायगा—हम सब उसके नीचे दब जांयगे। नहीं तो भूखे मरेंगे।

कुछ देर स्तब्ध रह कर वे फिर बोले, राक्षसों की तरह तो भोजन किया जाता है। न जाने कितनी बार कहा है, रोज चावल की मुट्ठी बचाओ—संचय करो। सुनते नहीं—मानते नहीं। अब भुगतो। किरायेदार सब भाग गये। मुझे कल रात को ही सन्देह हुआ था। 'आल क्लियर' के बाद सब से कहा, उठकर बस्ती

जाना। सब सोते रहे और किरायेदार छू हो गये। लो अब क्या करोगे ? दोनों हाथ से पेट भरो !

मंझली मालकिन बोलीं—बड़े और छोटे तो बस्ती के अपने हिस्से बेंच रहे हैं।

—बेंच रहे हैं ?

—हां, आज ही बेचेंगे—इसी लिए बाहर गये हैं। आज शाम को नहीं तो कल सवेरे कलकत्ता छोड़ जायंगे। कहते हैं बम की मार हम न सह सकेंगे।

मंझले बाबू क्षुब्ध आक्षेप के स्वर में बोले—जांय, जिसे जहां जाना हो चला जाय। मैं—मैं पादमेकं न गच्छामि।

मंझली मालकिन बोलीं—बड़ा घर जा रहा है—

मंझले बाबू चीख उठे—जाय—जाय—जाय ! मंझली मालकिन भय से स्तब्ध होगईं। मंझले बाबू बोले—फिर ? बस्ती बेंच कर फिर क्या खायंगे ? बस्ती तो रेहन है ! साहूकार का भुगतान देने के बाद क्या बचेगा ? टिड्डीदल जैसी तो सन्तानें हैं। तीन-चार लड़कियां हैं—उनके ब्याह कहां से होंगे ? बेंच रहे हैं ?

—भगवान हैं, वे जो चाहेंगे वही होगा।

—होगा। ठीक होगा ! वे न्याय करेंगे—पाप का पूरा विचार होगा। पाप—महापाप—इसका प्रायश्चित्त तो करना ही पड़ेगा। वंश का मुख उज्ज्वल करने वाला बी. एस-सी. पास लड़का एक कुमारी कन्या को लेकर भाग गया है। इस महापाप का प्रायश्चित्त पूरा होगा। पाप हमने भी किए हैं, वेश्यासक्त

रहे हैं, लक्ष्मी की अवहेलना की है, आज भी शराब पीते हैं—पाप हमने भी किए हैं परन्तु यह महापाप है ! महापाप !

अपनी चर्चा सुन कर कनाई का रक्तस्रोत चंचल हो गया। वह सीधा ऊपर की ओर चला। मंझले बाबू का कण्ठस्वर करुण हो आया है, वे कह रहे हैं—भगवान् ! तुमने इतने बड़े कलंक की छाप चक्रवर्ती वंश के मत्थे पर क्यों लगा दी ? उसे ऐसी मति क्यों दी ? उसके मस्तक पर वज्राघात—उनकी बात समाप्त भी न हुई थी कि कनाई ने जीने का दरवाजा खोला और उसके सामने खड़ा हो गया।

विस्मय और क्रोध से स्तब्ध मंझले बाबू कुछ देर तक अपलक दृष्टि से कनाई को देखते रहे फिर चिल्लाकर बोले—निकल जाओ ! निर्लज्ज—लम्पट—कुलांगार—निकल जा !

मंझली मालकिन ने अवाक् होकर कनाई के मुंह की ओर देखा—इस पर लज्जा और अनुताप का चिह्न तक नहीं है !

कनाई शांत स्वर में बोला, मुझे आपसे कुछ कहना है।

—मुझ से तुम्हारी कोई बात नहीं हो सकती, जाओ, चले जाओ !

—नहीं, मुझे तो आपसे कहना ही है।

कनाई की निसंकोच और दीप्त दृष्टि से मंझले बाबू को आश्चर्य हुआ। वे बोले, तुझे लज्जा नहीं आती ?

—नहीं, लज्जित करने वाला कोई काम मैंने नहीं किया।

—नहीं किया ?

—नहीं, यही तो मैं कहने आया हूं।

—तुम बस्ती की उस गरीब ब्राह्मण कुमारी को—

कनाई ने बाधा देकर कहा—यही आप से कहना है।

—यह क्या झूठ है ? उसे तुम अपने साथ नहीं ले गये ?

—ले गया हूं, किन्तु—

असहिष्णु मंझले बाबू ने बात काटी—फिर ? ओह ! तो तुमने उसके साथ विवाह किया है ?

—नहीं

—फिर ?

—यह मैं केवल आपको ही बताऊंगा—एकान्त में बताऊंगा।

एक बार फिर कनाई की ओर स्थिर दृष्टि से देखने के बाद मंझले बाबू बोले, कहो !

—एकांत में कहूंगा।

—आओ ! मंझले बाबू ने कमरे में प्रवेश किया इसके पहले मंझली मालकिन से कठोर स्वर में कह गये, देखो, किसी को पता न चले कि यह आया है ! खबरदार ! फिर कनाई से बोले, दरवाजा बन्द कर दो !

कनाई ने दरवाजा बन्द कर दिया। मंझले बाबू विचारक का गांभीर्य लेकर बोले, कहो !

कनाई ने अपनी निस्संकोच दृष्टि उनके मुख पर लगाकर कहना प्रारम्भ किया—लड़की को मैं चरम लांछना के हाथ से बचाकर ले गया हूं। वह उमा की सहेली है, मैं उसे उमा की भांति ही स्नेह करता हूं, वह भी उमा जैसी ही भक्ति की दृष्टि से मुझे देखती है। उस दिन रात के दस बजे थे—

मंझले बाबू ने मौन रहकर सब कुछ सुना। उनका मुख गंभीर और अंग-प्रत्यंग अचंचल रहे। उनकी यह मूर्ति देख कर कौन कहेगा कि यही वह मनुष्य है जिसका मस्तिष्क अपरिमित अमिताचार और उच्छृंखलता से विकृत हो गया है, अभावों की ताड़ना ने जिसे अधीर बना डाला है। कनाई भी उनका यह अभूत-पूर्व रूप देख कर क्षणभर के लिए स्तब्ध हो गया। धीर और शांत कण्ठ के मृदु स्वर में मंझले बाबू ने पूछा, फिर—इस के बाद क्या हुआ ?

कनाई बोला—चरम लांछना के हाथ से बचाने के लिए ही मैं उसे ले गया हूं। घर में रहती तो उसे नित्य यह लांछना भोगनी पड़ती। परिणाम स्वरूप—

मंझले बाबू बोले—तुम उसे घर क्यों नहीं लाये ? मेरे पास क्यों नहीं लाये ?

कनाई बोला—ठीक उसी समय मैं भी यह घर सदा के लिए छोड़ कर जा रहा था।

मंझले बाबू चौंके—क्यों ?

—इस घर का ध्वंस अनिवार्य है और मैं जीवित रहना चाहता हूं। इसी लिए चला गया हूं।

मंझले बाबू ने स्थिर दृष्टि से कनाई की ओर देखा।

कनाई बोला—लड़की को मैंने अपने एक आदरणीय बन्धु के घर में रखा है। वे राजनैतिक कार्यकर्ता और अविवाहित हैं। लड़की का भार भी उन्होंने ले लिया है और स्थिर किया है कि

उसे नर्स का काम सिखायेंगे। आज ही वह भर्ती होगी। कनाई चुप हो गया।

मंझले बाबू उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देख रहे थे और देखते रहे।

कनाई बोला, मैंने कोई अन्याय नहीं किया।

एक लम्बी सांस लेकर मंझले बाबू ने अपना दाहिना हाथ कनाई के मस्तक पर रक्खा और अत्यन्त मृदु स्वर में बोले, तुम्हें आशीर्वाद देता हूं। उनकी आंखों से आंसुओं की बूंदें टपकीं। रुद्ध कण्ठ को परिष्कार करने के बाद वे फिर बोले, तुमने कोई अन्याय नहीं किया—मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं।

कनाई ने नत होकर उन्हें प्रणाम किया। मंझले बाबू बोले—तुम ठीक कहते हो, इस घर का परित्राण न होगा, इसका ध्वंस अनिवार्य है। तुम चले गये, अच्छा किया; तुम से चक्रवर्ती वंश बचा रहेगा।

कनाई ने विस्मय के साथ उनकी ओर देखा।

मंझले बाबू उठकर सीधे खड़े हो गये। उनके शरीर की जीर्णता और अस्वस्थता के स्थान पर सर्वांग से एक महिमा व्यक्त होने लगी। कितने ही मनुष्यों को वंचित करने वाले अपराध के बदले में चक्रवर्ती वंश को जो कुलीनता मिली थी उसका अवशिष्ट अंश आज उनके शरीर में आ गया। वे फिर बोले, संसार में अच्छी तरह जीवित रहने के लिए तुमने जब इस घर का परित्याग ही कर दिया है, तब जाओ, यहां एक क्षण भी न ठहरो। तुम्हारे

दु:ख में तुम्हारी मां ने शैय्या ग्रहण कर ली है। उनसे मिलोगे तो फिर घर से बाहर न जा सकोगे। वे तुम्हें कभी न छोड़ेंगी।

कनाई चंचल हुआ, मां ने शय्या ग्रहण की है ?

मंझले बाबू बोले, चंचल न हो। चक्रवर्ती वंश के कल्याणार्थ ही कहता हूं—जब गये हो—जा सके हो तब लौट कर न देखो। समय शोक और दु:ख सब सह लेता है परन्तु जो मुक्ति तुम्हें मिल गई है उसे स्वयं विसर्जित करके इस जीवन में फिर न लौटो।

कनाई चलने के लिए उद्यत हुआ।

मंझले बाबू बोले, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कर रहे हो, क्या करोगे—कोई ऐसा काम करो जिससे चक्रवर्ती वंश के सब पाप धुल जांय और—उनके मुख पर मुस्कान आई—हम मरें तो हमारी क्रिया करना—उनकी मुस्कान और भी विकसित हुई और स्वरूप भी कुछ बदला—बोले, विवाह करना तो बहू को एक बार दिखा ले जाना।

कनाई परम आनन्दमय और लघुमन लेकर बाहर आया। इस लघुता में चंचल उच्छ्वास नहीं है अपितु उसके जीवन की गति का वेग सद्य नीड़त्यागी तरुण पंखी के लघु पंखों की गति जैसा द्रुततर हो गया है। चक्रवर्ती वंश के इस अंधेरे—इस मोह-मय भवन से उसे आज वास्तविक मुक्ति मिली है। यह मुक्ति उसे परम मुक्ति जान पड़ती है। अपने मंझले बाबा को कनाई ने कभी इतनी अच्छी दृष्टि से नहीं देखा। अपने पूर्वजों की कीर्ति के इति-हास को वह कौशलमय शोषण और परस्वापहरण का इतिहास

ही मानता रहा है। उनके जीवनयापन की धारा में उसे विलास और विश्राम का उपभोग ही मिला है जिसने उसके रक्त में भी विष संचारित किया है परन्तु आज मंझले बाबा के उदार वार्तालाप और अकपट आशीर्वाद के गंभीर स्नेह से उसका शरीर और मन शीतल हो गया है। जैसे उसके मन की जर्जरता एक मुखर शीतलता की मधुर शांति में विलीन हो रही है। आज उसने पहिली बार सोचा, स्वीकार किया कि मानव जीवन के धारा प्रवाह में उसके पूर्वज जीवन की मांग—जीवन की आवश्यकता से उद्भूत हुए हैं। सुखमय चक्रवर्ती का आविर्भाव न होता तो मैं भी इस संसार में न आता। वे अपने स्वाभाविक रूप में आत्म-प्रकाश कर गये हैं और उसमें कल्याण था—उसी कल्याण की शक्ति से मुझे आज की उपलब्धि मिली है। कनाई ने मन में अपने पूर्वजों को प्रणाम किया। उसने सोचा, क्रोधी दुर्वासा का क्रोध ही उनका परिचय नहीं है, अभिशाप ही उनका एकमात्र दान नहीं है, समुद्र मंथन का अमृत, धन्वन्तरि और औषधियां भी उन्हीं से मिली हैं। विजय बाबू इसी मत को मानते हैं, मुझ से भी कई बार कहा है परन्तु मैंने इस सत्य को स्वीकार नहीं किया! मैं किसी दिन अपने पूर्वजों को क्षमा नहीं कर सका परन्तु आज इस सत्य को कैसे अस्वीकार किया जाय?

चौराहे के मोड़ पर मिठाई की एक विख्यात दुकान है। कनाई उसके पास पहुंचा तो ठिठक गया। फुटपाथ पर आठ-दस दीहाती बैठे हैं। उनके कंधों पर कथरी, चटाई और स्टील की टूटी

लयों जैसी चीजें हैं। वे सड़क पर चलते हुए यंत्रयानों की ओर मुंह बाये देख रहे हैं। फौजी लारियों की एक कतार दक्षिण की ओर जा रही है और एक कतार दक्षिण से उत्तर की ओर आ रही है। कभी-कभी पूर्व की सड़क पर भी वे दीख पड़ती हैं। पश्चिम दिशा की बड़ी सड़क पर उनका आवागमन तो निरन्तर ही होता है। बसें और ट्रामें भी चल रही हैं। वे अवाक् होकर उन्हें देख रहे हैं!

कनाई ने समझ लिया कि वे निरन्न ग्रामवासी बम का भय भूल कर महानगरी में जूंठन की खोज करने आये हैं।

मेदिनीपुर और दक्षिण बंगाल के अन्नाभाव की चर्चा अब देश के सामान्य समाचार जानने वालों तक भी पहुंच गई है। क्रमशः सम्पूर्ण बंगाल की अवस्था ही शोचनीय होती जा रही है। चावल के बाजार में जुए का अड्डा बन गया है। दिन दिन भाव बढ़ रहा है। किसान कब तक घर में रखेंगे? युद्धकाल में मनुष्य ने दुर्भिक्ष अनिवार्य कर दिया है।

ताजी सब्जी और फलों से भरी कुछ लारियां सामने से निकल गईं, उधर मिठाई की दुकान पर मिष्ठान्न सजे हैं। उनमें से एक का नाम 'खा जा' है। कनाई मुस्कराया।

कनाई सीधा विजय बाबू के घर पहुंचा। ट्राम पर बैठने की इच्छा भी उसे न हुई—पैदल ही चला।

घर में षष्ठीचरण अकेला है। कनाई को देख कर वह विस्मित हुआ, बोला—कनाई बाबू ?

कनाई ने संक्षिप्त उत्तर दिया—हां—फिर पूछा, विजयदा—गीता कहां है ?

—गीता को कहीं भरती कराने गये हैं। नरसिंग सीखेगी न ? बाबू दफ्तर होकर लौटेंगे।

—ओह ! कनाई कुरता उतारने लगा।

षष्ठी ने शंकित होकर पूछा, आप खायेंगे ?

—खाऊंगा क्यों नहीं !

—भात तो नहीं है।

—नहीं है ?

षष्ठी ने अभिमान के स्वर में कहा, आप तो नेपी बाबू के साथ कहीं गये थे। कैसे जानता कि अभी लौट आवेंगे ? फिर जो भात बनाया था उसमें नीला बिटिया ने भी तो खाया है। भात रहता कैसे ?

—नीला ? नीला ने यहीं खाया है ?

—हां। यह उनका सूटकेस है। खाकर दफ्तर गई हैं।

नीला फिर लौट आई है ! कुरता उतारने के बाद कनाई स्तब्ध होकर बैठ गया

—इक्कीस—

षष्ठी बोला, तो फिर पैसे दीजिए, खाना ले आऊं। होटल से भात ले आऊं या पूरी-तरकारी ?

कनाई बोला, पूरी-तरकारी ? जरा-सा भात न बना दोगे, षष्ठी ? चावल खाने की इच्छा हो रही है।

—चूल्हे में आंच नहीं है। निर्विकार षष्ठी के कण्ठस्वर में कोई संकोच नहीं।

—आग बना लो।

—आग ? बनाऊं कैसे ? कोयला दो रुपये मन है, वह भी मिलता नहीं। जितना था, इसी वक्त में लग गया है, शाम के लिए चार-छै कोयले पड़े हैं। कल कोयला मिला तो रसोई होगी—नहीं तो नहीं।

कोयला दुष्प्राप्य हो रहा है। चावल-दाल की भी यही अवस्था है। सुनते हैं कहीं-कहीं चीजें बहुत सस्ती भी बिक रही हैं। बम वर्षा के भय से जो दूकानदार भाग रहे हैं, वे जो दाम मिलते हैं वही लेकर माल फेंक देते हैं परन्तु ये बातें सुनी ही जाती हैं, किसी ने देखा नहीं।

कनाई मुस्कराया। उसने सोचा, शायद अमल बाबू के दल ने खरीद बढ़ा दी है। उसके मन में प्रश्न उठा, अमल बाबू जैसे लोग संसार को क्या दे रहे हैं ? रायबहादुर की कोठी के बाहर बना 'पब्लिक एयर रेड सेल्टर' याद आया। फिर कनाई ने सोचा, सुखमय चक्रवर्ती के युग में जिनकी आवश्यकता थी, वर्तमान काल में

उनकी उपयोगिता गत हो गई है; 'दे हैव प्लेड देयर पार्ट'—वे अपना अभिनय कर गये हैं। इसीलिए अकाल की वर्षा जैसे अमल बाबू आदि खड़े हो गये हैं।

षष्ठी बोला, क्या लाऊं? पैसे दें! होटल का भात लेकिन आप न खा सकेंगे। पूरी ला देता हूं। नीला बिटिया के लिए भी लाना है, वह लौट कर खायेंगी—वह भी लेता आऊंगा।

कुरते की जेब से चवन्नी निकाल कर षष्ठी को देते हुए कनाई ने कहा, जो चाहे, ले आ! नीला भी लौट ही आई है! वह बिछौने पर लेट गया। सारी रात जगा है, फिर सवेरे से घूमता रहा है, उत्तेजना में क्लांति का पता नहीं चला परन्तु अब अवसाद से स्नायु मण्डली शिथिल हो रही है।

षष्ठी चरण ने आकर देखा, कनाई गहरी नींद में सो रहा है। कई बार पुकारने पर भी जब वह न जागा तब पूरियां ढक कर रख दीं और स्वयं भी सो गया। कुछ देर बाद उसकी नाक भी बजने लगी। कुण्डा खड़कने की आवाज से कनाई की नींद टूटी, षष्ठी की नाक अब तक बज रही है। कनाई ने अलमारी में रखी टाइमपीस में देखा, पांच बज गये हैं। उसने पुकारा—षष्ठी! षष्ठी!

षष्ठी ने लेटे-लेटे ही एक बार लाल आंखें खोलीं और फिर सो गया।

—षष्ठी उठ, देख तो नीचे कौन है।

—उठता हूं। षष्ठी ने जड़ित कण्ठ से उत्तर दिया परन्तु उठा नहीं।

नीचे कुण्डा बराबर बज रहा है। कनाई ने जोर के साथ कहा, षष्ठी उठ, पांच बज गये। और स्वयं दरवाजा खोलने चला गया। दरवाजा खोलते ही उसने देखा, नीला खड़ी है - वह दफ्तर से लौट आई है।

नीला बोली—आप ?

भद्रता सूचक मुस्कान के साथ कनाई उत्तर दिया—हां

—नेपी ? नेपी भी आ गया ?

—नहीं, मैं नहीं जा सका।

नीला चुपचाप ऊपर चली गई। कनाई नीचे ही खड़ा रहा। वह सोचने लगा, नीला दफ्तर से लौटी है, हाथ मुंह धोयेगी, शायद अच्छी तरह स्नान करेगी फिर किसी सिनेमा में जायगी अथवा किसी भोजनालय में पहुंचेगी जहां उसके विदेशी मित्र भी आयेंगे। मेरा ऊपर जाना ठीक नहीं है। इधर भूख से कनाई का पेट भी जल रहा था। बाहर निकल कर वह एक चाय की दुकान पर पहुंचा और मक्खन रोटी खाकर चाय पी। दूकान पर काफी भीड़ है। शीत काल में पांच बजे ही दिन ढल गया है, सूर्य की शेष रश्मि विशाल भवनों की कार्निसों पर पहुंच गई है। संध्या होनें वाली है। दूकान में कल रात के विमान आक्रमण की चर्चा हो रही। आने वाली रात में फिर आक्रमण होने की आशंका भी उठ रही है। आंखों की दृष्टि, कण्ठ-स्वर के उद्वेग और मुखमण्डल की मुद्रा में उत्तेजना के साथ आतंक भी झलक रहा है। सड़क पर चलने वालों के पद-क्षेप अस्वाभाविक द्रुत हैं। संध्या होते ही शायद—! चाय पीकर कनाई उठा, उसे भी आफिस जाना है।

घर पहुंच कर वह कमरे में नहीं गया। बरामदे में विजयदा की पुरानी डेक चेयर पर बैठ कर षष्ठी से बोला—षष्ठी, मुझे आफिस जाना है।

षष्ठी बोला—हुं

नीला बाहर आगई। कनाई उठ कर खड़ा होगया। नीला बोली—आप उठे क्यों?

कनाई मुस्करा कर रह गया।

नीला ने पूछा, कहां गये थे? चाय बना कर राह देखती रही।

—बाहर गया था, चाय मैं पी चुका हूं।

—ओह! नीला भीतर चली गई। परन्तु दूसरे पल में ही बाहर लौट आई। कनाई को जान पड़ा कि वह कुछ कहना चाहती है। संभव है नेपी के सम्बन्ध में पूंछना चाहती हो। वह बोला, चिन्ता न करें—नेपी सकुशल लौट आयेगा।

—नेपी? नीला मुस्कराई। नेपी की चिन्ता करना निरर्थक है कनाई बाबू, मां भी उसकी चिन्ता नहीं करतीं। शायद आधी रात को आये और कुण्डा खड़काए या दरवाजे पर ही कुण्डली मार कर सो जाये। शायद तीन दिन बाद लौटे!

कनाई मुस्कराया।

नीला फिर बोली, आप बुरा न मानें तो एक बात पूंछूं।

कनाई बोला, बुरा क्यों मानूंगा, आप पूंछिए।

—गीता को आप नर्सिंग क्यों सिखा रहे हैं?

कनाई बोला और क्या करूं ? विजय दा ने व्यवस्था की है, गीता भी चाहती है। मैं आपत्ति कैसे करूं ?

नीला ने अनुयोग के स्वर में कहा, उसे पढ़ाना उचित था।

कनाई ने लंबी सांस ली।—पहले मैंने भी यही सोचा था परन्तु विचार करने से विजय दा की व्यवस्था ही ठीक जान पड़ी। पढ़ कर अपने पैरों पर खड़े होने में उसे बहुत दिन लगते—इसके अतिरिक्त वह अनिश्चित भी है।

—अपने पैरों पर खड़े होने की अपेक्षा शिक्षा अधिक महत्व-पूर्ण है।

—महत्वपूर्ण तो है—कनाई मुस्कराया—परन्तु अवस्था भेद से हमें कितने ही आदर्शों की बलि देनी पड़ती है। गीता के लिए यही मार्ग ठीक है। वह बहुत दिन तक दूसरों के कंधे पर बोझ नहीं बन सकती। स्वावलम्बी उसे होना ही पड़ेगा। नहीं तो एक बार जो लांछना—कहते-कहते कनाई रुक गया।

नीला ने विस्मय के साथ उसकी ओर देखा।

कनाई ने फीकी हंसी के साथ कहा, लड़की का इतिहास बहुत वेदनापूर्ण—बहुत करुण है मिस सेन !

नीला चुप रही परन्तु उसकी दृष्टि में प्रश्न की व्यग्रता स्पष्ट हो गई। लम्बी सांस लेकर कनाई ने कहा, बहुत दु:खी लड़की है, दुखी घर में ही उसका जन्म हुआ है, परन्तु इसका जो ऋण उसे चुकाना पड़ा है वह आप सुनेंगी तो सिहर उठेंगी। मेरे घर के पास एक बस्ती है—निर्धन परन्तु भले आदमियों की बस्ती।

गीता के माता-पिता वहीं रहते थे, मैं इसे बचपन से ही जानता हूं। शांत शिष्ट लड़की की बात-चीत और चाल-ढाल से ऐसा जान पड़ता था कि संसार के निकट अपने आप को गुरुतर अपराधिनी समझती है। बचपन में मेरे भाई छत पर खेलते थे और सड़क पर खड़ी यह, उन्हें आवाक् होकर देखती थी। मैं ने बुला कर अपनी बहन के साथ परिचय करवा दिया। फिर मेरी बहन के साथ ही स्कूल जाने लगी, उसकी सहेली बन गई। पढ़ने में यह अच्छी न थी परन्तु इसकी शांत प्रकृति देखकर हेड-मिस्ट्रेट ने फीस माफ कर दी थी। बिचारी किताबें भी न ले पाती थी, मेरी बहन की किताबों से ही पढ़ती थी। मैं इसे अपनी बहन की भांति ही स्नेह करता हूं फिर भी विजय दा ने जो व्यवस्था की है यही उचित है। हमारे अनुग्रह का बोझ लादकर वह क्यों पड़े?

कनाई का कण्ठस्वर करुण हो गया, नीला भी व्यथित हुई। बरामदे की रेलिंग पर जोर डाल कर वह म्लान दृष्टि से सामने की ओर देखती रही। वार्तालाप में वे अपने अनजान में ही परस्पर कुछ अन्तरंग हो गये। नये मार्ग की बन्धुरता जैसे पथिकों के चलने में ही सहज और समान हो जाती है, वैसे ही इस वार्तालाप ने उनका संकोच और विरूपता भी घटा दी। नीला ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, लड़की को आप केवल इन्हीं कारणों से यहां अवश्य न लाये होंगे। एक बार आपने किसी लांछना का उल्लेख भी किया था—जो दुःख-कष्ट आपने सुनाए हैं वे भी मानव जीवन की लांछना ही हैं; किन्तु हमारे देश में—

बाधा डालकर कनाई ने कहा, मिस सेन, दया करके आप लांछना की वह कहानी सुनने का आग्रह न करें।

नीला बोली, जाने दीजिए, मैं नहीं सुनना चाहती। परन्तु एक बात पूछूं—आप बुरा न मानें—

—पूछिए

—लड़की को जब आप मां-बाप के आश्रय से ले ही आये हैं तब उसके साथ आपको विवाह करने में भी विलम्ब न करना चाहिए।

धीरे-धीरे गरदन हिलाकर कनाई ने कहा—नहीं।

—क्यों ?

कनाई ने अब नीला के मुंह की ओर देखा, बोला, मेरे वंश का रक्त रुग्ण है मिस सेन। भविष्य में मेरे पागल हो जाने की संभावना अधिक है। मेरे वंश में दस बारह पागल हैं।

नीला के विस्मय और वेदना की सीमा न रही।

कनाई मुस्करा कर बोला, मेरा वंश कुलीन और धनी वंश रहा है। यह रोग अभिजात्य का अभिशाप है।

नीला चुपचाप सड़क की ओर देखती रही। कनाई भी कुछ क्षण मौन रह कर बोला, कल आपके दोनों मित्रों के साथ—मैं उन अंग्रेज सैनिकों की चर्चा कर रहा हूं—भेंट करने का अवसर नहीं मिला। किसी दिन परिचय करवा दें।

नीला बोली, मेरे साथ भी उनका सामान्य परिचय है, फिर किसी दिन मिले तो परिचय करवा दूंगी।

कनाई ने तीक्ष्ण दृष्टि से नीला की ओर देखा, उसने सोचा, जो परिचय विदेशियों के साथ रंगालय तक ले जाता है वह क्या सामान्य है ? नीला सड़क की ओर ही देख रही थी। दिन भर के परिश्रम की थकान और गीता की करुण कहानी के प्रभाव से वह एक उदास वैराग्य से आछन्न हो गई है। कनाई की तीक्ष्ण दृष्टि वह न देख पाई।

नीला नीचे देखते-देखते बोली, वे वास्तव में भले आदमी हैं, टामी का जो अर्थ हम समझते हैं वह उन पर लागू नहीं होता। भरती होने के पहले एक आक्सफोर्ड में पढ़ता था और एक अध्ययन समाप्त करके वहीं—

षष्ठीचरण के आविर्भाव ने वार्तालाप यहीं रोक दिया। उसने कहा, कनाई बाबू, पूरियां रख गया था, आपने खाई नहीं ?

—पूरियां ?

—हां। बाजार से लौटा तो देखा कि आप सो रहे हैं। यहीं ढक दी थीं।

नीला ने व्यस्त होकर कहा, आपने दिन भर कुछ खाया नहीं ?

कनाई मुस्कराया—सवेरे गीता ने भर पेट खिलाया था, शाम को दूकान से खा आया हूं।

षष्ठी बोला—ये भी खा डालें।

—नहीं। ये अब न खा सकूंगा।

—फिर ? षष्ठी भारी चिन्ता में पड़ गया।—इसमें पैसे लगे हैं—बेकार जायगे। खा डालिए—पेट में पड़ कर गुन देंगी।

—नहीं, नहीं, किसी को दे दे।

—दे दूं ?

—हां।

नीचे कुण्डा खड़का। कनाई ने झुक कर देखा—नेपी खड़ा है। पुकारना नेपी का अभ्यास नहीं है। अपने घर में भी वह धीरे से कुण्डा हिलाकर ही बुलाता था। कनाई बोला—नेपी—और फिर वह नीचे उतर गया।

नेपी कमरे में आया, कनाई उसे देख कर सिहर उठा। रूक्ष और धूल धूसरित बाल, क्लान्त, अवसन्न और शुष्क मुख, कपड़ों पर रक्त के धब्बे। कनाई की दृष्टि देखकर नेपी के ओठों पर म्लान मुस्कान आई।

कनाई ने पूछा—यह खून कैसा है ?

—बम से आहत व्यक्तियों का खून है कानूदा।

—आहतों का रक्त ?

—हां। वहां मर्मभेदी दृश्य था। एक बस्ती पर बम गिरा है। कुछ निरीह अभागे—ओह ! कैसा दृश्य था वह—किसी का हाथ कट गया है, किसी का पैर जाता रहा है, किसी की पीठ में 'सिपलेंटर' घुस गया है ! बस्ती में हाथ-पैर की उंगलियां पड़ी हैं !

कनाई ने एक लम्बी सांस ली, सोचा, कलकत्ते में युद्ध की बलि आरंभ हो गई है।

नेपी बोला, एक युवक की यंत्रणा देखी, आपसे कैसे बताऊं? बेहोशी में वह पशुओं की तरह कराह रहा था और उसकी स्त्री, लड़की भाग्य से बच गई है, वह गूंगी की तरह बैठी थी, आंखों में आंसू भी न थे! लड़की सुन्दरी है!

—कितने आदमी मरे हैं नेपी?

प्रश्न सुनकर नेपी और कनाई ने मुंह फिराया, देखा, नीला जीने के द्वार पर खड़ी है।

नेपी ने उत्तर दिया—मरे अधिक नहीं; ठीक, 'डायरेक्टहिट' नहीं हुए; 'स्पिलेंटर' से कुछ घायल हुए हैं। लगभग ६ आदमियों को गहरे आघात लगे हैं।

नीला बोली, स्नान कर ले!

नेपी जाते-जाते ठिठक गया—कल मेरे साथ आपको चलना होगा कानूदा।

कनाई ने कोई उत्तर न दिया। वह सोच रहा था, 'स्ट्रांग रूम' में बैठे हुए मि० अमल मुकर्जी बच गये हैं।

नेपी बोला, 'ब्लड बैंक' जाना है। मैं रक्त दूंगा। आपको भी मेरे साथ चलना होगा। वह अबूझ की भांति मुस्कराया।

नीला का चेहरा चमकने लगा, वह बोली—मैं भी चलूंगी नेपी। मैं भी रक्त दूंगी।

नेपी ने म्लान मुख से कहा, 'ब्लडसिरम' मिल जाता तो वह जवान शायद बच जाता! ओह, उसकी स्त्री का मुख देखकर मुझे जो वेदना हुई वह मैं कैसे बताऊं?

नेपी और नीला ऊपर चले गये। कनाई वहीं स्तब्ध खड़ा रहा। वह सोचने लगा, मेरे शरीर में सुखमय चक्रवर्ती की रक्तधारा है–अस्वस्थ रक्त है—रक्त कणिकाएं रोग के विष से जर्जरित होगई हैं। आज मैं अपने रक्त से भी मनुष्य की सेवा करने का अधिकार नहीं रखता! संभव है इस समय 'ब्लड बैंक' रक्त की स्वस्थता का विचार न करे परन्तु मैं दूं कैसे? उसने सोचा, साढ़े छै बजे हैं। अभी 'क्लीनिक' खुला होगा। अभी रक्त की परीक्षा करवाई जाय और रोग के विष का परिमाण जान कर इंजेक्शन लिए जांय। मेरा रक्त स्वस्थ हो जाय, मैं नवीन हो जाऊं। फिर सबसे पहले अपना रक्त आहतों की सेवा में दूंगा—उनकी सेवा में लगाऊंगा जिनके मुंह का कौर छीन कर हमने पुरुषानुक्रम से रक्त का प्राचुर्य प्राप्त किया है—उन्हीं की सेवा में अपना रक्त ढाल दूंगा!–निशान लगा दूंगा कि मेरा रक्त ऐसे ही लोगों की सेवा में लगे!

—बाईस—

इक्कीस दिसम्बर। रात बीतने ही वाली है।

नेपी ने उत्तेजित कण्ठ से पुकारा—दीदी! दीदी! दीदी!

नीला के सुप्त मस्तिष्क में साइरन की ध्वनि ने पहले ही स्पन्दन उत्पन्न कर दिया था, वह उठ कर बैठ गई। साइरन बज रहा है, उसकी ध्वनि ऊंचे परदे से नीचे परदे में उतरती है और फिर ऊपर चढ़ती है। मानों महानगरी की आत्मा अपने सिर पर मरण लोक के शिकारी बाज के पंखों का स्वर सुनकर और भय से

आतंकित होकर विलम्बित छन्द में कातर क्रंदन कर रही है। बीच-बीच में स्वास रुद्ध हो जाती है। नीला की आंखों में निद्रा-विह्वल दृष्टि है।

नेपी की आंखें उत्तेजना से चमक रही हैं। वह बोला, उठो, साइरन बोल रहा है—साइरन!

नीला की दृष्टि अब स्वाभाविक हो आई। वह मुस्कराई।

कमरे के दरवाजे पर विजयदा आकर खड़े हुए, उनके पीछे षष्ठी है। षष्ठी के कंधे पर कम्बल है और बगल में बिछौना है। विजय दा के एक हाथ में फस्ट एड का बाक्स और दूसरे में कागज कलम है! जान पड़ता है वे इस समय भी कुछ लिख रहे थे। वे बोले, उतर आओ।

नीला उठी, हंस कर बोली, कहां जायंगे?

—और कहां जायंगे—सीढ़ी के नीचे। सिर पर एक छत तो अधिक हो जायगी।

नीला बाहर निकल कर बोली, फिर छाता भी ले लीजिए, उसे लगा लेंगे तो सिर पर एक आच्छादन और बढ़ जायगा।

विजयदा हंस कर बोले, ठीक कहती हो, षष्ठीचरण, वह बड़ा टेबल, जो स्थान के अभाव में छत पर पड़ा है, कल ज़ीने के नीचे बिछा देना। एक शानदार छत बन जायगी।

साइरन बन्द हो गया है।

हठात् दुम् दुम् दुम् की ध्वनि उठी।—दूर से विस्फोरण का शब्द आया।

जीने के नीचे विजय बा ू अमीरी महफिल जमा कर ैठे। नेपी स्तब्ध बैठा है। षष्ठी दीवाल के सहारे उढक कर आराम कर रहा है। नीला भी स्तब्ध है, उसके कान प्लेन और विस्फोट की ध्वनि सुनने के लिए उत्सुक हैं।

घर के दूसरे हिस्से की हलचल सुन पड़ती है। कोई कह रहा है, कांपता क्यों है? ए मणि कांपता क्यों है? बैठ. बैठ जा।

भारी परन्तु मृदु कण्ठ से कोई पुरुष बोला, जान पड़ता है वे परिवार के अभिभावक हैं; उनके कण्ठ स्वर में उपदेश और आदेश मिला है—दुर्गा का नाम लो, दुर्गा के नाम से दुख दूर होगा, विपत्ति कटेगी। बोलो दुर्गा, दुर्गा, दुर्गा, जपो।

विजय दा बोले, भूख लगी है। कुछ होता तो—

नीला ने अकस्मात् पूछा—रात कितनी है? कितने बजे हैं?

—साइरन तीन बज कर पच्चीस मिनट पर बोला है। भूख का दोष नहीं है। जान पड़ता है तुम्हें भी भूख लगी है।

नीला हंस कर बोली—कैसे जाना आपने?

—नहीं तो टाइम की चिन्ता क्यों होती? भूख लगने के न्याय या अन्याय का विचार कर रही हो न!

नीला जोर के साथ हंसी।

कोई इतनी देर में ही नाक बजाने लगा है। और कौन हो सकता है, विजय बाबू ने टार्च जला कर उसकी रोशनी षष्ठी के मुंह पर डाली। वह दीवाल के सहारे लुढ़क कर मजे में सो रहा है।

विजय बाबू ने हंस कर टार्च बंद कर दी और बोले, शासकों

ने इस अवसर पर ग्रामोफोन बजाने की सलाह दी है। ग्रामोफोन जब नहीं है तब नीला तू एक गीत ही सुना दे !

नीला हंसी—गीत ?

—भूतों की कहानी ही सही। कनाई दफ्तर गया है, वह ऐसी कहानियां अच्छी सुनाता है।

उधर के हिस्से में अकस्मात् सशंकित गुंजन ध्वनि उठी—मणि ! मणि !

—यह क्या हुआ ?

—क्या ?

—मणि शायद बेहोश हो गया !

—रोशनी ! बत्ती जलाओ !

—टार्च, टार्च ! बिजली न जलाना।

—मणि ! मणि !

—पानी ! पानी का लोटा कहां है ?

—नहीं लाई ? समझ गया, मैं तो पहले ही जानता था कि ऐसा ही कुछ अवश्य होगा। सब ईडियट रास्केल जमा हैं। सबसे बड़ी ईडियट यह कुलच्छनी है।

कुलच्छनी विशेषण से सम्बोधिता महिला ने ही शायद मृदु-करुण स्वर में पुकारा—मणि ! मणि !

—यह पानी ले आई।

—मा, हट, हट देखूं। पानी के छींटे दूं।

विजय बाबू टार्च जला कर और स्मेलिंग स्लाट की शीशी लेकर खड़े हुए, बोले, नीला तुम भी आओ !

ठीक इसी समय आल क्लीयर का संकेत हो गया। एक जैसा लम्बा स्वर—जैसे नगर ने परम आश्वासन के साथ कहा—आः !

उधर से आवाज आई—बस ठीक हो गया, मणि ने आंखें खोली हैं। मणि, कुछ नहीं, अब कोई भय नहीं, आल क्लियर हो गया। मणि !

विजय बाबू ने पुकारा, सुरेश बाबू ! सुरेश बाबू !

—क्या हुआ मणि को ? सहायता की आवश्यकता है ?

—नहीं, नहीं, बच्चा है, डर गया था, और कुछ नहीं, डर गया था। अब ठीक हो गया है। ठीक हो गया है।

नीला ने पूछा, बच्चा छोटा है शायद ?

बिजयदा बोले, तुम आज ही आई हो, कुछ दिन रहोगी तो मणिचन्द्र का परिचय मिलेगा। पांच वर्ष का बंगाली वीर है। जितना शैतान है उतना ही डरपोक है। बाहर से आता है तो कभी-कभी मुझे या षष्ठी को बुलाता है, जीने में खड़ा होना पड़ता है। विजय बाबू हंसने लगे।

नीला को अपने भतीजे की सुध आई। वह छै वर्ष का हो गया है, शैतान नहीं है परन्तु भीरु बेहद है। दादा शांत और निरीह हैं, भाभी भी सदा बीमार और दुर्बल रहती हैं, बच्चा भी ऐसा ही है। शरीर से भी दुर्बल है और प्रकृति से भी। नीला ने एक लम्बी सांस ली। वह आज सवेरे घर से चली आई है। पिता ने

जो तिरष्कार किया है उससे हृदय पर गहरी चोट लगी है। उसके स्वभाव, शिक्षा और प्रकृति से परिचित होकर भी पिता ने अन्याय-पूर्ण अविश्वास में भर कर आघात किया है, कन्या के रूप में पिता से संसार के सर्वोत्तम न्यायधर्म से सम्मत जो मर्यादा उसे मिलनी चाहिए, पितृत्व के दंभ और दुर्बल चित्त की आशंका से वे वह मर्यादा भी तोड़ बैठे हैं। इस तीव्र अन्तर्वेदना और क्षुब्ध अभिमान ने नीला को दिन भर में एक बार भी घर की चिन्ता नहीं करने दी। परन्तु मणि की चर्चा ने उसके मन में माया ममता से पूर्णतया अभिरिक्त आशंका जगा दी है! वह सोच रही है—संभव है इसी लड़के की तरह—

नीला की चिन्ताधारा में विजय बाबू ने बाधा डाली, ठिठक क्यों गई? आओ, चार तो बजने वाले हैं। थोड़ी देर सो लो।

बिस्तरे पर लेटने के बाद भी नीला को नींद न आई। घर की चिन्ता घेरे रही। पिता, माता, सीधे-साधे भाई, बीमार और दुर्बल भाभी तथा भीरु भतीजे की याद बार-बार आती रही। आकस्मिक उत्तेजना की आशंका से कौन, कब और कैसे अस्वस्थ हो गया था—इसका स्मरण मन को उत्तरोत्तर चंचल और अधीर करने लगा। अन्धकार में स्थिर दृष्टि से देखते-देखते आंखों में पानी भर आया, आंसू पोंछ कर उसने पुकारा—नेपी!

नेपी ने कोई उत्तर न दिया वह संभवतः सो गया है। विजयदा भी अवश्य सो गये हैं नहीं तो नेपी के बदले में वे ही बोलते। षष्ठी की नाक बज रही है। बगल के घर में भी सन्नाटा है। सब फिर

सो गये हैं। नीला ने निश्चय किया कि कल सवेरे ही एक बार घर जाऊंगी, नेपी को भी ले जाऊंगी।

२२ दिसम्बर। सबेरे नीला जब उठी तब साढ़े आठ बज गये थे। घर जाने के निश्चय में यह प्रत्याशा भी प्रछन्न थी कि इस अशांति पूर्ण विच्छेद का अन्त हो जायगा। इस अन्तरनिहित आशा से उसका मन कुछ शांत हुआ और वह सबेरा होते होते फिर सो गई, इसीलिए उठने में देर लगी। बिछौने से उठकर नीला ने देखा कि विजय बाबू ने बरामदे में चाय की महफिल जमा ली है। कनाई बाबू भी दफ्तर से लौट आये हैं। विजय बाबू उन्हें कुछ पढ़ कर सुना रहे हैं। कल रात जब साइरन बजा था तब विजय बाबू के हाथ में यही कागज थे—संभवत: वे रात भर यही लिखते रहे हैं। रसोई में षष्ठी पतीली में चम्मच चला रहा है—भोजन तक बनने लगा है। नीला स्वभावत: लज्जित हुई। परसों तक वह बड़े सवेरे उठकर गृहकार्य में मां की सहायता करती रही है। दफ्तर से लौटने के बाद भी काम में जुटती रही है। काम भी सिलाई, कढ़ाई, झाड़-पोंछ या कमरा सजाने तक ही सीमित नहीं रहे, रसोई के कामों में भी हाथ लगाती रही है। आज इतनी देर से उठने में लज्जा होनी ही हुई। उठ कर चट पट हाथ मुंह धोने के लिए चली गई। लौटते ही विजय बाबू ने सम्भाषण किया, गुड-मार्निंग, आओ, महफिल लगी है। कल एक लेख लिखा है, कनाई को सुना रहा हूं। तुम अब अंतिम भाग ही सुन लो, प्रारंभ फिर लेना।

नीला बोली, पढ़िए।

राजनीतिक लेख है। मि० चर्चिल के इस कथन की आलोचना की गई है कि 'मैं साम्राज्य का दिवाला निकालने के लिए प्रधान मंत्री नहीं बना।'

लेख समाप्त हुआ तो नीला ने पूछा, नेपी कहां है?

—नेपी?—विजय बाबू हंसे—वह तो सबेरे ही छू हो गया है।

—सबेरे ही चला गया? नीला उदास हुई।

—अभी लौट आवेगा। जन सेवा समिति के दफ्तर तक यह समाचार लेने गया है कि कहां क्या हुआ है। जल्दी लौटेगा। मुझ से कनाई को रोक रखने के लिए कह गया है। इसे 'ब्लड बैंक' ले जायगा, रक्तदान करेगा। सुना है, तुम भी रक्तदान करने जाओगी?

नीला ने शुष्क मृदुस्वर में उत्तर दिया, हां, कहा तो था।

विजय बाबू बोले, बैठो, खड़ी क्यों हो? चाय पिओ! कनाई टी-पाट खिसका दे।

कनाई कुछ सोच रहा था। विजयदा की बात से प्रकृतिस्थ होकर बोला, मैं बना देता हूं।

नीला बोली, नहीं, नहीं, मैं बना लूंगी।

विजयदा ने हंसकर पूछा—कनाईचन्द्र, तुम रक्तदान न करोगे?

कनाई ने विजय बाबू के मुंह की ओर देखा।

नीला को ऐसा जान पड़ा कि इस प्रश्न में व्यङ्ग का श्लेष है। चाय बनाकर और प्याला हाथ में लेकर वह बोली, आप क्या इसे अनुचित या हास्यकर समझते हैं विजयदा?

—नहीं, मैंने भी एक बार रक्त दिया है। परन्तु 'ब्लड बैंक' के उल्लेख से मुझे एक पुरानी बात याद आ गई। एक बार हम लोगों ने एक बैंक खोली। जिन लोगों ने उसमें रुपये जमा किए उनमें से किसी की भी आमदनी पचास रुपये मासिक से अधिक न थी। निश्चय हुआ कि बैंक की रकम उन लोगों में 'इनवेस्ट' की जाय जो हम में से बेकार हैं। फल यह हुआ कि एक-आध महीने में ही बैंक ने लालबत्ती जला दी। बिजय बाबू हंसने लगे। फिर अकस्मात् हंसी रोक कर बोले, फिर भी मनुष्य की रक्षा तो करनी ही होगी। मैं जब नेपी को देखता हूं तब इच्छा होती है कि एक बार फिर 'ब्लड बैंक' में रक्त दे आऊं और लिख आऊं कि नेपी को कभी चोट लग जाय तो इस रक्त से उसकी सेवा की जाय।

कनाई खड़ा हो गया। बोला, मेरा शरीर अच्छा नहीं है। नहा कर सोऊंगा। कनाई का मन रात से उद्‌विग्न और चंचल हो रहा है। कल शाम को ही वह अपने पितृ-बन्धु डाक्टर के पास गया था। परीक्षा करने के लिए अपना रक्त भी दे आया है। परीक्षा का परिणाम जानने के लिये ही वह अधीर हो रहा है। उसकी कल्पना तक कुण्ठित हो गई है। वह सोचता है, शायद रक्त में विष की मात्रा रक्त कणिकाओं से भी अधिक हो गई है। मैं सुखमय चक्रवर्ती के लड़के के बड़े लड़के का बड़ा लड़का हूं— मेरे शरीर में उनके विष की क्रिया प्रबलतम रूप में होनी चाहिए। पुरुषानुक्रमिक और सद्य अर्जित सबल विषशक्ति मेरे शरीर में तरुणतेज से प्रवाहित हो रही है।

कहते हैं शहर में आज परचे गिरे हैं। सिंगापुर में डूबे हुए लड़ाकू जहाज प्रिंस आव वेल्स का चित्र शायद उनमें छपा है। कुछ लोग कहते हैं, उनमें जापान के सम्राट और जनरल तोजो का चित्र है, कुछ कहते हैं, म्रियमान चर्चिल साहब का व्यङ्ग चित्र बनाया गया है। परचा किसी ने देखा नहीं परन्तु प्रत्येक व्यक्ति ने जिससे सुना है उसने अपनी आंखों से देखा है। परचे में चित्र चाहे जो हो, यह अवश्य लिखा है, 'कीप अवे फ्राम कलकत्ता' कलकत्ते से चले जाओ।

शहर में अफवाह उड़ रही है, बड़े दिन से लगा कर न्यूइयर्सडे तक वे कलकत्ते को समभूमि बना देंगे। मनुष्यों के मन में आतंक चुपचाप उतर रहा है। आतंकित मनुष्य प्रत्येक बात पर विश्वास कर रहे हैं और भाग जाने की युक्ति को प्रबल बना रहे हैं।

हावड़ा और स्यालदा स्टेशन पर जनता की भारी भीड़ जमा हो गई है। प्लाटफार्मों पर तिल धरने की भी जगह नहीं रही। बाल-बच्चे और माल-असबाब लिए लोग टिड्डी की तरह सटे बैठे हैं। बड़े फाटक पर रेल कर्मचारियों के स्थान पर गोरे सैनिक नियुक्त हुए हैं। कुलियों की मजूरी पैसों और आनों में नहीं चुकती, पांच, दस, बीस और पचास रुपये तक पहुंच गई है। धनियों का ढेरों सामान भीतर घुस रहा है। मध्यम वर्ग के व्यक्तियों से लगा कर निर्धन मजदूरों तक की एक ही दशा है—पड़े हैं। गाड़ियों पर गाड़ियां छूट रही हैं। जो हिम्मत करते हैं वे

पिसपिसाकर घुस जाते हैं, शेष पड़े हैं—चिल्ला रहे हैं। टैक्सियां, गाड़ियां, रिक्साएं और यात्रियों से ठसाठस भरी मोटर बसें पल-पल पर आती हैं। हावड़े के पुल पर जन समुद्र उमड़ पड़ा है। देशवासी देश जा रहे हैं, मारवाड़ी मारवाड़। धनियों ने मधुपुर, शिमुलतला, बनारस और देवघर चुना है। क्लर्क नवद्वीप, कटवा, बर्धमान, बोलपुर और नौहाटी की ओर भाग रहे हैं। अपने मकान में या किराये के घर में गिरस्ती का सामान—मनुष्य का अथा सर्वस्व छूट गया है। मनुष्य प्राण बचाने के लिए भाग रहा है। जंगल में आग लगती है, जानवर भागते हैं, पत्ती भागते हैं, पतंगे भागते हैं, उसी तरह मनुष्य भाग रहा है। जीवन बचाने के लिए वह पागल हो गया है। जो अब तक नहीं भागे, वे चंचल हो रहे हैं, अधीर हो रहे हैं, अन्तर के भय को बराबर बढ़ाते जा रहे हैं, यही भय उन्हें भी सब माननीय संस्कृतियों की सीमा लांघ कर ज्ञानशून्य हो कर भगाने के लिए बाध्य कर सकता है। आफिस शाम को ठीक चार बजे बंद हुए हैं। ढलान की ओर द्रुतगति से बढ़ने वाले जल प्रवाह की भांति जनस्रोत घरों की ओर बढ़ रहा है। शंकित दृष्टियां आकाश की ओर भी देखती जाती हैं। आकाश में अपराह्न का प्रकाश म्लान और पूर्व में शुक्ला त्रयोदशी का चन्द्रमा धीरे-धीरे उज्वल हो रहा है।

ट्राम से उतर कर नीला को याद आया, सवेरे मैंने दफ्तर से लौट कर घर जाने का निश्चय किया था परन्तु भूल गई।

विजय बाबू के घर में षष्ठी अकेला है। विजय बाबू दफ्तर

गये हैं। कनाई बाबू दोपहर को भोजन करने के बाद निकले हैं और अभी नहीं लौटे। दफ्तर से चपरासी विजय बाबू की एक चिट्ठी लाया है। चिट्ठी खुली है और कनाई के नाम है। कनाई हैं नहीं। षष्ठी परेशान है कि चिट्ठी किसे दे। नीला को देखकर उसकी जान में जान आई। चिट्ठी देकर बोला, देखो तो बिटिया, बाबू ने क्या लिखा है ?

नीला को दुबिधा हुई परन्तु चिट्ठी खुली देखकर उसने पढ़ी। विजयदा ने कनाई बाबू को अभी आफिस बुलाया है। रात के प्रधान सम्पादक गुणदा बाबू भारत रक्षा विधान के अनुसार पकड़े गये हैं। रात की व्यवस्था के लिए कनाई को बुलाया गया है। गिरफ्तारी के समय गुणदा बाबू अपना कर्तव्य समझ कर पत्र के संचालकों को अपने प्रत्येक सहयोगी की कार्यक्षमता बता गये हैं। कनाई की अनुवाद शक्ति और कर्तव्यनिष्ठा की वे विशेष प्रशंसा कर गये हैं। संचालकों ने १५ दिन के लिए कनाई को भार देकर परीक्षा लेने का निर्णय किया है। परिणाम संतोषजनक हुआ तो कनाई को स्थाई रूप से यह पद मिल जायगा।

नीला ने एक स्लिप पर लिख दिया कि कनाई बाबू बाहर गये हैं। लौटेंगे तो उन्हें भेज दूंगी।

षष्ठी ने पूछा, लौटने में देर कर दी है, चाय तो पी ली होगी ?

नीला ने नेपी की ओर देख कर कहा—नहीं, चाय तो हम दोनों ने नहीं पी।

—यह तो मुश्किल हुई। चूल्हे पर तो भात चढ़ा है।

—बाजार से ले आओ। नीला ने एक चवन्नी दी। दो आने की चाय और दो आने की पूरी। हाथ-मुंह धोने और कपड़े बदलने के लिए वह बाथ रूम में चली गई। उसकी चाल-ढाल और व्यवहार में अणुमात्र भी जड़ता नहीं है। इस चिट्ठी ने उसे भी दुःख और वेदना से मुक्ति दी है।

बाथरूम से बाहर निकल कर नीला ने देखा, नेपी वैसे ही बैठा है और विजय दा की चिट्ठी उलट-पुलट रहा है।

नीला बोली, तू बैठा है नेपी? हाथ-मुंह नहीं धोये?

नेपी ने उदास स्वर में कहा—गुणदा बाबू को पकड़ ले गये?

नीला कोई उत्तर न दे पाई, चुप रह गई।

नेपी बोला, गुणदा बाबू तो आजकल राजनीति से बिल्कुल अलग थे।

नीला बोली—तू हाथ मुंह धो आ। षष्ठी चाय लाता होगा। ठण्डी हो जायगी तो फिर गरम न होगी। चूल्हे पर भात चढ़ा है। ठहर, मैं देखूं चावलों में पानी तो कम नहीं है।

पानी कम था। पानी डाल कर नीला ने पतीली के ऊपर जमी फेन की लकीरें पोंछ दीं। उसने देखा रसोई में सफाई का नाम भी नहीं है और कल सवेरे जब वह खाने बैठी थी तब इतनी सफाई थी कि कमरा चमक रहा था। गीता ने थाली परोसी थी। तब गीता थी। वह सफाई गीता के हस्त-संचालन का परिणाम थी। वह कल गई है और षष्ठी ने एक ही दिन में कमरा कूड़े से भर दिया है। नीला ने सोचा, चाय पीकर मैं रसोई साफ करूंगी।

जीने में षष्ठी की पगध्वनि सुन पड़ी। हाथ धोकर वह कमरे में आ गई।

षष्ठी ने चाय ढाल कर दी। नीला बोली, रसोई कितनी गंदी कर रखी है षष्ठी! गीता कल ही गई है, वह इसे कितना साफ रखती थी।

षष्ठी बोला, गीता बिटिया आज आई थी।

—कनाई बाबू शायद उसी के साथ गये हैं?

—कनाई बाबू? वे तो रोटी खाकर ही बाहर चले गये थे। शाम को गीता के साथ कैसे जाते? बाबू भी नहीं थे। गीता बिटिया लौट गई। उसके साथ एक और लड़की भी थी— वह भी नर्स थी।

नेपी भी आ गया।

चाय की चुस्की लेते-लेते नीला ने पूछा, उन दोनों साहबों से फिर तेरी भेंट नहीं हुई?

—नहीं। शाम को एस्प्लेनेड पर देखा जाय तो शायद मिल जांय। उस दिन तो तुमने इतनी जल्दी थी कि न उनका पता पूछा, न अपना बताया।

कुछ देर मौन रहकर नीला ने कनाई की चिट्ठी उठा ली। एक बार फिर पढ़कर बोली, कनाई बाबू को एक 'लिफ्ट' मिल जायगी।

नेपी बोला, कनाईदा न जाने सदा उदास क्यों रहते हैं—ऐसे 'पावर फुल' आदमी—तुम जानती हो?

नीला हंसी। परिचय घनिष्ठ न होते हुए भी वह कनाई को

सहपाठिनि है। कनाई को केन्द्र बनाकर हमजोलियों में जो हास परिहास होता था वह नेपी नहीं जानता। गीता और कनाई की इस परिणति की किसी ने कल्पना भी न की थी। अब कनाई का वेतन बढ़ेगा—;अकस्मात् उसकी चिन्ताधारा रुक गई, कनाई ने कल जो बात कही थी वह याद आई। उसने नेपी से पूंछा, हां रे? तू कनाई बाबू के घर गया है?

—ओह, बहुत बड़ा घर है परन्तु अब टूट-फूट कर बरबाद हो गया है। कनाईदा के बाबा कभी भारी पूंजीपति थे।

—कनाई बाबू के माता-पिता क्या पागल हैं?

—पागल तो नहीं हैं लेकिन कुछ अजीब से हैं। उनके घर की स्त्रियां इतनी सुन्दरी हैं कि क्या कहूं? कनाईदा ही कितने सुन्दर हैं—वे इनसे भी ज्यादा सुन्दरी हैं और आबरू ऐसी है कि बाप रे बाप!

नीला अकारण हंसने लगी।

नेपी बोला—हंसती क्यों हो?

नीला हंसते-हंसते बोली—बुरका पहनती हैं?

—बुरका?

—हां, कनाई बाबू के घर की औरतें बुरका पहनती हैं?

षष्ठी ने आकर पूछा, बिटिया, कनाई बाबू कब आवेंगे? दफ्तर जाना है उन्हें। भात तो बन गया।

नीला बोली, क्या पता।

षष्ठी बोला—बाबू ने बुलाया भी है।

नेपी उद्विग्न होकर बरामदे में खड़ा हो गया।

नीचे दरवाजे की जंजीर खड़की।

नेपी ने झुक कर पूछा, कौन ? कनाई दा ?

—कहां थे आप ? आफिस नहीं गये, वहां से चपरासी आया था। गुणदा बाबू को पुलिस पकड़ ले गई है। ठहरिए आता हूं।

नेपी नीचे उतरने लगा, अभी जीने के बीच में ही पहुंचा था कि साइरन की आतंकित ध्वनि से सम्पूर्ण महानगरी कांपने-सी लगी। नेपी क्षण भर के लिए ठिठका, फिर दौड़ कर जीना पार किया और दरवाजा खोला परन्तु वहां कोई नहीं। सड़क पर चांदनी बिछी है परन्तु कनाई वहां भी नहीं है। नेपी पहले दरवाजे से बाहर निकला फिर सड़क पर उतर गया, पुकारा, कनाई दा ! कनाईदा !

कोई उत्तर न मिला। साइरन अब तक बज रहा है, घरों की खिड़कियां प्राय: सभी बंद हैं—जो एक दो खुली हैं, वे भी बंद हो रही हैं; झिलमिलियों से प्रकाश की जो आभा बाहर आ रही थी वह भी बुझ रही है। रास्ते में सन्नाटा है। नेपी ने फिर उत्कण्ठित हो कर पुकारा, कनाई दा !

भीतर से नीला की उत्कण्ठित ध्वनि भी आई—नेपी !

नेपी ने उधर देख कर कहा, कनाईदा न जाने कहां गये।

नीला ने भी दरवाजे के बाहर आकर चारों ओर देखा, सर्वत्र सन्नाटा है, फिर भी उसने पुकारा—कनाई बाबू !

कनाई सड़क पर द्रुतगति से जा रहा है। साइरन की ध्वनि सुनते ही उसकी उत्तेजित स्नायु शिराएं गभीरतर उत्तेजना से थर-थर कांपने लगी थीं—झंकार नहीं—उन्मत्त टंकार से। मृत्यु-गर्भ-बम लिए जापानी विमान आ रहे हैं, उसने सोचा, मैं देखूंगा ये बम कहां गिरते हैं। संध्या से वह ऐसी ही उन्मत्तावस्था में एक पार्क में बैठा था फिर गंगा के किनारे गया था। गंगा के किनारे जाने का उद्देश्य आत्म हत्या करना था।

भोजन करने के बाद कनाई अपने पितृवन्धु डाक्टर के पास पहुंचा था। रक्त परीक्षा का परिणाम जानने के लिए वह उद्वेगपूर्ण आग्रह से इतना अधीर हो गया था कि एक क्षण भी भारी जान पड़ता था। डाक्टर ने उसका आग्रह और आकुलता देखकर यथा संभव शीघ्र परिणाम बताने का बचन दिया था। आज का सायं-काल वह निश्चित समय था। भोजन करने के बाद वह ट्राम में कई बार इधर उधर निरुद्देश्य घूम कर साढ़े तीन बजे पहुंचा। डाक्टर ने हंस कर कहा, अभी कुछ देर है—बैठो।

कनाई बैठ गया और इस भीषण एवं घृणित व्याधि से सम्बन्ध रखने वाली एक डाक्टरी पुस्तक पढ़ने लगा। वंशानुक्रमिक रक्त-संचारित इस व्याधि-विष के परिणाम का उल्लेख पढ़ते-पढ़ते उसके हाथ कांपने लगे, ओह यह विष क्या नहीं कर सकता? इस रोग का रोगी अंधा हो सकता है, बहरा हो सकता है, स्मृति से हाथ धो सकता है। पक्षाघात और उन्माद से पीड़ित हो सकता है। उसने सोचा चक्रवर्ती वंश की तीन पीढ़ियों की तरुण विष-शक्ति मेरे रक्त में छाई है।

डाक्टर बोले, तुम साइंस के विद्यार्थी हो, मैं प्रसन्न हूं कि तुमने परीक्षा कराने की आवश्यकता समझी है। तुम्हारे पिता मेरे क्लास फ्रैंड थे। बचपन में कई बार तुम्हारे घर गया हूं। तब तुम्हारे चाचा और बुआ आदि सब छोटे थे। उनके रोगाछन्न मुखमण्डल देखकर ममता होती थी। छोटे बाबू, तुम्हारे बाबा का छोटा लड़का अकस्मात् पागल हो गया। लोग कहते यह चक्रवर्ती महाशय के पूर्वजन्म का अभिसम्पात है। तारकनाथ बाबा के द्वार पर धरना देने से यह पता चला है। फिर जब मैं डाक्टर हो गया और डाक्टर बोस का 'एसिस्टेंट' बनकर तुम्हारे बाबा की चिकित्सा की तब समझ में आया। तब तुम्हारे पिता के दांत गिरने लगे थे और उनकी आयु बाइस-तेइस से अधिक न थी। मैंने कहा, रक्त की परीक्षा करवा लो। वे बोले हुं। बहुत कहने सुनने से परीक्षा करवाई परन्तु 'इंजेक्शन' न लिए, सालसा पीने लगे। तुम ठीक कर रहे हो। रक्त में जो दोष है उसे ठीक कर लो। 'बी ए न्यू मैन' संसार में स्वस्थ रक्तधारा का वंश स्थापित कर जाओ।

कनाई स्तब्ध होकर बैठा था और किताब के पन्ने उलट रहा था। 'संसार में स्वस्थ रक्तधारा का वंश स्थापित कर जाओ।' डाक्टर ने कहा और वह सोचने लगा, मनुष्य क्या कहीं व्याधि हीन रक्त रहने देगा? वैषम्य पीड़ित मानव समाज की मूल व्याधि तो क्षुधा है, उदर की क्षुधा-रक्त मांस की क्षुधा। जिन्हें उदर की क्षुधा नहीं है—क्षुधा मिटाने के बाद भी जिनके भण्डार

भरे रहते हैं वे रक्त-मांस की क्षुधा के विलास में पेट की क्षुधा से पीड़ित मानवियों को खरीदते हैं और अबाध व्यभिचार से उनमें इस विष की सृष्टि करते हैं; वंचित अशिक्षित उदरान्न पीड़ित मनुष्य अंधकारचारी सरीसृप की भांति अपनी अस्वस्थ जैव प्रवृत्ति से यह विष फैला रहे हैं। हां जब सभ्यता या संस्कृति में धर्म का प्राधान्य था, परलोक का मोह था, समाज सामन्त तांत्रिक युग से इस पार न आया था तब राजपुत्र घर छोड़ कर निर्वाण ढूंढते गये थे, राजाओं ने सर्वस्व दान करने के बाद वल्कल पहने थे। अभी कुछ दिन पहले तक इसी श्रेणी ने समाज को कवि, नेता और धर्मगुरु दिए हैं परन्तु वणिक प्रधान समाज में यह सब शेष नहीं रह गया। वणिक धर्मग्रन्थ पढ़ते नहीं, बेंचते हैं, मन्दिर में पूजा नहीं करते, उसका ठेका, लेते हैं; स्वर्ग जाने की उन्हें कोई चिन्ता ही नहीं कारण वे जानते हैं उसकी सीढ़ी बनाने का कण्ट्राक्ट हमें कभी न मिलेगा।

डाक्टर बोले, एक मित्र ने अपनी लड़की के लिए तुम्हारी चर्चा की थी। 'ही इज़ बिग मैन'—वे अच्छा लड़का चाहते हैं। परन्तु मैंने अब तक इसी लिए तुम्हारे पिता से नहीं कहा।

सहायक डाक्टर ने 'ब्लड रिपोर्ट' लाकर डाक्टर को दी। रिपोर्ट देख कर डाक्टर के मुख पर गहरे विस्मय की अभिव्यक्ति हुई। वे बोले—'स्ट्रेंज'! ठीक हो गई है? चलो मैं भी देख लूं।

रिपोर्ट लेकर वे भीतर चले गये। लौट कर आये तो बोले—नहीं कनाई, तुम्हारे रक्त में कुछ नहीं मिला। नेगेटिव—

रक्त में कुछ नहीं मिला ? शुद्ध रक्त है ? कनाई ने पुतले की भांति हाथ बढ़ा कर रिपोर्ट ली, जेब में डाली और पीला मुख लिए बाहर आ गया। दरवाजा पार करते समय डाक्टर के अति विस्मित कण्ठ से निकला अस्फुट शब्द उसने सुना 'स्ट्रेंज' !

स्ट्रेंज ! स्ट्रेंज ! स्ट्रेंज !—शब्द बार बार कनाई के कानों से टकराने लगा। वह सोचने लगा, मैं चक्रवर्ती वंश की सन्तान हूँ परन्तु चक्रवर्तियों की विलास-लालसा से अर्जित रक्त मेरे शरीर में नहीं है। मेरे भाइयों और बहनों की अस्वस्थता में इस विष के लक्षण प्रकट हो रहे हैं, मेरे पिता और चाचा ने उसके अतिरिक्त नया विष भी संचित किया है—उसका इतिहास भी मैंने सुन लिया है और चक्रवर्तियों के रक्त, स्नायु, मज्जा और अस्थि में संक्रमित विष मेरे रक्त में नहीं है ! स्ट्रेंज ! स्ट्रेंज ! स्ट्रेंज !

फिर ? फिर क्या मैं चक्रवर्ती नहीं हूं ?

—तेइस—

पैरों के नीचे की पृथ्वी कांपती थी ! आंखों के सामने विशाल भवन हिलते जान पड़ते थे ! कनाई किसके पास जाय, किससे कहे कि··· । वह पार्क के एक सूने कोने में बैठा। फिर गंगा के किनारे गया। आत्महत्या कर लेने की कामना बार-बार उठ रही थी। मन के साथ लम्बा युद्ध करने के बाद उसने किसी तरह आत्म संवरण किया। उसने सोचा, न सही मैं चक्रवर्ती ! न सही मेरा वंश परिचय ! मैं मनुष्य हूं, मनुष्य—गोत्रहीन, उपाधिहीन,

केवल मनुष्य। यही मेरा श्रेष्ठ परिचय है। उसे कर्ण की कहानी याद आई—एक और महामानव का स्मरण हुआ, आज २२ दिसम्बर है, २५ दिसम्बर को उसका जन्म दिवस है। उसे यह भी याद आया कि नीला से एक दिन मैंने अपने जीवन का गुप्त रहस्य बताने की चर्चा की थी। यही मेरे जीवन का अकथित सत्य है—गुप्त रहस्य है—यह नीला को बता कर उसकी परीक्षा क्यों न कर ली जाय? देखा जाय वह श्यामवर्णा तरुणी कितनी प्रगतिशीला है, जो जाति और वर्ण के बिचार को तिलांजलि देकर विदेशियों के साथ अपना जीवन संयुक्त करने की कल्पना कर सकती है, इसके लिए माता-पिता का आश्रय तक छोड़ सकती है—देखा जाय वह मेरा परिचय सुनकर क्या कहती है, किस दृष्टि से देखती है, बन्धु की भांति हाथ बढ़ाती है या हट जाती है।

कनाई उठ कर खड़ा हो गया था परन्तु घर का कुण्डा खड़काते ही नेपी की आवाज सुन पड़ी और उसके मन में नीला का चित्र आ गया। वह सोचने लगा, यह परिचय लेकर क्या मैं नीला के सामने खड़ा हो सकता हूं? उससे कैसे कहूंगा कि''? वह अवश्य मुंह फिरा लेगी। ठीक इसी समय साइरन बोला।

कनाई ने सोचा, जापानी बम वर्षक मृत्यु की वर्षा करने आ रहे हैं और वह सड़क पर दौड़ने लगा।

पूर्णचन्द्र की निर्मल ज्योत्स्ना आकाश से लगाकर धरिणी के वक्ष तक झलक रही है। आज पूर्णिमा है फिर भी ऊर्ध्वलोक कुछ

अस्पष्ट है; आकाश और पृथ्वी के बीच के शून्य लोक में कुहरे का एक शुभ्र आवरण पड़ा है। कनाई वायुयान का शब्द सुनने के लिए उत्कर्ण होकर चल रहा है—दौड़ते हुए लाल, नीले और सफेद आलोक विन्दुओं को देखने के लिए आकाश की ओर भी ताक लेता है।

—कौन ? कौन है ? आप कौन हैं ?

ए. आर. पी. के एक व्यक्ति ने कनाई का मार्ग रोका।—कौन हैं आप ?

कनाई खड़ा हो गया। दूसरे क्षण में ही मार्ग रोकने वाला युवक बोला—कनाईदा—आप ?

—कौन ? कनाई ने पूछा।

—मैं शंभू—पहचाना नहीं आपने ?

—शंभू ? शंभू, जग्गू, विस्सू आदि इस मुहल्ले के युवक हैं। कनाई को आदर की दृष्टि से देखते हैं। वे सब ए. आर. पी. में भरती हो गये हैं।

—कहां जायंगे ? साइरन बज गया है। आइये, इधर आइये! शंभू उसे एक प्रकार से बलपूर्वक घसीट ले गया।

चलते-चलते कनाई ने पूछा, कहां ?

—यह हमारा 'एसेम्बली प्वाइंट' है—बड़ेदा यहीं हैं।

—बड़ेदा सब के बड़े दादा हैं, कनाई के साथ भी उनकी मित्रता है।

कनाई बोला, नहीं—मैं घर जाऊंगा।

—नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं जाने दूंगा तो कोई और रोक लेगा। आइये, भीतर आइये। हो सकता है कि अभी बम गिरने लगें।

शंभू कनाई को खींच ले गया। भीतर बड़ेदा—नारायण बोस—इस 'एरिया' के स्टाफ आफिसर, बैठे हैं। उनके बदन पर खाकी वरदी है। छाती पर जनेऊ की तरह चमड़े का पट्टा पड़ा है और वह कमर की बेल्ट के साथ जुड़ा है। वे गंभीर भाव से बैठे हैं। कनाई को देख कर विस्मय के साथ बोले—आप ?

शंभू बोला, ये घर जा रहे थे, मैं पकड़ लाया।

—बैठिए, बैठिए, अब कहां जांयगे ?

बाहर साइकिल की घण्टी बोली। भारी जूतों की ध्वनि के साथ एक युवक आया और सैनिक सेल्यूट करके खड़ा हो गया। बोस ने पूछा—इतनी देर—

—जी, देर कुछ हो गई है। उसने अपना अपराध स्वीकार किया।

—जाओ। तयार हो जाओ 'विद् योर साइकल'। बोस बोले, युवक सेल्यूट देकर चला गया। यह मैसेंजरों का दल है। टेलीफोन बिगड़ जायगा तो ये बमवर्षा का संवाद ले जांयगे, और ले आयेंगे।

टेलीफोन की घण्टी बजी। नगर के सब टेलीफोन बंद हैं, केवल ए. आर. पी. के फोन काम कर रहे हैं। बोस ने रिसीवर उठाया—हलो! कौन ?

—वार्डन नम्बर फाइव ?

—रिपोर्ट ?

—आपके पोस्ट में सब ठीक है ?

—'दैटस् आल रायट' फोन रख दिया।

बाहर दो साइकिलों की घण्टियां बोलीं, साथ ही साथ भारी जूतों का शब्द भी आया।

बोस ने कुछ चौंक कर पूछा—कौन ? एक व्यक्ति ने आकर सेल्यूट किया और बोला, हम साइरन बजने से पहले ही काम से गये थे—लौट आये हैं।

—'गुड'

आगन्तुक बोला—रास्ते में कुछ घरों में बत्तियां जल रही थीं, वे हम और जग्गू बुझवा आये हैं।

—'गुड'—बोस ने उठकर अपना हाथ बढ़ा दिया—युवक का मुंह चमकने लगा, हाथ मिलाने और सेल्यूट करने के बाद वह बाहर चला गया।

बोस ने पुकारा—शंभू !

—दादा

—'फलस्क' में चाय है, दो कप निकालो, मुझे और कनाई बाबू को दो। कनाई बाबू कुछ 'शाक्ड' हो गये हैं।

शंभू ने कलई के दो मगों में चाय दी। बोस ने पूछा, आप सिगरेट तो पीते नहीं ? और एक सिगरेट निकाल कर मुंह में लगा ली। दियासलाई जलाते ही चौंक कर बोले—'प्लेन' की आवाज़।

सब के कान खड़े हो गये। शंभू बाहर चला गया।

चाय की चुस्की लेकर बोस ने कहा, 'एस' 'प्लेन'

दूर आकाश में कहीं क्षीण घर्घर शब्द हो रहा है।

—सुना ?

—हां

ध्वनि स्पष्ट और शक्तिशाली हो गई। उत्तेजना से भर कर बोस खड़े हो गये। कनाई भी उठा। दोनों दरवाजे के सामने खड़े हुए।

—एक बहुत निकट आ गया है।

उसी क्षण में आकाश के वक्ष पर बिजली की कौंध जैसी प्रकाश की एक झलक चमकी।

बोस बोले—'पैराचूट फ्लेयर'!

क्षण भर में बिस्फोट का शब्द उठा—फिर प्रकाश झलका—फिर विस्फोट का शब्द—गंभीर परन्तु मृदु।

बोस ने पुकारा—शंभू!

पैराचूट फ्लेयर फिर चमका फिर शब्द हुआ।

शंभू ने उत्तर दिया, दादा!

कनाई के शरीर का रक्तस्रोत उत्तेजित हो रहा है। इन लोगों के काम का नशा उस पर भी चढ़ रहा है।

आकाश में फिर बिजली-सी कौंधी। इस बार आलोक बहुत प्रखर है। आंखें झुलस सी गईं। साथ ही साथ प्रचण्ड-भयंकर शब्द हुआ और आकाश, वायु तथा मकान कांप से उठे। तीनों ही व्यक्ति चौंके।

कनाई बोला—हाई एक्सप्लोसिव । प्लेन शायद सिर के ऊपर ही है ।

गुरु गंभीर घर्घर रव सचमुच सिर के ऊपर ही जान पड़ा । कनाई स्थिर दृष्टि से आकाश की ओर देखने लगा ।

फिर बिजली कौंधी, फिर शब्द हुआ । इस बार धीमा है । प्लेन की ध्वनि भी दूर होती जा रही है ।

बोस बोले, आज शायद रिपोर्ट होगी शंभू ।

शंभू बोला, जान तो पड़ता है ।

कुछ क्षणों के बाद टेलीफोन बोला । बोस ने शंभू की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखकर रिसीवर उठा लिया—हलो ?

सब उद्ग्रीव होकर बोस का मुंह ताकने लगे, वह उत्तेजना से लाल हो गया है । आंखों की दृष्टि तीव्र और दीप्त है ।

—'एनी रिपोर्ट' ?

—'नो रिपोर्ट' ?

—'सेक्टर नम्बर' ?

—'फोर' ।

—'गुड'

—रिसीवर रखा भी न गया था कि फिर घण्टी बजी ।

—रिपोर्ट ? क्या ?

—'सेक्टर नाइन इक्सीडेंट' ? एक बाजार में बम गिरा है ?

—आप वार्डन हैं ?

—वहां जा रहे हैं ? गुड । एम्बूलेंस को फोन कर दीजिए ।

फिर प्लेन का शब्द आया—ऐसा जान पड़ा कि कई प्लेन एक साथ हैं। सब ने दरवाजे से मुंह निकाल कर आकाश की ओर उत्कण्ठित दृष्टि डाली। शब्द द्रुततम गति से दूर हो रहा है।

बोस बोले, यहां के 'फाइटर प्लेन' चीज कर रहे हैं।

एक 'प्लेन' सिर के ऊपर चक्कर काट कर लौट गया। वह देखने आया था कि शत्रु के वायुयान हैं या नहीं।

कन्हाई इतनी देर में सजग हो गया है, उसकी विह्वल अवसन्नता दूर हो चुकी है।

साइरन ने 'आल क्लियर' का संकेत किया—समान स्वर की ऊंची ध्वनि चतुर्दिक् फैल गई।

बोस ने घड़ी देखी और फिर टेलीफोन का रिसीवर उठा लिया। शंभू की ओर देख कर बोले, 'एम्बूलेंस को मैं भी फोन कर दूं। क्यों? अधिकन्तु न दोषाय। शंभू बोला, वार्डन को एक बार फिर फोन कर लीजिए, शायद कुछ और मालुम हो।

—'हलो, पुट मी टु—एस प्लीज'—

—'हलो! वार्डन नम्बर नाइन? बाजार में बम गिरा है, वहां क्या हाई एक्सप्लोसिव था? नहीं? फिर? टीन पर गिरने से इतना धमाका हुआ है? कितनें घायल हुए? बाजार के फाटक में ताला बंद है? ओह! 'आई सी', 'एस आई एम कमिंग'।

रिसीवर रखकर बोस ने एक और नम्बर मांगा।

—हलो ! स्टाफ आफिसर''' एरिया स्पीकिंग। एम्बूलेंस एस. एक्सीडेंट. नियर'''मारकेट प्लेस. ओह यू हैव रिसीव्ड इन्फरमेशन ? प्लीज सेण्ट एट लीस्ट फोर कार्स, आलरेडी सेंट ? थैंक यू।

बोस ने शंभू से कहा, एम्बूलेंस की गाड़ियां चल पड़ी हैं। तुम सब को लेकर आओ, मैं अपनी गाड़ी में चला।—कनाई से बोले, आप अब जा सकते हैं कनाई बाबू, मैं भी जा रहा हूं।

कनाई ने पूछा, आप क्या घटनास्थल पर जा रहे हैं ?

—हां ! बोस कमरे से बाहर आ गये।

—मैं चल सकता हूं, आपके साथ ?

—आप चलेंगे ?

—आपको आपत्ति न हो तो

—आइये, आइये आपत्ति कैसी ? 'आई शल बी ग्लाड'। आइये।

बोस ने गाड़ी स्टार्ट की। वह जनहीन पथ पर दौड़ने लगी।

'सब एरिया' का वार्डन मारकेट के दरवाजे पर खड़ा है, उसके साथ तीन सहकारी हैं। बाहर से मारकेट जैसी की तैसी है। सड़क के किनारे दुकानों की दुखण्डी कतार को कोई हानि नहीं पहुंची। भीतर सब्जी बाजार के ऊपर छाई हुई टीन पर बम गिरा है। आहतों के आर्तनाद का स्वर बाहर आ रहा है। मारकेट के फाटक में ताला बंद है।

बोस बोले, तोड़ डालो।

भीतर गाढ़ अन्धकार है। राह ऊबड़-खाबड़ हो गई है, ईंटों के टुकड़ों से भरी जान पड़ती है। चार-पांच टार्चें एक साथ जलीं;

ईटें नहीं, आलू बैंगन आदि सब्जी फैली है। इधर-उधर मनुष्य भी पड़े हैं; यह पता नहीं चलता कि इनमें से कौन जीवित है और कौन मर गया है। केवल आर्तनाद सुन पड़ता है। बोस ने जमीन पर टार्च की रोशनी डाली और बोला—रक्त।

रक्त बहकर आ रहा है।

बोस ने टार्च ऊपर की ओर घुमाई। टीन का एक शेड़ तिरछा हो गया है प्रायः उलट गया है। कुछ चद्दरें उड़ गई हैं। ढांचे में लगे लोहे के ऐंगल आदि तिरछे-मिरछे हो गये हैं और मुमूर्ष सांप की टेढ़ी-मेढ़ी देह जैसे दीख पड़ते हैं।

बोस बोले—कुछ लालटेनें लानी होंगी। 'यू कैन ड्राइव'—तुम जाओ।

कनाई एक आदमी के हाथ से टार्च लेकर मनुष्यों की ओर बढ़ा। प्रकाश देखकर और मनुष्य का संकेत पाकर दो-चार आदमी उठ बैठे। कनाई को जान पड़ा कि उसका पैर किसी नरम और लम्बी वस्तु पर पड़ गया है। टार्च घुमाते ही वह सिहर गया, आदमी का एक हाथ बाहु से अलग होकर गिर पड़ा है। यह दृश्य देखकर विह्वल होने का समय नहीं है, वह आगे बढ़ा। एक आदमी पड़ा कराह रहा है, रोशनी डालने से मालूम हुआ कि उसके सिर से और कंधे के ऊपर से रक्त निकल रहा है। कनाई उसके पास बैठ गया।

बाहर मोटर का हार्न बोला।

बोस बोले, एम्बूलेंस आ गई।

एम्बूलेंस के कर्मचारी भीतर आये, उनके साथ लालटेनें भी हैं। काम आरंभ हो गया। अधिकांश आहतों को फस्ट एड देकर गाड़ी में लादा गया। सत्कार समिति की कुछ गाड़ियां भी आ गई हैं।

कनाई अदम्य शक्ति से काम कर रहा है। बोस ने श्रद्धा के साथ मुस्करा कर कहा,—'यू आर वर्किंग लाइक ए जायण्ट'।

कनाई मुस्कराया भी नहीं, क्षण भर के लिए बोस की ओर देखकर फिर काम में जुट गया। आज अकस्मात् उसका जीवन सार्थक हो गया है। आत्महत्या के लिए चला था और जीवन का सिद्धिमंत्र पा गया है और वह सिद्धि प्रतिपल उसकी ओर बढ़ती जान पड़ती है। वह परमानंद से भर गया है, मन में ग्लानि का अंश भी नहीं रह गया।

भारी जूतों की ध्वनि के साथ बड़ी टार्च के तेज प्रकाश ने बाजार में प्रवेश किया। बोस और ए. आर. पी. के दूसरे कार्य-कर्ताओं ने उसे सल्यूट किया। ए. आर. पी. के असिस्टेंट कण्ट्रो-लर आये हैं।

कनाई अपने काम में व्यस्त रहा।

असिस्टेंट कण्ट्रोलर बोले—सब की 'आइडेंटी फिकेशन' हो रही है ?

बोस ने उत्तर दिया, जो मिल रही है, वह लिख रहे हैं। दो डेडवादी की 'आइन्डेण्टी फिकेशन' नहीं हुई।

कनाई ने मुंह उठाकर देखा। 'आइडेण्टी फिकेशन'? परिचय?

अकस्मात् उसके अन्तर में रवीन्द्रनाथ की दो पंक्तियां गुंजरित हो गईं:—

—"अब्राह्मण नह तुमि तात,
तुमि द्विजोत्तम, तुमि सत्य कुल जात।"

वह फिर काम में लग गया।

वह कौन ? क्या करता है ? कनाई ने देखा, एक लड़का कुछ ढूंढता और उठाता फिरता है। एक आहत के शरीर में न जाने क्या टटोल रहा है। कनाई ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया। कनाई ने पहचाना, हीरेन है, गीता का भाई हीरेन ! उसके हाथ में पैसे हैं—वह आहतों के पैसे तिड़ी कर रहा है ! हीरेन का मुंह फक हो गया। उसने हाथ छुड़ाकर भागने की पूरी चेष्टा की परन्तु कनाई की दृढ़ मुट्ठी से छूट न सका। कनाई उसे बोस के पास ले आया। बोला, लड़का मेरा भाई जैसा है—यह भी यहां काम करने आया है। दो हीरेन—जो पैसे जमा किए हैं वे इन्हें दे दो।

हीरेन ने मुट्ठी खोल कर फैला दी।

कनाई बोला, बोस, इसे भी ए. आर. पी. में ले लो।

बोस हंसकर बोले, हम तो आपको चाहते हैं कनाई बाबू।

—मिस्टर बोस ! असिस्टेंट कण्ट्रोलर ने पुकारा।

—यस सर।

—मैं......एरिया में जा रहा हूं।

—...एरिया में ? वहां क्या हुआ ?

—...स्ट्रीट में एक बस्ती पर बम गिरा है। बस्ती के पास

एक पुराना विशाल भवन है, उसका आधा भाग गिर पड़ा है। आप शायद जानते हों, चक्रवर्तियों का भवन है वह—

—…स्ट्रीट में चक्रवर्तियों का भवन? सुखमय चक्रवर्ती का भवन? कनाई सीधा खड़ा हो गया।

बोस के चेहरे का रंग फीका पड़ गया, वे बोले—कनाई बाबू!

स्थिर दृढ़ पद से अग्रसर होकर कनाई बोला—मैं जाता हूँ।

—रायबहादुर की गाड़ी पर जाइये। सर यह इन्हीं का भवन है—ये आपकी गाड़ी—

—आइये, आइये। असिस्टेंट कण्ट्रोलर अग्रसर हुए।

कनाई की बगल से निकल कर कोई दौड़ा और भीड़ में मिल गया। कनाई ने देखा वह हीरेन है। सड़क पर भीड़ लग गई है।

सुखमय चक्रवर्ती का मोहपूर्ण भवन गिर पड़ा!—कनाई सोच रहा है—भूकम्प से भग्नशीर्ष और विदीर्ण प्रासाद जैसे मेरे मंझले बाबा? मंझली दादी? मेरी मां? मेरे पिता? मेरे भाई? मेरी बहन?

—चौबीस—

२३ के सवेरे से मृत्यु के आतंक से अधीर नर नारी कलकत्ते से भाग रहे हैं। उनके पलायन का दृश्य जितना करुण है उतना ही भयावह! समाज में उन लोगों की संख्या ही अधिक है जो शिक्षा दीक्षा से वंचित हैं और निम्न श्रेणी के काम करके अपनी जीविका

चलाते हैं। हजारों में गिनी जाय तो भी उनकी गणना पूर्ण नहीं हो सकती। दिन रात विराम विहीन शारीरिक श्रम करने के बाद भी जिन्हें उदर भरने के लिए दो मुट्ठियों से अधिक अन्न नहीं मिलता, जो किसी तरह जीवित रह रहे हैं उनके निकट जीवित रहना ही परमार्थ है। युग युगान्तर से वे दुर्भिक्ष पड़ने पर देश छोड़ कर देशान्तर गये हैं और भिक्षा मांग कर जीवित रहे हैं। मानवसमाज ने भिक्षा नहीं दी तो जंगलों में भूमि खोदी है और अन्न ढूंढा है; वह भी नहीं मिला तो कच्चे पत्ते उबाले हैं और पेट भरा है। महामारी फैली है तो चिकित्सा कराने की शक्ति का अभाव देखकर उन्होंने भाग कर प्राण बचाना ही एक-मात्र उपाय माना है। संसार में कितने ही राष्ट्रविप्लव हुए हैं, राष्ट्र संकट आये हैं परन्तु उनकी अवस्था में कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अपनी अपरिवर्तित अवस्था की अभिज्ञता के आधार पर वे सदा सर्वदा सबसे पहले भागते और प्राण बचाते रहे हैं। पलायन उनकी परम्परागत प्रवृत्ति बन गई है। शरीर के रक्त, स्नायु, मज्जा और मस्तिष्क में संचित सहजात प्रकृति हो गई है। वे दास, दासी रसोइया, नाई, कुली, मजूर और सवारी-सिकारी की राह न देख कर कलकत्ते से देशदेशान्तर जाने वाली सड़कें पकड़ कर भाग रहे हैं। गाड़ी के बाद गाड़ी चलाने के बाद भी रेलवे अधिकारी पलायन-पर यात्रियों को सुविधा नहीं दे पाते। लोग मोटरों, लारियों, घोड़ा गाड़ियों, रिक्शाओं और बैल-गाड़ियों में ही नहीं, मैला ढोने वाली खच्चर गाड़ियों पर भी

भाग रहे हैं। जो धनी हैं जिनका जीवन अशेष अतृप्त वासना एवं अहरह मृत्युभय से अधीर है, जो शरीर में रक्त घटने पर पैसे देकर दूसरे का रक्त खरीदते हैं, दुर्भिक्ष, महामारी और राष्ट्रीय संकट में वे सबसे पहले अपनी सम्पत्ति समेट कर भागते हैं। जब संकट के दिन बीत जाते हैं, विप्लव शांत हो जाता है तब वे लौट आते हैं, राष्ट्र शक्ति में परिवर्तन हो जाता है तो नई शक्ति को अवनत होकर प्रणाम करते हैं। शेष समाज में मध्यवर्ग के अति बुद्धिमान व्यक्ति भी हैं, विष्णु शर्मा ने अपने 'पंचतंत्र' में जिन्हें 'प्रत्युत्पन्नमति' बताया है। 'अनागत विधाता' बहुत पहले ही खिसक गये हैं। 'यद् भविष्य भविष्यतिर' का दल अली-गली में है, विष्णु शर्मा ने इनका विवरण नहीं दिया। परन्तु इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि ये भी संगत और सामर्थ्य हीन थे—कम से कम बिजय बाबू का यही मत है। यह नामकरण भी विजय बाबू ने ही किया है। नामकरण सुनकर नीला के मुख पर कड़ुवी हंसी दीख पड़ी है। और भी एक श्रेणी के लोग हैं परन्तु वे बहुत हताश हुए हैं। ये कूटमनोवृत्ति वाले शक्ति हीन लोग हैं। ऐसे व्यक्ति अपने बल से मुक्ति प्राप्त करने की कल्पना नहीं कर सकते इसीलिए युद्ध को सुयोग और जापान को मुक्तिदाता समझते हैं। भारतवर्ष में बार बार इस इतिहास की पुनरावृत्ति हुई है परन्तु इन्हें याद नहीं आती। युद्ध की कोई भी स्मृति मनुष्य के मन में नहीं है।

बिजय बाबू सवेरे उठते ही कनाई को ढूंढने चले गये हैं।

कनाई अब तक नहीं लौटा। कनाई को ढूंढ़ने के बाद विजय बाबू गुणदा बाबू के घर जायंगे। गुणदा बाबू कल पकड़े गये हैं, उनका परिवार अभिभावक हीन हो रहा है।

नीला बरामदे में खड़ी है। नेपी बम विध्वस्त क्षेत्र की ओर गया है। उत्कण्ठित नीला बार बार सड़क की ओर देखती है। वह नेपी और विजय दा दोनों के लिए उत्कण्ठित है।

नीला कनाई से प्रसन्न नहीं है—अन्ततः वह यही समझती है, फिर भी इस बात से उसे कुछ उत्कण्ठा अवश्य हुई है कि कनाई कल शाम को साइरन बजने के बाद दरवाजे से लौट गया है। थोड़ी-बहुत उत्कण्ठा अपने घर के लिए भी है। २१ तारीख की बामबिंग के बाद उसने कई बार घर का समाचार जानने का निश्चय किया है परन्तु जा नहीं पाई। आज वह इसीलिए नेपी की व्यग्र प्रतीक्षा कर रही है। वह आये तो उसे घर भेजे। घर के पास मोदी की जो दुकान है वहां से भी संवाद मिल सकता है।

जाड़े का दिन जल्दी-जल्दी बढ़ रहा है। दफ्तर जाने का समय आ गया। अब नीला प्रतीक्षा न कर सकी। स्नान भोजन करने के बाद दफ्तर गई। मन में संकल्प किया कि लौटते वक्त सब संकोच त्याग कर घर जाऊंगी। यदि पिता ने समाचार लेने के अधिकार से भी वंचित कर दिया तो भविष्य में भूल कर भी उनका स्मरण न करूंगी।

दफ्तर के काम में आज बार-बार भूल हो रही है।

नीला के अफसर एक प्रौढ़ देशवाली हैं। वे बोले, तुम्हारी तबियत क्या आज अच्छी नहीं है, मिस सेन ?

नीला की आंखें अकारण ही छलछला आईं।

—क्या हुआ मिस सेन ?

नीला की समझ में न आया कि वह क्या कहे। अन्त में बोली, मेरे एक घनिष्ठ आत्मीय कल रात को साइरन बजने के समय बाहर गये थे—अब तक नहीं लौटे।

वे सांत्वना देते हुए बोले,—कोई चिन्ता नहीं—दफ्तर से लौट कर देखोगी, वे भले चंगे लौट आये हैं। फिर बोले, यदि तुम्हें बहुत उत्कण्ठा हो तो मैं आज की छुट्टी दे सकता हूं।

—नहीं, नहीं, छुट्टी की आवश्यकता नहीं। नीला अपने ही निकट लज्जित हुई। उसने सोचा, विकृत मन और पतित अभिजात वंशीय कनाई के लिए मुझे चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं। वह अपने स्थान पर जम कर बैठ गई और काम में डूब जाने की चेष्टा करने लगी। छुट्टी के निश्चित समय से पहले वह एक बार भी कुरसी से न उठी परन्तु छुट्टी की घण्टी बजते ही तुरन्त बाहर निकल आई।

सड़क पर जेम्स और हैरेल्ड खड़े हैं; नीला की ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने मुस्करा कर अभिवादन किया।—आशा है, आप का स्वास्थ्य—

नीला की भौंहें तिरछी हुईं। मार्ग में बाधा पड़ने से वह

प्रसन्न नहीं हुई। फिर भी संभल कर बोली—धन्यवाद ! मैं अच्छी हूं। आप अपनी सुनाएं ?

हेरेल्ड बोला, धन्यवाद मिस सेन ! आइये, काफीखाने तक चलें।

नीला बोली—क्षमा करें, आज मैं बहुत व्यस्त हूं।—विदा ले कर यह आगे बढ़ी।

सड़क पर मानव समूह घर जा रहे हैं—जा नहीं रहे दौड़ रहे हैं। कल की बमवर्षा का आतंक लोगों पर छा गया है। अब तक कलकत्ते से बाहर उपनगरों में बम गिरे थे; कल शहर में गिरे हैं। टीन की छत पर बम गिरने से जो आकस्मिक और प्रचण्ड ध्वनि हुई है उससे लोग और भी अभिभूत हो गये हैं। घर भी सुरक्षित नहीं हैं, परन्तु आत्मीयों और स्वजनों के साथ रहने से एक प्रकार का आश्वासन मिलता है। इसके अतिरिक्त उस महा आतंक में, भयावह भविष्य में कोई किसी को छोड़कर मरना नहीं चाहता, अपने वंशधर को उपस्थित देख वह मनुष्य मृत में भी अमृतत्व का आस्वाद युग युगादि से लेता आया है—अब इससे भी अरुचि हो गई है। लोग कहते हैं, बचें तो दुख, कष्ट और दुर्भोग सह कर सब मिल कर बचे रहें नहीं सब एक साथ मर जांय। या फिर अपनों के साथ छाती से छाती भिड़ाकर बैठे बिना साहस नहीं मिलता—शांति नहीं आती। इसी लिए सब दौड़ रहे हैं। मुखर बंगाली मूक हो रहे हैं।

वेलिंगटन स्क्वायर के मोड़ पर ट्राम घूमी। स्क्वायर से एक जुलूस निकल रहा है। जुलूस के आगे एक झण्डा है, लोग कार्ड-

बोर्डों पर लिखे आदर्श वाक्य लिये हैं। मनुष्य इस स्थिति में भी वास्तविक मुक्ति ढूंढ रहा है!

ट्राम का एक यात्री बोला, अरे भले मानसो, जाओ, रोटी खा कर सो रहो। चले हैं झगड़ा उठाने!

और एक साहब बोले, शल्य रथी बने हैं, जुगनुओं से उजाला होगा! कलियुग में क्या क्या देखना पड़ेगा?

—ये सब रूसी जीव हैं। रूशो-बंगाल।

आलोचना होने लगी। विक्षुब्ध मन की आलोचना। मानव मन की वेदना का क्षोभ विकृत मार्ग से प्रकाशित हो रहा है। नीला उदास हो गई। एक लंबी सांस लिए बिना न रह सकी। उसकी दृष्टि खिड़की के बाहर आबद्ध रह गई। अकस्मात् पूरब से पश्चिम की ओर फैली हुई चौड़ी सड़क के पूर्वी दिगन्त में उज्वल ताम्राभप्राय पूर्णचंद्र पर उसकी दृष्टि गई। चतुर्दशी का चन्द्रमा है, उसके प्रकाश से तारकोल की सड़क अपरूप हो गई है, ज्योत्स्ना आलोकित नदी जान पड़ती है। परन्तु यह तो विवेकानंद रोड है। केशव-सेन स्ट्रीट कब की पीछे छूट गई है। नीला ने लौटते समय घर जाने का निश्चय किया था परन्तु अन्यमनस्कता में केशव सेन स्ट्रीट ही निकल गई। एक लंबी सांस लेकर वह ट्राम से उतरी।

घर में विजय बाबू लेटे हैं। नेपी बरामदे में खड़ा है। मोड़ से नीला यथासंभव तीव्रगति से आई है—वह हांफ रही है।

विजय बाबू ने मुस्करा कर अत्यन्त मृदु स्वर में कहा, आओ।

नीला कुछ बोल न सकी, उसकी दृष्टि चारों ओर घूम गई।

विजय बाबू बोले—कनाई के घर पर बम गिरा है, एक पोर-शन टूट गया है। नीला को जान पड़ा कि घर हिल रहा है, उसने सामने का टेबल पकड़ लिया।

विजय बाबू कहते रहे—उसके कुछ आत्मीय स्वजन मारे गये हैं। एक वृद्धा, एक प्रौढ़ा और एक अल्पवयसी युवा की देह मिली है। एक वृद्ध बचे थे, उन्हें अस्पताल भेजा गया है, सुना है कनाई वहां गया है। अस्पताल में पता चला कि वृद्ध भी चल बसे हैं—कनाई उनका संस्कार करने स्मशान गया है। स्मशान में भी उसे ढूंढ़ आया हूं परन्तु वह नहीं मिला।

नेपी बरामदे से कमरे में आया और नीला के पास खड़ा हुआ। उसकी नीरवता से गहरी सहानुभूति प्रकट हो रही है।

विजय बाबू बोले, नेपीचन्द्र—षष्ठी से चाय के लिये कहो।

नेपी चला गया।

नीला इतनी देर बाद बोली—कहां गये—पता नहीं चला?

लंबी सांस लेकर विजय बाबू ने कहा, नहीं। फिर बोले—अकृतज्ञ, वह भी अकृतज्ञ है नीला! इतना भी नहीं सोचा कि कोई उसके लिए चिन्तित होगा।

नीला चुप रही। उसके मन में भी अभिमान—उद्वेल अभि-योग आवर्तित हो रहा है। वह सोच रही है, कनाई ने मुझे एक

दिन कामरेड कहा था, अपने जीवन का रहस्य बताने आया था—आज विपत्ति में बन्धु के नाते भी क्या मेरी सुध उसे नहीं आई ?

विजय बाबू बोले—बात दबी नहीं रहती। गीता बिचारी दौड़ी आई थी। अभी गई है। उसकी जो अवस्था थी, वह कैसे बताऊं ? उसे सान्त्वना देने योग्य शब्द नहीं मिले।

नीता बोली—जाऊं विजयदा, हाथ-मुंह धो डालूं।

नीला की बात से विजय बाबू जैसे चौंके बोले—हां, जल्दी आना भाई। तुम्हें साथ लेकर एक जगह चलना है। दफ्तर का काम छोड़ कर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

—कहां ?

विजय बाबू हंसे—डरो नहीं, ऐसा नहीं जान पड़ता कि जापानी प्लेन नौ बजे से पहले ही आ जायंगे। हम इसके पहले ही लौट आवेंगे। चलना है, गुणदा बाबू के घर। तुम रहोगी तो उनकी पत्नी से बात करने में सुविधा होगी।

गुणदा बाबू की पत्नी परदा करती हैं परन्तु उनके वार्तालाप में संकोच नहीं है। विजय बाबू को वे जानती हैं। गुणदा बाबू और विजय बाबू पहले एक ही राजनैतिक दल में थे। तब विजय बाबू गुणदा बाबू के विवाहित जीवन के एक बड़े सुख का भाग लेने आते थे—कभी-कभी गुणदा बाबू की पत्नी के हाथ की बनी सब्ज़ी खा जाते थे। गुणदा बाबू की पत्नी स्वयं परोसती थीं, बगल

के कमरे में स्वामी पर गरजती-बरसती थीं परन्तु विजय बाबू से वार्तालाप कभी नहीं किया। घूंघट भी नहीं उठाया। वे कड़े ढांचे की गौरवर्णा स्त्री हैं। मांग में सिंदूर चमकता है, दृष्टि इतनी दीप्त है कि सामने बैठने वाला बेचैन हो जाता है। इसी दृष्टि से नीला की ओर देखकर उन्होंने पूछा—विजय बाबू तुम्हारे कौन हैं?

नीला ने अस्वस्ति का अनुभव किया। किसी तरह भाव बदल कर उसने उत्तर दिया—कोई नहीं। मैं उन्हें दादा कहती हूं।

—ओह, तुम भी उनके दल में हो?

—हां

—क्या कहना है, कहो।

—विजय दा ने आफिस में बात की है। वही कहने आये हैं। आफिस से जो मिलना है, वह उन्होंने दे दिया है। इसके सिवा पच्चीस रुपये मासिक और देंगे।

—पच्चीस रुपये? गुणदा बाबू की पत्नी उदास दृष्टि से देखती रहीं।

—विजय दा कहते हैं, दस रुपये महीने की व्यवस्था हम कर देंगे।

—अर्थात् वे देंगे?

बाहर से विजयदा स्वयं बोले—इसमें क्या आप आपत्ति करेंगी भाभी?

गुणदा बाबू की पत्नी ने, विजय बाबू का स्वर सुन कर घूंघट और खींच लिया। उनका कण्ठस्वर अपेक्षाकृत मृदु हो गया,—

बोलीं—आप एक ही दल के नहीं हैं। लोग कितनी ही बातें करते हैं—

विजय बाबू ने पूछा—गुणदा दा भी क्या ऐसी ही बातें करते थे ?

—नहीं। उन्होंने तो कभी नहीं कीं।

—फिर ?

—फिर ! नीला की ओर देख कर वे बोलीं—अच्छा मैं ले लूंगी। विजय बाबू फिर बोले—और किराये के लिए भी एक दरख्वास्त करनी पड़ेगी।

—नहीं, रहने दें—मेरा काम चल जायगा।

—काम न चलेगा—बड़ा कुसमय आ रहा है—दुर्भिक्ष सम्भवतः आसन्न है। गुणदा बाबू की पत्नी हंसी, बोलीं—नहीं। युद्ध में, दुर्भिक्ष में मरने वाले भी तो चाहिए—मरूंगी।

विजय बाबू बोले—फिर भी भाभी—बात वे समाप्त न कर पाये

गुणदा बाबू की पत्नी बोलीं—रात हो रही है। आप जायें। मेरा जैसा भाग्य है—संभव है इसी घर पर—वे मुस्कराईं फिर बोलीं—हमारे साथ आप भी क्यों जांय।

चन्द्रालोकित पथ जन शून्य है।

दोनों मौन ही रहे। मन में गुणदा बाबू के घर की बातें ही घूम रही थीं।

—पच्चीस—

२४ दिसम्बर !

कल की रात सकुल बीत गई है। सवेरे महानगरी के निवासी अपेक्षाकृत शांत और स्वस्थ मन लेकर उठे हैं। शांत और स्वस्थ कहना शायद ठीक न हो; मुमूर्षु रोगी के निकट मृत्यु देखने वाले और अवसन्न एवं तन्द्राछन्नस्थिति में किसी तरह रात बिताने वाले की जो अवस्था होती है, वही अवस्था है। रात बीत गई है परन्तु वह निष्ठुर दुःसमय किसी समय भी आ सकता है। फिर आज चौबीस दिसम्बर है, संध्या बड़े दिन की संध्या है और तिथि पूर्णिमा।

नीला के पिता देवप्रसाद अपने बरामदे में घूम रहे हैं। आदर्शवादी देवप्रसाद आयु के साथ-साथ वास्तविक संसार के दबाव से शिथिल होकर बुझ से गये हैं। अपने आदर्श को अक्षुण्ण रख कर वे अब तक बराबर सहन करते आये हैं। परन्तु ऐसे जीवन के स्वाभाविक परिणाम में संसार के प्रति जो अश्रद्धा और सब के प्रति जो कि द्वेष उत्पन्न होना चाहिए, वह उनमें नहीं आया। जीवन की साधना में वे उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों वाले मानव धर्म के उपासक थे, इस धर्म की उपलब्धि भी उन्हें हुई थी। परन्तु अब धन के प्रति निर्लोप, भोग के प्रति वितृष्णा और नीति के प्रति श्रद्धावान देवप्रसाद को अपनी ही लड़की और अपने ही लड़के की ओर से जो आघात लगा है वह

उनकी सहन शक्ति से अधिक हो गया है। नीला और नेपी के व्यवहार से उनके जीवन की जड़ हिल गई है। देवप्रसाद को सब से बड़ा दुख इस बात से हुआ है कि वे दोनों नीति की सीमा लांघ गये हैं। नीला ने उनसे झूठ बोला है, कहा है, दो बन्धुओं को नाटक दिखाना है। यह नहीं बताया कि वे विदेशी हैं और पुरुष हैं। उनके साथ नाटक देखकर नीला ने निस्सन्देह उच्छृंखलता का परिचय दिया है, उनके आदर्श को कुचल डाला है। इसके अतिरिक्त वह घर छोड़कर चली गई है। देवप्रसाद के घाव पर ठेस लगी है।

उस रात में नेपी जब बुलाने पर भी नहीं आया तब देवप्रसाद ने समझ लिया कि वह चला गया। फिर वे नेपी के सम्बन्ध में कुछ नहीं बोले। कहना भी वे यही चाहते थे कि तुम को मैंने त्याग दिया। मेरी दृष्टि से तुम मृत हो। अब तुम यहां न आना। परन्तु कन्या से यही बात कह देना उनके लिए संभव एवं स्वाभाविक न था। जिस धर्म की उपासना वे करते आये हैं उसमें मनुष्यमात्र के अधिकार पवित्र एवं उदार हृदय से स्वीकार किए गये हैं परन्तु नारी जाति को शिशु की भांति असीम स्नेह और देवी की भांति सम्मान की पात्री बनाकर रखा गया है। शिशु जैसा स्नेह प्राप्त करने वाली की रक्षा और शासनाधिकार के सम्बन्ध में कोई प्रश्न ही नहीं उठता; और देवी के सम्मान की रक्षा करना भक्त का चिरन्तन अधिकार है। इस अधिकार को मान लेना देवी का भी शाश्वत देवधर्म है। साम्यवाद में नारी और पुरुष के समान

अधिकारों पर जो युक्तियां दी गई हैं, देवप्रसाद उनसे परिचित हैं। इन युक्तियों पर उन्होंने विचार भी किया है परन्तु उन्हें स्वीकार नहीं कर सके।

घूमते-घूमते देवप्रसाद के मुख पर मुस्कान आई—कड़ुवी मुस्कान। वे सोचने लगे, इस मत का अनिवार्य परिणाम नीला के जीवन में उतर रहा है। वह विदेशियों को आत्म समर्पण करने जा रही है।—वे अपने मन में भी मत के प्रचारक का नाम न ले सके। वे फिर मुस्कराये। साम्यवाद ! हाय, पराधीन देश में साम्यवाद ! योजना बन रही है कि कबंध के बाल कैसे काटे जांय—छोटे-बड़े या बराबर !

चलो, जो हुआ अच्छा हुआ। मुझे जो आघात लगा है, वह मैं वक्ष पर वहन करूंगा। इसके लिए मुझे कोई अनुशोचना भी न होगी। नहीं, अनुशोचना है भी नहीं !

देवप्रसाद जानते हैं कि नीला की मां दो दिन से एकान्त में रो रही है परन्तु मुंह से कुछ नहीं कहती। बड़ा लड़का मुरझाया पड़ा है, वह भी नहीं बोला, उसकी नौकरी छूट गई है। लज्जा के बोझ से वह बाहर भी नहीं निकलता। गृहस्थी का सारा बोझ अब देवप्रसाद को उठाना है—उठाना पड़ेगा—उत्तरदायित्व तो उन्हीं पर है। नीला का वेतन उन्हें बहुत कुछ निश्चिन्त किए था। अब यह खंदक भी भरनी होगी। दो दिन से वे इसी चिन्ता में डूबे हैं।

अर्थ की चिन्ता करते-करते देवप्रसाद हंसे भी हैं। अर्थ के लिए भी चिन्ता ? आज देश एक ओर सहारा जैसी मरुभूमि

हो रहा है, दूसरी ओर वर्षा की भरी गंगा जैसी तरल रजत धारा बह रही है—और बाढ़ से उच्छ्वसित हो रही है। उसमें अवगाहन करने का अवसर मिले तो मनुष्य रजत-देह हो जाय। युद्ध में नौकरी करते ही समस्या सरल हो जाती है। परन्तु—देवप्रसाद फिर हंसे। अनधिकार चर्चा वे नहीं करना चाहते। नीला तर्क के प्रसंग में कहती है—अधिकार क्या कोई देता है? वह तो लेना पड़ता है। नीला का यह तर्क सुन कर भी वे हंसते थे।

पत्नी ने आकर पूछा, आज तुम बाहर जाओगे?

चकित होकर देवप्रसाद बोले—अवश्य। चोट खाकर वे उत्तेजित होते हैं और नई शक्ति प्राप्त करते हैं। कर्तव्य तो करना ही होगा। स्त्री, पुत्र, पुत्रवधू, नाती और नातिन को तो बचाना ही पड़ेगा। यह दुर्योगमयी रात बिताकर नवल प्रभात देखने की कल्पना वे नहीं करते परन्तु यह व्यवस्था तो करनी ही होगी कि अपनी अनुपस्थिति में भी वे अपने जिन उत्तराधिकारियों में वर्तमान रहेंगे वे वंश का परिचय देने के लिए बचे रहें।

खा-पीकर देवप्रसाद बाहर जाने के लिए निकले तो देखा, दरवाजे पर एक पान वाला खड़ा है। सड़क के दूसरे किनारे पर उसकी दुकान है।

—क्यों शिवचरण?

—बाबू जी, मेरे ऊपर थोड़ी सी मेहरबानी करें!

—क्या?

—मेरी दुकान की कुछ चीजें बाबू जी,—एक शीशा, एक अलमारी आप रख लें तो—

—क्यों ? तुम क्या देश जा रहे हो ?

एक गहरी सांस लेकर शिवचरण बोला,—हां बाबू जी; क्या करूं ? बाल-बच्चों ने डर के मारे खाना छोड़ दिया है। बाबूजी—बड़ी लड़की ने कल से मुंह में एक दाना भी नहीं डाला। रस्ते में एक लौंडे ने मुंह से साइरन बना दिया—वह डर गई। फिर कुछ हो गया तो जान पड़ता है वह मर जायगी।

देवप्रसाद सोच रहे थे—सिर पर जब मौत खड़ी है तब दूसरे की चीज रखना क्या ठीक होगा ?

शिवचरण बोला—बाबू जी, झूठ न बोलूंगा, डर हमें भी लगता है। देश जा रहे हैं, फिर भगवान दिन देगा तो लौटेंगे।

फिर हंसकर बोला—बाबू जी, काम हमारा अच्छा चल रहा था। मैं पान की दुकान करता था, जनानी पकौड़े तल लेती थी। बाबू जी—हम बहुत गरीब हैं; देश में कुछ नहीं है। जान के डर से भाग रहे हैं—वहां शायद भूखे मरें।

देवप्रसाद ने पूछा—और कहीं नहीं रख सकते ?

—नहीं हुजूर, आप थोड़ी मेहरबानी करें, हम ठीक जानते हैं कि जब कभी लौटेंगे तब हमारी चीज मिल जायगी।

—किन्तु शिवचरण—

शिवचरण सिहर उठा, बोला, राम ! राम ! हुजूर—आप जैसे साधू आदमी—हुजूर कभी हो सकता नहीं—कभी नहीं। तब तो भगवान् भी झूठ है।

देवप्रसाद हंस कर बोले, अच्छा रख जाओ।

देवप्रसाद चले, वे बड़े लड़के के लिए किसी नौकरी की खोज में निकले हैं। उसे कहीं स्थान मिल जाय तो वे कुछ निश्चिन्त हो जांय। रास्ते में कलकत्ता छोड़ने वालों के गोल चल रहे हैं। गठरी-मुठरी सिर पर रखे लोग भाग रहे हैं। सियालदह के पास ट्राम खड़ी हो गई। आगे गाड़ियों, मोटरों, रिक्शाओं और मनुष्यों की भीड़ जमी है। ट्राम के लिए राह भी नहीं रही। देवप्रसाद सोचने लगे, पता नहीं इनमें कितने शिवचरण हैं—शायद सभी हों। कितनी साध और कितनी आशा लेकर ये यहां आये हैं, कर्मक्षेत्र बनाकर उसमें बीज डाला है, बीज अंकुरित हो आया है, अंकुर से पत्ते निकल रहे हैं—किसी के जीवन तरु में फूल आ गये हैं, फलों के भार से वह समृद्ध हो रहा है। आज काल-युद्ध ने सब तोड़-फोड़ दिया है, उलट-पुलट डाला है। और कितने ही भूखे मृत्यु भय को ठुकरा कर, जूठन मिल जाने की आशा लेकर कलकत्ते आ रहे हैं!

युद्ध की विष-वाष्प से देवप्रसाद का तन और मन जल-सा गया है। उनके मन में अभूतपूर्व परिवर्तन हो गया है। इस परिवर्तन को भूकम्प भीत मन का त्रास नहीं कहा जा सकता। देवप्रसाद को जान पड़ता है कि वे अभ्यस्त अन्धकार में अपने कुछ संस्कार लिए बैठे थे, अकस्मात् एक वज्र गिरा है और उसके प्रकाश से चारो ओर का भयंकरत्व अपने यथार्थ रूप में प्रकट हो गया है। उन्हें नीला और नेपी की याद आई—'वेल्स्ड आर दे हू हैव नाट सीन, बट् बिलीव्ड !

ट्राम चलने में विलम्ब है। देवप्रसाद उतर पड़े, पैदल ही जाना पड़ेगा।

आकाश में पूर्णिमा का चांद तैर रहा है। ज्योत्स्ना से भरी महानगरी अपरूप सौन्दर्यवती हो रही है। परन्तु मृत्युपुरी की ताम्बूल करंक वाहिनी के सौंदर्य की भांति यह रूप भी मानव-दृष्टि से उपेक्षित हो रहा है। केवल उपेक्षा नहीं—उपेक्षा में आशंका भी है।

देवप्रसाद का घर परन्तु कुछ सजीव हो रहा है। बड़े लड़के के लिए उन्हें काम की आशा मिल गई है। कई दिन के बाद आज अपनी पत्नी से उन्होंने कुछ बातें की हैं। बड़ा लड़का भी पास आकर बैठा है। देवप्रसाद ने उससे कहा, सवेरे जरा नीला का पता लगाना।

स्त्री की ओर देखकर पूंछा, तुम जानती हो कहां है?

लम्बी सांस लेकर नीला की मां ने उत्तर दिया, नहीं।

कुछ देर बाद देवप्रसाद फिर बोले—उनमें से कोई आया नहीं?

—नहीं।

देवप्रसाद ने ही फिर सन्नाटा तोड़ा—कागज-कलम दो, एक चिट्ठी लिख डालूं? तुम सब खा पीकर जल्दी ही निपट जाओ।

देवप्रसाद चिट्ठी लिखने बैठे, सोचने लगे क्या लिखूं। वे चाहते हैं कि नीला लौट आवे। वह वास्तव में अनुतप्त हुई हो तो

वे क्षमा करने के लिए भी प्रस्तुत हैं। चिट्ठी आरम्भ की—कल्याणी, धर्मनीति और आचार का उल्लंघन करके तुमने मेरे साथ जो व्यवहार किया है, उससे—

अकस्मात् रात की निस्तब्धता थरथराने लगी।—साइरन बजने लगा।

देवप्रसाद ने कलम रख दी, उठे, व्यस्त होकर भीतर गये, पूछा, साइरन बज रहा है, बच्चे खा चुके ?

—हां, आओ तुम भी कुछ खा लो।

देवप्रसाद हंसे—तुम भी अद्भुत हो। संसार में तुम्हारी तुलना नहीं हो सकती। भोजन ढक दो, लड़कों को लेकर बाहर निकल आओ। फस्ट एड के बिस्कुटों का डिब्बा कहां है ? ओह, बड़े दरवाजे में ताला लगाना है—जल्दी चलो।

बड़ा लड़का बाहर निकला और स्वाभाविक एवं शांत स्वर में बोला, ताला मैं बंद कर आता हूं।

देवप्रसाद ने फिर पुकारा—जल्दी चलो।

—आती हूँ, आती हूँ। राम ! राम ! जीने के नीचे की कोठरी में जाने से ही जैसे लोहे के वासर घर में बैठ जायंगे।

गृहिणी अपने मन की विरक्ति न दबा सकीं।

नीचे जीने के नीचे एक कोठरी है। पहले उसमें टूटी-फूटी चीजें भरी रहती थीं, एयर रेड सेल्टर की आवश्यकता समझ कर देवप्रसाद ने उसे साफ करवा लिया है।

देवप्रसाद विरक्त नहीं हुए, हंसे। रुई, टिंचर आइडिन,

ग्लेसरिन और बिस्कुट का डिब्बा आदि ढूंढ कर जमा किया तो देखा कि बत्ती नहीं के बराबर है। जो थी वह पहले की रात में जल चुकी है, शेष आध घण्टे से अधिक न जलेगी। कोठरी में बिजली भी नहीं है। जितनी बत्ती थी उसी को जला कर और सबको जमा करके वे बैठे।

आतंक उत्पन्न करने वाली निस्तब्धता है, सब चुपचाप बैठे हैं। पुत्रवधू कांप रही है—गोद के बच्चे को छाती से चिपकाये बैठी है। देवप्रसाद का मुख पत्थर का मुख जान पड़ता है। गृहिणी कपड़े की आड़ में माला जप रही हैं।

वायुयान की ध्वनि आ रही है। यहां के वायुयानों से जो ध्वनि निकलती है, उससे इस ध्वनि का पार्थक्य भी समझ में आ रहा है। इसमें धातव शब्द का संस्पर्श नहीं है और बीच बीच में रुककर फिर तीव्र हो जाता है। सब आतंकित हो गये।

इसी समय विस्फोट का शब्द सुन पड़ा।

कुछ मुहूर्तों के बाद फिर—

फिर!

साथ ही साथ आंगन में प्रतिफलित होने वाली आलोक की आभा झलकी।

बड़ी नातिन डर गई और रोने लगी। पुत्रवधू कांपते-कांपते गिरने लगी। भूमि पर हाथ टेक कर किसी तरह संभली। इसी समय बत्ती बुझ गई। गाढ़ अन्धकार में निकट बैठे मनुष्य भी खो से गये और सिहर उठे।

बड़ी नातिन रोई—दादी !

बड़ा नाती रोया—मां !

पुत्रवधू का कंपित स्वर आया—मां !

गृहिणी बोलीं—ए जी !

बड़ा लड़का मौन रहा ।

देवप्रसाद ने सहारा दिया—कोई बात नहीं, डरो नहीं ।

सन्नाटा होगया ।

फिर वायुयान की ध्वनि आई ।

पुत्रवधू ने पुकारा—मां !

गृहिणी ने अन्धकार में ही उसके बदन पर हाथ फेर कर कहा, कांपती हो, डरो नहीं !

गोद की बच्ची रोई ।

बड़ा लड़का अब बोला—विरक्त होकर बोला—अः इन्हें रोको, सब एक साथ रोयेंगे तो कैसे काम चलेगा !

बहू ने लड़की के मुंह में स्तन लगाया और छाती से दबा लिया ।

फिर धमाका हुआ ।

फिर !

फिर !

ओह कितनी प्रचण्ड ध्वनि है । घर की भूमि में कंप संचारित हो गया !

देवप्रसाद लड़के से बोले—लड़की को तुम ले लो, बच्चा मुझे दे दो—गोद में बैठेंगे तो हिम्मत रहेगी !

स्तब्ध अन्धकार में ये कुछ प्राणी बैठे हैं, एक दूसरे के हृदय का स्पन्दन सुन रहे हैं। समय नहीं कटता। इन्हें ऐसा जान पड़ता है कि हमारे सिवा इस नगर में कोई नहीं है। सब चले गये हैं। हमीं हतभाग्यतम हैं—हमीं पड़े हैं।

ठीक इसी समय साइरन समान स्वर में बोला—आल क्लियर! आल क्लियर!

देवप्रसाद बोले—आः!

वे ही सब से पहले बाहर आये और बरामदे का स्विच दबा कर बत्ती जलाई। प्रकाश! सब आश्वासनों से बड़ा आश्वासन! ज्योति! देवप्रसाद ने आज की कुशल के लिए मन ही मन में ज्योतिर्मय को प्रणाम किया। बोले—आओ, निकल आओ!

पुत्र वधू दरवाजे पर आते ही फफक कर रोने लगी—हाय यह क्या हुआ—मां!

—क्या? क्या? क्या हुआ बहू?

—मेरा बच्ची; यह क्या हुआ?

प्रकाश में देखा गया बच्ची विवर्ण हो रही है—हिम हो गई है। विस्फोट के धमाके से डर कर मां ने उसे छाती से दबा लिया था, बच्ची जितनी चंचल हुई, मां की बाहुवेष्टनी भी उतनी ही कसती गई। अंत में जब वह शांत और शिथिल हो गई तब भी मां ने उसे निद्रित समझा और छाती से दबाए बैठी रही। परन्तु उस की सांस रुक गई थी और वह इस संसार से चली गई थी।

—छब्बिस—

आतंक से भरी रात का अवसान हुआ। आज सम्पूर्ण ईसाई जगत् का पवित्रतम दिवस २५ दिसम्बर है। आज ही महामानव और प्रभु के पुत्र माने जाने वाले ईसा का जन्म हुआ था। परन्तु योरोप के युद्ध में आज भी विराम नहीं हुआ, नर हत्या हो रही है। अहिंसावतार बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म के अनुयायी जापानी भी हिंसा का ताण्डव कर रहे हैं। सवेरे के समाचार पत्रों में ईसाई समाज के अन्यतम धर्मगुरु का यह सन्देश प्रकाशित हुआ है—"चरमतम विभीषिका और घृणा के वातावरण में ईसाई इस महापर्व के अनुष्ठान में प्रवृत्त हो रहे हैं।"

नीला ने पढ़ा—Oh, God, the heathens are come into Thine inperitence', They, holy temple they have defited'—

विजय बाबू बीच में ही बोले—हाय भगवान!

नीला ने विस्मय के साथ पूछा,—क्यों?

विजय बाबू बोले—धर्मगुरु ने शांति काल में यह हिंसा नहीं देखी? योरोप की बात नहीं जानता, कलकत्ते में आकर बड़ा दिन मनाते तो मछली और मांस की बहार देख कर दिव्य दृष्टि प्राप्त कर लेते। खाते तो दिव्य ज्ञान मिल जाता!

फिर पुकारा—षष्ठी! षष्ठी!

षष्ठी आया।

—देखो तो बाजार में मछली हंसती है या रोती है। रोती हो तो ले आओ। समझे? सस्ती मिले तो—

नीला बोली,—मैं जरा जा रही हूं—

—कहां ?

—नेपी से कहा है, लौटते हुए घर होता आये—मोड़ पर देखूं शायद आया हो।

विजय बाबू ने आपत्ति न की। दफ्तर से उन्होंने कल रात में ही जान लिया है कि बम कहां गिरे हैं, नीला को भी बता दिया है। नीला के घर के निकट कोई दुर्घटना नहीं हुई फिर भी नीला को उत्कण्ठा है। नेपी कुछ रात रहते ही बम बर्षित क्षेत्र के संवाद लेने चला गया है।

नीला ट्राम के मोड़ पर खड़ी हुई। सड़क के किनारे भीड़ लग गई है। चर्चा चल रही है। कल रात के वायु आक्रमण की अफवाहें गरम हो रही हैं।

कोई कहता है—अमुक स्थान को मरुभूमि बना गया है।

—उनकी इतनी बड़ी बिल्डिंग मिट्टी में मिल गई है।

—आज दिन में ही देखना।

—दिन में ?

—अवश्य ! बड़ा दिन मनाने न आयेगा !

एक चुपके से बोला—जापानी पायलेट तो सब स्त्रियां हैं।

—स्त्रियां ! कहते क्या हो ?

—हां, स्त्रियां

—स्त्रियां

—पागल ! स्त्रियां कहीं ऐसे काम करती हैं ?

—मैंने एक बड़े अफसर से सुना है। चटगांव के उधर एक जापानी प्लेन टूट कर गिरा था। पायलेट ने 'हारिकिरि' (आत्म-हत्या) कर ली थी। देखा तो वह मर्द नहीं औरत थी। फिर एक पकड़ा गया—वह भी स्त्री। उसने बताया, ऐसे छोटे छोटे काम हमारे यहां स्त्रियां ही कर लेती हैं।

लोग हैरान हो गये।

नीला पहले एड़ी से चोटी तक जल रही थी, अन्तिम बातें सुनकर वह हंसे बिना न रह सकी। इसी प्रकार आदि युग में मनुष्य ने आंधी और आग में देवता का आविष्कार किया था। उसे एक घटना याद आई। कई वर्ष पहले वह गर्मी की छुट्टी में अपने गांव गई थी। वैसाख मास बीत रहा था। एक दिन आंधी आई तो घर की दीहाती दासी ने लकड़ी का एक पाटा रखा था और कातर स्वर में कहा था—बैठो देवी, स्थिर हो! नीला सोचने लगी, यदि इन सब मनुष्यों के कंधों पर वास्तविक उत्तरदायित्व होता तो इनका रूप भी भिन्न हो जाता। कनाई बाबू ने एक दिन अपने घर के एक लड़के की कहानी सुनाई थी। लड़का अठारह वर्ष का होगया है परन्तु दूसरा आदमी उसका मुंह धोता है और रोटी खिलाता है। सम्पूर्ण देश की यही अवस्था है। और इसी देश के सैनिक अफ्रीका में जर्मनों के साथ संग्राम कर रहे हैं।

अकस्मात् नीला का मन उदास हो गया। उसे याद आया, कनाई बाबू के घर का वह लड़का २२ दिसम्बर की बम वर्षा में मारा गया है। उनके घर का एक भाग टूट गया है और वे न

जाने कहां चले गये हैं। इन्हीं कनाई बाबू ने एक दिन मुझे काम-रेड कहा था, अपने जीवन का रहस्य बताने का वचन दिया था परन्तु बताया नहीं, यही नहीं, भेंट करने का वचन तोड़ कर मेरा अपमान किया। अवश्य उनके जीवन का रहस्य मुझसे छिपा नहीं है—गीता ही उनके जीवन की गोपनीय वस्तु है! फिर भी उनको स्नेह दिए बिना नहीं रहा जा सकता—गुण भी उनमें बहुत हैं। कनाई की शोचनीय परिणति के स्मरण से नीला के अन्तर में आवेग उत्पन्न हुआ साथ ही साथ यह सोचकर क्षोभ भी हुआ कि उन्होंने मुझे एक बार स्मरण तक नहीं किया। उसके ओठों तक वक्र मुस्कान आई। मुझे क्या याद करते, वे तो गीता और विजयदा को भी याद नहीं कर सके!

ट्राम से नेपी उतरा। नीला को देखते ही वह बोला—विशेष हानि नहीं हुई दीदी। प्रायः सब हिट मिस हो गये हैं।

नेपी और नीला को भीड़ ने घेर लिया।

बहुत कम बोलने वाला नेपी वाचाल होगया।

नेपी को किसी तरह भीड़ से निकाल कर नीला ने पूंछा—घर गया था?

वाचाल नेपी फिर मूक होगया।

—नहीं गया?

—भूल गया दीदी।

—छि ! छि ! छि !

—अब जाऊंगा। अपराधी की भांति नेपी बोला। शाम को जाऊं तो और भी ठीक हो। उन लोगों ने आज गीता से मिलने का समय दस बजे रख दिया है। विजयदा ने उसे पहुंचाने के लिए कुछ किताबें दी हैं—वे भी दे आऊंगा।

नीला ने कोई उत्तर न दिया।

नेपी बोला—तुम को विजय दा एक कलम देंगे।

—किसने बताया ?

—मैं जानता हूं।

नीला ने मुस्करा कर पूछा—तुझे क्या देंगे ?

—मुझे एक किट बैग—फस्टक्लास किट बैग—फिर मुझे घूमने फिरने में बड़ी सुविधा हो जायगी।

नीला हंसी। बगल की दुकान में घड़ी का घण्टा बजा।—ओह नौ बज गये—जल्दी चल। मुझे आज बड़े दिन में भी छुट्टी नहीं है। इतना जरूरी काम है।

नेपी बोला—तो मैं फिर शाम को घर जाऊंगा।

—साढ़े चार के बाद। मैं दफ्तर से लौट कर मोड़ पर उतरूंगी। वहीं रहना, साथ चलेंगे।

यह बहुत अच्छा होगा। नहीं तो, बाबू जी मिलेंगे तो मैं—नेपी अपनी पितृभीति को भाषा न दे पाया।

साढ़े चार बज गये हैं।

श्यामबाजार जाने वाली ट्राम से नीला अपने घर के मोड़ पर उतरी। रात से उसका मन पिता, माता, दादा, भाभी और भतीजों को देखने के लिए अधीर हो रहा है परन्तु नेपी, मोड़ पर नेपी नहीं है। नीला को आश्चर्य हुआ, वह एक खम्भे के पास खड़ी होकर प्रतीक्षा करने लगी। मनुष्यों की दृष्टि इसी तरह पहले स्तम्भों पर ही पड़ती है। इसके अतिरिक्त गतिशील भीड़ के बीच में गतिहीन होकर खड़े हो जाने से उसके साथ संघर्ष भी होगा। भूमि में दृढ़ता के साथ गड़े हुए लोहे के खम्भे को भीड़ भी बचा कर चलती है। सुरक्षा की दृष्टि से खंभे के पास खड़ा होना ही ठीक है।

सड़क से ए. आर. पी. की कुछ लारियां निकलीं, उनके साथ ए. एफ. एस. और एम्बूलेंस की गाड़ियां भी हैं। ए. आर. पी. और ए. एफ. एस. के कर्मचारियों ने अपने सिर पर अभी से लोहे के हेलमेट पहन लिए हैं। ट्रैफिक पुलिस के कंधे पर भी हेलमेट लटक रहे हैं। सड़क के उस पार कालेज स्ट्रीट की मार्केट में अभी से भीड़ बढ़ रही है। जिन्हें शाम के बाद कुछ खरीदना था वे दिन की रोशनी में ही आ गये हैं। जापानी वायु-आक्रमण की आशंका से पूर्ण रात जो आ रही है। छोटे-मोटे दुकानदारों ने अभी से सामान समेटना आरम्भ कर दिया है।

नेपी अब तक नहीं आया। नीला क्षुब्ध हो गई। माता पिता के प्रति वह इतना ममताहीन हो गया है! इतना हृदयहीन है वह! अपने मन के सारे संकोच को बलपूर्वक हटा कर नीला अकेली ही

बढ़ी। घर के निकट पहुंच कर उसकी व्यग्र दृष्टि बरामदे पर पड़ी। शाम को इसी संकीर्ण बरामदे में उसके पिता बैठते हैं, गोद में नाती रहता है। आज वे बरामदे में नहीं हैं, उसकी रेलिंग के सहारे नेपी खड़ा है। उसकी दृष्टि भूमि पर जमी है। नीला ने समझा—बाबूजी विद्रोही सन्तान को क्षमा नहीं कर सके। बंद द्वार तक नहीं खुला। वह स्तब्ध होकर खड़ी हो गई, सोचने लगी यह रुद्ध द्वार क्या मेरे जाते ही खुल जायगा? फिर भी वह बढ़ी, यह सोच कर बढ़ी कि मुझे जाना ही चाहिए. अपना कर्तव्य तो करना ही चाहिए। वे इस घर में स्थान भले ही न दें; उनका कुशल-समाचार तो मुझे लेना ही चाहिए।

घर के सामने जाकर नीला स्तम्भित हो गई। दरवाजे पर ताला बंद है और दीवाल पर एक बोर्ड लटका है, उस पर लिखा है—'टु लेट'

नीला ने पुकारा—नेपी!

नेपी किसी गहरी चिन्ता में ज्ञान शून्य होकर भूमि की ओर देख रहा था। नीला की उपस्थिति का भी उसे ज्ञान नहीं हुआ। आवाज सुनकर उसने मुंह उठाया और नीला को देखकर अपने स्वभाव के अनुसार अनजान की भांति मुस्कराया।

नीला ने उद्विग्न होकर पूछा—क्या हुआ नेपी?

नेपी अब आगे बढ़ा। नीला के हाथ में उसने एक चिट्ठी रखी। लिफाफे पर देवप्रसाद के हाथ से नीला और नेपी का नाम लिखा गया है। लिफाफा खुला है, नेपी ने खोल कर पढ़ा है।

नेपी बोला, बाबू जी मोदी को दे गये थे, उसने मुझे दिया है।

बहुत दिन का पुराना मोदी है। नीला ने बचपन में उससे लाइमजूस खरीदा है। यहीं उसकी दुकान है।

नेपी बोला—छोटी मुन्नी नहीं रही—

नीला चौंकी—छोटी मुन्नी! छोटी मुन्नी नीला की दुधमुंही भतीजी—

—हां, मोदी कहता था, उसी ने सब प्रबन्ध किया है। बाबू जी तो पागल जैसे हो गये थे—

बच्ची की मृत्यु देवप्रसाद के लिए कठोरतम चोट हो गई थी। सबेरा होते ही उन्होंने लड़के को बुलाया और कहा—आज ही तुम सब गांव जाने के लिए तयार हो जाओ। वहां जो कुछ है उससे तुम्हारा काम चल जायगा। पचीस बीघा भूमि, तालाब और बगीचा—एक दीहाती परिवार के लिए पर्याप्त है। लड़कों को खेती करना सिखाना—कुछ पढ़ लिख लें तो प्रबन्ध करना। लड़कियों को कभी न पढ़ाना—मैं निषेध कर रहा हूं।

लड़का कुछ कहने ही वाला था कि वे बोले—प्रतिवाद न करो। यदि प्रतिवाद करना ही है तो अपनी स्त्री और बच्चों को लेकर जहां जी चाहे चले जाओ।

लड़का फिर कुछ नहीं बोला। वह भी बम के भय से कलकत्ता छोड़ने की चिन्ता कर रहा था। वह निरीह और शांत व्यक्ति है। तरुण आदर्शवादी देवप्रसाद ने उसे कठोर निष्ठा के साथ अपने ढांचे में ढालने की चेष्टा की है। उनकी इच्छा के अनुसार उसने

एम. ए. पास किया है, अम्लान होकर दुःख कष्ट सहे हैं परन्तु उसका अपना अस्तित्व नहीं रह गया। इसके अतिरिक्त स्कूल के सेक्रेटरी या हेडमास्टर द्वारा शासित उसका कर्मजीवन भी निरीह और शांत रहा है। उसने सोचा, उत्तेजित और आहत पिता की बात सम्मान के साथ मान लेना ही उचित है। यदि मैं प्रतिवाद करूंगा तो बाबू जी शायद पागल हो हो जांय। फिर इस विषय में मेरा जो मतभेद है उसकी मीमांसा आज ही कर लेना आवश्यक नहीं है। बम वर्षा के समय मैं भी कलकत्ते में नहीं रहना चाहता, रहा युद्ध के बाद यहीं लौट आने का प्रश्न, वह स्वयं सुलझ जायगा। तब तक बाबू जी भी शांत हो जांयगे और नीला और नेपी भी लौट आयेंगे।

देवप्रसाद ने कहा था, तुम्हारी मां तुम्हारे साथ जायेगी, मैं गुरुदेव के आश्रम में रहूंगा। यदि संभव हो सका तो उन्हें भी अपने साथ ले जाऊंगा। मैंने आज से संसार छोड़ दिया।

देवप्रसाद की यह बात सुनकर उनके अन्तर की वेदना का अनुमान करने में लड़के ने भूल नहीं की। उसकी आंखें भर आईं, कुछ बूंद भी टपके। परन्तु ये आंसू देवप्रसाद को हिला न सके। वे बोले—अपनी मां और बहू के गहने ले आओ।

लड़के ने विस्मित होकर उनके मुंह की ओर देखा था।

देवप्रसाद ने कहा था—उन्हें बेचूंगा। तुम्हारे भावी जीवन के लिए कुछ मूलधन हो जायगा। सोने के गहने—अच्छे कपड़े—अच्छा भोजन—इनकी आवश्यकता सदा के लिए मिट जाय।

लड़के ने कोई उत्तर न दिया ।

देवप्रसाद ने कहा—तुम्हारी इच्छा न हो तो रहने दो। जो तुम्हें अच्छा लगे, वह करना। मेरा उत्तरदायित्व इसी क्षण से समाप्त हो गया।

नीला की मां और भाभी सुन रहीं थी। बहू ने अपने गहने उतार कर ससुर के पैरों में रख दिए थे—नीला की मां ने भी उसका अनुकरण किया था।

आज दोपहर को ही वे कलकत्ते से गये हैं। और सब गांव गये हैं, देवप्रसाद उनके साथ नहीं गये। कहां गये हैं, यह मोदी भी नहीं जानता। चलते समय यह पत्र देवप्रसाद मोदी को दे गये हैं, कह गये हैं, नीला और नेपी आवें तो दे देना।

देवप्रसाद ने लम्बा पत्र लिखा है, उसकी भाषा कठोर और निष्ठुर है, अभिव्यक्ति में क्षमा का स्थान नहीं है। लिखा है—"मैंने समझा था कि जीवन की तरुण शक्ति के आवेग से तुम संसार की सब जातियों के महत्व और सत्य को समझ कर अपने जीवनादर्श के साथ उसका समन्वय करना चाहते हो। हमारे जीवन, धर्म और नीति पर नया प्रकाश डालकर उसे नये रूप में प्रकाशित करना चाहते हो परन्तु मेरा भ्रम हो गया है। दोष मेरा ही है। शिक्षा के दोष से तुम देश के वास्तविक शरीर, प्राण और आत्मा के प्रति श्रद्धा खो बैठे हो, उसे समझने की चेष्टा भी तुमने नहीं की—इस सम्बन्ध में तुम सर्वथा अज्ञ हो। इसीलिए विदेशी इतिहास, विदेशी शास्त्र और विदेशी जीवन धर्म को

अपनाते समय तुम्हें अणुमात्र भी संकोच नहीं हुआ। तुमने उन्मत्त की भांति परधर्म की आत्म-घाती चर्चा की है और दौड़े हो। नीला को आधी रात के समय विदेशी सैनिकों के साथ रंगालय में देखकर मुझे इस सम्बन्ध में कोई शंका नहीं रह गई। तुम जाति त्यागी और धर्म त्यागी हो। हमारे पूर्वजों की साधना ने जिस महनीय कुलगौरव की प्रतिष्ठा की है, तुमने उसका अपमान किया है—तुम कुल त्यागी हो। तुम्हारे लिए मेरे हृदय में कोई मोह नहीं, कोई ममता नहीं। तुम्हारे चित्त में शुचिता नहीं है, विचार में सतता नहीं है, कर्म में साधुता नहीं है—नीति धर्म को छोड़कर तुमने कूट कौशल को अपना जीवन धर्म बना लिया है। धर्म नीति, चरित्र नीति, हृदय नीति—सब नीतियों को छोड़कर, कुल धर्म और जातीय इतिहास एवं संस्कृति को तिलांजलि देकर तुम लोग मानव समाज में चाण्डालत्व के साम्य की प्रतिष्ठा करने जा रहे हो—उदर ही तुम्हारा सर्वस्व है, शरीर ही तुम्हारे लिए सब कुछ है। विश्वास और ध्यानानुभूति से वंचित तुम लोग युक्तिवाद के तीक्ष्ण अस्त्र से आत्मा की हत्या कर रहे हो। जो दुर्बल हैं, जो अधःपतित हैं, मनुष्य के महासाधन क्षेत्र इस संसार में अपनी जाति का स्वतंत्र अस्तित्व स्थिर करने योग्य साधना जिनके पास नहीं है—अधिकार नहीं है—वे ही मानव जाति या महामानव नामक एक आत्म प्रतारणामय कल्पना का सहारा लेकर—दूसरी जाति से प्रसाद की भिक्षा मांग कर—जीवित रहना चाहते हैं। दरिद्र जैसे अपनी कंगाली को आत्मीयता के आवरण में ढक

कर धनी से भीख मांगता है—वैसे ही तुम भी जीवित रहना चाहते हो। तुम्हारी यह नीति उतनी ही हीन, उतनी ही घृणाई है—इसमें और उसमें कोई अन्तर नहीं।

मैंने तुम लोगों को त्याग दिया है—दुष्ट अंग की भांति त्याग दिया है। इसके लिए मुझे कोई वेदना नहीं हुई अपितु मैं अपने आप को स्वस्थ अनुभव करता हूं। मैं तुम्हें कोई अभिशाप नहीं देता परन्तु तुम ने फिर हम लोगों से सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की—फिर हमारे कुल धर्म में विष फैलाने का प्रयत्न किया तो मैं तुम्हें कभी क्षमा न करूंगा।"

नीला के मस्तिष्क का रक्तस्रोत उत्तेजित हो गया, नसें तड़कने लगीं। उत्तेजना विस्फारित दृष्टि से उसने नेपी की ओर देखा।

नेपी के म्लान मुख पर वही अनजानों जैसी मुस्कान है। वह बोला. बाबू जी बहुत क्रुद्ध हो गये हैं। इस पर मुन्नी की मृत्यु, उन्हें बड़ी चोट लगी है।

नीला के मुंह पर तिक्त हंसी आई। उसने सोचा, काल धर्म से दुर्बल विहंग दम्पत्तियों के शावक जब अपने जड़ता हीन पंखों में सबलता का आवेग और विहंग जीवन के मर्मालोक की प्रेरणा प्राप्त करते हैं, और ऊर्ध्व लोक का आविष्कार करने के लिए यात्रा करते हैं, तब दुर्बल विहंग दम्पत्ति इसी प्रकार वेदना से अधीर होते हैं—ऐसी ही बातें करते हैं। वे वह दिन भूल जाते हैं, जब उन्होंने अपने माता-पिता का आश्रय-नीड़ छोड़ कर

यात्रा की थी. उन्हें यह भी याद नहीं आता कि शावकों की यह यात्रा हमारी यात्रा का ही परवर्ती जीवन प्रवाह है, अवछिन्न अग्रगति है, हमारी गति की ही परिणति है। चक्राकार में निरन्तर ऊर्ध्वलोक की ओर उड़ते और अपनी दृष्टि एवं कल्पना के पथ से हटते देख कर वे शावकों को पथ भ्रष्ट समझ लेते हैं, क्रुद्ध होते हैं और तिरष्कार करते हैं।

एक लम्बी सांस लेकर नीला बरामदे से नीचे उतर आई और नेपी से बोली—आ, अभी लम्बा रास्ता पार करना है।

आकाश में कृष्ण प्रतिपदा का चन्द्रमा उदय हो रहा है। दुकाने बन्द हो रही हैं। केशवसेन स्ट्रीट के भीतर अधिक भीड़ नहीं होती। पिछली रात के आतंक से मार्ग प्रायः जन शून्य हो गया है। सरदी भी बढ़ रही है। उज्वल ताम्राभ सांध्य ज्योत्स्ना में शहर का धुआं कुहरे जैसा जान पड़ता है।

नेपी ने पुकारा—दीदी!

—हुं! नीला ने उत्तर भी दिया और अपनी चाल भी तीव्र कर दी। उसके द्रुतपदरव से अस्वाभाविकता स्पष्ट हो रही है, नेपी विस्मित हुआ। वह आज कुछ अवसन्नता अनुभव कर रहा है, चलते-चलते उसने कई बार अपने पुराने घर की ओर घूम-घूम कर देखा है। उसने पुकारा, दीदी!

नीला आगे बढ़ गई थी उसने रुक कर और घूम कर देखा बुलाया—नेपी!

—जरा धीरे चलो!

—आ ! आ ! नीला के कण्ठ में विरक्ति बोली। वह चली, फिर खड़ी हो गई—बोली कौन है ?

धूमधूसर ज्योत्स्ना में मकान की दीवार के सहारे एक आदमी खड़ा है।

—दो पैसे दें मां ! दिन भर का भूखा हूं !

आश्चर्य, नीला उस व्यक्ति से रुष्ट हो गई। कड़े स्वर में बोली— नहीं ! और उसने अपनी द्रुतगति द्रुततर कर दी। उसके अंतर में आंधी चल रही है। चिट्ठी पढ़ कर पहले उसने अपने आप को संयत किया था. उसका कारण शायद मुन्नी की मृत्यु का संवाद था। इसके बाद पिता की तीव्र और निष्ठुर बातें तीव्रतर होकर उसके मर्मस्थिल में चुभने लगी न। उसकी आंखें प्रखर दीप्ति से भर आईं। वह सोचने लगी, "चित्त में शुचिता नहीं, विचार में सतता नहीं, कर्म में साधुता नहीं" धर्मान्धों की वही पुरानी गालियां, ध्वन्सोंमुख वर्तमान नवजीवन से सम्पन्न भविष्य को यही विषैला अभिशाप देता है। महनीय कुल गौरव—युगान्तर व्यापी दासत्व करने वाले भी गौरव करते हैं,—तुम ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुए हो, तुम्हारे इस गौरव को न मानकर वह विज्ञान की दृष्टि से देखता है—यही उसका अपराध है ! अधःपतन—ध्वंस की चरमसीमा पर पहुंच कर भी उस गौरव का और चित्त की शुचिता का विचार करते हैं ? दूसरे को हीन समझने में, दूसरे के सामने न सही, अपने निकट चित्त की शुचिता अवश्य प्रमाणित हो जाती है। राग और क्षोभ से अधीर होकर नीला ने अपने पिता की बातों को मन में ही खण्ड खण्ड कर दिया।

नीला की विचार धारा बढ़ रही है—नहीं मैं किसी की बात न मानूंगी। जिस अकारण सन्देह में पड़कर बाबू जी ने मेरा निष्ठुरतम अपमान किया है;—अकस्मात् उसे याद आया कि ऐसा अपमान एक और व्यक्ति ने भी किया है। जेम्स और हेरेल्ड के साथ उसे बैठे देखकर कनाई की आंखों और बातों से भी यही अभिव्यक्ति झलकी थी। चाहे जो हो, इस सन्देह को अब मैं अकारण न रहने दूंगी। वे यदि मुझे चाहते हैं, न चाहते हों तो भी मैं उन्हें जीतूंगी और वे चाहेंगे। संकोच मैं क्यों करूं? मैं पशु-नारी नहीं हूं—यदि उनमें से किसी को आत्मसमर्पण कर दूंगी तो वे जंजीर में बांध कर न पालेंगे, कुल गौरव की रक्षा के लिए मेरे सामने देवता बनकर न आयेंगे—बुरका पहना कर, असूर्यपश्या बनाकर अपने हरम में ताला बंद करके न रखेंगे!

मैं यही करूंगी!

नेपी बहुत पीछे रह गया है। वह उसी व्यक्ति के फैले हुए हाथों के सामने खड़ा है और अपनी जेब में पैसा ढूंढ रहा है!

—सत्ताइस—

नीला की भाव भंगी में उसके मन की रूक्षता प्रकट हो रही है। नेपी उसे देख कर डर गया। विजय बाबू ने भी तीक्ष्ण दृष्टि से देख लिया परन्तु मौन रह गये।

उस दिन रविवार था। नीला बोली—विजयदा आप से एक बात पूछूंगी।

विजय बाबू हंसकर बोले—पूंछो ! सुनने के लिए मैं सर्वदा प्रस्तुत रहता हूं—निद्रा का समय छोड़कर। इसीलिए तो भाई मैं चिर कुमार रह गया हूं !

नीला परिहास के पास भी न फटकी, बोली, मेरे दो अंग्रेज मित्र हैं। थोड़े दिन हुए उनसे परिचय हुआ है। वे यहां मुझ से भेंट करने आवें या मैं ही उन्हें बुलाऊं तो आप आपत्ति करेंगे ?

—आपत्ति क्यों करूंगा ? और करूं भी तो तुम सुनने क्यों लगीं।

—सुनना पड़ेगा—घर तो आप का है।

—घर तो मेरे नाम अवश्य है परन्तु तुम तो अपना खर्च देकर रहती हो—तुम्हारा अधिकार मुझ से कम नहीं है।

नीला चुप हो गई।

विजय बाबू हंसकर बोले—समझ में नहीं आता कि इस स्थूल बाधा ने तुम्हारी जैसी शणित बुद्धि वाली युवती की राह कैसे रोक ली है। इसे तो हमारे बंटे हुए घरों की साधारण स्त्रियां भी फूंक कर उड़ा देती हैं। बचपन में सीखा मंत्र वे कभी नहीं भूलतीं—हमारा भी तो हिस्सा है।

बात नीला के अंतर में कुछ चुभी। परन्तु वह कहती क्या, उसीने तो बात के कान उमेठ कर उसे इतने ऊंचे परदे पर पहुंचाया है। विजय बाबू भी और कुछ न बोले। शायद उन्हें काम की जल्दी थी, स्नान भोजन करने के बाद वे बाहर चले गये और घण्टे भर

बाद फिर लौटे—नीला तब भी स्तब्ध बैठी थी। वे सस्नेह बोले—नीला भाई, तुम ने नहाया नहीं, खाया भी नहीं ?

नीला बोली—जा रही हूं।

विजय बाबू ने हंसकर पूंछा—मेरी बात से तुम्हें दुःख हुआ है ?

—नहीं—कह कर नीला चली गई।

स्नान गृह से लौट कर नीला ने देखा कि विजय बाबू अपना बैग संभाल चुके हैं और बिस्तरा बांधने की चेष्टा कर रहे हैं। वह ठिठकी। विजय बाबू ने कहा—कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूं।

नीला ने विस्मय के साथ पूंछा—कांफ्रेंस ? कहां ? मैंने तो नहीं सुना।

—नहीं, कांफ्रेंस नहीं है। पत्र के काम से जा रहा हूं बंगाल में भ्रमण करना है। वहां की स्थिति अच्छी नहीं बताई जाती—स्वयं देखने जा रहा हूं।

—क्या हुआ है वहां ?

—पार्टी के दफ्तर में नहीं सुना ? वहां तो समाचार आये हैं। फिर हंस कर बोले, ओह, आज कल तो तुम पार्टी के दफ्तर में ही बहुत कम जाती हो।

नीला कुछ देर चुप रही फिर बोली—आज कल मेरी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं है विजयदा। मुझ से अब सहन नहीं होता।

—मैं जानता हूं भाई परन्तु सहन तो करना ही पड़ेगा।

नीला मूर्ति बनी खड़ी रही।

विजय बाबू बोले—"विपदे मोरे रक्षा करो, ए नहे मोर प्रार्थना
विपदे जेन ना करि आमि भय।"

—डरने से काम न चलेगा। इस संसार व्यापी दुर्योग ने हमारे जीवन के पुराने दुर्योग को और भी घनीभूत कर दिया है। इसे सहना होगा भाई—इसे पार करना पड़ेगा।

नीला ने इस बात का भी उत्तर न दिया।

चलते समय विजय बाबू हंस कर बोले— मैं जा रहा हूं—लौटने में कुछ दिन लगेंगे, पन्द्रह दिन बीत सकते हैं। श्रीमान् नेपी और श्रीमान् षष्ठी का भार तुम्हारे ऊपर रहा। देखना एक समय से खाये और दूसरा समय से बनाए। नेपी बाहर जाने लगे तो यह पूंछना न भूलना कि पैसे हैं या नहीं, न हों तो देना। षष्ठी से रोज पूंछना, कल के पैसे बचे हैं या नहीं—नित्य हिसाब लेना और जो पैसे दे, उन्हें खूट में बांध लेना।

अब नीला मुस्कराई।

विजय बाबू निकट आ कर बोले, जरा सावधान रहना भाई और मेरा अनुरोध है, जब तक मैं लौट न आऊं तब तक जरा नीचे देख कर चलना।

नीला बोली—क्यों जा रहे हैं, यह तो बताया ही नहीं!

—नेपी से पूछना। वह आवेग पूर्ण भाषा में अच्छी तरह बतायेगा। गाड़ी सचमुच छूटने वाली होगी।

बम का आतंक बहुत कुछ कम हो गया है। मनुष्य की पहिली विह्वलता समाप्त हो चुकी है! नीला की धारणा भी बदल रही है। वह नये युग की आधुनिक तरुणी है, अपने जीवन के लिए उसने एक आदर्श ग्रहण किया है। उस आदर्श के लिए अब तक के प्रचलित सब संस्कारों और विश्वासों का त्याग ही नहीं करना है, उन्हें धरित्री के वक्ष से मिटा भी देना है, कारण उसके आदर्श के समस्त काम्य पार्थिव हैं, भौतिक हैं। ध्यानयोग द्वारा उस आदर्श की उपलब्धि और सार्थकता नहीं हो सकती। दूसरों से पृथक होकर और एकाकी रहकर भी उसका पालन नहीं हो सकता। सम्पूर्ण समाज की सार्वजनिकता में जिसकी सम्पूर्णता है, एक व्यक्ति में उसकी सार्थकता संभव नहीं। इसीलिए नीला अपने आदर्श को फैला देना चाहती है। इस चेष्टा के लिए उसे साहस का संचय करना पड़ा है, अपने व्यक्तित्व को दृढ़ करना पड़ा है। फलस्वरूप उसमें रूढ़ता आ गई है, अपने आदर्श के विरुद्ध जो कुछ है उसके प्रति विद्वेष उत्पन्न हुआ है, उसे अस्वीकार करने की प्रवृत्ति जागी है। कुछ लोग कहते हैं, वह घृणा भी करती है। इस घटना के बाद नीला व्यक्तिगत चरित्र के प्रति भी रूढ़ हो गई है। इसीलिए उसने जब लोगों को अज्ञात मृत्यु के भय से ज्ञानशून्य होकर भागते देखा था तब विद्वेष और घृणा से अधीर होकर बार बार कहा था—पशु हैं, ये सब सियारों और कुत्तों जैसे पशु हैं। मनुष्य को आज संघबद्ध और ऐक्यबद्ध होकर मरण-समुद्र मथ कर अमृतपूर्ण अक्षय पात्र निकालना चाहिए; और

ये सब भाग रहे हैं ! इन्हें इतना ज्ञान भी नहीं है कि जहां जायंगे वहां भूख रोग और पशुओं के आक्रमणों से तिल तिल प्राण देंगे !

नेपी की आंखों में भी चिनगारियां आगई थीं। अपने संघ की आज्ञा के अनुसार वह उपनगरों की फैक्टरियों में काम कर रहा है। भीत संत्रस्त और पलायन पर मजूरों को संगठित करता है, उनकी पलायन प्रिय मनोवृत्ति को तोड़ने की चेष्टा में संलग्न होता है। उसने कहा था, यह जानवरों से भी अधम हैं दीदी ! सियार और कुत्ते भी दबाये जाते हैं तो काटने की चेष्टा करते हैं। इनकी दशा देखकर मुझे जो कष्ट होता है वह तुम्हें कैसे बताऊं। इनके मालिक और भी विचित्र हैं। वे मजूरी बढ़ाने के लिए किसी तरह भी राजी नहीं होते। डेंजर एलाउन्स तक नही देना चाहते। इनमें और उनमें कोई अन्तर नहीं।

कुछ देर बाद वह फिर बोला—आज कनाई दा होते—बड़ा काम बनता !

—कौन ? कनाई बाबू ? नीला व्यङ्ग के साथ हंसी।

—हंसी क्यों ?

—हंसू नहीं ? नीला और भी जोर के साथ हंसी।

नेपी ने अनुयोग के साथ कहा—यह भी तो सोचो कि उनके हृदय पर कितना आघात लगा है !

—उस आघात के लिए मैं दुखी हूं परन्तु क्या इसी लिए उनका भाग जाना भी क्षमा करना पड़ेगा ? हमारी बड़ी पुत्री जब बीमार थी तब डाक्टर ने इंजेक्शन लगाया था—बस वह

डाक्टरों से ही डरने लगी। स्टेस्थकोप में लगी रबर की नली देखकर वह डाक्टर पहचानती थी। सड़क पर हुक्के की नली बेंचने वालों को देखकर भी वह रोने लगती थी। हम सब हंसते थे। यह भी वैसी ही बात है। कलकत्ते में एक दिन बम पड़े और उनके कुछ आत्मीय मर गये—बस रबड़ की नली को ही स्टेस्थकोप समझने वाली बच्ची की भांति वे भी अपने मां बाप की छाया में कलकत्ते से खिसक गये। क्यों ? इसीलिए कि कलकत्ते में रहेंगे को बम की चोट से हमारे प्राण भी विदा हो जायंगे। तेरे कनाई बाबू 'कावर्ड' हैं।

तर्क बरामदे में हो रहा था। विजय बाबू कमरे में थे और एक पुस्तक पढ़ रहे थे। कमरे के भीतर से ही बोले थे—बिचारे नेपी को बिल्कुल छिन्न भिन्न कर दिया भाई! किन्तु तुम इसे विमुख नहीं कर सकतीं। व्रजगोपालों की कनाई प्रीति जीवन से भी अधिक प्रिय होती है।

नेपी आरक्त मुख लेकर विजय बाबू के पास आया और बोला आप भी क्या यही समझते हैं विजयदा ?

—क्या ?

—दीदी जो कह रही हैं, कनाई बाबू भाग गये हैं ?

—नहीं। व्यथित की भांति धीरे-धीरे गरदन हिला कर वाक्य और भावभंगी से अस्वीकार करते हुए विजय बाबू ने कहा—नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता।

क्यों विजय दा ? नीला भी आगई।

—कनाई के सम्बन्ध में ही नहीं मनुष्यों के सम्बन्ध में भी तुम लोग जो कुछ कह रहे हो उसे मैं स्वीकार नहीं करता। वे पशु नहीं हैं—वे अधम भी नहीं हैं—वे मनुष्य हैं। उनके अन्तर में परिपूर्ण विकासकामी मनुष्यत्व है जो अपने आपको प्रकट करने के लिए अधीर हो रहा है। हमारे तुम्हारे अंतर की भांति ही अधीर हो रहा है। साथ ही साथ भय भी है। उनका यह भय दूर होगा—कुछ दिन प्रतीक्षा करो, फिर देखना भय को भूल कर ये भी मनुष्य की भांति खड़े होंगे।

नीला बोली—पहले कनाई बाबू की बात कीजिए। कनाई बाबू भी तो इसी गोल के एक व्यक्ति हैं!

वह भी मनुष्य है। इसके अतिरिक्त—

—बस। मेरा पक्ष सिद्ध होगया।

विजय बाबू हंस कर बोले—पूरी बात तो सुनो। कनाई भय के कारण भाग भी सकता है और आवेश में आकर आर. ए. एफ. में भरती भी हो सकता है।

—किसमें—किसमें भरती हो सकता है? नीला की दृष्टि विस्फारित हो गई।

—आर. ए. एफ में—अपने घर पर हुई बामबिंग का बदला लेने की इच्छा भी उसके मन में उठ सकती है।

—आप ठीक कहते हैं? उन्होंने आप से कहा था?

—नहीं। मेरा अनुमान है।

—अनुमान! वह सत्य नहीं भी हो सकता।

—हो क्यों नहीं सकता ? संभव है तुम्हारा अनुमान मिथ्या हो और मेरा ठीक हो ।

उस दिन बहस यहीं रुक गई । अब तक कनाई बाबू का कोई समाचार नहीं मिला । विजय बाबू के अनुमान को असत्य प्रमाणित कर के लिए ही नीला ने व्यग्र होकर खोज भी की है। जेम्स और हेरेल्ड आर. ए. एफ. में ही हैं । कई दिन तक एसप्लेनेड पर प्रतीक्षा करने के बाद नीला ने उनसे भेंट की है । अब वे प्रतिदिन मिलते हैं । कनाई का कोई संवाद वे आज तक नहीं दे पाये परन्तु नीला के साथ उनकी प्रीति का बंधन दृढ़ हो गया है । नीला उन्हें यहां बुलाना भी चाहती है परन्तु विजयदा कह गये हैं—जरा नीचे देखकर चलना !

नीला ने एक लम्बी सांस ली । सोचने लगी, विजयदा के कथन में आदेश की ध्वनि न थी । वे कभी किसी को आदेश देते भी नहीं । आज भी नहीं दे गये । यदि दे जाते तो मैं विद्रोह करती और आदेश की उपेक्षा कर डालती ।

विजय बाबू बाहर गये हैं, पन्द्रह दिन में लौटेंगे । आज बीस जनवरी है । फरवरी की ५-६ तक आयेंगे । अच्छा लौट ही आयें ।

नेपी परसों गया है । आज सवेरे लौटने के लिए कह गया है. लौटा नहीं । कौन जाने आयेगा भी या नहीं ।

नीला बिस्तरे पर लेट गई और कुछ देर तक चुपचाप पड़ी रही । सप्ताह में रविवार के दिन उसे छुट्टी मिलती है । यह दिन

काटना कठिन हो जाता है। विजय बाबू और नेपी की अनुप-स्थिति में यह रविवार और भी भारी हो गया है। नेपी ही होता तब भी ठीक था। वह आवेग पूर्ण भाषा में देश की चर्चा करता और नीला सुनती। नीला की अलस उदास दृष्टि विजय बाबू के पत्र की फायल पर पड़ी। फायल उठा कर वह देखने लगी।

समाचार पत्र नीला नियमित रूप से पढ़ती रही है परन्तु उस दिन की घटना के बाद कोई समाचार उसके मन पर रेखा नहीं खींच सका। रोगी के पास बैठा स्नेहातुर आत्मीय जैसे स्नेह पूर्ण एवं उत्कण्ठित दृष्टि से रोगी को देखते देखते विश्व संसार को भूल जाता है वैसे ही अपने वेदनाहत जीवन के केन्द्र पर बैठा हुआ नीला का मन भी बाहर की सब बातों से पृथक रहा है।

फायल उलटते ही पहली जनवरी का परचा सामने आया। पहले पृष्ठ पर ही एक व्यङ्ग चित्र है। सफेद फीते से बंधा एक बम रखा है, उसपर लिखा है 'मेड इन जापान'। फीते में एक कार्ड बंधा है उस पर लिखा है—

To our friends and well wishers, from General Tojo.

आज जापान नियंत्रित बर्मा के पत्रों में न जाने क्या छपा होगा? कार्टून के पास बड़े-बड़े अक्षरों में सोवियट की विजय वार्ता छपी है। वह एक सौ तीस मील व्यापी रणांगण में अग्रसर हो रहा है। हिन्दू महासभा का अधिवेशन हो रहा है, अखण्ड भारत का प्रस्ताव पास हुआ है। ब्रिटिश राजनीति की तीव्र समालोचना भी की गई है। नीला ने पन्ना उलट दिया— सम्पादकीय लेख है। यहां

भी एक चित्र है। चित्र नीला को अच्छा लगा। रणदानव चक्कर काटता हुआ नाच रहा है, उसके बदन पर लिखा है 'मैजीशियन' उसके पैरों से जो घेरे बने हैं उनमें से एक-एक पर एक-एक वर्ष अंकित है—३६, ४०, ४१, ४२, ४३—अब वह भूमि की ओर देख कर और ताली बजा कर बुला रहा है—आओ! आओ! भूमि के गर्भ से कंकालसार, क्रुद्ध दृष्टि, लोलुप, नग्न प्राय और विभीषिकामयी एक नारी मूर्ति निकल रही है। यह दुर्भिक्ष है। इसके पैरों के नीचे से एक और मुंह झांक रहा है, मुंह पर चमड़े का आवरण तक नहीं है—यह महामारी है। आकाश में चील और कौव्वे उड़ रहे हैं, बम फट रहे हैं, वायुयान उड़ रहे हैं. सूर्य धुंध से ढक गया है—सब कुछ धुंधला हो रहा है। नीचे लिखा है—नववर्ष १६४३।

चित्र देखते देखते नीला का मन अभिभूत होगया। प्रश्न उठा—१६४३ क्या वास्तव में ऐसा ही भयावह रूप लेकर आ रहा है? सम्पादकीय लेख पर दृष्टि पड़ी—

"Into the roar of cannon, the clang of steel, the waill of the fallen and subjugated has come the new year."

अपने देश विशेषत: बंगाल में इस वर्ष के भयावह रूप की कल्पना करके हम सिहर रहे हैं।

नीला का शरीर रोमांचित हो आया।

वह पन्ने के बाद पन्ने उलटने लगी।

लंडन का समाचार है—1943 A year of offencive, रूस अब

आघात करने के लिए कटिबद्ध है। Hitlar's warning to Germans. हिटलर ने जर्मनी को चेतावनी दी है।

नीचे एक छोटे से समाचार पर दृष्टि पड़ी—Looting of "Hat". Police open fire, killing one and injuring a bazar-man. चांपा डांगा में बाजार लूटी गई है। नीला स्तब्ध हो गई। जान पड़ा कि वहीं की भूमि से चित्र वाली मूर्ति बाहर निकल रही है।

फिर पन्ने उलटे—"कलकत्ते में चावल दाल बेंचने वालों को सरकार ने नये आदेश दिए हैं।" "खाद्य समस्या पर भारत सरकार के वाणिज्य सचिव का वक्तव्य"? आप कह रहे हैं पहले इस देश से ३८ हजार मन चावल सीलोन जाता था। अब खाद्य संकट की आशंका के कारण उसकी मात्रा में १२ हजार टन की कमी की गई है। स्थिति न सुधरी तो आगामी मार्च मास से चावल भेजना बंद कर दिया जायगा।

'Malavaji's confidence in democratic victory. War to continue another year and a half.

डा० श्यामासाद ने ब्लडबैंक में रक्त देने का अनुरोध किया है—'We must make the Blood-Bank our national asset.

एक एम. एल. ए. ने प्रधान मन्त्री को चिट्ठी लिखी है—सिक्योरिटी और अन्य धाराओं के बंदियों को कलकत्ते से किसी और जेल में बदल दिया जाय। वे बंदी हैं और कलकत्ते पर वायु आक्रमण की आशंका है।"

नीला को गुणदा बाबू और फिर उनकी धर्मपत्नी याद आई।

फिर पन्ना पलटा। "Food supply at cheep rate" आगामी बुधवार को संकटापन्न मध्यवित्तों के लिए सस्ते भोजनालय खुल रहे हैं। माननीय वाणिज्य सचिव स्वयं द्वारोद्घाटन करेंगे।

दमदम में रेलें लड़ी हैं।

"Decoitees in Bangal" मुंशीगंज, ढाका, किशोरगंज, सिराजगंज और वर्धमान में डाके पड़े हैं।

"India's sterling debts Heavy reduction"—

इंग्लैंड भारत का ऋण दिनादिन उतार रहा है। ३६७ मिलियन था, अब १०० मिलियन रह गया है। भारतीय वस्त्र संकट के लिए स्टैंडर्ड क्लाथ की व्यवस्था हो रही है।

देश में कागज का अभाव हो रहा है, विश्वविद्यालय बड़ी असुविधा का सामना कर रहा है।

समाचार पत्रों पर मद्रास सरकार की कठोर दृष्टि।

नीला ने फायल बंद कर दी। समाचार पत्रों की वर्तमान अवस्था याद आगई। उस की दृष्टि कुछ और ढूंढने लगी। अकस्मात उसके मन में प्रश्न उठा—कुरु सभा में बैठे हुए संजय यदि नागपाश से आबद्ध होते तो आज गीता का रूप क्या बनता? वह उठी और खिड़की के किनारे खड़ी हो गई। प्रत्याशा करने लगी, नेपी आवे तो मालूम हो—विजयदा लौटें तो सुनूं। उसकी आंखों के सामने वही चित्र तैरने लगा। १९४२ की भूमि से

दुर्भिक्ष की भयंकरी मूर्ति बाहर आ रही है, उसके पीछे महामारी है। आकाश बारूद के धुएं से काला हो गया है, वायुयान और कौव्वे मिलकर एक जैसे हो गये हैं! धुंध—चारो दिशाएं धुंधली हो रही हैं।

नीचे कुण्डा खड़का। नीला व्यस्त होकर चली। उसने सोचा, नेपी होगा या फिर वे कंकालसार भूखे आये होंगे जो विजय बाबू के यहां नियमित रूप से आते हैं। विजय बाबू ही क्यों, आश्चर्य की बात यह है कि उस ओर बड़े परिवार का पालन करने वाला जो साधारण क्लर्क रहता है वह भी इस मंहगे बाजार में यथा—शक्ति किसी को द्वार से लौटने नहीं देता।

नीला नीचे पहुंची।

नेपी नहीं है, भूखे भी नहीं हैं—गीता है।

एक महीने में ही गीता बहुत कुछ बदल गई है। अब वह अकेली आती-जाती है और वार्तालाप में कुशल हो गई है।

—गीता!

मुस्कराकर गीता ने पूछा—अच्छी हैं नीला दीदी?

—हां, आओ!

—विजयदा हैं?

—नहीं, बाहर गये हैं। पन्द्रह दिन में लौटेंगे।

क्षणभर चुप रहकर गीता ने पूछा—पन्द्रह दिन?

—हां

—नेपी दा है?

—नहीं। वह तीन दिन से आया ही नहीं।

गीता कुछ देर चुप बैठी रही फिर बोली—फिर आज मैं जाती हूं।

—जाओगी ?

—हां—वह उठी, नीला को जान पड़ा कि गीता कुछ बेचैन है।

जाते-जाते गीता ने घूमकर पूंछा—नीला दीदी ?

—हां

—कनाईदा की कोई खबर मिली ?

—नहीं। नीला गीता के लिए सचमुच दुखी हुई।

गीता चली गई।

नीला के मुख पर फीकी हंसी आई। कनाई ने इसकी उपेक्षा करके अन्याय किया है—चरम अन्याय किया है। कुछ देर बाद उसने फिर सोचा— गीता भी अद्भुत है ! संसार पर दुर्योग की गहरी घटा छाई है। आकाश बारूद के धुएं से काला हो गया है। कुछ दिन बाद सूर्य का प्रकाश भी न दीख पड़ेगा। टैंकों के चक्कों से कुचली हुई धरती शायद बंध्या हो जायगी। मनुष्य तो भूख से अभी मरने लगे हैं। रात को सोने का अवकाश भी नहीं मिलता। अकाश से मृत्यु गर्भ बम उतरते हैं। कुटिया और प्रसाद एकाकार हो रहे हैं। फिर भी गीता घर बसाना चाहती है ! इस की अपेक्षा घटना चक्र ने उसे जहां पहुंचा दिया है। वहां रहना भी अच्छा है !

कुछ देर बाद नीला को पुराण में पढ़ा हुआ प्रलय का वर्णन याद आया। आकाश काले मेघों से ढक जायगा, आंधी चलेगी, बज्र गिरेंगे, समुद्र मर्यादा तोड़ देगा। भूकम्प आवेगा, सृष्टि नष्ट हो जायगी। उस दिन भगवान क्या एक मानव और मानवी को भी न रखेंगे ? यह जानते हुए भी कि इस प्रलय में कोई किसी की रक्षा नहीं कर सकता—मानव मानवी को पकड़ कर बैठेगा और मानवी पकड़ेगी मानव को। और क्या एक ही मानव या एक ही मानवी ऐसा करेगी ? नीला ने जैसे उस घने अंधेरे में भी देखा कि प्रत्येक मानव-मानवी इसी प्रकार परस्पर आबद्ध होकर बैठेंगे।

नीला ने एक लम्बी सांस ली।

फिर कुण्डा बोला।

अब तो भूखों का दल ही आया है।

—भात ज़रा सा भात दो !

शाम को नेपी आया—परन्तु अकेला नहीं ! जेम्स और हेरल्ड को साथ लाया है !

नीला ने उनकी सादर अभ्यर्थना की—आइये ! आइये !

—अट्ठाइस—

विजय बाबू की चिट्ठी आई है। पूर्व बंगाल के एक गांव में बैठ कर लिखी गई। चिट्ठी का लिफाफा खोला गया है और एक स्लिप लगा कर फिर बन्द किया गया है। लिफाफे पर मुहर

लगी है—"ओपेण्ड बाइ इनलैंड सेंसर" चिट्ठियां आज कल देख भाल कर भेजी जाती हैं। चिट्ठी देखते ही नीला के ओठों पर एक विचित्र मुस्कान आई। मन में प्रश्न उठा, रूस में 'सेंसर' है ? संभवतः हैं—संभवतः नहीं अवश्य है। नीला के अनुमान ने यही उत्तर दिया। उसने सोचा, घर के भेदियों का कूट कौशल तो आदि युग से चला आ रहा है। सभ्यता के पहले युग से इसे घृणा की दृष्टि से देखा जा रहा है परन्तु इस बात में सन्देह है कि उसकी मात्रा कम हो गई है। राष्ट्रीय विवादों में कूट कौशल तो नीति बन गया है। स्वयं इस कौशल को घृणा की दृष्टि से देखते हुए भी कोई दूसरे पक्ष के इस घृणित मनोभाव से लाभ उठाने में संकोच नहीं करता। जो सांड कौशल से अपने शत्रु को सिंह से चिरवा सकता है उसे विचक्षण बताया गया है। नीति कथा इससे आगे की घटना नहीं बताती परन्तु इतिहास चुप नहीं। फिर भी मनुष्य को शायद दोषी नहीं कहा जा सकता। कारण, यह विवर्तित जीवन पथ की एक अत्यन्त सुविधाजनक अभिज्ञता है। यह अभिज्ञता आज जैव प्रवृत्ति में परिणत हो गई है। मनुष्य के प्रति मनुष्य का अविश्वास भी ऐसी ही जैव प्रवृत्ति है।

नीला ने चिट्ठी खोली—चिट्ठी संक्षिप्त है। अपना कुशल संबाद देने के बाद नेपी और नीला की क्षेम कुशल पूछी गई है। लिखा है—कुशल पूछना नियम बन गया है इसी लिए पूछता हूं। वैसे मैं जानता हूं कि तुम अच्छे हो। मेरा विश्वास है कि तुम अपने आप को सकुशल रखने की शक्ति रखते हो। समाचार पत्र से

मालूम होता है कि कलकत्ते में दो दिन वायु आक्रमण हुआ है। एक सार्जेण्ट ने अकेले ही शत्रु के तीन वायुयान धराशायी कर दिये हैं। घटना हमारे लिये आश्वासन देने वाली है। गौरव देव-लोक को मिलेगा। हम लोग इस विश्वास को मानने वाले देश के निवासी हैं कि मारना और बचाना भगवान का काम है। हमारे भाग्य में भी यही हो रहा है। भूपतित जापानी विमानों का चित्र देखा है।

मैं कुछ दिन बाद लौटूंगा। घूम रहा हूं, शहर से गांव और गांव से दूसरे गांव का चक्कर काट रहा हूं। चलते समय तुमने पूछा था कि यहां क्या हुआ है, उत्तर देकर नहीं आ सका। इस पत्र में उत्तर देने लगूं तो महाभारत का एक पर्व तो बन ही जायगा। इसलिये यही लिख रहा हूं कि बचपन में तो रोया था, परन्तु उसके बाद कभी आंसू नहीं आये। यहां आकर मालुम हुआ है कि आंख का पानी लवणाक्त है और आंख की शिराओं उपशिराओं में एक प्रकार की उत्तप्त अनुभूति संचारित होती है।

यहां की भूमि और आकाश में प्रायः अन्तर नहीं है। माघ के इस महीने में ही धान प्रायः अन्तर्हित हो गये हैं, जो बचे हैं वे तीव्रगति से अन्तर्हित हो रहे हैं। पुराणों में लिखा है कि दुर्वासा के श्राप से स्वर्ग की लक्ष्मी सागरतल में जाने के लिये बाध्य हो गई थीं। अनुमान करता हूं कि अपना माल असबाब समेटने में लक्ष्मी को कुछ दिन अवश्य लगे होंगे परन्तु दुर्वासा यदि कौटिल्य शास्त्र का अध्ययन करते तो लक्ष्मी को एक दिन में ही बिदा कर

देते। चलो—और एक खबर सुनाता हूं। यहां के अनेक दुखों में एक दुख नवदम्पत्तियों की वेदना है। अब तक प्रेम पत्रों में जो संस्कृति बन रही थी वह अब नष्ट हो गई है।

गीता का ध्यान रखना, वह बिचारी कनाई के लिये अब तक बेचैन होगी। कनाई का कोई संवाद मिले तो अविलम्ब सूचित करना। मैं इसी संबाद के लिये उद्ग्रीव हो रहा हूं। एक बार गुणदा बाबू के घर जाना और भाभी को दस रुपये दे आना। कभी कभी उनसे भेंट कर लेने का भी अनुरोध कर रहा हूं। बस—विजयदा।

अन्त की कुछ पंक्तियां पढ़ कर नीला की भौहों पर बल पड़ गये। उसके मन की तिक्तता तीव्र से तीव्रतर हो रही है। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। विजय बाबू की यात्रा के बाद चार दिन उसने अपने संघ के काम में मन लगाने की चेष्टा की परन्तु वह भी अच्छा न लगा। इसका-उसका व्यक्तिगत कुशल समाचार पूंछना और उपकार करना उसे सब से अधिक विरक्तिकर जान पड़ता है। नेपी तक उसके घनिष्ठ संम्पर्क में आने से कतराता है। जेम्स और हेरेल्ड इस बीच में कई दिन आये हैं. उनके सानिध्य से नीला कुछ संजीवित हुई है परन्तु विजय बाबू का अनुरोध याद आते ही फिर उदास हो गई है। उन लोगों के साथ वार्तालाप करने के बाद नीला ने अपना भावी कार्यक्रम भी बना लिया है। उसने प्रत्यक्ष रूप से सैनिक सेवा करने का निश्चय किया है। वे 'वोमेन्स एक्जलरी सर्विस' के कागज भी दे गये

हैं। आज कल वह इसी कल्पना में उलझी रहती है। दस बजे से पांच बजे तक क्लर्की करना और उसके बाद उदास, क्लान्त, निरानन्द समय बिताना उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। लोग कितनी ही बातें कहेंगे ! चिट्ठी पढ़ते ही उसे याद आया, गुणदा बाबू की स्त्री ने उस दिन कहा था—लोग कितनी ही बातें कहते हैं।

गुणदा बाबू की उन्हीं धर्मपत्नी के पास जाना पड़ेगा। नीला का तिक्त चित्त और भी तिक्त हो गया परन्तु विजय बाबू के अनुरोध की वह उपेक्षा न कर सकी।

फुटपाथ पर चलना भी कठिन हो गया है। चावल की दुकान के सामने स्त्रियों की लम्बी पंक्ति खड़ी हो गई है। आज स्त्रियों के चावल खरीदने की पारी है। नेपी प्रबन्ध करने में व्यस्त है। नीला ने किसी तरह वह भीड़ पार की परन्तु 'क्यू' पार कर लेने के बाद भी निष्कृति न मिली। फुटपाथ पर निरन्न आगन्तुकों के गोल बैठे हैं। नगर में इनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ रही है—फुटपाथों पर यहां-वहां इनकी गिरस्ती फैली है। ये कभी-कभी आपस में भी लड़ने लगते हैं।

नीला को याद आया, विजयदा ने लिखा है, यहां आकर पता चला है कि आंखों का पानी लवणाक्त होता है। १९४३ के धूम-धूसर आकाश वाला चित्र भी उसकी आंखों के सामने आया।

कुण्डा खड़काते ही गुणदा बाबू की पत्नी ने बैठके की खिड़की से देखा और पूंछा—तुम्हीं उस दिन विजय बाबू के साथ आई थीं ?

—हां

दरवाजा खोल कर वे बोलीं—आओ !

कमरे में पहुंच कर नीला ने कहा—विजयदा ने मुझे भेजा है—आपका कुशल संवाद लेने ।

—मैं उनके पास खबर भेजने की चिन्ता में थी ।

—वे तो यहां नहीं हैं । बाहर गये हैं । लौटने में कई दिन लगेंगे ।

—देर होगी ? वे चिन्तित हुईं ।

दस रुपये का एक नोट देकर नीला ने कहा, विजयदा ने आपको देने के लिए लिखा है ।

गुणदा बाबू की पत्नी ने नोट लेकर भूमि पर रख दिया, बोलीं—तुम तो इस युग की लड़की हो—सभा-सुसाइटियों में भी जाती हो—मेरा एक काम करोगी ?

वक्र मुस्कान के साथ नीला ने कहा—बोलिए ।

—मैं दस रुपये और देती हूं, चावल, चीनी और आटा ला दो ।

नीला अवाक् हो गई । सोचने लगी—मैं 'क्यू' में खड़ी हूं—इन्हें ऐसा कहते हुए संकोच भी नहीं हुआ ।

गुणदा बाबू की पत्नी बोलीं—रुपये का मेरे लिए कोई महत्व नहीं है । तीन दिन से घर में चावल नहीं हैं । पहले नीचे का पान-वाला 'क्यू' में खड़ा होकर ला देता था । बाद में मालूम हुआ कि इसीलिए बिचारे के घर में चूल्हा नहीं जलता । अब उससे क्या कहूं । आटा भी नहीं है, चीनी भी नहीं है । केवल आलू की तर-कारी अब नहीं खाई जाती । छोटा बच्चा भात-भात चिल्ला रहा है ।

नीला ने विस्मय से पूछा—तीन दिन से भात नहीं बना ?

—नहीं। घर में चावल नहीं है। बिचारा पानवाला ही लाता था, बाबू ने एक बार उसे गुण्डों के हाथ से बचाया था, तब से वह अनुगत है। उसने चेष्टा की परन्तु मिले नहीं। मिलते हैं 'क्यू' में खड़े होने से—वे ले लूं तो वह बिचारा क्या खायेगा ?

नीला बोली—अपने बड़े लड़के को तो 'क्यू' में भेज सकती हैं।

—उसे ज्वर आ गया है।

नीला क्षुब्ध-सी हो गई। वह बोली—'क्यू' में कितने ही भले घरों की स्त्रियां भी मैंने खड़ी देखी हैं—आप भी जा सकती थीं। तीन दिन से उपवास किए बैठी हैं !

गुणदा बाबू की पत्नी ने स्थिर दृष्टि से नीला के मुंह की ओर देखा फिर कहा, वे मेरी जैसी भले घर की स्त्रियां नहीं हैं। होतीं तो पेट भरने के लिए छोटे आदमियों के साथ इस तरह न खड़ी होतीं। वे तो भिखारियों से भी अधम हैं।

नीला बोली—भिखारी ? उन्हें आप इतनी घृणा कैसे करती हैं ?

नीला का मुंह देखकर गुणदा बाबू की पत्नी हंसने लगीं। बोलीं—ओह, तुम भी उनके दल की हो जो संसार में सबको समान करना चाहते हैं ?

—हां, मैं उसी दल में हूं। आपको ऐसी बातें करने का कोई अधिकार नहीं—वे आपसे किसी तरह हीन नहीं हैं—छोटी नहीं हैं !

—यह तो अच्छा है [illegible]को हमारे समान बना दो फिर छोटी न कहूंगी। परन्तु उनके समान होने के लिए हमें भिखारी न

बनाओ—मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकती। मर जाऊंगी लेकिन न मानूंगी।

नीला तीक्ष्ण दृष्टि से उनकी ओर देखती रही।

—संसार में बड़े आदमी भी बहुत हैं, कितने ही बड़े-बड़े मकानों में रहते हैं और गाड़ियां-मोटरें रखते हैं। मैं उनके बराबर भी नहीं होना चाहती और भिखारियों—छोटे आदमियों के समान भी नहीं बनना चाहती। तुम सबको छोटे आदमी बनाना चाहती हो तो अच्छी तुम्हारी देशभक्ति है—अच्छी तुम्हारी स्वाधीनता है!

बगल के कमरे से किसी के कराहने की ध्वनि आई। गुणदा बाबू की पत्नी ने व्यस्त होकर कहा—चलूं भाई। वे व्यस्त भाव से ही चली गईं। नीला ने कुछ क्षण प्रतीक्षा की फिर पूंछा—मैं भी आऊं?

—आओ

भीतर जाकर नीला ने जो कुछ देखा उससे वह हतवाक् हो गई। गुणदा बाबू का बड़ा लड़का बिछौने पर पड़ा है और ज्वर से हांफ रहा है। उसके बदन में हड्डियां ही रह गई हैं। जान पड़ता है अधिक बीमार है। गुणदा बाबू की पत्नी उसके सिर पर पानी की पट्टी रख रही हैं। वे बोलीं—ज्वर शायद बढ़ रहा है। तुमने जब बुलाया था तब यह आराम के साथ सो रहा था।

नीला संकुचित हुए बिना न रह सकी। बोली—ज्वर तो अधिक जान पड़ता है।

—हां, डाक्टर कहते हैं टाइफॉइड बनेगा।

—कौन देखता है?

—बाबू के एक मित्र डाक्टर हैं। वही बराबर आते हैं। बाबू के साथ उनका गहरा स्नेह है। परन्तु मुश्किल यह है कि औषधियों के दाम बांसों बढ़ गये हैं—और दाम देने पर भी तो नहीं मिलतीं। आज ही दवाओं के लिए तीस रुपये दिए हैं। कौन जाने मिली हैं या नहीं!

नीला बोली—बुरा न मानें—रुपयों की आवश्यकता हो तो—

—मंगवा लूंगी। दफ्तर चिट्ठी भेजी है। बाबू आरंभ से काम कर रहे हैं। छोटा पत्र अब बड़ा हो गया है। देंगे क्यों नहीं? और विजय बाबू से रुपये लेने में भी मुझे लज्जा नहीं है। विजय बाबू एक बार जेल गये थे, वे तब बाहर थे, विजय बाबू का एक भाई पढ़ता था उसे वे हर महीने रुपये देते थे। अभी चार चूड़ियां बेंची हैं। रुपये हैं परन्तु खाना नहीं मिलता। 'क्यू' में खड़े होने से तो मर जाना अच्छा है।

नीला बोली—मुझे रुपये दीजिए। मैं चेष्टा करूंगी। अभी अपने यहां से थोड़े-से चावल और थोड़ा सा आटा—

—नहीं, नहीं। इस वक्त आलू से गुजारा हो जायगा। तुम अपने यहां से न भेजना। वह मैं न लूंगी।

घर में नेपी ने हलचल उत्पन्न कर दी है। उसके कुरते पर रक्त के धब्बे लगे हैं, वह अत्यन्त व्यस्त भाव से टेबल पर पानी, पुराने कपड़े और टिंचर आदि सजा रहा है। गीता एक स्त्री के मुंह में पानी डाल कर हवा कर रही है। स्त्री तख्त पर बेहोश

पड़ी है, उसके सिर में पुराने कपड़े की पट्टी बंधी है। नीला ने पूछा—नेपी ?

—इसे बुखार था और 'क्यू' पर चावल लेने आई थी ! सवेरे से अब तक खड़ी रही, बिचारी को चक्कर आगया और बेहोश होकर फुटपाथ पर गिर पड़ी। सिर में चोट लगी है। इसीलिए यहां उठा लाया हूं। अच्छा हुआ कि गीता आगई—यह तो इतने दिन में ही खूब 'एक्सपर्ट' हो गई है।

नीला ने गीता की ओर देखा। वह मुस्कराई। नीला ने देखा, गीता वास्तव में 'एक्सपर्ट' होगई है, वह सहज स्वाभाविक रूप से स्त्री की सुश्रूषा में लगी है। षष्ठी एक केतली लेकर आया, उसकी टोंटी से धुआं निकल रहा है, उसमें गरम पानी है। गीता बोली, एक कटोरी चाहिए। ले आओ, और गरम पानी से धोकर रख दो। उसके वार्तालाप का ढंग भी बदल गया है; अब उसमें संकोच, जड़ता और अपराधी की दीनता नहीं रही। जैसे यह दूसरी गीता है। स्थिति के गुरुत्व को समझ कर रूढ़ता वर्जित परन्तु सुन्दर निर्देश पूर्ण स्वर में उसने जो कुछ कहा, षष्ठी जैसा व्यक्ति भी उसका पालन करने में विलम्ब नहीं कर सका। गीता के अन्तर से एक नया मनुष्य जाग्रत होकर प्रकट हो रहा है। उसे कोई पसन्द भले ही न करे परन्तु अवज्ञा नहीं कर सकता, उस पर कोई करुणा करने जायगा तो वही लज्जित होगा। प्रारंभ में नीला इतनी दूर तक न समझ पाई थी। व्यस्त होकर वह भी सहायता करने के लिए उद्यत हुई। गीता ने हंस कर कहा—उसे

हिलाओ डुलाओ नहीं नीला दीदी, तकलीफ होगी। आप व्यस्त न हों, मैं सब ठीक किए देती हूं।

निपुणता के साथ गीता ने गरम पानी में टिंक्चर मिला कर स्त्री का क्षत स्थान धोया और बांध दिया। गरम पानी में उसके पैर डुबो कर और सिर पर पंखा झल कर उसे चैतन्य किया। चैतन्य होकर स्त्री ने विस्मय के साथ चारो ओर देखा और रोने लगी।

गीता बोली—डरो नहीं, रोती क्यों हो ? तुम अच्छी जगह हो।

स्त्री का रुदन न रुका। रोते-रोते ही वह बोली—मेरे चावल ?

—चावल ? चावल तो तुम्हारे पास नहीं थे।

—नहीं थे ? चावल लेने ही तो आई थी। अब कैसे मिलेंगे ?

—न सही। तुम्हें तो बुखार है—चावल क्या करोगी ?

—घर में बच्चे हैं—तीन बच्चे, वे क्या खायंगे ?

—उन्हें क्यों नहीं भेजा ? बुखार में तुम क्यों आईं ?

—लड़के छोटे हैं—लड़की बड़ी है—किसे भेजती ?

—लड़की को भेज सकती थीं !

स्त्री भर्त्सना के स्वर में बोली—आप लोग बड़े घरों की लड़कियां हैं। गरीबों की लड़कियों का भाग्य नहीं जानतीं। बड़ी लड़की—क्यू में खड़ी होती—भले आदमी इशारे करते, गुण्डे-बदमाश अनाप-शनाप बकते।

गीता अकस्मात् उठकर चली गई।

नीला को गुणदा बाबू की पत्नी का बचन याद आया। एक

लम्बी सांस लेकर वह बोली—अच्छा, हम तुम्हें चावल देती हैं—ले जाओ।

नेपी रिक्शे पर बिठा कर उसे पहुंचाने गया। चलते समय नीला की ओर देखकर वह बोली—तुम्हारी जय जयकार होगी बेटी। तुम्हारा राजा के घर में ब्याह होगा!

नीला मुस्कराई।

स्त्री उस मुस्कान से कुछ दब गई। बोली—हंसी क्यों बेटी? फिर क्या—

—क्या?

—तुम क्या विधवा हो?

—नहीं, नहीं। मेरा ब्याह ही नहीं हुआ—मैं करूंगी भी नहीं।

स्त्री कुछ देर आवाक् खड़ी रही फिर बोली—तुमने पास किया है? स्कूल पढ़ाती हो?

नीला ने हंसकर उत्तर दिया—हां, मैं नौकरी करती हूं।

लम्बी सांस लेकर वह बोली—अच्छा किया बेटी। मुझे देखो। बिधवा होकर दूसरों के बरतन मांजती हूं। मैं भी भले घर की लड़की थी। लिखा पढ़ा होता तो—उसने फिर एक लम्बी सांस ली।—तुम तो सब समझती हो—बताओ, यह दुर्भाग कब जायगा? लड़ाई कब बंद होगी? लड़ाई बंद होने तक हम बचे रहेंगे?

नीला स्तब्ध होगई। उत्तर न दे सकी।

भाराक्रान्त मन से नीला ने उस दिन का समाचार पत्र उठा लिया। देखा, दिन में चटगांव पर वायु आक्रमण हुआ है।

"Midday air attack on the Chittagong area on Saturday" समाचार पत्र में नीला का मन न लगा। वह शून्य दृष्टि से बाहर की ओर देखती रही। अकस्मात उसे गीता की याद आई। गीता कहां गई ? उसने पुकारा, गीता !

गीता आई। नीला उसे देखकर विस्मित हो गई। पोंछ डालने पर भी उसके मुंह और आंखों पर आंसुओं का इतिहास स्पष्ट हो रहा है। उसने पूंछा—क्या हुआ गीता ?

—कुछ नहीं

—रोती क्यों थी ?

गीता हंसी। बोली—स्त्री की बातें सुनकर। बिचारी बड़ी भली है। बुखार था फिर भी स्वयं आई—क्यू में खड़ी होने के लिए लड़की नहीं भेजी।

नीला व्यस्त हो गई। उसे याद आया, गुणदा बाबू की पत्नी के लिए चावल और आटे की व्यवस्था करना है।

गीता बोली—स्नान कर लीजिए नीला दीदी। भोजन तयार है। देखूं मांस का क्या हाल है।

—मांस ?

गीता कुछ लज्जित स्वर में बोली—आज मैं आप लोगों को खिला रही हूं—नौकरी की है न ?

नीला को याद आया, काफी खाने में मैंने कनाई को काफी पिलाई थी।

गीता बोली—आज कनाईदा होते—। अधूरी बात कह कर ही वह बाहर चली गई। शायद आंखों में आंसू आ रहे थे।

खाने-पीने के बाद नीला ने नेपी को चावल और आटे की फिकर में भेजा। स्वयं विजय बाबू को चिट्ठी लिखने बैठी। गुणादा बाबू के घर का हाल और गीता का समाचार दे देने के बाद उसने लिखा, आपकी प्रतीक्षा में मेरे सब काम रुके हैं। मैंने प्रत्यक्ष रूप से युद्ध के कार्य में भाग लेने का निश्चय किया है; चारों ओर की स्थिति मेरा गला दबा कर सांस रोक रही है। मैं अपनी क्षुद्र शक्ति युद्ध को शीघ्र समाप्त करने में लगाऊंगी। इसके अतिरिक्त अपने लिए मैं इसी तरह का काम भी चाहती हूं। मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। मैं अपने आप को कर्म तत्परता में डुबा देना चाहती हूं, युद्ध की प्रत्यक्ष तत्परता में—मृत्यु की भीड़-भाड़ में विलीन कर देना चाहती हूं। नहीं तो—मुझसे अब अपना भार सहन नहीं होता। आप लौटें या पत्र द्वारा अपनी सम्मति भेजें। इति—नीला।

विजय बाबू फरवरी की चार तारीख को लौटे। नीला के पत्र का उत्तर उन्होंने नहीं दिया।

नीला ने पहला प्रश्न किया—मेरी चिट्ठी मिली थी ?

नेपी ने पूछा—क्या हालत देखी विजयदा ?

विजय बाबू बोले—तुम्हारा पत्र बहुत विलम्ब से मिला, इसीलिए उत्तर नहीं दे सका। दफ्तर से तार गया था, चला आया

हूं। वहां क्या देखा है, यह बताने का समय नहीं है। दो-चार घण्टे के भीतर ही मुझे फिर रवाना होना है।

—कहां ?

—दिल्ली। दिल्ली से बम्बई। वहां से फिर दिल्ली जाने की आवश्यकता भी हो सकती है।

नीला बोली—मेरे पत्र का उत्तर देते जाइये।

विजय बाबू ने उसके मुंह की ओर देखकर कहा—कुछ दिन ठहरो।

—क्यों ? मेरी इच्छा में आप बाधक क्यों बन रहे हैं ?

—बाधक नहीं बनता। तुम्हारी जो इच्छा होगी, वही तुम करोगी, परन्तु—

-परन्तु नहीं विजयदा, मैं और कुछ सुनना नहीं चाहती।

—न सुनो, मैं दुःख न करूंगा। मना भी नहीं करता। यही कहता हूं कि कुछ दिन प्रतीक्षा करो। ऐसा जान पड़ता है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष के सामने एक दुर्घटना आ रही है—आकस्मिक विपर्यय उपस्थित होने वाला है। मेरे मुंह की ओर तुम प्रश्न भरी दृष्टि से न देखो, मैं कुछ बता नहीं सकता। जानता भी नहीं हूं। आभास पा रहा हूं। इसी संवाद की खोज में जा रहा हूं।

चलते समय बोले—दफ्तर में सुना है, गुणदा बाबू के बच्चे की अवस्था अच्छी नहीं है। रोग कठिन हो गया है। हो सके तो देखना।

नीला का अन्तर विद्रोह करने के लिए उबला। कुछ दिन की

प्रतीक्षा भी वह नहीं कर सकती, रोग, शोक और क्षुधा के वातावरण से वह निकल जाने के लिए बेचैन हो गई है परन्तु मुंह से कुछ न कह सकी। आज जेम्स और हेरेल्ड के साथ काफीखाने में भेंट करने का बचन उसने दिया है। परन्तु गुणदा बाबू के घर से लौट आना संभव न हो सका। उसने देखा, बच्चे के सिरहाने अकेली मां बैठी है। पानवाला, उसकी स्त्री और दासी भी वहां है परन्तु वे विचारे रोगी की सेवा करना नहीं जानते।

नीला ने पूंछा—मैं रात में यहीं रह जाऊं भाभी ?

भाभी ने आपत्ति न की। बोलीं—रहो।

कुछ दिन बाद। ग्यारह फरवरी।

गुणदा बाबू की पत्नी का धैर्य असीम है। नीला को उसने विस्मित कर दिया है। रात में बच्चे की हालत खराब हो गई थी। सबेरा होते-होते कुछ संभली। नीला भी इसी समय सो गई, नींद से उठी तो देखा कि भाभी स्नान कर चुकी हैं, अब आसन पर बैठी जप कर रही हैं। बच्चा सो रहा है। भूमि पर समाचार पत्र पड़े हैं। दफ्तर की पुरानी व्यवस्था के अनुसार अंग्रेजी और बंगला के दैनिक पत्र बराबर आते हैं। पत्र का मुख पृष्ठ सामने है, शायद भाभी पढ़ रही थीं; नीला चौंकी—मोटे-मोटे अक्षरों में छपा है—"Gandhiji undertakes fast of three weeks duration"—दस फरवरी की दोपहर से गांधी जी ने अनशन आरंभ किया है।

नीला निस्पन्द की भांति पत्र की ओर एकटक देखती ही रह गई।

भाभी ने आसन से उठकर पूछा—खबर देखी भाई ?

नीला ने उनकी ओर दृष्टि ही उठाई।

भाभी बोलीं—आज प्रणाम करते समय भगवान् से बच्चे के लिए परमायु नहीं मांग सकी। बार बार यही कहती रही कि महात्मा को दीर्घायु करो—उन्हें बचाओ !

नीला की आखें भर आईं। ऐसी बातों पर वह विश्वास नहीं करती परन्तु जिन संस्कारों में वह पली है, उनकी जड़ नहीं गई, भावावेग में वह अब तक प्रकट होती है। उसने सोचा, बाबर ने अपना जीवन देकर हुमायूँ को बचाया था। बाबर के पास अपने प्राण ही प्रियतम वस्तु थी। मेरे पास भी अपने प्राण ही प्रियतम हैं। इसके सिवा और कौन एवं क्या है ? आज मेरा प्रियतम जन होता तो मैं भी भाभी की भांति कह सकती थी। वह चौंकी, उसके अन्तर में एक व्यक्ति की छवि कई बार उदय हुई। अत्यन्त रूढ़ स्वर में वह बोली—नहीं।

—क्या बात है नीला ? भाभी को यह शब्द सुन कर आश्चर्य हुआ।

नीला ने उनकी ओर देख कर कहा, मैं जा रही हूँ भाभी। मैं जाऊँ—

इस आविष्कार से वह अपने निकट ही अत्यन्त लज्जित हुई।

—उन्तीस—

आज अट्ठाइस फरवरी है। सम्पूर्ण महानगरी निदारुण उत्कण्ठा और उत्तेजना से अधीर होते हुए भी शांत है। कल्पनातीत दुर्योग में जीवित रहने की प्रेरणा से मनुष्य कुछ दिन चीखा चिल्लाया है, अब वह चीत्कार भी नहीं उठता, जैसे मन के आकाश पर मृत्यु जैसा एक काला मेघ घनीभूत हो गया है, वायुस्तर की गर्मी कम हो गई है परन्तु वह स्थिर है—प्रवाहहीन है। इसी लिए सांस लेने में भी कष्ट होता है। आज महात्मा गांधी के अनशन का उन्नीसवां दिन है। समाचार पत्र में समाचार आया है—

"Gandhiji somewhat apathectic and not quite so cheerful. Very little change in condition."

''जल के साथ मीठे नींबू का रस वे ले रहे थे, वह भी कल से छोड़ दिया है। कल से महात्मा जी और भी अधिक परिश्रान्त दीख पड़ते हैं।

इतनी गम्भीर उत्कण्ठा के बाद भी मनुष्य के मन में एक असंभव, अवैज्ञानिक एवं अलौकिक प्रत्याशा जाग्रत हो रही है। जैसे वह मृत्युगर्भित काले मेघों के ऊपर कोई वर्णहीन ज्योति विच्छुरित होती देख रहा है। बाइस फरवरी के संवाद को वह बार बार स्मरण करता है।

नीला और नेपी के सामने बाइस फरवरी का पत्र भी पड़ा है। उस में लिखा है—

"Gandhiji too weak, apathectic and times drowsy. It may be too late to save his life if fast not ended without delay."

उस दिन जलपान करने की शक्ति तक क्षीण हो गई थी, स्नायुमण्डली दुर्बलता से इतनी स्तिमित हो गई थी कि चेतना तक आछन्न हो आई थी। समझा जा रहा था कि अनशन अभी न टूटा तो उनका जीवन बचाना असंभव हो जायगा। इस विज्ञप्ति के नीचे भारत के विख्यात डाक्टरों ने हस्ताक्षर किये थे।

परन्तु गांधी जी ने इस अवस्था पर विजय प्राप्त की। दुर्बलता में विशेष परिवर्तन नहीं दीख पड़ा परन्तु चेतनाशक्ति दुर्बलता जनित आछन्नता को काट कर फिर प्रबुद्ध हो गई है; लम्बे अनशन की अवसन्नता में भी उनका मुख प्रफुल्ल एवं मृदुमुस्कान से उद्भासित हो गया है।

विज्ञान पर परम विश्वास रखने वाले लोग भी विज्ञान के अनाविष्कृत सूक्ष्म तत्व पर भरोसा किये बैठे हैं। सम्पूर्ण भारत इसी भरोसे के सहारे उत्कण्ठा से भरे दिन गिन रहा है। विजय बाबू जैसे व्यक्ति भी स्तब्ध और गंभीर हैं। वे अनशन आरम्भ होने के एक दिन बाद कलकत्ते लौटे हैं और स्वयं प्रधान सम्पादक बम्बई गये हैं। विजय बाबू पुराने समाचार पत्रों में छपी महात्मा जी की चिट्ठियां पढ़ रहे हैं। पत्रों की भाषा और भाव में जैसे परमतम आश्वास और गंभीरतम शक्ति निहित है। कुछ पंक्तियों के नीचे वे लाल पेनसिल से चिन्ह लगा रहे हैं।

विजय बाबू अन्तिम पत्र का अन्तिम पैरा पढ़ रहे हैं—

"Despite your description of it as a from of political blackmail, it is on my part meant to be an appeal to the highest tribunal for justic which I have failed to secure from you. If I do not survive the ordeal, I shall go to the judgment, seat with the full of faith in my *innocence*."

नेपी की आखें चमकने लगीं। उसके तरुण मन में सवेरे के शुक्र के भांति असम्भव एवं अवैज्ञानिक प्रत्याशा बार बार झलकने लगी। वह उठ कर खड़ा हो गया। विजय बाबू ने एक बार उसकी ओर देखा। वह निकट आया और बोला, महात्मा जी इस परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होंगे। आप देख लेना बिजयदा।

विजय बाबू मुस्कराये। नीला ने एक लम्बो सांस ली। नीचे कुंडा खड़का। नेपी ने बरामदे से झुक कर देखा और बताया—मि० स्टुअर्ट और मि० मेकेंजी आये हैं।

नीला विरक्त हुई। बिजय बाबू ने कहा, नीचे जाकर तुम उन्हें ले आओ।

नेपी चला गया। विजय बाबू बोले—तुम विरक्त न हो नीला, वे सचमुच भले आदमी हैं।

जीने से बूटों की आवाज आई। बिजय बाबू ने आगे बढ़ कर उनका स्वागत किया और हंसकर अपना हाथ बढ़ा दिया। बोले—कई दिन से मैं आप से वार्तालाप करने के लिये उत्सुक हूँ। मिस सेन—नीला मेरी बहन है। मैं उसका विजयदा हूँ।

जेम्स ने सम्मान के साथ कहा—ओह, मिस सेन ने कई बार आपकी चर्चा की है।

विजय बाबू से हाथ मिला कर वे दोनों कमरे के भीतर आये और सिर झुका कर नीला को अभिवादन किया। नीला ने अभिवादन का उत्तर दे करके कहा, आइये बैठिये।

बैठने के बाद भी वे मौन रहे। विजय बाबू बोले—आप इधर कई दिन आए नहीं ?

हेरेल्ड बोला—छुट्टी के बाद प्रतिदिन यहां आने का निश्चय करते रहे हैं······

जेम्स बोला—मि० गांधी रहस्यमय व्यक्ति हैं। वे एक ऐसी शक्ति को प्रमाणित करने के लिए उद्यत हो गये हैं जो हमारी विज्ञान बुद्धि से बाहर है।

बाइस तारीख के समाचार की ओर संकेत करने के बाद हेरेल्ड ने कहा—मि० सरकार, उस दिन हमारे उद्वेग की सीमा न थी। दूसरे दिन के समाचार पर विश्वास ही न होता था।

जेम्स बोला—मैं स्वीकार करता हूँ कि वे संसार के समस्त सर्वोत्तम मनुष्यों में एक हैं। विजय बाबू मुस्कराये।

हेरेल्ड बोला—इस भीषण परीक्षा में वे विजयी होंगे।

विजय बाबू ने पूछा—आप उनके अनशन को क्या समझते हैं ?

जेम्स बोला—वे जो कुछ कहते हैं, उस पर हम विश्वास करते हैं। पहले पहल 'पोलिटिकल ब्लेकमेलिंग' अवश्य जान पड़ी थी परन्तु आज उनकी इस बात पर पूरा विश्वास है कि "In a sentence it is "Crucifying the flesh by fasting"

नीला उठी. बोली—क्षमा करें, मुझे जरा बाहर जाना है। और फिर वह चली गई।

जेम्स ने पूछा—मिस सेन आज बहुत अन्यमनस्क जान पड़ती हैं।

विजय बाबू ने हंस कर कहा—महात्मा जी के अनशन से उत्कण्ठित हो रही हैं।

हेरेल्ड बोला—स्वाभाविक है।

क्षण दो क्षण की चुप्पी के बाद जेम्स बोला—मि० सरकार, इसी लिए हम लोग यहां आने में संकोच करते थे।

विजय बाबू ने कहा—नहीं, नहीं, संकोच कैसा। राजनैतिक द्वन्द मनुष्य से मनुष्य को पृथक नहीं कर सकता। आप हमें प्यार करते हैं, हम आपको प्यार करते हैं। महात्मा जी लार्ड लिनलिथगो को बन्धु मानते हैं—यह उनका दिखावा नहीं है।

—नहीं।

—हमें कुछ ऐसी पुस्तकों के नाम बतावेंगे जिनसे हम मि० गांधी को अच्छी तरह जान सकें ?

—सहर्ष।

पुस्तकों के नाम लेकर वे खड़े हो गये। बोले—मिस सेन से हमारा नमस्कार कहिएगा।

विजय बाबू बोले—फिर आइयेगा।

—अवश्य आवेंगे मि० सरकार। आपका जो परिचय मिला

है उससे हमारा सारा संकोच दूर हो गया है। अच्छा—अब बिदा दें।

हेरैल्ड बोला—हम कामना करते हैं, आपके महात्मा जी इस परीक्षा में विजयी हों। विजयी तो वे हो गये हैं फिर भी हम कामना कर रहे हैं। आज रात को हम उपासना करेंगे मि० सरकार।

विजय बाबू ने उन्हें धन्यवाद दिया।

नीचे दरवाजे के पास खड़ा कोई कातरस्वर में कह रहा है—मां—मांजी! जरा सा फेन दो मां! तुम्हारे पैर पड़ता हूं। मां—मांजी! मां—

नीला ने देखा तीन कंकालसार लड़के लिए एक स्त्री राह में खड़ी है।

—मां जरा सा भात—मेरे बच्चे भूखे हैं मां।

लम्बी सांस लेकर नीला ने कहा, भात के वक्त आती तो मिल जाता। अब तो नहीं रहा!

एक लड़का 'डास्टबिन' में झांक रहा है।

नीला ने बटुये से ढूंढ कर एक चवन्नी निकाली। चार प्राणियों के लिये चवन्नी तो चाहिए ही इसके अतिरिक्त चवन्नी से छोटा सिक्का भी नीला के पास नहीं है।

सम्पूर्ण देश में रेजगारी का अभाव हो गया है—पैसे तो मिलते ही नहीं। दुकान, ट्राम या बस पर रेजगारी के दर्शन नहीं होते। रेजगी के अभाव में गरीबों को सौदा भी नहीं मिलता। पूरे रुपये की ही चीज खरीदी जा सकती है। वैसे भी दो-चार पैसे

की चीज का लेन देन उठ रहा है। चावल तीस रुपये मन है, आटा तीस से भी ऊपर चला गया है—फिर मिलता नहीं। चीनी बाजार से ही उठ गई है। महीने में तीस-चालीस रुपये पाने वाले के घर में अर्धाशन की नौबत आ गई है। अनाहार शीर्ण नर नारी चारों ओर से दो मुट्ठी अन्न मिलने की आशा लेकर इस महानगरी की ओर दौड़ रहे हैं और दिन भर घर-घर घूमते हैं—

—जरा सा फेन दो मां! मांजी! ओ मां!

—जरा सा भात दो मां!

—मुट्ठी भर दाने मां! मांजी! बाबा!

—भात—जरा सा भात—

वे फुटपाथ पर पांत बांध कर बैठते हैं। जीर्ण शतछिन्न वस्त्र लज्जा का निवारण तक नहीं कर पाते। कंकालसार चेहरों को सूखे और जटिल बाल और भी भयानक बनाते हैं। सूखे स्तनों को चूसते-चूसते सींक जैसे बच्चे रोने लगते हैं, बगल में कुछ उलंग बच्चे बैठे विस्मित और विह्वल दृष्टि से महानगरी के विराट प्रासादों की ऊंची चोटियां और चलती हुई मोटरों की गति देखते हैं। जाड़े की इन रातों में भी फुटपाथ पर नंगे ही सो जाते हैं। एक-आध मोटर के नीचे भी आ जाता है। दो-एक भूख से मरने भी लगे हैं। उस दिन बाजार की 'डास्टबिन' के पास एक पुरुष मरा पड़ा था। कल एक औषधि की दूकान के सामने एक आदमी बैठे बैठे ही मर गया है। वह दीवाल का सहारा लिये बैठा था, दृष्टि स्थिर थी, मृत्यु पांडुर मुख खुला था और दांत निकले थे। दूर से

नीला उसकी अवस्था का ठीक अनुमान न लगा सकी। निकट जाकर देखा तो सिहर गई। ब्लैक आऊट की अंधेरी रात में जब ये लोग दरवाजे पर खड़े होकर भात मांगते हैं तब स्थिति और भी असहनीय हो जाती है। अंधेरे में मनुष्य नहीं दीख पड़ता, उसका करुण क्षुधार्त चीत्कार ही सुन पड़ता है। ऐसा जान पड़ता है कि यह चीत्कार भूमि के भीतर से आ रहा है। मानो सम्पूर्ण महा-नगरी चीत्कार कर रही है—मैं भूखी हूं—मैं भूखी हूं!

नीला गुणदा बाबू के घर जा रही है। उसकी गति तीव्र है। गुणदा बाबू का लड़का परसों मर गया है। कल तक वह भाभी के पास बराबर गई है। आज महात्मा जी की अवस्था ने ऐसा अभि-भूत कर दिया था कि उनके पास जाने की बात भी भूल गई थी। भूल शायद न गई थी परन्तु मन की जो चेतनता और स्नायुओं की जो सबलता दुर्योग में चलने का बल देती है वह अब तक उसे न मिली थी। जेम्स और हेरेल्ड के आगमन ने उसे अकस्मात उत्तेजित कर दिया। इस उत्तेजना के पीछे कोई युक्ति न थी, विजय बाबू ने उसे समझाया भी था फिर भी वह अपने आप को संभाल न सकी। विजयबाबू उन्हें सादर बुला लाये और वह उत्ते-जना से भर कर बाहर आई। तब उसे गुणदा बाबू का घर याद आया, याद आया कि भाभी की खबर लेना भी आवश्यक है। भाभी का धैर्य असीम है, बच्चे की मृत्यु से वे विचलित नहीं हुईं। नीला भी उनके पास सांत्वना देने ही नहीं जा रही, उनका धैर्य और उनकी दृढ़ता देख कर अपनी अधीरता को भी पराजित करना चाहती है। अपने मन

की अधीरता उसे असह्य हो रही है। अधीरता का कारण वे दो घटनाएं हैं जो प्रायः एक साथ—एक के उपलक्ष में दूसरी—घटित हुई हैं। गांधी जी के अनशन का समाचार सुनने के साथ ही साथ उसे अपने मन का गुप्त संवाद भी मिला है। इस संवाद ने उसे अपने निकट भी लज्जित किया है। वह स्वीकार करती है कि पुरुष और नारी का सम्बन्ध देह की वेदी पर ही प्रतिष्ठित है परन्तु वह नहीं मानती कि यही चरम सत्य है—इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। प्रेम का अस्तित्व भी वह मानती है। वह यह भी जानती है कि आकर्षण ही प्रेम नहीं है। उसने कनाई को बार-बार भूलने की चेष्टा की है। अपने आपको समझाया है कि मेरे लिए जिसके हृदय में कोई आकर्षण नहीं है, उसकी ओर आकर्षित होना आत्म-अपमान है। कनाई ने गीता का उद्धार किया है—उसे वृद्ध के चंगुल से बचाया है। और क्या उसे बचाने के लिए ही घर से ले आया है? यदि यह ठीक भी हो, तो गीता जैसी लड़की को कनाई जैसे व्यक्ति को प्यार करने का साहस कैसे हुआ? गीता कनाई को प्यार करती है यह तो निर्विवाद सत्य है! नीला ने कनाई से स्वयं कहा था, आपको गीता के साथ विवाह करना चाहिए। कनाई ने जो उत्तर दिया था वह नीला को अच्छी तरह याद है। उसने नहीं कहा कि मैं गीता को प्यार नहीं करता। कहा, मेरे लिए विवाह करना असम्भव है। मेरा वंश पागलों का वंश है! नीला ने अपने मन को यह बात भी बार बार समझाई है। फिर भी वह नहीं माना। उस दिन गांधी

जी के अनशन का समाचार सुनकर प्रियतम वस्तु के स्थान पर कनाई का नाम—

नीला ने इस लज्जा—इस अशांति को दबाने के लिए दफ्तर से एक महीने की छुट्टी ले ली है और अपनी संस्था के काम में डूब जाने की चेष्टा कर रही है। अपने संघ की ओर से विभिन्न स्थानों पर सभाओं का आयोजन करती है। नेपी के साथ कण्ठ मिला कर चिल्लाती है—'गांधी जी को छोड़ दो!' 'कांग्रेस और लीग मिल जायें!' जुलूस के आगे वह झण्डा लेकर चलती है। इसी तरह वह अपने मन को जीतना चाहती है। एक दिन उसने विदेशियों में से किसी को जीतने का संकल्प किया था। पुरुष नारी को जीतना चाहता है; नारी भी पुरुष को जीतना चाहती है। मानव और मानवी की यह चिरन्तन कहानी है। इस देश में पिता कन्यादान करता है, वर वस्तु की भांति उसे ग्रहण करता है। सामाजिक विधि और देशाचार के मत से भी वह दासी मानी जाती है फिर भी मन को जीतने का आसर, वासर और अवसर रहता ही है। विदेशियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प से नीला उस दिन लज्जित नहीं हुई, परन्तु आज यह बात भी उसे लज्जित कर रही है। वह सोचती है, व्यर्थता के आघात ने ही तो मेरा मुंह इधर घुमाया था? यह भी तो दुर्बलता है, वह इस दुर्बलता को सम्पूर्णतया पराजित करना चाहती है। इसके बाद स्वस्थ और स्वाभाविक होने पर वह किसी की ओर आंख उठायेगी तो सहज प्रसन्न दृष्टि से उसे देखेगी।

गुणदा बाबू की पत्नी ने कल भी कुछ नहीं खाया। परसों से वे अनशन कर रही हैं, परसों किसी ने अनुरोध करने का साहस भी नहीं किया। उनकी मूर्ति देख कर ही सब स्तब्ध होगये थे। सबको ऐसा जान पड़ता था कि इस समय वे हम सबसे अलग किसी दूसरे संसार की निवासिनी हैं—इस पृथ्वी की मिट्टी से उनका निर्माण नहीं हुआ। इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े व्यक्तियों में से कोई उनसे बोलने का साहस भी नहीं कर सका—ऐसा जान पड़ा था कि वे जिस संसार की निवासिनी हैं उस लोक के कर्तव्य सबसे अधिक जानती हैं।

गुणदा बाबू की अविचिलित पत्नी ने मृत संतान का मुख यत्न के साथ पोंछा था, कपड़े पहनाये थे फिर उसका चिबुक पकड़ कर कहा था—तेरे साथ मैं नहीं चल सकी, यहीं रह गई हूं। तेरे पिता को संवाद देना है, सान्त्वना देनी है। तू औषध के अभाव में मरा है—दवा थी लेकिन दूकानदार ने पांच के स्थान पर पचीस रुपये न मिलने से नहीं दी—बूढ़ी होकर यह बात छोटे मुन्नू के बच्चों से—फिर उनके बच्चों से कहनी है, इसीलिए तेरे साथ नहीं चल सकी।

बच्चे का शव उन्होंने स्वयं नेपी और विजय दा के हाथ पर रख दिया था।

नेपी और विजयदा ही उसका अन्तिम कृत्य करने गये थे।

औषधि की कहानी भी मर्मभेदी है। डाक्टर ने अन्त में एक इंजेक्शन लेने भेजा था। विदेशी औषधि थी। बाजार में न

मिलती थी—एक निश्चित दूकान पर ही 'स्टाक' था। डाक्टर ने पता बताया था और पानवाला लेने गया था। डाक्टर ने कहा था, कुछ दिन पहले पांच रुपये में मिली थी, तुम दस लेते जाओ। साधारण स्थिति में उसका दाम एक रुपया था।

पान वाला लौट आया, बोला—दूकानदार पच्चीस रुपये मांगता है।

रुपये लेकर जाने और औषधि लाने का समय निकल गया था।

पानवाले की बहू ने बताया—मां जी ने अब तक कुछ नहीं खाया।

भाभी मुस्कराईं।

नीला बोली—यह क्या भाभी?

—कोई विशेष बात नहीं है। वे फिर मुस्कराईं।

—परन्तु आपको जीवित जो रहना है!

—रहूंगी क्यों नहीं। मैंने तो कह दिया है कि बूढ़ापे तक रहूंगी और नातियों-नातनियों तथा उनके बच्चों को इन दिनों की कहानी सुनाऊंगी।

—फिर?

—बच्चे के लिए मैं उपवास नहीं करती। जिस दिन वह गया उस दिन कुछ खाने की इच्छा नहीं हुई, कल सवेरे समाचार पत्र पढ़ते-पढ़ते इच्छा हुई कि दो दिन भूखी रहकर महात्मा जी की अवस्था का अनुभव तो करूं!

—तीस—

दो दिन बाद।

आज दो मार्च है। महात्मा जी का अनशन आज समाप्त होगा।

समाचार पत्रों में आज जो संवाद आया है उससे देश को आश्वासन मिला है। समाचार यह है कि महात्मा जी प्रफुल्ल हैं। दो दिन से उनकी अवस्था उन्नत हो रही है। वे अग्नि परीक्षा में विजयी हुए हैं। नीला के हृदय को कुछ शांति मिली। भाभी ने भी तीन दिन से कुछ नहीं खाया। नीला कल शाम को आई थी और रात को उनके पास ही रह गई थी। सबेरे बोली—समाचार देखा? अब तो आप भी अनशन तोड़िए।

भाभी हंस कर बोलीं—हां, आज खाऊंगी। तुम्हें वचन देती हूं कि आज खाऊंगी।

नीला कुछ आश्वस्त हुई फिर भी बोली—तो खाइए, मैं देख जाऊं।

—तुम जाओ, मैं खाऊंगी। बचन देती हूं! अब तुम्हारे आने आवश्यकता भी नहीं।

—आवश्यक हो तो खबर दें।

नीला शांत हृदय लेकर घर लौटी। आज सचमुच उसका हृदय शांत है—मन की वह अधीर चंचलता अब नहीं रही। कनाई की चिन्ता भी अब उसे पीड़ित नहीं करती। मन ने उसे स्वाभाविक रूप में ग्रहण कर लिया है—समझ लिया है कि वह भी अन्य अंतरंग बन्धुओं जैसा है। विजयदा और नेपी जैसा वह भी एक

व्यक्ति है। आज कनाई से भेंट हो जाय तो वह पहले की भांति प्रसन्न होकर वार्तालाप भी कर सकती है।

स्नान और भोजन से निपट कर नीला लेटी और गहरी नींद में सो गई। षष्ठी की पुकार सुनकर उसकी नींद टूटी। षष्ठी हाथ में एक चिट्ठी लिए है और नीला को बुला रहा है। चिट्ठी खाकी बरदी वाला एक पिउन दे गया है। वह युद्ध विभाग से आई है और विजय बाबू के नाम है। विजय बाबू बाहर गये हैं। चिट्ठी आवश्यक है। नीला ने खोली। गीता को जहां ट्रेनिंग लेने के लिए भरती किया गया है वहां के व्यवस्थापक ने लिखा है—"गीता नाम की जिस लड़की को आपने यहां भरती कराया है वह बहुत बीमार है। आप तुरंत आवें। आवश्यक समझें।"

नीला बेचैन हुई। चिट्ठी को वह अपने लिए एक झमेला समझने लगी—वहां जाय कौन। विजय बाबू हैं नहीं, नेपी भूखों के लिए अन्न की जुगाड़ करने के सिलसिले में गया है। न जाने कब लौटेगा। विजयदा को भी आज दफ्तर नहीं जाना है, वे किसी मीटिंग में गये हैं। इधर गीता से आठ बजे के पहले ही भेंट हो सकती है। नीला विरक्त हो गई। तिक्त चित्त लेकर वह गीता की खबर लेने चली। रात होने वाली है। संभव है अभी साइरन बजने लगे। इससे भी बड़ा उद्वेग यह है कि अखबारों के हाकर न जाने कब चिल्लाने लगें—महात्मा गांधी—

ट्राम में भयंकर भीड़ है। लोग अपने-अपने घर की ओर लौट रहे हैं परन्तु सब स्तब्ध हैं—शांत हैं। शांत नहीं—उद्वेग से अव-

सब मनुष्यों की बातें और आलोचनाएं समाप्त हो गई हैं, खो गई हैं। इस समय यदि साइरन बजे तो प्राण बचाने के लिए लोग शायद आश्रय स्थल की ओर न दौड़ें अपितु क्लांत धीर पदक्षेप से जहां आश्रय मिले वहीं खड़े हो जांय।

गीता का कर्मस्थल ट्राम की सड़क के निकट है। जो चिट्ठी मिली थी वह नीला ने अन्दर भेज दी। उसे बुलाया गया। मेज के सामने एक प्रौढ़ डाक्टर बैठे हैं।

नीला को देखकर उन्होंने चिट्ठी देखी फिर पूछा—आप?

नीला बोली—मैं मि० विजय सरकार के पास से आई हूं। वे स्वयं नहीं आ सके। मुझे भेजा है।

—बैठिए।

—गीता को क्या हुआ है?

खिड़की की ओर देखते हुए वे बोले—कल अकस्मात् पैर फिसल गया और वह जीने से गिर पड़ी। पेट पर चोट लगी है।

—चोट गहरी है?

—नहीं साधारण है परन्तु—

—परन्तु क्या?

—मि० सरकार से ही बताता तो सुखी होता। वे फिर खिड़की की ओर देखने लगे।

नीला बोली—उन्होंने तो मुझे भेजा है।

—भेजा तो है परन्तु वे स्वयं आते तो उचित होता।

नीला चुप हो गई। डाक्टर भी कुछ देर मौन रहे फिर

धीरे-धीरे मृदुस्वर में बोले—लड़की को यहां से ले जाना होगा, वह संतान-संभवा है।

नीला चौंकी—संतान-संभवा ?

—हां, चोट लगने पर 'हेमरेज' हुआ था, परीक्षा की तो पता चला।

गरम खून की लहर नीला के पैरों से सिर की ओर दौड़ने लगी। क्षोभ और राग से वह अधीर हो गई। अधःपतित अभिजात वंश की आदर्श विलासी संतान उसे याद आई।

डाक्टर बोले—पत्र लिखने का कारण आप ने समझा ? उसे नर्सों के क्वार्टर में रखना संभव नहीं है।

नीला बोली—अच्छी बात है, मैं उसे ले जाऊँगी। अवस्था की दृष्टि से—

डाक्टर ने बात काटी—नहीं, नहीं। वह अच्छी है। साधारण चोट लगी है। जिस अवस्था में वह है उसे भी कोई क्षति नहीं हुई।

गीता के ओठों पर वही पुरानी फीकी मुस्कान दीख पड़ी। नीला की स्थिर दृष्टि घृणा और क्रोध से जल रही है। वह स्तब्ध बैठी रही।

टैक्सी ब्लैक आउट के अंधेरे को चीरती चली जा रही है। रश्मिहीन असंख्य बत्तियां धावमान विराटकाय श्वापद की आंखों जैसी चलती फिरती जान पड़ती हैं।

गीता बोली—नीला दीदी !

नीला ने कहा—चुप रहो। कमजोर हो, बात न करो।

टैक्सी घर के दरवाजे पर रुकी। नीला ने उतर कर गीता की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया। गीता ने हंसकर कहा, नहीं, मैं ऐसे ही उतर आऊँगी।

टैक्सी का किराया देकर नीला ने जोर के साथ कुण्डा खड़काया। उसके अंतर का उत्ताप निरन्तर प्रकट हो रहा है। कुण्डा खड़काते ही दरवाजा खुल गया, षष्ठी ने शायद बरामदे से ही टैक्सी देख ली है। नीला बोली—षष्ठी जीने ही बत्ती जला दे! बत्ती जली। षष्ठी नहीं—कनाई खड़ा है और शांत दृष्टि से देख रहा है। उसका शरीर दुबला हो गया है, पहचाना भी नहीं जाता, जैसे कोई नया आदमी है।

शांतस्वर में उसने पूछा— अच्छी हैं? गीता तुम बीमार हो?

नीला ने कोई उत्तर न दिया। तीव्र दृष्टि से उसकी ओर देखती रही। नतमुखी गीता ने हंस कर कहा, बीमार नहीं हूं, गिर पड़ी थी। अब अच्छी हूं। धीरे-धीरे वह सीढ़ी पर चढ़ने लगी।

—छुट्टी ले आई हो?

अब नीला ने उत्तर दिया—नहीं, उन लोगों ने गीता को वहां नहीं रखा।

—नहीं रखा?

—वहां रह नहीं सकती। नीला की दृष्टि बराबर स्थिर है।

—क्यों?

—गीता—गीता मां होने वाली है!

कनाई चौंका। गीता सीढ़ी पर खड़ी हो गई।

कनाई ने दीप्त दृष्टि से उसकी ओर देखा फिर मृदु मुस्कान के साथ स्तब्ध हो गया।

—इतना बड़ा पाप करके भी आप—

जीने के ऊपर से गीता ने रोका—ना—ना—ना—नीला दीदी !

—तुम चुप रहो—

—नहीं। गीता का स्वर दृढ़ हो गया है—आप किससे क्या कहती हैं ?

कनाई मंद मुस्कान के साथ बोला—ऊपर चलिये मिस सेन। दरवाजा बंद कर दूं—भीड़ लग जायगी। उसके स्वर में एक शांत दृढ़ता है। जर्जर तिक्त तीव्रता का विन्दु भी शेष नहीं रहा।

गीता के रोम-रोम में फिर उदास म्लान छाया उतर आई है। फिर भी वह पहले वाली गीता नहीं है। असंकुचित दृष्टि से नीला की ओर देखते-देखते वह अकम्पित कण्ठ से अपने दुर्भाग्य की कहानी सुना गई है। आंखें नहीं भीगीं, स्वर रुद्ध नहीं हुआ। अन्त में फीकी हंसी के साथ उसने कहा, कनाईदा मेरे पिता हैं—मेरे भाई से भी अधिक हैं—कनाईदा मेरे देवता हैं। उन्हें आप दोषी न समझें, नीला दीदी।

नीला निर्वाक् और स्तम्भित हो गई। अंधेरे की ओर देखती हुई वह बैठी रही। गीता ने पुकारा—कनाई दा—कनाईदा !

कनाई बरामदे में खड़ा था—वहीं से उत्तर दिया—गीतू भाई ? मुझे बुलाया ?

—हां।

कनाई भीतर आया।

गीता ने उसकी ओर देख कर कहा, आप इतने दुबले कैसे हो गये कनाईदा ? कनाई का एक-एक परिवर्तन उसकी दृष्टि में आया—आप का सर मुंडा है, मोछें बनी हैं—कनाईदा ?

म्लान हंसी के साथ कनाई ने कहा—घर में कई दुर्घटनायें हो गई हैं गीतू भाई। बम गिरा था—

—सुना है, मंझले बाबू, मंझली मालकिन और बड़े मुन्नू नहीं रहे—

कनाई बोला—बूढ़ी दादी भी मर गई हैं परन्तु उनकी एक हड्डी तक नहीं मिली।

बूढ़ी दादी—सुखमय चक्रवर्ती की स्त्री, मंझले बाबू की मां—निरुपा। नव्वे वर्ष का वह दृष्टिहीन, बधिर जीर्ण मांसपिण्ड।

गीता की आंखों में पानी भर आया। बिजली की बत्ती के दो प्रतिबिम्ब उस पर झलकने लगे।

कनाई बोला—उन सब की मृत्यु का संवाद मणि काका को देने गया। उनके सिवा और सब यहां से चले गये थे। काका से मालूम हुआ कि छोटे भाई को मलेरिया हो गया है। पिता जी सबको लेकर गांव गये थे। वहां गया, छोटा भाई तो अच्छा हो गया था परन्तु मंझला भाई बीमार था।

—अब कैसा है ?

—अच्छा हो गया है परन्तु मां मर गई हैं—सांप ने काट लिया था।

नीला का सम्पूर्ण शरीर अवश—शीतल हुआ जा रहा है। उसके मुंह से एक शब्द तक नहीं निकल पाता, कनाई की ओर देखने का साहस भी नहीं होता। गीता भी निर्वाक् हो गई है, उस की आंखों से आंसुओं की धारा अवश्य बह रही है।

कनाई ने हंसकर कहा—फाल्गुण के अंत में उमा का विवाह है

— विवाह ?

—हां। २४ माघ को मां का स्वर्गवास हुआ था। २८ फाल्गुन को उमा का ब्याह है। मैंने आपत्ति की थी। उमा एकांत में रोती रही है परन्तु पिता जी तुले बैठे हैं। वहां के रईस का एक लड़का उमा को देखकर मुग्ध हो गया है। दहेज लिए बिना ही विवाह करेगा। पिता जी ने बचन दे दिया है इसलिए—कनाई मुस्कराया।

गीता चुप रही। नीला वैसे ही स्थिर बैठी रही।

कनाई फिर बोला—अमल बाबू में और उसमें कोई अन्तर नहीं है। अमल बाबू के मुंह पर फिर भी भद्रता का चेहरा लगा है, वह इस झंझट से भी मुक्त है। परन्तु धान-चावल के व्यापार में लगभग दस लाख रुपया पैदा किया है और पुश्तैनी रईस है। शराब पीकर स्टेशन पर चिल्लाने में संकोच नहीं करता। मैंने उमा से कहा था—मेरे साथ चल परन्तु वह नहीं मानी। बोली छि ! फिर कहने लगी, सोचो, मां तुम्हें क्या दण्ड दे गई हैं और मुझसे

कह गई हैं, पिता जी को कष्ट न देना ! मरने के पहले मां ने कहा था, कनाई मुझे आग न दे—मेरा श्राद्ध न करे। श्राद्ध मैंने नहीं किया। अशौच के अन्तिम दिन बाल बनवा कर और नहाकर घर के सब सम्बन्ध समाप्त कर आया हूं।

नीचे कुण्डा खड़का।

कनाई चला गया।

कुण्डा खड़कने के साथ ही साथ सुन पड़ा—मां ! मांजी ! जरा सा भात देना मां !

कनाई को गांव याद आया, वहां भी यही हाल है। निम्न श्रेणी के मनुष्य गली-गली और द्वार-द्वार घूमते हैं—भात—जरा सा भात दो मां ! जरा सा फेन—

और यह फागुन का ही महीना है। अभी किसानों के घर में धान हैं। इसके बाद शायद वे भी इसी तरह घर-घर भीख मांगेंगे। किसानों के घर में धान रह भी नहीं सकते। धान सोलह—अठारह और बीस पर चढ़ता-उतरता है, वह फर-फर उड़ कर महाजन की कोठी में पहुंच रहा है। अकस्मात कनाई को याद आया—उसके शिष्य राय बहादुर के पुत्र ने एक दिन कहा था, "एक सप्ताह तक मेरे गोदाम की चाभी न मिले तो कलकत्ते में चूल्हा भी न जले।" रायबहादुर ने उसे चावल का व्यवसाय करने की सलाह दी थी।

दरवाजे के सामने एक आदमी चीख रहा है—मां ! मांजी ! जरा सा भात दो मां ! जरा सा भात—

सदा एक ही ढंग से उठने वाली इस पुकार में मनुष्य को बेचैन

कर देने की एक प्रछन्न भाव-भंगी है, मन इसे सुन कर विरक्त होता है। ये लोग अपने से अच्छे और खाते-पीते-मनुष्यों से अधिकार पूर्वक मांगने का कोई और मार्ग भी नहीं जानते? दरवाजा खोल कर कनाई ने कहा—जरा ठहरो भाई! भात बनेगा तब मिलेगा। बैठो।

फुटपाथ पर जूते की ध्वनि आगे बढ़ी। विजयबाबू दरवाजे पर आये।

—विजय दा?

—कौन? कनाई? विजयबाबू ने विस्मय के साथ पूंछा।

—कनाई? कहां थे अब तक?

कनाई ने जीने की बत्ती जलाई।

विजय बाबू उसकी आकृति देख कर सिहरे फिर भी अपने स्वभाव के अनुसार हंस कर बोले—क्यों रे, तू तपस्या करने गया था? सिर मुंडवा दिया है। नाक खांडे की तरह आगे निकल आई है। मुंह पर जो कभी नहीं दीख पड़ी वह मीठी हंसी फूट रही है—चेहरा देखने से जान पड़ता है कि ज्योति निकलने में विलम्ब नहीं है। मामला क्या है?

कनाई ने हंस कर कहा—मां मर गई हैं विजयदा!

विजय बाबू अणुमात्र भी अप्रस्तुत नहीं हुए, पल भर में गंभीर होकर वेदना के साथ बोले—मर गईं!

—हां

एक लम्बी सांस लेकर विजय बाबू बोले—आ, ऊपर आ!

ऊपर आकर और गीता को देख कर विजय बाबू और भी विस्मित हुए। बोले—गीता !

गीता ने म्लान मुस्कान से उत्तर दिया। नीला अब तक स्तब्ध है।

मृदु और क्लांत स्वर में नीला ने ही सारी घटना सुनाई। कहते-कहते उसकी आंखों से आंसू टपकने लगे। नीला के लिये यह अत्यन्त अस्वाभाविक है। कई बार आंखें पोंछ कर वह अपेक्षाकृत सहज अवस्था में आगई, अन्तिम भाग प्राय: स्वभाविक रूप से ही कह गई।

विजय बाबू एक के बाद दूसरी सिगरेट जलाते और चुपचाप दीवाल की तरफ देखते रहे।

गीता चुप बैठी है।

कनाई बाहर चला गया है और बरामदे में रेलिंग पर झुक कर खड़ा हो गया है। आकाश में वायुयान उड़ रहा है। वह उसकी ओर देख रहा है और सोच रहा है—इन्हीं वायुयानों ने युद्ध को विश्वव्यापी कर दिया है, प्रशांत सागर के एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैला दिया है, अटलाण्टिक के एक किनारे पर बैठ कर दूसरे किनारे के रणक्षेत्र का संचालन करना संभव कर दिया है। यह एक टन वजन के बम लेकर रात के अंधेरे में देश से देशान्तर की ओर उड़ जाता है। मनुष्य की कितनी ही साधों और साधनाओं से शत-सहस्र वर्ष में जो घर, भवन और संस्कृति के केन्द्र बन गये हैं उन्हें चूर्ण विचूर्ण करने और जलाने के बाद फिर

लौट आता है। कौन जाने यह युद्ध संसार का अन्तिम युद्ध है या पृथ्वी का विध्वंस करने वाले वृहत्तर युद्ध की भूमिका है।

नीचे सड़क पर नारी कण्ठ का क्रमागत चीत्कार ध्वनित हो रहा है—मां! मां जी! जरा सा भात दो मां! जरा सा फेन—मां! मां जी!

दरवाजे बंद हैं और घर निस्तब्ध हैं। देने की सामर्थ्य नहीं है, इनकार करने की भाषा मुंह से नहीं निकलती; अपना सब कुछ बांट कर उनकी बगल में खड़े होने का साहस नहीं परन्तु यह असमर्थता अन्तर में चिकोटी काटती है, अपराध का यह बोझ मस्तक झुका देता है। नहीं तो लोग विरक्ति के साथ इन मांगने वालों का तिरस्कार क्यों नहीं कर पाते?

विजय बाबू आये और कनाई के पास खड़े होगये। बोले, यहां तो बड़ी मीठी हवा चल रही है। वे हंसे फिर बोले—सिर के ऊपर बमवर्षक उड़ रहे हैं, नीचे मनुष्य मुट्ठी भर भात के लिए चिल्ला रहा है—फिर भी बसन्त समय पर आना नहीं भूला! आज फाल्गुण की उन्नीस है।

कनाई भी मुस्कराया।

विजय बाबू ने सिगरेट जलाई। क्षण भर बाद कनाई बोला—विजय दा!

—हां

—गीता की दशा सुनी?

—सुनी

कनाई कुछ देर मौन रहा फिर बोला—मैं उसे ले आया था—सोचा था—उसका उद्धार होगया। किन्तु—वह चुप होगया। विजय बाबू ने कोई उत्तर न दिया।

कनाई फिर बोला—उत्तरदायित्व मेरा है विजय दा। मैं गीता से विवाह करके उसे बचाना चाहता हूं।

विजय बाबू मौन ही रहे।

कनाई ने पुकारा—विजय दा!

—सुन रहा हूं भाई परन्तु उस दिन तू ने कहा था कि तू उसके साथ विवाह नहीं कर सकता—तू उसे प्यार नहीं करता!

कनाई मृदु स्वर में बोला—प्यार तो नहीं करता परन्तु चेष्टा करूंगा। कुछ रुक कर फिर बोला—शायद उसे प्यार करना संभव न हो परन्तु सुखी रखने की चेष्टा में त्रुटि न करूंगा।

विजय बाबू हंसे, फिर बोले—गीता से पूंछ।

—यह भार आपके ऊपर रहा।

—नहीं। पीछे मृदु स्वर में ध्वनित हुआ।—नहीं।

दोनों ने चौंक कर देखा, पीछे बरामदे के दरवाजे पर गीता और नीला खड़ी हैं। दोनों को बातें करते देख कर वे यहां नहीं आईं परन्तु लौट भी नहीं पाईं।

विजय बाबू बोले—आओ। वहां क्यों खड़ी हो?

गीता ने हंस कर कहा—कनाईदा से बातें कर रहे थे इसीलिए—

विजय बाबू बोले—कनाई तुम से विवाह करना चाहता है गीता?

गीता बोली—नहीं।

विजय बाबू चुप हो गये। कनाई भी कुछ न कह सका। नीता चुप खड़ी रही। गीता ही फिर बोली—नहीं। मुझे शर्म न आवेगी। आप ऐसा उपाय कर दीजिए कि मैं मेहनत मजूरी करके पेट भर लूं। फिर मेरे चाहे लड़का हो चाहे लड़की, मैं उसे पाल लूंगी। मनुष्य बना लूंगी।

विजय बाबू बोले—खुशी भाई, तुमने मुझे सचमुच खुशी कर दिया।

रात गंभीर हो गई है। कनाई बरामदे में ही बैठा है। विजय बाबू लेटे हैं परन्तु जाग रहे हैं। कमरे से गीता का मृदुस्वर आ रहा है। नीता भी जाग रही है, नहीं तो गीता बातें किससे करती?

विजय बाबू आगाखां प्रासाद से आने वाले समाचार के लिए उत्कण्ठित हो रहे हैं। आज सवेरे आठ बजे महात्मा जी अनशन समाप्त करेंगे। बीस दिन बीत गये हैं। अन्तिम दिनों में उनकी अवस्था भी अपेक्षाकृत अच्छी रही है। इस में कोई सन्देह नहीं रहा कि वे विजयी हुए हैं परन्तु जब तक संवाद न आये तब तक उत्कण्ठा का अन्त नहीं हो सकता। बिजय बाबू दफ्तर में आदमी भेज कर समाचार पहुंचाने के लिए कह आये हैं परन्तु वह अभी नहीं आया।

विजय बाबू ने अकस्मात मृदु स्वर में पूछा—तू क्या करेगा कनाई?

—क्या करूंगा ?

विजय बाबू हंस कर बोले—भारत का उद्धार करेगा या शांत शिष्ट बन कर काम काज करेगा—गृहस्थी बसायेगा ?

कनाई ने भी हंस कर उत्तर दिया—दोनों ही करूंगा। आपका युग चला गया। संन्यासियों की फौज से भारत का उद्धार करने की कल्पना हमारे पास नहीं है।

विजय बाबू मुस्कराये। क्षण भर बाद बोले—नीला को तू प्यार करता है कानू ?

कनाई ने कोई उत्तर न दिया।

विजय बाबू बोले—रक्त की परीक्षा करवा ले।

—रक्त की परीक्षा मैंने करवा ली है विजयदा। कुछ रुक कर वह बोला—मेरे शरीर में चक्रवर्ती वंश का पवित्रतम रक्त प्रवाहित है। परीक्षा के लिए रक्त दिया था—फल देखा—वह निर्दोष है। मैं तो प्रायः पागल हो गया था।

कनाई ने उस भयावह रात की घटना सुनाई फिर बोला—मंझले बाबा जीवित थे। अस्पताल में आशीर्वाद देकर उन्होंने कहा—मेरे लिए यह महानन्द है कि मेरा संस्कार तेरे हाथ से होगा। मुझ से न रहा गया। कहा, क्या मुझे संस्कार करने का अधिकार है ? मेरे रक्त में चक्रवर्तियों का संचय किया हुआ विष क्यों नहीं है ? वे बोले—तेरे शरीर में ही चक्रवर्तियों के पवित्र रक्त की धारा बही है। सुखमय चक्रवर्ती जब कर्मठ थे, चरित्रवान थे तब मेरे बाबा का जन्म हुआ था। उनके जीवन के पवित्र अंश

में मेरे पिता इस संसार में आये और जब मेरा जन्म हुआ तब वे भी चरित्रवान एवं आदर्शनिष्ठ तरुण थे।

विजय बाबू ने कुछ क्षणों के बाद कहा—यह देखकर मैं बहुत प्रसन्न हो रहा हूं कनाई कि तू स्वस्थ हो गया है।

कनाई बोला—हां, ज्वरग्रस्त की भांति मेरा मन सर्वदा जर्जर रहता था। इससे भी अधिक मेरा सौभाग्य यह है कि चक्रवर्ती भवन के अभिशाप से मुझे मुक्ति मिल गई है। मैं मुक्त हूं—इस पृथ्वी का मनुष्य हूं।

विजय बाबू ने उठकर सिगरेट जलाई। बोले, सो जा! मैं समाचार की प्रतीक्षा में जागूंगा।

—नींद नहीं आती विजयदा।

कमरे की ओर देखकर विजय बाबू बोले—चलो, ये तो सो गई हैं। अब बात-चीत की ध्वनि नहीं आती।

कमरे के भीतर से गीता बोली—नहीं, विजयदा, हम भी जाग रही हैं। दरवाजा खोल कर वह बाहर भी आ गई। बोली—नीला दीदी के साथ बातें करने का आनन्द नहीं आया। वे बोलीं ही नहीं। आपकी बातें सुन रही थीं।

टं टं टं टं—घड़ी ने चार बजाये।

—चार

आध घण्टे बाद सड़कों पर अखबारों के हाकर दौड़ेंगे। साइकिल पर और पैदल दौड़ कर शहर भर में समाचार फैला देंगे। कैसा होगा वह समाचार? इस प्रश्न ने सब को स्तब्ध कर दिया।

रात्रि का अन्तिम पहर भी निस्तब्ध है। पूर्व आकाश में शुक्र धक् धक् दमक रहा है। घर में घड़ी टक् टक् कर रही है।

सहसा नीचे कुण्डा खड़का। कोई अधीर आग्रह के साथ कुण्डा खड़का रहा है।

—विजयदा ! विजयदा !

—कौन ?

—मैं

—कौन नेपी ?

—हाँ, अखबार लाया हूं।

नीला कमरे से बाहर निकल आई।

—नेपी ?

—महात्मा जी ने अनशन पूर्ण किया है। स्वस्थ हैं।

"संसार कुछ भी कहे, भारत की चिरन्तन साधना की धारा आज विजयिनी हुई है; वशिष्ठ का पुण्यफल आज भी अवशिष्ट है। अस्तमान सूर्य की शेष रश्मि की भांति मेघाछन्न आकाश में मानो वर्णशोभा का यह महासमारोह हो गया है। मानवसमाज में यह विश्व व्यापी युद्ध महामन्वन्तर है। इस मन्वन्तर में यह पुण्यफल ही हमारा सर्वोत्तम सम्बल है। हमारी कर्मशक्ति इसी पुण्य से संजीवित होगी।"

विजय बाबू लिख रहे हैं।

"सृष्टि के आदि काल से मनुष्य युद्ध करता आ रहा है। व्यक्तिगत, गोष्ठीगत, जातिगत, सम्प्रदायगत और राष्ट्रगत युद्ध

आज विश्वयुद्ध की सीमा में आ गया है। बाहर होने वाली हत्या-काण्ड की इस अतिनिष्ठुर नृशंसता के साथ-साथ मनुष्य के अन्तर लोक में भी निष्ठुरतम द्वन्द हुआ है।—दैव प्रवृत्ति के साथ मानव चेतना का संग्राम—क्षुद्र मैं के साथ महत्तर मैं का संघर्ष—चला है। परन्तु मनुष्य आज भी अपने क्षुद्र मैं को—जैव प्रवृत्ति को—स्वार्थ बुद्धि को पराजित नहीं कर सका। इसको पदानत करके उसने नूतन से नवतर आदर्श स्थापित करने की चेष्टा की है परन्तु यह स्वार्थबुद्धि सरीसृप की भांति वैषम्य के छिद्र से आदर्श में घुस आई है। फलस्वरूप एक युद्ध की समाप्ति ने ही दूसरे युद्ध की भूमिका बना दी है।"

सबेरा हो रहा है। पूर्व का आकाश रक्ताभ होने लगा है।

गीता चाय बनाने में व्यस्त है।

कनाई ने पूछा—रात भर कहां था नेपी ?

नेपी नीचे से कार्डबोर्ड का एक टुकड़ा, एक कूंची और एक स्याही का डब्बा ऊपर ले आया है। कार्डबोर्ड में काट कर कुछ लिखा गया है। उसे रखकर कूंची फेर देने से ही कुछ लिख जाता है। नेपी बोला—रात भर दीवालों में लिखता रहा हूं।

विजय बाबू ने मुंह ऊपर उठाया और मुस्कराये। उनका लेख अभी समाप्त नहीं हुआ। वे फिर लिखने लगे—"प्रत्येक युद्ध में मनुष्य ने मानव मुक्ति की कामना की है। इसीलिए उसने आत्माहुति दी है; दृढ़ता के साथ अनेक दुःख सहे हैं; महामारी, दुर्भिक्ष और महामारी में भी इसी आशा से जीवित रहा है कि युद्ध की

समाप्ति पर मुक्ति मिलेगी—सब अन्यायों और उत्पीड़नों से मुक्ति मिलेगी—सब वैषम्यों से छुटकारा होगा। कुरुक्षेत्र के युद्ध में इसी आशा से अठारह अक्षौहिणी सेना ने प्राण दिए थे, और अठारह अक्षौहिणी नारियों ने वैधव्य का दुःख सिर झुका कर ले लिया था। उन्होंने सोचा था, पाप का विनाश हुआ—अधर्म की जड़ कट गई—धर्म प्रतिष्ठित हो गया। गीता सार्थक हुई। परन्तु प्रतिष्ठा हुई पाण्डवों की। फलस्वरूप अश्वमेध में फिर वैषम्य की सृष्टि हुई—मनुष्य को मुक्ति न मिली। गतमहायुद्ध के बाद राष्ट्र संघ बना, अस्त्र त्याग करने का संकल्प हुआ परन्तु मनुष्य की मुक्ति न हुई; समाप्ति के पहले ही युद्ध रुक गया। इसीलिए आज यह विश्वव्यापी युद्ध हो रहा है। प्रतीक्षा कर रहा हूं कि इस बार युद्ध का वास्तविक अन्त होगा। महायज्ञ के अंत में 'मानव-मुक्ति' का 'चरु' मिलेगा और सम्पूर्ण समाप्ति पर नव विधान आयेगा। अब बीच में युद्ध न रुके। यदि रुका तो वह नये युद्ध की भूमिका होगा। वास्तविक अन्त तक युद्ध हो। दुःख और कष्ट और भी कठिन हो जांय—कठोर हो जांय—मनुष्य उन्हें सहेगा। मेरी मृत्यु हो तो हो जाय। दुर्योग में मनुष्य ही मनुष्य की रक्षा करेगा। और बचा तो इसी कार्य में आत्म नियोग करूंगा—मानव मुक्ति की प्रत्याशा में जीवित रहूंगा।"

नेपी कार्ड बोर्ड पर कूंची फेर कर कमरे में ही लिख रहा है—भूखों को अन्न दो। नीला हंस रही है। कनाई भी हंसा।

आकाश के किसी कोने से वायुयान का स्वर उठ रहा है। दो

एक मिनट में भीषण, कठिन, कर्कश गर्जन सिर पर आगया और दस वायुयान एक साथ निकल गये। सबने उनकी ओर देखा।

नीचे सड़क पर किसी ने क्षीण कातर कण्ठ से पुकारा—भात दो माँ, ज़रा सा बासी भात—

नीला और कनाई की हंसी विलीन हो गई। उन्हें ऐसा जान पड़ा कि जब तक यह मन्वन्तर समाप्त न हो जाय तब तक हंसना अपराध है।

लेख पूरा करने के बाद विजय बाबू बोले—कनाई भाई, अब काम में जुट जाओ। नीला भाई, तुम भी कामरेड का साथ दो।

कनाई बोला—मन्वन्तर के प्रारम्भ में ही मुझे मुक्ति मिल गई है। काम करने के लिये ही तो आया हूं। बताओ क्या करूं ?

विजय बाबू ने उसकी ओर देख कर कहा—तेरा शरीर परन्तु बहुत दुर्बल है।

कनाई मुस्कराया—शरीर की दुर्बलता मेरा हृदय पूरी करेगा विजयदा ! फिर मैं अकेला भी तो नहीं हूं। कामरेड साथ होंगी।

नीला बोली—बताइये क्या करें ? काम बता दीजिये।

—काम बहुत है। मनुष्य को इस मन्वन्तर के दुर्योग से उस पार ले जाना है।

विजय बाबू ने बत्ती का स्विच बन्द कर दिया। उषा का प्रकाश हंसने लगा है।